देशभक्त फिरोज गांधी

शशि भूषण
संसद सदस्य

प्रोग्रेसिव पीपुल्स सेक्टर पब्लिकेशन्स (प्रा०) लि०
नयी दिल्ली

देशभक्त फिरोज गांधी
DESHBHAKT FEROZ GANDHI

लेखक
शशि भूषण, संसद सदस्य
Shashi Bhushan, M P

प्रथम संस्करण १२ सितम्बर १९७६
मूल्य पैंतालिस रुपये

प्रकाशक
प्रोग्रेसिव पीपुल्स सेक्टर पब्लिकेशन्स (प्रा०) लिमिटेड
२१६-ट्रस भवन, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नयी दिल्ली ११०००२

मुद्रक
हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस
नारायणा औद्योगिक क्षेत्र, फेस २,
नयी दिल्ली ११००२८



श्री फिरोज गांधी

स्वर्गीय रफी अहमद किदवई

की

स्मृति मे

सादर

समर्पित

प्रस्तावना

श्री फिरोज गाधी की गणना प्रमुख राजनीतिज्ञो मे की जाती है जिन्होने रचनात्मक आलोचना द्वारा हमारी सावजनिक सस्थाओ और सगठनो की काय-प्रणाली मे परिवतन करने के लिए प्रयास किये है। किसी भी अनुचित काय की तीखी आलोचना करते हुए भी वह रचनात्मक दष्टिकोण अपनाते थे। परिणाम-स्वरूप विरोधियो को भी उनके सुझाव सदभावना प्रेरक लगते और उनकी भावना को भी इससे आघात नही पहुचता था।

धैय, अनथक परिश्रम और अध्ययनशीलता आदि अनेक गुण उनमे इतनी प्रचुर मात्रा मे थे कि वह सहज ही उच्च पद पर पहुच कर जन कल्याण के लिए अपरिमित काय कर सकते थे। किन्तु विधि को यह स्वीकार नही था। क्रान्तिशील विचारधारा और समपण भावना को ही उन्होने अपना जीवन होम दिया।

भारतीय क्षितिज मे फिरोज गाधी का अवतरण उस समय हुआ जब हमारे राष्ट्र प्रजातात्रिक सस्थाओ को अपना कर उनकी प्रक्रिया तथा काय सचालन सम्बन्धी नियम का निरूपण कर रहा था। इन सस्थानो के लिए समुचित प्रमाप निर्धारित करने मे फिरोज गाधी ने प्रशसनीय काय किया है। सही प्रक्रिया निर्धारित कर विनियम तैयार करने वालो की वह अगुवाई कर रहे थे।

जीवन बीमा निगम के राष्ट्रीयकरण के पश्चात निगम के कतिपय सदिग्ध सौदो का पर्दाफाश कर उन्होने सम्पूण देश को झकझोर दिया। वह प्रतिभा-सम्पन्न सासद थे। मूदडा काण्ड मे उन्होने अपने दल की आलोचना करने म भी झिझक नही की तथापि प्रधानमत्री और उनके दल को इसस काफी उलझन हुई।

ससद सदस्य निर्वाचित होने के तीन वप बाद सन १९५५ मे उनका ससद म प्रथम भापण हुआ। इस पहले भापण मे ही यह सिद्ध हो गया कि उन्होंने सम्बन्धित तथ्यो और आकडो को एकत्र करने मे कितना श्रम किया था। समुचित जानकारी के अभाव मे वह कभी नही बोलते थे। रामकृष्ण डालमिया के प्रबध मे चल रही बीमा कम्पनियो द्वारा अपनाये जाने वाले भ्रष्ट तरीको को उन्होने

कडी आलोचना की। उनकी आलोचना के फलस्वरूप डालमिया की गिरफ्तारी हुई और बीमा कम्पनियों के राष्ट्रीयकरण के लिए मार्ग प्रशस्त हो गया।

उनके संसदीय क्रिया कलापों से यह स्पष्ट है कि वह इतिहासद्रष्टा थे। वह अस्थायी महत्व की छोटी-छोटी बातों में कभी दिलचस्पी नहीं लेते थे। अपितु वह दूरगामी महत्व के व्यापक प्रश्नों से जूझते रहते थे।

फिरोज गांधी उपदेशक नहीं थे। उद्योगों में एकाधिकार का वह विरोध करते थे। सरकारी उद्योग क्षेत्र के वह जबरदस्त हिमायती थे। यह दोनों उनकी विचार-धारा के आधारभूत सिद्धांत थे। वह निर्भीक व्यक्ति थे। उन्हें कोई भी प्रलोभन मार्ग से विचलित नहीं कर सकता था।

फिरोज गांधी साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद के विरोधी थे। राष्ट्रीय महत्व के विभिन्न कार्यों के लिए उन्होंने प्राथमिकता निर्धारित कर दी थी। उनकी कथनी और करनी से धर्मनिरपेक्षता और उत्कट देश प्रेम अभिव्यक्त होता है।

किसी भी बात को भूल जाना लोगों का स्वभाव है। श्री फिरोज गांधी की मृत्यु अड़तालीस वर्ष की आयु में हो गई थी। इस घटना को आज सोलह वर्ष बीत चुके हैं। हमारे नवोदित राष्ट्र की दृढ आधार शिला रखने में फिरोज गांधी ने जो त्याग एवं परिश्रम किया उसकी याद अब धुंधली होने लगी थी। किन्तु आज जब हम प्रजातान्त्रिक मूल्यों का पुनः सम्मान कर अपने लोक उपक्रमों को नव स्फूर्ति प्रदान करने लगे हैं तो इनकी रहनुमाई करने वाले महापुरुष के कार्य और आदर्शों को स्मरण करना सर्वथा वांछित है।

मेरे मित्र श्री शशिभूषण द्वारा लिखित फिरोज गांधी के जीवन की विशेषताओं और महत्वपूर्ण उपलब्धियों का वर्णन करने वाली इस पुस्तक का मैं स्वागत करता हूं। सार्वजनिक कार्यों में सम्बद्ध प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि वह देश सेवा से परिपूर्ण त्याग और परिश्रम की मूर्ति, जीवन का आदर्श प्रस्तुत करने वाले महापुरुष की इस जीवनी का अध्ययन कर प्रेरणा प्राप्त करे।

इस पुस्तक से एक और प्रश्न हमारे सामने उभरता है। देश के लिए सर्वस्व अर्पित करने वाले तन मन धन न्योछावर करने वाले, देशहित की कामना में अपने प्राणों की आहुति देने वाले अगणित देशभक्तों के जीवन का पुनर्मूल्यांकन करने की आज कितनी आवश्यकता है।

रजनी पटेल
अध्यक्ष, बम्बई प्रदेश कांग्रेस कमेटी

भूमिका

भारत की चौथी लोकसभा मे किये गये सैद्धान्तिक सघप परे विश्व के ससदीय इतिहास मे अभूतपूव माने जाते हैं। पूरी ससद यथास्थितिवादियो और प्रगतिशीलो के बीच, दो भागा मे विभक्त हो गयी थी।

ससद के अन्दर बैंका का राष्ट्रीयकरण, राजाओ के प्रिवीपस की समाप्ति और अय प्रगतिशील लक्ष्यो की पूर्ति करने के लिए जो सघप चल रहे थे उनसे ऐसा प्रतीत होता था जैसे सामाजिक जीवन मे चलने वाले व्यापक सघर्ष लोकसभा की सीमाओ के अन्दर उमड पडे है।

हमारे जो प्रबुद्ध साथी यथास्थितिवाद के विरोध म मूलगामी सुधारो के लिए सघप कर रह थे, वे पहली तथा दूसरी लोकसभा के इतिहास मे फिरोज गाधी के निणायक सैद्धान्तिक सघर्षों से प्रेरणा ले रह थे।

जिस तरह उन्होने 'जीवन बीमा' तथा 'टाटा लोकोमोटिव इन्जीनियरिंग वक्स और अय वित्तीय सस्थाओ के राष्ट्रीयकरण के लिए न केवल अकाट्य तक दिये थे बल्कि ससद के बाहर भी निणायक एव सफल अभियान चलाये थे, उससे हमारी पीढी के लोगो को माग दशन एव प्रेरणा का मिलना स्वाभाविक था।

पूजी के एकाधिकार के विरुद्ध सघप म फिरोज गाधी ने हमारी पीढी को सुसगत ढ ग से शिक्षित एव प्रे रित किया ह।

मैं ससदीय पुस्तकालय म बैठ कर घटा उनके भाषण पढा करता था। मुझे कभी-कभी उन भाषणा म प्रतिपादित स्थापनाओ पर आश्चय भी होता था। इसलिए कि वे 'आपत्कालीन अधिकार लागू करने' की, "पूजी का एकाधिकार तोडने" की, इसके लिये आवश्यक हो तो सविधान म "सशोधन करने" की तथा निजी उपक्रमो का "राष्ट्रीयकरण करने" की और भविष्य म सावजनिक क्षेत्र मे ही "अधिकाधिक पूजी का विनियोग करने" की घोषणाए करते हैं।

१९७५-७६ मे भारतीय नागरिको को इन घोषणाओ पर आश्चर्य नही होगा। इसलिए कि पूजी के एकाधिकारियो की समाज विरोधी चेष्टाए तथा उनके राजनीतिक पक्ष पोषको के देश विरोधी षडयन्त्र पूरी जनता के सामने प्रकट हो चुके है। परन्तु २२ साल पहले जिस व्यक्ति ने इन सद्धान्तिक मान्यताओ के लिए इतना दृढ सघर्ष किया था, वह कितना भविष्यद्रष्टा रहा होगा इस पर चकित होना अस्वाभाविक नही है।

१९४८-४९ मे स्व० रफी अहमद किदवई के निवास स्थान पर लखनऊ मे मेरी उनसे पहली मुलाकात हुई थी। इसी मुलाकात ने मेरे मन पर उनके व्यक्तित्व की गहरी छाप छोड दी। प्रत्येक प्रश्न पर, चाहे वह जितना नगण्य और छोटा क्या न हो, गम्भीरतापूर्वक सोचना और उसके सम्बन्ध मे एक निश्चित राय दे देना, समस्याओ को व्यावहारिक और सद्धान्तिक दोनो ही दृष्टियो से देखना और उनका समाधान ढूढना साम्प्रदायिक प्रश्नो पर निरपेक्ष भाव से निर्णय देना तथा हर सवाल को प्रगतिशील दृष्टिकोण से सोचना फिरोज गाधी के स्वाभाविक गुण थे।

उनसे प्रथम परिचय मे उनके व्यक्तित्व का जो प्रभाव मुझ पर पडा था २२ वर्ष बाद उनके भाषणो के अध्ययन ने उसे और भी गहरा कर दिया था।

कुछ अन्य कारण भी थे जिन्होंने मुझे उनका प्रशसक बना दिया था। वे जीवन पर्यन्त साम्राज्य विरोधी थे। लोकतन्त्र मे उनकी अटूट आस्था थी। फासिज्म को वे मानवता का शत्रु समझते थे। समाजवाद के प्रति उनकी आस्था अटूट थी और जिस बात को वे एक बार सामाजिक प्रगति मे बाधक मान लेते थे, उसके खिलाफ जम कर सघर्ष करते थे।

यही कारण है कि नीलम सजीव रेड्डी को जब राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार बनाया गया और इसके लिए काग्रेस कार्यकारणी समिति मे कृत्रिम बहुमत का बहाना किया गया तो मैं प्रथम काग्रेस ससद सदस्य था जिसने इस का विरोध किया। मैं यह भलीभाति जानता था कि राष्ट्रपति भवन मे ऐसे व्यक्ति को बठाये जाने के प्रयत्न किये जा रहे है जो राष्ट्रीय आन्दोलन की समस्त प्रगतिशील परम्पराओ को विपरीत दिशा मे मोड सकता है तथा दक्षिणपथी प्रतिक्रियावादियो को देश की बागडोर सौंप सकता है।

आत्मा की आवाज के अनुसार मतदान करने की अपील करने का साहस मुझे फिरोज गाधी के लोकसभा भाषणो से मिला था।

"यही कारण है कि बहुत दिनो से मैं इस सच्चे देशभक्त की जीवनकथा लिखने की सोचता आ रहा हू। नई पीढी के लिए उनकी जीवनकथा बहुत लाभ दायक हो सकती है। परन्तु मैं जब भी लिखने बठा अनेक कठिनाइया सामने आईं और मैं कलम चला नहीं पाया।

उनकी जीवनकथा लिखने मे सबसे बडी कठिनाई उनके प्रति मेरा भावुक होना है। उनके और उनके परिवार के प्रति मेरे मन मे पहले से ही अति श्रद्धा रही है। यह श्रद्धा मुझे इतने भावावेश मे वहा ले जाती थी कि मेरी लेखनी अपने आप चलने लगती थी। जब मैं लिखा हुआ स्वय पढने बैठता था, तो आलोचक बन कर स्वय सोचने लगता था कि यह कथा सम्पूर्ण नही है।

फिरोज गाधी के राजनीतक जीवन का पक्ष जनता की निधि है। मैंने उसे सवार कर इसमे पूरी तरह समेटने का प्रयत्न किया है। वास्तव मे यह एक विशुद्ध राजनीतिक जीवन चरित्र है, सवा गौण जीवन चरित्र नही। परन्तु व्यक्तिगत जीवन परिचय के बिना जीवनकथा कैसी ! अत उनके व्यक्तिगत जीवन के सम्बन्ध मे जानकारी प्राप्त करने के लिए मैंने अनेक बार दिल्ली, इलाहाबाद, बम्बई और लदन मे उनके मित्रो, सम्बन्धियो तथा सहयोगियो के साथ सम्पर्क स्थापित किया। ये लोग केवल अपने से सम्बन्धित पक्ष के बारे मे ही सूचना दे सकते थे। अत ये सूचनाए मुझे आशिक रूप मे तथा बिरता मे ही मिली हैं जिनका सम्पर्क सूत्र जोडने म मुझे दूसरे अनेक महयोगियो से सम्पर्क करना पडा है।

वास्तव मे मैं यह बात अच्छी तरह जानता हू कि उनके व्यक्तिगत जीवन के सम्बन्ध म तब तक पूरी तरह नही लिखा जा सकता जब तक उनके परिवार के सदस्या से काफी लम्बी बातें न कर ली जाए। परन्तु वे इतने व्यस्त है कि उनसे चर्चा करने का न तो मुझे अवसर मिला और न साहस हुआ।

हम लोगो ने फिरोज गाधी से बहुत कुछ सीखा है। अपने से अगली पीढी को भी लाभान्वित करने के लिए यह जीवनकथा उपयोगी समझ कर तैयार की गयी है। उन्होंने लन्दन मे विद्याध्ययन करते समय फासिस्ट विरोधी लीग की स्थापना की और स्पेन के देशभक्तो की सहायता करने के लिए लन्दन म कोषाध्यक्ष के रूप मे अभियान चलाया। जो लोग आज फासिस्ट ताकतो से सघर्ष कर रहे है उनके लिए यह प्रेरणादायक है। उनके जीवन की ऐसी अनेक घटनाए है जो नई पीढियो को त्याग और बलिदान की ओर प्रेरित कर सकती है।

वास्तव म मेरी यह पुस्तक उस महान देशभक्त की जीवनकथा नही है, बल्कि हमारी पीढी की ओर से अर्पित श्रद्धासुमन मात्र है। सच्चे अर्थों मे जीवन-कथा तो कोई और ही लिखेगा। यदि यह पुस्तक उसके लिए आवश्यक भूमिका भी तयार कर देती है तो मैं अपना परिश्रम सार्थक समझूगा।

मैं अपने पाठको तथा स्वर्गीय फिरोज गाधी के प्रशसको से अपील करता हू कि यदि वे अपने सस्मरण तथा उनके जीवन के सम्बन्ध मे जो कुछ भी जानकारी उनके पास है, उसे मेरे पास भेजकर इस पुस्तक को अधिकाधिक उपयोगी बनाने के अभियान मे मुझे सहयोग देंगे तो मैं उनका बडा अनुगृहीत हूगा।

फिरोज गाधी हमारे राष्ट्रीय स्वतन्त्रता सग्राम के नवयुवक नेताओ मे थे और स्वाधीनता प्राप्ति के उपरान्त आर्थिक आत्मनिभरता के लिए किये जा रहे सघर्षों मे वे मौलिक चितक एव अग्रणी नेता थे। अतएव उनके सम्बन्ध म जितना भी लिखा जाय थोडा है।

मेरे जिन मित्रो और सहयोगिया न तथा स्वर्गीय फिरोज गाधी के जिन मित्रा, सहयोगियो और सम्बन्धियो न इस कठिन काय के सम्पादन म मुझे सहयाग दिया है, उनकी सख्या बहुत बडी है। यह पूरी पुस्तक उनके सहयोग का ही फल है। मैं उन सबके प्रति अपना आभार प्रकट करता हू।

इस वष हमारे सविधान की भूमिका म "लोकतत्रीय धमनिरपेक्ष समाजवादी गणतत्र" की घोषणा की जाने वाली है। फिरोज गाधी जिस समाजवादी लोकतान्त्रिक राष्ट्र की कल्पना किया करते थे, वह आज साकार होता नजर आ रहा है। अत इस वष इस पुस्तक के प्रकाशन पर मुझे और भी प्रसन्नता है।

—शशि भूषण
ससद सदस्य

विषय-सूची

जन्म एव बाल्यजीवन

८

जन्म एवं बाल्यजीवन

फिरोज गांधी का जन्म १२ सितम्बर १९१२ में एक पारसी परिवार में हुआ था। पारसी परम्पराओं के अनुसार उनके धार्मिक वर्ष का नवारंभ होने के कारण यह दिन शुभ समझा जाता है। उनकी माता का नाम रतिमाई और पिता का नाम जहांगीर फेरेदून था। बम्बई के आधुनिकतम फोर्ट क्षेत्र में स्थित नेहमुलजी नारीमन अस्पताल में फिरोज गांधी ने जन्म लिया था। उनका परिवार बम्बई के खेतवाडी मोहल्ले में नौरोजी नाटवाला भवन में रहता था। अन्य पारसी परिवारों की भांति यह परिवार भी बम्बई में गुजरात से ही आया था। उनकी माता श्रीमती रतिमाई सूरत की रहने वाली थी और पिता श्री जहांगीर फरेदून बरोच के रहने वाले थे। वे सीधेसादे और धार्मिक वृत्ति के व्यक्ति थे। किलिक निक्सन में मरीन इंजीनियर के पद पर वह कार्य करते थे। उन्हें वारंट इंजीनियर की पदवी प्राप्त थी। अपने जाति समुदाय में जहांगीर गांधी पहले व्यक्ति थे जिन्हें यह पद प्राप्त हुआ था।

जहांगीर गांधी सरकारी कार्यों में अत्यधिक उत्तरदायित्व की भावनाओं के साथ भाग लेते थे। सरकार भी उन्हें प्रायः बडी-बडी जिम्मेदारियां ही सौंपती रहती थी। प्रथम महायुद्ध का प्रारंभ हुआ था। उनकी सरकारी जिम्मेदारियों में और भी अधिक वृद्धि हुई। उन्हें देश के एक तटीय नगर से दूसरे नगर के तटों तक भ्रमण करना पडता था। उन्होंने यह अनुभव किया कि अपने नौका परिवहन में एक स्थान से दूसरे स्थान तक भ्रमण करना उनके लिए अनिवार्य हो गया है। वे अपनी जिम्मेदारियों से मुक्त भी नहीं होना चाहते थे और न किसी प्रकार की शिथिलता पसन्द करते थे। परन्तु इस अटूट और निरन्तर की दौड धूप ने उनकी समस्त पारिवारिक गतिविधियों तथा जिम्मेदारियों को अस्त व्यस्त कर दिया। अपने परिवार की देखभाल करना तथा पारिवारिक जिम्मे-

दारियां निभाना उनके लिए क्रमश असंभव होता गया। इसीलिए उन्होंने यह निश्चय किया कि अपने परिवार और बच्चों को दूर इलाहाबाद भेज दें जहां उनकी बहन रहती थी। उनकी बहन डा० एस० एच० कमिसरियत भी अपने भाई की तरह अपने जाति-समुदाय में प्रमुख स्थान रखती थी। वह अत्यधिक सम्मानित महिला थी और इलाहाबाद के एक क्रिश्चियन कालिज में फैलो हो गई थी। इलाहाबाद आते समय इस कुनबे के नायक, फिरोज की आयु केवल दो वर्ष थी। फिरोज गांधी यहां लेडी डफरिन अस्पताल में अपने भाई और बहन के साथ रहते थे। यह स्थान उनकी बुआ डा० कमिसरियत के लिए निवास स्थान के रूप में अलाट किया गया था। भाई का नाम फरेदून था और बहन का नाम तेहमीना। दोनों भाई बहन फिरोज से काफी बड़े थे। जब बुआ अपने कामकाज के सिलसिले में अक्सर घर से बाहर रहा करती थी तो वे दोनों फिरोज की देखभाल बहुत अच्छी तरह किया करते थे। बचपन में फिरोज गांधी काफी नटखट थे।

यही कारण है कि चार वर्ष की आयु में ही उन्हें पास की एक कन्या पाठशाला के छात्रावास में रख दिया गया था ताकि उन पर देख रेख रखी जा सके। इसके बाद उन्हें सात वर्ष की आयु में एक स्थानीय स्कूल में भरती करा दिया गया जहां उन्होंने १५ वर्ष की आयु में दसवीं कक्षा उत्तीर्ण कर ली। उछल-कूद करने वाले फिरोज गांधी पढ़ने लिखने में भी उतने ही तेज थे जितने दंगा और दौड़ धूप करने में थे।

दसवीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद उन्होंने एक क्रिश्चियन कालिज की सान्ध्य कक्षाओं में प्रवेश किया। इसी अवसर पर उन्होंने श्री के० डी० मालवीय की बाल स्काउट संस्था में प्रवेश किया। इस संस्था में कार्य करने से फिरोज गांधी को अनेक लाभ हुए। एक तो उन्हें अपनी शारीरिक और मानसिक क्षमताओं का पूर्ण परिचय देने का अवसर अल्पायु में ही मिल गया—जैसा कि बहुतों को बड़ी आयु में भी नहीं मिल पाता। दूसरे, इस संस्था के माध्यम से श्री के० डी० मालवीय के साथ फिरोज गांधी का ऐसा घनिष्ठ सम्पर्क स्थापित हुआ जो ३५ वर्षों तक नहीं टूटा और इसमें २८ वर्ष तो ऐसे थे जिसमें दोनों की राजनीतिक गतिविधियां एक दिन के लिए भी एक दूसरे के विरोध में नहीं गयीं।

नौजवान फिरोज गांधी साइकिल लेकर पूरे शहर में बाल स्काउट संस्था और इलाहाबाद की राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए दौड़ धूप किया करते थे। इस दौड़ धूप ने इलाहाबाद के समस्त राजनीतिक कार्यकर्ताओं और नेताओं का ध्यान फिरोज गांधी की ओर आकृष्ट कर दिया था।

फिरोज गांधी के व्यक्तिगत जीवन, व्यक्तित्व एवं राजनीतिक कार्यों के

सम्बन्ध में इस पुस्तक के विभिन्न पृष्ठों पर प्रकाश डाला गया है। परन्तु इस सन्दर्भ में यह जान लेना अप्रासांगिक नहीं होगा कि वे पारसी परिवार के थे। पारसी भारत में अतीव अल्प-सख्यक जाति है। यह एक अग्निपूजक जाति है। यद्यपि यह सही है कि जनसख्या की दृष्टि से भारत जैसे विशाल देश में पारसी लोग कुल मिलाकर एक आध लाख से अधिक नहीं होंगे—१९६१ की जनगणना में उनकी सख्या एक लाख से भी कम थी। परन्तु हिन्दुस्तान के राजनीतिक और आर्थिक जीवन में पारसियों का स्थान नगण्य नहीं है। इस जाति के लोगों ने भारत के जनजीवन में अनेक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किये हैं और आज भी ऊँचे स्थानों पर आसीन हैं। गुणग्राही भारतीय जनता ने सख्या की दृष्टि से नहीं बल्कि गुणवत्ता के आधार पर उन्हें भी उचित सम्मान दिया है तथा उनकी योग्यता और क्षमता का पूरा लाभ उठाया है।

भारतीय जनता में बहुत कम लोग पारसियों के सम्बन्ध में जानकारी रखते हैं। उनकी सामाजिक रीतिनीति और धार्मिक जीवन पद्धतियों के सम्बन्ध में बहुत कम लोगों को पूरी जानकारी है। पारसियों के इतिहास और सामाजिक जीवन के सम्बन्ध में पूर्ण परिचय कराना इस पुस्तक का उद्देश्य भी नहीं है। परन्तु पाठकों में इन जिज्ञासाओं का उठना स्वाभाविक है कि पारसी कौन हैं, कहाँ से आये हैं तथा उनके धार्मिक और सामाजिक रीति रिवाज क्या हैं, आदि?

इन जिज्ञासाओं का समाधान करने से पहले यह जान लेना आवश्यक है कि जनसख्या की दृष्टि से नगण्य होते हुए भी पारसियों में पृथक्ता की भावना कभी पैदा नहीं हुई और राष्ट्र की मुख्य सामाजिक धारा से कट कर वे कभी नहीं रहे। आमतौर पर पूरे विश्व में यह देखा गया है कि अल्पसंख्यक जातियाँ बहुसख्यक जातियों से विलगाव अनुभव करने लगती हैं तथा उनमें जातीय सकीर्णता की भावनायें घर करने लगती हैं। इससे स्वयं अल्पसंख्यक जाति का बौद्धिक और सामाजिक विकास रुक जाता है तथा वे व्यापक सामाजिक जीवन में अपना उचित योगदान नहीं कर पाती। परन्तु पारसी जाति इस जातीय सकीर्णता की शिकार कभी नहीं रही। धर्मनिरपेक्षता और जातिनिरपेक्षता में अग्रणी स्थान रखने के कारण पारसी लोग देश के प्रत्येक प्रगतिशील आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण स्थान रखते रहे हैं।

उदाहरण के लिए, भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस अपने जन्मकाल से ही देश के प्रत्येक प्रगतिशील आन्दोलन एवं राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिए सवमान्य एवं सर्वोच्च मच के रूप में काय करती रही है। पारसियों को इस बात पर उचित गर्व करना स्वाभाविक था। इस सस्था के सस्थापकों में प्रमुख स्थान रखने वाले दादा भाई नौरोजी एक पारसी ही थे जो देश के स्वाधीनता आन्दोलन के भी

आदि पितामह तथा संस्थापकों में गिने जाते हैं।

इसी प्रकार, जब उन्नीसवीं सदी के अंतिम वर्षों और बीसवीं सदी के प्रारंभ में देश में औद्योगिक विकास एवं पूंजीवाद की स्थापना की संभावनायें स्पष्ट दृष्टिगोचर होने लगीं तो अनेक विचारकों और उद्योगपतियों ने औद्योगिक विकास के लिए मूल उद्योगों का शिलान्यास रखने की आवश्यकता अनुभव करनी प्रारम्भ की। फौलाद (स्टील) का निर्माण औद्योगिक विकास की पूर्व शर्त मानी जाती है। इस दिशा में सबसे पहला कदम उठाने वाले एक उद्योगपति भी पारसी ही थे। सब जानते हैं कि टाटा परिवार ने सबसे पहले फौलाद के निर्माण के लिए कारखाने की स्थापना का सूत्रपात किया था।

इसके अलावा, यद्यपि यह सही है कि टाटा परिवार देश का सबसे बड़ा औद्योगिक घराना होने के कारण उद्योगों को निजी क्षेत्र में रखने की पैरवी करता है और साथ ही पूंजीवाद के विकास तथा उसकी रक्षा में रुचि रखता है। परन्तु इसके बावजूद इस वास्तविकता की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती कि कुछ अन्य पूंजीपतियों की भांति टाटा परिवार धार्मिक संकीर्णता में विश्वास नहीं रखता, राष्ट्रीय विघटन और तोड़ फोड़ में यकीन नहीं करता एवं धर्मनिरपेक्षता में विश्वास रखता है। टाटा परिवार साम्प्रदायिक तत्वों को बढ़ावा नहीं देता।

पारसियों के लिए यह और भी गर्व की बात है कि देश के स्वाधीनता संघर्ष में प्रतीक के रूप में काम आने वाला तिरंगा राष्ट्रीय झंडा भी एक पारसी महिला ने ही देश को सौंपा था। उनका नाम था मैडम भीखा बाई कामा।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अलावा अन्य प्रगतिशील संस्थाओं और पार्टियों के निर्माण में भी पारसियों का योगदान कम महत्वपूर्ण नहीं रहा है।

इस संदर्भ में अणुशक्ति की खोज में ख्याति प्राप्त अमर वैज्ञानिक डाक्टर भाभा को भारतवासी कभी नहीं भूलेंगे। इस पारसी वैज्ञानिक ने अपने गौरवशाली देश को अणुशक्ति सम्पन्न राष्ट्रों की उज्जवल पंक्ति में खड़ा करने में निर्णायक योगदान किया और जिस वैज्ञानिक डा० सेठना की देख रेख में भारत ने पहला अणु विस्फोट राजस्थान में किया था उनका जन्म भी एक स्वनामधन्य पारसी परिवार में ही हुआ था।

आज भारत गर्व के साथ यह घोषणा करता है कि वह क्षमता रखते हुए भी परमाणु बम का निर्माण नहीं करेगा और मानव जाति के कल्याण के लिए वह इस अपार शक्ति का शान्तिमय निर्माण कार्य में इस्तेमाल करने के लिए सदा प्रयत्नशील रहेगा।

देश की विभिन्न आर्थिक, सांस्कृतिक और कलात्मक उपलब्धियों के कार्यों में पारसियों का योगदान सदा महत्वपूर्ण माना जाता रहा है। आधुनिक भारत

में पारसियों ने फिल्म, नाट्य मंच, शिक्षा, मुद्रण, और अन्य बौद्धिक कार्यों में भी बहुत आगे बढ़कर भाग लिया है। पारसियों ने भारतीय भू सेना, नौ सेना और वायु सेना में भी गौरवपूर्ण भूमिकायें निभायी है। पूरे सैनिक इतिहास में पहली बार फील्ड मार्शल की पदवी से विभूषित किये जाने वाले जनरल मानकशा भी एक पारसी है।

इसी तरह, दादा भाई नौरोजी की तरह ही फिरोज शाह मेहता और दीनशाह वाचा क्रमशः १८४५ से १९१५ तक और १८४४ से १९२५ तक बम्बई के बेताज के बादशाह माने जाते रहे है।

राष्ट्रीय जीवन में पारसियों के योगदान की पूरी सूची बना सकना संभव नहीं है, इसलिए कि पारसी लोग इस सूची को अपने अच्छे कार्यों द्वारा निरंतर लम्बी करते जा रहे है।

पारसियो का इतिहास और सामाजिक जीवन

पारसी लोग मूल रूप से फारस देश के रहने वाले हैं जिसका आधुनिक नाम ईरान है। ये अनेक सदिया पहले शरणार्थी के रूप मे भारत आये थे और यही बस गये थे। शरणागत प्रेमी भारतीय जनता ने उन्हे सहर्ष गले लगाया था, अपने यहा परिवार की भाति रखा था और पारसियो ने भी अपने कार्यों द्वारा स्वय को उस विश्वास के योग्य समझा था जिसे मुक्त हस्त हो कर भारतीय जनता न दिया था।

पिछले १५ वर्षों मे भारतीय जनता ने दो बार फिर शरणागता के प्रति असीमित उदारता और बन्धुत्व का परिचय दिया है। उदाहरण के लिए १९६१ म माओवादियो की जातीय सहार नीति से पीडित हजारा तिब्बतिया ने दलाई लामा के नेतत्व म भारत म शरण ली थी। हमारे प्रथम प्रधानमन्त्री न भारत की शानदार परम्पराओ के अनुरूप उन्हे न केवल शरण दी थी बल्कि उनके पुनर्वास की व्यवस्था भी की थी। तब स आज तक ये तिब्बती भारत मे परिवार के सदस्य की तरह रहते आ रहे हैं तथा भारतीय जनता के आतिथ्य की समस्त सुविधायें अनुभव करते है।

इस दु खद घटना के ठीक दस साल बाद पूर्वी पाकिस्तान से एक करोड शरणार्थियों का काफिला हिन्दुस्तान आया था। व याह्याशाही के क्रूर अत्याचारा से पीडित थे और आत्मरक्षा क लिए भारत म शरण लेन के अलावा उनके सम्मुख इसका विकल्प नहीं था। उन्हे एक वर्ष तक हमने अपने भाइयो की तरह परिवार का सदस्य बना कर रखा। अपनी शक्ति के अनुसार पूरी सुख-सुविधायें प्रदान करन की चेष्टा की। और अन्त म भारत की तीसरी प्रधान मन्त्री न जिस दूरदर्शिता और शौर्य के साथ उनके मुक्ति सघर्ष म सहयोग दिया एव शरणार्थियो को उनके घरो तक वापिस पहुचाने म सहायता दी, उसका उदाहरण ढूढना कठिन है।

प्रश्न यह उठता है कि पारसी लोग अपना देश छोडन को बाध्य क्यो हुए और उन्होने भारत म शरण क्यो ली ? सन् ६३३ म खलीफा उमर की सेनाओ न फारस

पर हमला किया और उसे गुलाम बनाने की चेष्टा की। अरबों के पहले ही आक्रमण के सामने फारस वालों की स्वाधीनता और सार्वभौमिकता धराशायी हो गयी। परन्तु जल्दी ही इस युद्ध में अरबों को भी एक धक्का लगा था। खालिद बेन वालिद नामक अरब सेनापति मारवाहा के मैदान में पारसियों के हाथों कत्ल कर दिया गया। परन्तु विशेष परिस्थितियों के कारण इस बड़ी घटना से फारस-वासियों को विशेष लाभ नहीं पहुंचा इसलिए कि फारसवालों में न केवल जबर-दस्त फूट थी बल्कि असमान शक्ति वाले दो धड़ों में बराबर बराबर बंटे हुए थे। कुछ अपने सेनापति रुस्तम के साथ थे और कुछ युवराज फिरोज का साथ दे रहे थे। इस आपसी संघर्ष में वे अरबों को भूल गये और अपने-अपने हितों को सामने रख कर गुटबाजी का संघर्ष चला रहे थे। अरबों ने इस फूट से पूरा लाभ उठाया। फारसवासी तो आपस में संघर्ष करते रहे और अरबों ने बहुत सी खानाबदोश जातियों को सहायता दे कर उनके खिलाफ संघर्ष में उतार दिया। यह युद्ध तीन रात और तीन दिनों तक बिना रुके चलता रहा जिसमें अन्तिम विजय अरबों के हाथ लगी।

यद्यपि सैनिक पराजय हो चुकी थी फिर भी फारस के राजा ने नैतिक पराजय स्वीकार नहीं की और उसने हिम्मत नहीं हारी। अरबों को पराजित करने के लिए उसने पहले से भी बड़ी सेना संगठित करनी शुरू कर दी और युद्ध की पूरी तैयारियों में जुट गया। परन्तु इन तैयारियों से खलीफा के क्रोध का पारा और भी ऊंचा उठ गया। उसने अपनी सेनाओं को आदेश दिया कि "काफिर" (धर्म-विरोधी) अग्नि पूजकों का पूरी तरह सफाया कर दिया जाय। एक निर्णायक युद्ध लड़ा गया जिसमें ३५,००० पारसी मारे गये। ८०,००० लोग जल की उस प्राचीर में जा फंसे जो शिविर के चारों ओर बनी थी। अरबों ने पारसी सेनापति को घेर कर क्रूरता से साथ मार डाला।

युद्ध में इस पराजय ने फारस पर अरबों के प्रभुत्व की स्थापना कर दी। सन् ६५० में फारस देश के अंतिम राजा को विश्वासघातपूर्वक कत्ल कर दिया गया और हमेशा के लिए अग्निपूजकों के शासन का अंत कर दिया गया। उस राजा ने मरते दम तक इस्लाम धर्म स्वीकार नहीं किया था। उसकी मृत्यु के बाद फारस में इस्लाम का बोलबाला होता गया। तब से इस्लाम राजधर्म बना दिया गया। यद्यपि सभी लोगों ने इस्लाम स्वीकार नहीं किया, परन्तु उन लोगों के लिए फारस में रह सकना निरन्तर कठिन होता गया। जिन्होंने धर्म परिवर्तन कर लिया था, उनके लिए कठिनाई नहीं थी। परन्तु धर्म परिवर्तन न करने वालों के लिए जीवन के नये रास्तों और स्थानों की तलाश करना अनिवार्य हो गया। ऐसे ही कुछ पारसियों ने अपने धर्म की रक्षा के लिए भारत में शरण ली थी। वे समुद्र के

रास्ते से सन् ६८० के बाद से भारत की ओर चलने लगे थे।

उनका सबसे पहला जत्था काठियावाड के दक्षिण म दीपू नगर मे उतरा। व काफी दिना तक वहा रहे। इसके बाद जसे-जैसे उनकी सख्या बढती गयी दूसरे स्थाना की तलाश म निकलते गय। व बडी सख्या म गुजरात के सजन गाव की ओर गये जो आज तक भी पारसिया का उद्गम स्थान माना जाता है। यह गाव दमण के दक्षिण म करीब २५ मील की दूरी पर है।

उस समय दमण म जाद राणा राज्य करत थे। पारसिया ने उनके सम्मुख उपस्थित होकर अपनी करुण गाथायें सुनाइ। उन्होंने उन दुःख भरी परिस्थितिया का वणन किया जिनम रहकर उन्होने अपने देश और धम की रक्षा के लिए दारुण सघष किया था। यह भी बताया कि किस तरह उनसे जबरदस्ती धम परिवतन कराया जाता था और किस तरह पराजित और विवश होकर उन्होन देश छोडा था एव भारत की शरण ली थी। उन्होन विनम्रतापूवक राणा से प्राथना की कि उन्ह स्वधम की रक्षा के लिए अपन देश म बसने की स्वीकृति प्रदान करें। स्वीकृति देने से पहले राणा ने विस्तारपूवक यह पूछा कि उनके धार्मिक तथा सामाजिक रीति रिवाज क्या ह तथा जिस देश स व आय हैं, वहा क्या-क्या व्यवसाय करते थे, आदि।

पारसिया के प्रतिनिधिया न बडी कुशलता के साथ राणा की शकाओं का समाधान किया और उन्ह यकीन दिलाया कि पारसिया का धम और रीति-नीति हिंदुओ के धम तथा रीति-नीति के साथ बहुत कुछ मिलते-जुलते हैं। राणा ने प्रसन्नतापूवक पारसिया को भारत म बसने की स्वीकृति प्रदान की और उन पर किसी प्रकार की अपमानजनक शर्तें भी नही थोपी। केवल इतना भर मानने को कहा कि वे लोग भारत की भाषायें व्यवहार मे लायेंगे तथा किसी विदेशी भाषा को यहा चालू नही करेंगे। यह कि पारसिया को अपने पास शस्त्र नही रखने होंग तथा अन्य देशवासियो की तरह अहिंसक ढग से रहना होगा। यह कि पारसी महिलायें वसी ही वेशभूषा धारण करेंगी जैसी अन्य भारतीय नारिया धारण करती है। पारसियो ने इन शर्तों का सहष स्वीकार कर लिया।

इसके बाद राणा न एक प्रश्न और पूछा। उन्होंने कहा कि पारसी लोग अपने नय देश अथात् भारत के प्रति कैसा व्यवहार करेंग और उसके प्रति क्या क्या बलिदान करन को तयार रहग ? इस मार्मिक प्रश्न का उत्तर देने से पहले पारसिया के पुरोहित न दूध का एक कटोरा और एक चम्मच चीनी मगवाई। दूध म चीनी घोलते हुए पुरोहित ने कहा कि—'महाराज! जैसे यह चीनी दूध म घुल गयी है और इसे पृथक नही किया जा सकता, उसी तरह पारसी लोग विशाल भारतीय समाज म सदा के लिए घुल मिल जाएगे। उन्ह भारतीय समाज

से पृथक करना सम्भव नहीं है। भारतीय समाज के सुख और हित में ही पारसी [illegible] अपना सुख और हित समझते रहे हैं।"

पारसियों के पुरोहितों के [illegible] अत्यधिक प्रभावित हुए। उन्होंने [illegible] के निकट पारसियों को अग्नि का मन्दिर बनाने की स्वीकृति दी। उन्होंने अन्य भारतीयों की तरह ही पारसियों को भी पूर्ण नागरिकता के अधिकार [illegible] प्रदान किये।

पिछले कई सौ वर्षों से पारसियों का यह छोटा-सा समुदाय अब बढ़ते-बढ़ते भारत की महत्वपूर्ण अल्पसंख्यक जातियों में गिना जाने लगा है। अब वे केवल [illegible] तक ही सीमित नहीं हैं। उनकी शाखायें कैम्बे, अक्लेश्वर, [illegible] सूरत, थाना और चौल आदि स्थानों में बड़ी संख्या में पाई जाती हैं। [illegible] के साथ [illegible] में दो-चार पारसी मिल ही जाते हैं। वे पूर्णा [illegible] पास बड़ौदा के गायकवाड़ के राज्य में नौसारी कस्बे में जा कर रहने लगे। [illegible] उनका सम्पर्क डच, अमरीकियों और पुर्तगालियों के साथ कई सौ वर्ष पहले ही हो गया था। उनके सम्पर्क से वे देशान्तरों के साथ व्यवसाय करने लगे। खेती में [illegible] वस्त्र उद्योग, गलीचा, ईंट पकाना और बर्तन बनाना [illegible] जहाज निर्माण तक के कार्यों में उन्हें निर्णायक रूप से भाग लेते देखा जा सकता है। १६३५ में जब बम्बई में एक बन्दरगाह बनाया जाने लगा था पारसियों ने [illegible] बड़ा योगदान देकर अपनी उपयोगिता साबित की थी। [illegible] पारसियों ने बड़े-बड़े ठेकेदारी के काम लिये और विभिन्न व्यवसायों में आगे बढ़कर भाग लिया। लकड़ी, गाड़ी, बैंक, मदिरा, रंगशाला और [illegible] आदि सामुदायिक क्षेत्रों में वे बहुत आगे बढ़कर भाग लेते रहे हैं। [illegible] सेना में सामानों की पूर्ति के ठेकेदारों के रूप में काम करते रहे हैं।

जहाजरानी का निर्माण करना पारसियों का परम्परागत व्यवसाय माना [illegible] है। उनके द्वारा बनाये गये जहाजों के द्वारा उन्होंने चीन और [illegible] के साथ व्यापार किया तथा भारी मुनाफे कमाये। कपड़ा, [illegible], [illegible] मोटर गाड़ी, [illegible], [illegible] व्यवसाय, [illegible], [illegible] शिक्षा के [illegible], [illegible], मुद्रण और अन्य [illegible] क्षेत्रों में पारसियों ने अनुकरणीय काम किए हैं।

[illegible]

माना जाता है। ऋग्वेद की सबसे पहली ऋचा अग्नि की स्तुति के साथ आरंभ होती है और उसका सबसे पहला शब्द 'अग्नि' ही है। इस प्रकार, हिन्दू धर्म मूल रूप से अग्नि की पूजा से प्रारंभ होता है और वही स्तुति पारसियों की भी मानी जाती है। ऋग्वेद की तरह पारसियों की धार्मिक पुस्तक, जिन्दावेस्ता भी विश्व की प्राचीनतम पुस्तकों में है।

जैसे शैशव से लेकर मृत्युपर्यन्त हिन्दुओं के अनेक संस्कार होते हैं, उसी तरह पारसियों में भी अनेक संस्कार होते हैं। नामकरण संस्कार, यज्ञोपवीत संस्कार, विवाह संस्कार और अन्य संस्कारों की भांति पारसी बालकों को भी विविधता पूर्ण संस्कारों की प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है। जैसे नाहन, लाल कुमकुम चिन्ह आदि।

इसके अलावा पारसी महिलाएं अपने नागरिक अधिकारों के लिए समाज में बड़ा उन्नत स्थान रखती हैं। इसका प्रभाव पूरे महिला समाज पर पड़ा है। पारसी महिलायें भारतीय नारी समाज के समानाधिकार सम्बन्धी आन्दोलन में अग्रणी मानी जाती रही हैं।

फिरोज गांधी ने इस पारसी परम्परा में जन्म लिया, और अपने जीवन द्वारा उन स्वस्थ परम्पराओं को न मन आगे बढ़ाया।

देशभक्ति का पहला पाठ

फिराज गाधी अपने शैशव काल से ही कत्तव्यनिष्ठा और देशभक्ति की भावनाआ मे ओतप्रोत थ। य दाना गुण उनके आरम्भिक जीवा म ही बहुत अच्छी तरह परिलक्षित हो जाते है।

इलाहाबाद म रहते समय अपन जीवन की प्रभात वेला म ही श्री फिरोज गाधी नेहरु परिवार के घनिष्ठ सम्पक म आय। नेहरु परिवार का घर, आनन्द भवन उन दिना पूरे देश की राजनीति का केन्द्र बिन्दु बना हुआ था। वह नवयुवक पीढी के आकषण का विशेष केन्द्र था। इलाहाबाद, पूरे उत्तर प्रदेश और भारत भर से नवयुवका के जत्थे पर जत्थे आनन्द भवन आया करते थे। इस पीढी का वह सबसे बडा तीथ स्थान बना हुआ था। पण्डित जवाहर लाल नेहरू से ता वे मिलन आते ही थे और उनके क्रान्तिकारी विचारो से अत्यधिक प्रभावित हो कर लौटते थे, परन्तु कमला जी के स्नेह और लगाव से भी उन्हे अत्यधिक प्रेरणा मिलती थी। सभी नवयुवका का व माता के समान स्नेह देती थी और उन्हे देश भक्ति के लिए प्रेरित करती थी।

फिराज गाधी उन हजारा भाग्या नवयुवका म से एक थे जिन्हे कमला जी का स्नेहपूण व्यवहार प्राप्त करन का सौभाग्य मिला था। अब वे नटखट बालक मात्र नही बल्कि श्रद्धालु और विनम्र नवयुवक थे। जिस काम का हाथा म लेन उसे अन्तिम मजिल तक पहुचान का प्रयत्न करत थ। उन्हान मन मार कर कभी काई काम नही किया। उनमे व्यापक सवा भाव हाना और भी खास विशेषता थी।

इलाहाबाद के राजनीतिक वातावरण और आनन्द भवन के स्नेहपूर्ण सम्पक न फिरोज गाधी के मन म देशभक्ति की भावनायें कूट-कूट कर भर दी थी।

इसके अलावा, व उस पारसी पुराहित की परम्पराआ पर चलन क अभ्यस्त थ

जिसने पारसियो के प्रारम्भिक इतिहास मे दमण के राणा से कहा था कि जसे चीनी दूध मे घुलमिल जाती है उसी तरह पारसी लोग भारतीय समाज मे घुल मिलकर रहेंगे तथा भारतीयो के सुख-दुख को अपना सुख दुख अनुभव करेंगे। नवयुवक फिरोज गाधी उसी परम्परा का अनुसरण करते हुए देशवासियो के स्वाधीनता सघर्ष के प्रति न केवल असाधारण आकर्षण रखते बल्कि उसमे वाछित योगदान करने का भी भगीरथ प्रयत्न करते है। वे भारतीय समाज की सर्वाधिक प्रगतिशील और देशभक्तिपूर्ण प्रवत्तियो के ध्वजवाहक थे।

इस सदर्भ म साईमन कमीशन के बहिष्कार सम्बन्धी राष्ट्रीय अभियान का उल्लेख करना और उसम फिरोज गाधी के सक्रिय योगदान की चर्चा करना सर्वथा प्रासगिक होगा। वास्तव म इस बहिष्कार आन्दोलन ने तीसरे दशक के अन्त मे जिस विशाल राष्ट्रीय आन्दोलन का आकार ग्रहण किया उसकी कल्पना स्वय उन नेताओ तक न नही की थी जो इसका सचालन कर रहे थे। इस आन्दोलन न पहली बार भारतीय जनता को करोडो की सख्या म सडको पर उतार दिया तथा उसकी साम्राज्यविरोधी भावनाओ को प्रबल ज्वार भाटे की तरह उभार कर रख दिया। १९२७ म इस आयोग की स्थापना की गयी थी। वैसे दो साल पहले ही इसकी घोषणा कर दी गयी थी। इस आयोग का यह रिपोर्ट देनी थी कि भारत के लिए किस ढग की सरकार उपयुक्त होगी और यह कि नई सरकार के गठन के लिए कौनसा तरीका अपनाया जा सकता है। उसे यह रिपोर्ट भी देनी थी कि जो सरकार इस समय भारत म काय कर रही है उसमे क्या-क्या सुधार करन आवश्यक हैं जिनसे कि वह नई परिस्थितियो से मेल खा सके तथा नई राजनीतिक आवश्यकतायें पूरी कर सके। इससे पहले १९१९ म मोटफोर्ड सुधार लागू किये जा चुके थे जिनके माध्यम से प्रादेशिक सरकारो की स्थापना द्वारा देश म द्वैध शासन की स्थापना की गयी थी।

इस आयोग म ७ ब्रिटिश ससद् सदस्य सम्मिलित किये गये थे। इसके अध्यक्ष थ जान साइमन जिनके नाम पर इस आयोग का नामकरण किया गया था एव क्लेमेंट एटली इसके सदस्या म थ जो आगे चलकर ब्रिटेन के प्रधानमत्री बने थे।

भारत यह अपमान सहन नही कर सकता था। भारत जसे विशाल देश के भाग्य का फैसला इगलेण्ड के सात गोरे करें और भारतीय जनता की सम्मति या उसम कोई निर्णायक योगदान न हो यह राष्ट्रीय अपमान कैसे सहन किया जा सकता था। भारतवासियो को केवल दो अवसर दिये गये थे—या तो वे मूक दर्शक बने रह कर इस राष्ट्रीय अपमान का घूट पीते रहे और या फिर सडको पर उतरकर गोरी सरकार को बता दें कि अब भारत अधिक दिनो तक राष्ट्रीय अपमान सहन नही कर सकता। भारतीय जनता ने दूसरा रास्ता ही पसन्द किया।

भारत के नेता यह भी जानते थे कि साईमन कमीशन की स्थापना क्यों की गयी है ? वास्तव में टोरी पार्टी ने इस आयोग की स्थापना बहुत कुटिल इरादा के साथ की थी। टोरी पार्टी यह जानती थी कि इंगलण्ड की लेबर पार्टी बार-बार भारत की स्वाधीनता की मांग का समर्थन करती है। अतः ऐसा काम करना चाहती थी जिससे कि लेबर पार्टी भी स्वाधीनता की मांग का समर्थन करना बन्द कर दे। जिस समय सन् १९२७ में आयोग की स्थापना की घोषणा की गयी थी उस समय पूरे भारत में भयानक साम्प्रदायिक दंगे हो चुके थे। राष्ट्रीय एकता की भावनायें टूट चुकी थीं और फलस्वरूप राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन भी सबसे निचले स्तरों पर बह रहा था। टोरी पार्टी ने यह सोचा था कि भारतीय जनमत अनेक भागों में बंटा हुआ है और जब साईमन कमीशन के सदस्य वहां दौरा करने जाएंगे तो भारत की स्वाधीनता के सम्बन्ध में कोई एक निश्चित मत उभर कर सामने नहीं आएगा। अनेक और परस्पर विरोधी दावे प्रस्तुत किये जाएंगे जिन्हें सुनकर कमीशन के सदस्य निराश एवं रुष्ट होकर भारत से लौटेंगे। वे सरकार को रिपोर्ट देंगे कि "अभी भारत को स्वाधीनता देना उचित नहीं है।" टोरी पार्टी ने लेबर पार्टी के प्रमुख सदस्यों को इस आयोग का सदस्य इसीलिए बनाया था कि उनकी स्वाधीनता विरोधी रिपोर्ट से लेबर पार्टी में फूट पड़ जाएगी जिसका लाभ उठाकर टोरी पार्टी इंगलैण्ड के आम चुनावों में उसे पराजित कर सकेगी। यह दावा कर सकेगी कि जो लेबर पार्टी भारत की स्वाधीनता का समर्थन करती है उसी के नेता भारत का दौरा करने के बाद उसकी स्वाधीनता के विरोध में रिपोर्ट प्रस्तुत करते हैं।

टोरी पार्टी का यह दोहरा षड्यन्त्र था। इससे वह एक तीर से दो शिकार खेलना चाहती थी। भारत की स्वाधीनता के विरुद्ध जनमत तैयार करना और तीसरे दशक के अन्त में लेबर पार्टी को चुनावों में पराजित करना उसका कुटिल उद्देश्य था। परन्तु भारतीय जनता के प्रबल साम्राज्य विरोधी उभार ने उसकी सभी योजनाओं तथा मंसूबों पर पानी फेर दिया।

साम्राज्यवादी भी बहुत जल्दी ही अपनी गलती अनुभव करने लगे। वे यह सोच रहे थे कि साम्प्रदायिक दंगों ने देश की एकता छिन्न-भिन्न कर रखी है और आयोग पूरे देश का दौरा निष्कंटक तरीके से कर लेगा। परन्तु साईमन कमीशन के बम्बई में पांव रखते ही पूरा देश बिजली के आघात से प्रताड़ित सा सिहर कर खड़ा हो गया। साम्राज्यवाद विरोधी प्रदर्शनों की लहर में देश डूब सा गया। सबसे पहले १९२८ में बम्बई का मजदूर एक लाख की संख्या में सड़कों पर उतर आया। कपड़ा मिलों की चिमनियों ने धुंआ उगलना बन्द कर दिया। कपड़ा कामगारों के नारों ने पूरा बम्बई गूंजा दिया—"साईमन कमीशन ! वापिस जाओ ?"

मजदूरों का इस प्रदर्शन मे हिस्सा लेना और पहलकदमी करना यह सिद्ध कर
था कि राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन गुणात्मक रूप से भिन्न होता जा रह
और उसकी जडें जनता म गहराई से जमती जा रही हैं। ऐसा प्रतीत होता
जसे कि किसी दारुण दुघटना ने पूरे देश को एक ही नारे के इद गिद एकत्रित
दिया है और वह था —' साईमन कमीशन, वापिस जाओ, वापिस जाओ।"

प्रदशनो की यह ऐसी शृंखला थी जो दूसरी शृंखला को जन्म देती थ
उदाहरण के लिए लाहौर मे लाला लाजपत राय के नेतत्व म साईमन कमीशन
विरोध म जो विशाल प्रदशन किया गया था वह लाहौर के इतिहास मे अभूत
था। घटा तक प्रदशनकारियो की भीड से सडकें भरी रही। इससे साम्राज्य
बौखला उठा। पुलिस ने भीड पर निमम लाठी प्रहार किया जिसमे हजारो
घायल हो गये और उन्हें अस्पताल भेजना पडा। भीड म लालाजी पर निम
साथ साथ कर लाठियो के प्रहार किये गये। वे गभीर रूप से न केवल घायल
गये बल्कि उनकी हड्डिया भी टूट गयी। थोडे दिनो बाद निमम लाठी प्रहा
कारण लालाजी की मृत्यु हो गयी।

लालाजी की मृत्यु ने पूरे देश को उत्तेजित कर दिया। क्रिया की प्रतिक्रिय
से सारा देश भर उठा। जिस को लाठियो के प्रहार ने उनकी मृत्यु का सा
जुटाया था उन ऑफिसर को छोड देना भारत के नौजवानो को चुनौती अनुभव
लगी। परिणामस्वरूप सरदार भगत सिंह और उनके साथियो ने दिन दहाडे सॉ
की हत्या करके इस राष्ट्रीय अपमान का बदला तुरत ले लिया।

उत्तर प्रदेश म पण्डित जवाहर लाल नेहरू और प० गोविन्द वल्लभ पन्त
इसी तरह मारा पीटा और अपमानित किया गया। उनके प्रति इस दुव्यवहार
पूरे प्रदेश म आन्दोलन की लहर पैदा कर दी। करोडो भारतीय जनता और
जवान अपनी परम्परागत उदासीनताओ का परित्याग करके क्रान्तिकारी स
के लिए कमर कसते जा रहे थे।

साईमन कमीशन के बहिष्कार आन्दोलन के समय फिरोज गाधी की
उम्र १६ वर्ष की थी। उनकी बुआ व अन्य भाई और परिवार के अन्य लोग
नहीं चाहते थे कि वह आन्दोलन म सम्मिलित हो तथा अपनी पढाई पर 'ध्या
नान करें। परन्तु फिरोज के लिए मातृभूमि का अपमान सहन करना सम
नहीं था। राष्ट्र के सामूहिक हित की उपेक्षा करके व्यक्तिगत हित की महत्
करना उन्हें तुच्छ प्रतीत होता था। यही कारण है कि उन्होंने व्यक्तिगत हितो
मुकाबले में राष्ट्र के सामूहिक हित म ही अपना हित समझा। जिस समय इला
बाद म साईमन कमीशन के बहिष्कार म उनका का विशाल प्रदशन निकल
था अपने भाई और बुआ के भय से फिरोज गाधी प्रदशन म सम्मिलित

हुए। केवल प्रदशन देखने भर का आश्वासन देकर सडक के किनारे आकर खडे हो गये। परन्तु जल्दी ही पुलिस का ध्यान इस 'दशक' की ओर चला गया जो प्रदशनकारियो की तुलना म अधिक जोशीले नारे लगा रहा था और साईमन कमीशन को वापिस लौट जाने को कह रहा था। पुलिस दौडकर इस दशक' के पास आई और प्रदशनकारियो को छोडकर उसी पर टूट पडी। उसे न केवल गिरफ्तार कर लिया गया बल्कि थाने म ले जाकर बहुत बुरी तरह मारा पीटा। बाद म उसे बालक समझकर छोड दिया गया। वह पुलिस थाने से पिट पिटाकर घर लौटा ही था कि बडे भाई ने दुबारा घर पर पिटाई शुरू कर दी। बडे भाई नही चाहते थे कि फिरोज साम्राज्यवाद का विरोध करें या अपनी पढाई म बाधा डालकर अपने को बबाद करे। एक बार तो फिरोज के कारण डा० कमिसरियत की नौकरी पर भी आ बीती थी। पुलिस ने उन्ह बडी मुश्किल से क्षमा किया। इस दोहरी मार पीट से फिरोज को शारीरिक और मानसिक आघात तो बहुत लगे, पर तु बौद्धिक तौर पर वे इतने जागरूक हो उठे कि किसी शत पर भी उस साम्राज्यवाद के साथ समझौता करने को तैयार नही थे, जिसने उनके परिवार और देशवासियो पर इतना जुल्म ढा रखा था। इस घटना ने फिरोज गाधी के मन म साम्राज्यवाद के खिलाफ घणा के ऐसे बीज बो दिय कि वे जीवनपय त साम्राज्यवाद विरोधी बन रहे तथा एक क्षण के लिए भी उससे समझौता करने की इच्छा उनके मन मे उत्पन्न नही हुई। यही कारण ह कि जब तक ब्रिटिश साम्राज्यवाद न हि दुस्तान नही छोडा तब तक वे उस प्रत्येक सघष मे भाग लेते रहे जो उसे हटाने के लिए छेडा गया था। भारत की स्वाधीनता के बाद भी वे विश्व के साम्राज्य विरोधी स्वाधीनता आ दोलनो का डटकर समथन करते रहे।

यही कारण है कि अपने यौवनकाल मे जनता के राजनीतिक आ दोलन म जितना अधिक हिस्सा लेते थे, पुलिस उतनी ही अधिक तीव्रता के साथ उनकी निगरानी करने लगती थी। पुलिस उन्ह बार बार पकडती थी। बार-बार डा० कमिसरियत को थाने मे जाकर उन्हे छुडाना पडता था। पुलिस द्वारा बार-बार पकडा जाना और हथकडिया लगा कर डा० कमिसरियत के पास लाना एव उनके अनुरोध पर रिहा कर देना फिरोज के लिए बहुत पीडाजनक होता जाता था। बडे भाई का भी एक ही काम हो गया था कि वे ऐसे अवसरो पर फिरोज की पिटाई करने से कभी बाज नही आते थे। इस तरह पुलिस और परिवार के सम्मिलित हमलों ने उनका मनोबल फौलाद के समान दढ कर दिया था। उन्ह यह पक्का विश्वास हो गया था कि साम्राज्यवाद ही इन तमाम अत्याचारो के मूल मे है और जब तक उसका सफाया नही कर दिया जाता तब तक मानवता चैन की सास नही ले सकती।

जब भी कभी फिरोज पर साम्राज्य विरोधी कार्य करने के कारण सम्मिलित प्रहार किये जाते थे, वे दौडकर श्रीमती उमा नेहरू के मकान मे शरण ले लेते थे। वे पण्डित जवाहरलाल नेहरू के चचेरे भाई की धर्मपत्नी और सच्ची देशभक्त रही हैं। बडी बहन तेहमीना भी प्रत्येक अवसर पर फिरोज को आन्दोलन से विमुख करते रहने का प्रयत्न करती थी। इस तरह, पूरे परिवार के विरोध का सामना करके नवयुवक फिरोज गांधी को देशभक्ति का पाठ पढना पड रहा था।

वास्तव मे वे अपने अपने कारणों से फिरोज गांधी को राष्ट्रीय आन्दोलन से विमुख करना चाहते थे। फेरेदून एल० एल० बी० पास करके अच्छा वकील बनना चाहते थे और तेहमीना एम० ए० पास करके कोई बडा सरकारी पद प्राप्त करना चाहती थी। उन्हें भय था कि फिरोज की गतिविधियों के कारण सरकार उन से रुष्ट हो सकती है तथा उनकी उन्नति के मार्ग रोक सकती है।

परन्तु फिरोज क्या करते? उन्हें अपनी बडी बहन और भाई अत्यधिक प्यारे थे। किसी भी दशा में वे उनका बुरा नहीं चाहते थे। परन्तु जिस ब्रिटिश साम्राज्य से वे इतनी गहरी घृणा करते थे और जिसने फिरोज की तरह न जाने कितने देशभक्त नवयुवकों की आकांक्षायें कुचल रखी थीं उसे वे कैसे सहन कर सकते थे। अपने भाई और बहन के व्यक्तिगत स्वार्थ के कारण वे अपने राष्ट्रीय शत्रु से समझौता करने के लिए तैयार नहीं थे।

कभी कभी तेहमीना फिरोज के कपडे व जूते भी छिपा देती थी ताकि व बाहर न जा सकें और आन्दोलन में भाग न ले सकें। परन्तु ये प्रभावशाली 'उपाय' भी अधिक कारगर साबित नहीं हुए। फिरोज गांधी अपने रात के कपडों में और नंगे पांव ही बाहर चले जाते थे और राजनीतिक गतिविधियों में जुटे रहते थे।

जब ये सब प्रयत्न भी बेकार हो गये तो एक दिन उनकी माता श्रीमती रतिमाई ने अन्तिम हथियार चलाया। पण्डित मोतीलाल की दुःखद मृत्यु के अवसर पर पूरे देश के नेता इलाहाबाद आये हुए थे। श्रीमती रतिमाई ने बापू से अनुरोध किया कि वे फिरोज का मन लगा कर पढने के लिए तथा राजनीतिक गतिविधियों से अलग रहने के लिए कहें। इस पर महात्माजी ने उन्हें समझाते हुए कहा कि उन्हें फिरोज की चिन्ता छोड देनी चाहिए। स्वतंत्र भारत में कोई किसी से यह नहीं पूछेगा कि उसने एम० ए० पास किया है या बी० ए०। केवल यह पूछा जाएगा कि वह कितनी बार जेल गया था। इसके बाद उन्होंने श्रीमती रतिमाई से कहा कि उनका पुत्र फिरोज सच्चा क्रान्तिकारी है। मुझे यदि उस जैसे सात फिरोज दस दस भक्त मिल जाएं तो मैं सात दिनों में देश को स्वाधीनता दिलवा सकता हूं। आप फिरोज की चिन्ता न करें। उसका बाल भी बांका नहीं होगा। मैं फिरोज की सुरक्षा की जिम्मेदारी लेता हूं।

बापू के इन शब्दों ने फिरोज गांधी का मार्ग सर्वथा निष्कंटक कर दिया। एक ओर तो परिवार का प्रतिकूल दबाव कम होगया। दूसरी ओर बापू के पूर्वोक्त शब्द न केवल अमोघ आशीर्वाद के रूप में सामने आये बल्कि वह उनकी देशभक्ति का सच्चा प्रमाण पत्र भी था। बापू के इन शब्दों ने बिजली की कौंध की तरह उनका पूरा शरीर रोमांचित कर दिया और स्नायु मण्डली में झनझनाहट उत्पन्न करदी। उन्होंने पूरा निश्चय कर लिया कि जीवनपर्यन्त साम्राज्यवाद के विरोध में संघर्ष करूंगा तथा मातृभूमि की स्वाधीनता से पहले चैन की सांस नहीं लूंगा। तब से उन्होंने नगर कांग्रेस कमेटी के कार्यों में और भी सक्रिय हो कर भाग लेना प्रारंभ कर दिया। उन दिनों पण्डित जवाहर लाल नेहरू और के० डी० मालवीय नगर कांग्रेस कमेटी के क्रमशः अध्यक्ष एवं महामन्त्री थे।

उनकी कुछ विशिष्ट योग्यताओं का आभास विद्यार्थी जीवन में ही मिलने लगा था। विवादास्पद समस्याओं में मध्यस्थता करने की और उनका निबटारा करने की उनकी असाधारण क्षमता उस समय भी प्रकट होने लगी थी।

उस समय देश ऐसी ऐतिहासिक परिस्थितियों से गुजर रहा था कि किसी भी देशवासी के लिए राजनीति से विमुख होकर निष्क्रिय बैठना संभव नहीं था। देश की आर्थिक स्थिति बिगड़ती जा रही थी। देश का परम्परागत सामन्ती ढंग का कृषि ढांचा टूट रहा था और किसानों तथा सामन्ती तत्वों के बीच वर्ग संघर्ष निरन्तर तेज होते जा रहे थे। शहरों में पूंजीवाद का विकास रुका हुआ था और विश्वव्यापी आर्थिक मन्दी ने भारत की कमजोर अर्थव्यवस्था को मजदूर आन्दोलनों की ज्वालामुखी पर खड़ा कर रखा था। शिक्षित मध्यम वर्ग बेरोजगारी और भविष्य की चिन्ता से इतना आशंकित था कि बड़ी तेजी के साथ पूंजीवाद के विरोध में उठ रहे प्रगतिशील आन्दोलनों में खिंचता जा रहा था। ऐसी ही घड़ी में जब साईमन कमीशन के बहिष्कार का राजनीतिक कार्यक्रम जनता के सम्मुख रखा गया तो जंगल की आग की तरह वह आन्दोलन पूरे देश में फैलता चला गया। एक क्षण में ही और झटके के साथ राष्ट्र की सारी निष्क्रियता हवा में गायब हो गयी।

साम्राज्यवाद इतना अलहदा जा पड़ा था कि वह केवल विरोधी प्रचार द्वारा जनता को आन्दोलनों से विमुख करने में असमर्थ था। अतः उसने जनभावनायें तथा आन्दोलन कुचलने के लिए दमन का सहारा लेना प्रारंभ कर दिया। ऐसी दशा में कांग्रेस के लिए साम्राज्यवादी दमन चक्र का विरोध करना आवश्यक हो गया। फलस्वरूप फरवरी १९३० में कांग्रेस कार्यकारिणी की एक महत्वपूर्ण मीटिंग हुई। उसने बापू पर यह कार्यभार सौंपा कि वे राष्ट्र का मनोबल ऊंचा करने के लिए तथा साम्राज्यवादी दमनचक्र का विरोध करने के लिए संघर्ष का

जो भी तरीका अपनायेगे भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस उसका पूरा समयन करगी।

पूर्वोक्त प्रस्ताव के प्रकाश मे बापू ने राष्ट्रव्यापी आदोलन की रूपरेखा तयार की। उन्होने नमक सत्याग्रह करके सरकारी कानून तोडन का और सविनय अवज्ञा आदोलन छेडने का निश्चय किया। इसके लिए १२ माच १९३० का दिन तय किया गया कि उस दिन बापू सत्याग्रहियो के साथ डाडी मात्र प्रारभ करगे। उन्होने २४ दिनो मे २०० मील की पैदल यात्रा की। इस पदयात्रा ने पूरे देश को खडा कर दिया और ऐसा अनुभव होने लगा जैसे कि पूरा देश डाडी अभियान म भाग ले रहा है। गाधीजी ने डाडी मे नमक बनाकर कानून तोडा। इसके बाद पूरे देश म धरना और पिकेटिंग का अभियान प्रारम्भ हो गया। विदेशी कपडो का बहिष्कार, शराब की दुकानो पर धरना और बिलायती कपडों की होली जलाना राष्ट्रव्यापी घटना बन गयी। जवाहर लाल जी और अय सभी बडे नेता गिरफ्तार कर लिये गये। गाधीजी को यखदा जेल म रख दिया गया। सरहदी गाधी खान अब्दुल गफ्फार खान न इस आदोलन म बहुत अग्रणी भाग लिया था। पहली गोलमेज कान्फ्रेंस का बहिष्कार भी चालू रहा।

जिन हजारो होनहार नौजवानो ने पहली बार आन्दोलन म भाग लिया और जेल यात्रायें की उनमे फिरोज गाधी भी प्रमुख थे। १८ वष की आयु म वे पहली बार और २० साल की आयु मे दूसरी बार १९३२ मे जेल गये थे।

परीक्षा की हर घडी मे उनकी देशभक्ति खरी उतरी और वे कुन्दन की तरह चमकते रहे।

सेवानिष्ठ फिरोज गाधी

पीछे बताया जा चुका है कि आनन्द भवन आने वाले प्रत्येक नवयुवक भारतवासी पर कमला जी के स्नेह का कितना व्यापक प्रभाव पडता था। फिरोज गाधी पर उनका विशेष प्रभाव पडा था। इसका एक कारण यह भी था कि फिरोज गाधी का परिवार उनके राजनीतिक वातावरण और विचारो के अनुरूप नहा था। यही कारण है कि अपनी राजनीतिक गतिविधियो के सन्दभ म उन्ह प्राय घर से बाहर ही रहना पडता था। अत परिवार म वे जिस स्नेह की कमी अनुभव करते थे, वह उन्ह नेहरू परिवार म कमला जी से विशेष रूप से प्राप्त होता रहता था। उनके प्रति वह माता के समान प्रबल आकपण मे आकृष्ट रहते थे। दुर्भाग्य से धीरे धीरे कमला जी बीमार रहने लगी और कई महीना बाद पता चला कि वे क्षय राग से पीडित है। पता चलते ही उन्ह लखनऊ अस्पताल म भरती कराया गया। फिरोज गाधी इलाहाबाद रहते हुए भी नियमित रूप से कमला जी की सेवा के लिए लखनऊ आते जाते रहते थे। अध्ययन चालू रखते हुए भी वे कई कई दिनो तक लखनऊ रहते थे। परन्तु रोग असाध्य होता गया। डाक्टरो की सलाह से उन्ह वाद मे भुवाली सेनीटोरियम मे भरती किया गया। वहा भी फिरोज गाधी का वह सेवा सुश्रूषा का सिलसिला निरन्तर चलता रहा। फिरोज की उपस्थिति म कमला जी मानसिक रूप से यह अनुभव करती थी जैसे कि उनका अपना पुत्र उनकी सेवा सुश्रूषा म लगा है।

भुवाली सेनीटोरियम म भी कमला जी का स्वास्थ्य नही सुधरा। पण्डित नेहरू उन दिनो जेल म ही थे जब उन्हे योरोप के वाण्डेन वेईलेस सेनीटोरियम म दाखिल करने का निणय किया गया। पूरे विश्व के समाजवादी आन्दोलन का दबाव पडने पर ही ब्रिटिश सरकार ने पण्डित नेहरू को अपनी पत्नी की चिकित्सा के लिए जेल से मुक्त किया था। वे यहा करीब डेढ दो वर्षों तक रही और पूरी

इसी तरह चलता रहा। वे कभी चैन से इकट्ठे नही मिल सके। साम्राज्यवाद सत्ता ही उन दोनो के बीच मे अलंघ्य दीवार बनकर खडा रहा।

परन्तु कमला जी का कभी पण्डित जी से कोई शिकायत नही रही। यहा तक कि देश के लिए तपस्या मे लगे वह महापुरुष अपनी लाडली पुत्री के लिए भी उतना समय कभी नही निकाल सके जितना एक साधारण पिता तक निकाल लेता है। परिवार के सभी लोग यह भली भांति जानते थे कि वे जिस साधना मे लगे है वह साधारण नही है, तथा उसमे से समय निकाल सकना कदापि संभव नही हो सकता। पंडित जी कमला जी के प्रति कितने भावुक थे इसका पता बहुत बाद मे चला। पण्डितजी ने जीवनपर्यन्त कमला जी के अस्थि अवशेष अमरत्व निधि की तरह संजोकर रखे थे। उनकी यह हार्दिक इच्छा थी कि प्रयाग संगम पर उनके अस्थि अवशेषो का विसर्जन करते समय उसके साथ ही कमला जी के अस्थि अवशेषो का भी विसर्जन किया जाय। अपनी पत्नी के प्रति इतनी निष्ठा और भक्ति शायद ही किसी आधुनिक पुरुष मे देखी जा सकती है। और पण्डित जी तो अनीश्वरवादी एव द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी थे। वे वैज्ञानिक समाजवाद के प्रकाण्ड ज्ञाता थे। धर्म और पुनर्जन्म मे विश्वास नही रखते थे। परन्तु कमला जी के प्रति, अपनी पत्नी के प्रति इतने निष्ठावान थे कि जीवनपर्यन्त उनके अस्थि अवशेषो को अपनी अटैची मे रखे फिरते रहे।

ऐसी थी कमला जी! ऐसे थे पण्डित नेहरू और ऐसे थे फिरोज गांधी जो पुत्र न होते हुए भी पुत्र की तरह कमला जी की सेवा मे संलग्न रहे!!!

योरोप के मुक्त वातावरण का प्रभाव

देश का घटनाक्रम इतना राजनीतिक हो गया था कि फिरोज गाधी के लिए सक्रिय राजनीति से अलग रहना असम्भव हो गया। प्रयत्न करके भी उनके लिए अध्ययन चालू रखना सभव नही रहा। अत परिवार के तमाम लोगो ने और विशेष रूप से उनकी बुआ ने फिरोज पर दबाव डाला कि वे विद्याध्ययन के लिए इगलैण्ड चले जायें। परिणाम-स्वरूप २३ वर्ष की आयु मे सन १९३५ म वे विद्याध्ययन करने के लिए इगलैण्ड चले गए। उनकी शिक्षा का व्यय भार आशिक रूप से उनकी बुआ ने वहन किया और आशिक रूप से स्वय पण्डित जी ने—उन्होने ऐसी व्यवस्था करवा दी थी जिसके आधार पर पत्रकार के रूप म थोडा समय काम करके वह अपनी जीविका चला सकते थे। इग्लैण्ड मे विद्याध्ययन के लिए प्रेरित करने म स्वय कमला जी का भी हाथ था।

वहा उन्होने लन्दन स्कूल आफ इकानामिक्स मे प्रवेश लिया और विद्याध्ययन करते हुए भी बेन्डेन बेईलेस के सेनीटोरियम मे जा जाकर कमला जी की देख भाल करते रहते थे।

यद्यपि फिरोज गाधी को इगलण्ड म केवल विद्याध्ययन करने के लिए भेजा गया था और यह आशा की गयी थी कि व राजनीतिक हलचलो से दूर ही रहेगे परन्तु यह धारणा निराधार सिद्ध हुई। यहा आने के बाद तो फिरोज गाधी राजनीति म और भी गले तक डूब गये और योरोप के मुक्त वातावरण ने उनके बौद्धिक चिन्तन म और भी अधिक गतिशीलता भर दी।

दो महायुद्धो के बीच का योरोप अजीबोगरीब आशकाओ से भरा हुआ था और उसम दो प्रकार की परस्पर विरोधी प्रवृत्तिया हावी होती जा रही थी। एक ओर तो समाजवादी सोवियत सघ था जो पूजीवाद और सामन्तवाद के पुराने खण्डहरो के मध्य से नय समाजवादी समाज के निर्माण के लिए प्रयत्न

हीन था। दूसरी ओर इटली और जर्मनी म ऐसी फासिस्ट तानाशाही सिर उठा रही थी जिसने पूरे योरोप और दुनिया के पुराने ढाचे को चुनौती दी थी, जो दुनिया की मण्डियो का दुबारा बटवारा करने के लिए दूसरे महायुद्ध की धमकिया दे रहा था और साथ ही समाजवादी सोवियत सघ पर खुले हमले की पैरवी कर रहा था।

एशिया म जापानी सैन्यवाद इन दोनो से सहयोग करके कोरिया, चीन, वियतनाम और पूरे दक्षिण पूर्वी एशिया पर नरसहार के लिए अग्नि वर्षा कर रहा था।

यद्यपि ये फासिस्ट शक्तिया नये सिद्धान्तो और मान्यताओ की घोषणा करके जनता म भ्रम फैलाने का प्रयत्न करती थी कि वे किसी नई व्यवस्था की स्थापना के लिए मौलिक सिद्धान्तो का निरूपण कर रहे हैं परन्तु फासिज्म कोई नया सिद्धान्त या व्यवस्था नही है। फासिस्ट नगे रूप मे और भोडे ढग से पूजीवाद की असगतियो को ही उजागर कर रह थे। यद्यपि पूजीवाद ने सदा ही साम्यवाद पर यह आरोप लगाया है कि वह जनतन्त्र या ससदीय प्रशासनिक ढाचे का विरोधी है पर तु फासिज्म, जो पूजीवाद का ही सर्वाधिक आक्रामक रूप है, और एकाधिकारी पूजीवादी व्यवस्था का स्वाभाविक परिणाम है खुले आम ससदीय जनतन्त्र का विरोध करता है और उसे "मुण्ड गिनने" की राजनीति या मूर्खों का शासन कह कर पुकारता है।

इंग्लैण्ड म प्रवासी भारतीय विद्यार्थी फासिज्म के कटु आलोचक थे। पर तु उन्ह यह देखकर आश्चय नही हुआ कि इगलैण्ड, फ्रास और अमरीका यद्यपि ससदीय जनतन्त्र के समथन मे दुहाई देते हैं, फिर भी वे अन्दर ही अन्दर फासिज्म से मिले हुए है। समाजवादी सोवियत सघ का सफाया करने के लिए व उसे पालपास कर तैयार कर रहे हैं।

इस प्रकार चौथे दशक मे फासिज्म और साम्यवाद एक दूसरे के आमने-सामने खडे थे और मुख्य प्रतिद्वन्द्वी के रूप म उभर रह थे।

फासिज्म छोटे छोटे देशो की स्वाधीनता का अपहरण कर रहा था। जिन देशो पर अब से पहले ब्रिटेन फ्रास, पुर्तगाल और दूसर साम्राज्यवादी देशो का शासन था, वे फासिज्म के खिलाफ युद्ध करने की तथा अपने अधीन देशो की सुरक्षा करने की दुहाई तो बहुत देते थे परन्तु फासिज्म के निर्णायक हमलो के समय उन्ह मझधार म छोडकर भाग खडे होते थे। योरोप, एशिया और अफ्रीका के अनेक देशो मे पुराने साम्राज्यवादी ऐसी ही घृणित हरकतें कर रहे थे।

उन्होंने सबसे बडा और सबसे पहला धोखा स्पेन के साथ किया था।

स्पेन मे फासिस्टो की सहायता से फाको ने ऐसे निरकुश शासन की स्थापना

के लिए लारगनरी राज्यसत्ता के विरुद्ध गृहयुद्ध छेड़ा था जो अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए इन तथाकथित लोकतान्त्रिक सरकारों से सहायता माँग रहा था। परन्तु फ्रांस और इंगलैण्ड जो बड़ी आसानी से सहायता दे सकते थे, उदासीन थे। उन्हें स्पेन में लोकतन्त्र की रक्षा करने में रुचि नहीं थी। इसके अनेक राजनीतिक कारण थे। पहला तो यही था कि वहाँ संसदीय जनतान्त्रिक प्रणाली के माध्यम से चुनाव द्वारा ऐसी सरकार की स्थापना की गई थी जो लोकतन्त्र को समाजवादी आर्थिक विकास का माध्यम बनाने की घोषणा कर चुकी थी। विश्व का यह पहला प्रयोग था। पूँजीवादी विचारक इससे भय खा रहे थे कि यदि स्पेन की तरह दूसरे पूँजीवादी देशों की श्रमजीवी जनता ने भी संसदीय लोकतन्त्र को समाजवादी पुनर्निर्माण का माध्यम बनाया तो उनके देशों में पूँजीवाद का क्या होगा? यही कारण है कि फासिस्टों की तरह ये पूँजीवादी प्रचारक भी स्पेन के गृह युद्ध में लोकतन्त्रवादियों की पराजय तथा फासिस्टों की विजय में रुचि रखते थे।

अतः लोकतन्त्र की रक्षा के लिए चीख पुकार मचाने वाले ये लोग फासिज्म का पालन पोषण कर तथा प्रोत्साहन देकर समाजवादी सोवियत संघ से लड़ाना चाहते थे ताकि काँटे से काँटा निकाला जा सके।

यूरोप में घटने वाली इन घटनाओं का प्रभाव केवल यूरोप तक ही सीमित नहीं था। पूरा विश्व इन्हें आँखें फाड़ कर देख रहा था और अपने तरीके से नतीजे निकाल रहा था। एबीसीनिया और स्पेन की घटनाओं से साधारण समझ के लोग भी यह मानने लगे थे कि पूँजीवाद वास्तव में लोकतन्त्र का समर्थक नहीं है। पूँजीवादी प्रचारक तभी तक लोकतन्त्र का समर्थन करते हैं जब तक उन्हें यह विश्वास रहता है कि लोकतन्त्र उन्हीं के पक्ष में निर्णय देगा तथा उन्हीं को सत्ता सौंपेगा। परन्तु एक बार जब उन्हें यह आशंका हो जाती है कि चुनावों के माध्यम से सत्ता पूँजीवाद के विरोधियों के हाथों में भी जा सकती है तो वे खुल कर और निर्लज्जतापूर्वक लोकतन्त्र पर प्रहार करते हैं। संसदीय चुनाव प्रणाली को ताक पर रख देते हैं और तलवार के सहारे राज काज चलाते हैं। यही प्रणाली फासिज्म के नाम से पुकारी जाती है।

फासिज्म के उभार ने विश्व के पददलित और पराधीन देशों को चौंका दिया। वे कमर कसकर राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिए संघर्ष करने लगे। तीसरे दशक तक इंगलैंड फ्रांस, पुर्तगाल आदि प्रमुख साम्राज्यवादी देशों ने एशिया और अफ्रीका के अधिकांश देशों पर अपना अधिकार जमा रखा था। ये लोग अपने उपनिवेशों की रक्षा करने का दम भरा करते थे। परन्तु जब इटली, जापान और जर्मनी के खूँखार फासिज्म ने इन उपनिवेशों और योरोप के स्वाधीन राष्ट्रों की प्रभुसत्ता पर

हमले प्रारम्भ किये तथा उन्हें अपना गुलाम बनाना प्रारम्भ कर दिया तो इन देशों की जनता की आंखें खुलने लगीं। वियतनाम, लाओस, कम्बोडिया, चीन, भारत, मिस्र, सीरिया, कोरिया और अनेक प्रमुख देशों में जब पुराने साम्राज्यवादी देशों के पांव उखड़ने लगे तो नवागन्तुक आक्रमणकारियों का सामना करने के लिए इन देशों की जनता ने कमर कसनी प्रारम्भ कर दी। भारत में भी ऐसा ही हुआ था।

यही कारण है कि संवैधानिक तरीकों से चलाये जा रहे स्वाधीनता आन्दोलन तीव्रता के शिखरों पर चढ़ने लगे और सशस्त्र मुठभेड़ों का रूप लेने लगे। चीन, वियतनाम, लाओस, कम्बोडिया, बर्मा, मध्यपूर्व के देशों और विशाल भूभागों पर हथियारबन्द जनता ने पुराने साम्राज्यवादियों तथा नवागन्तुक फासिस्टों का प्रतिरोध करना प्रारम्भ कर दिया। तीसरे दशक का अन्त होते होते भारत में स्वाधीनता संग्राम की आंधी में स्त्री पुरुष तथा बूढ़े और जवान, तेजी से खिंच खिंच कर आने लगे। किसी भी भारतवासी के लिए उदासीन या तटस्थ होकर बैठे रहना सम्भव नहीं था।

फिरोज गांधी विवादास्पद समस्याओं में मध्यस्थता करने का और विवाद निपटाने के लिए वातावरण का कौशल प्रारम्भ से ही रखते थे। वे निष्ठावान् कांग्रेस कार्यकर्ता थे और इसके लिए अपने सुख की कभी परवाह नहीं करते थे।

साईमन कमीशन के बहिष्कार ने देशवासियों को साम्राज्यवाद के खिलाफ एक होकर संघर्ष करने के लिए एक बड़ा अवसर तो दिया ही, परन्तु इसके अलावा भी देश की बिगड़ती हुई आर्थिक दशा और बुद्धिजीवी वर्गों में बढ़ते हुए व्यापक असन्तोष ने साम्राज्यवाद के विरोध में देशव्यापी उभार को जन्म दे दिया था। साम्राज्यवाद ने जन भावनायें कुचलने के लिए आतंक फैलाना और दमन करना प्रारंभ कर दिया था। फरवरी १९३० में कांग्रेस कार्यकारिणी की एक मीटिंग में महात्मा गांधी पर यह जिम्मेदारी डाली गयी कि वे इस दमनचक्र का विरोध करने के लिए कोई आंदोलन छेड़ें। गांधीजी ने बहुत सोच समझ कर सविनय अवज्ञा आन्दोलन नमक सत्याग्रह के रूप में छेड़ना निश्चित किया। इसके लिए उन्होंने १२ मार्च, १९३० को प्रसिद्ध 'डाण्डी मार्च' किया था। २४ दिनों में २०० मील की पदयात्रा करके जब गांधीजी डांडी पहुंचे तो हजारों जनसंख्या में जनता ने उनका स्वागत किया। वहां हजारों लोगों ने सामूहिक रूप से नमक कानून तोड़ा। इसके बाद पूरे देश में सत्याग्रह और सिविल नाफरमानी अभियान छेड़ दिया गया। विदेशी कपड़ों का बहिष्कार, शराब की दुकानों पर धरना और सरकार के खिलाफ नारों की गूंज पूरे देश में फैल गयी।

लाल जी और अन्य नेता गिरफ्तार कर लिये गये। गांधीजी को

नजरब द कर लिया गया। सरहदी गाधी, खान अब्दुल गफ्फार खान ने इस आ दोलन म बहुत अग्रणी भूमिका निभाई। पहली गोल मेज कान्फ्रेंस का बहिष्कार काग्रेस की ओर से चालू रहा।

फिरोज गाधी इस आ दालन म भाग लेकर अपने जाति समुदाय म अग्रणी थे। वे इस राष्ट्रीय सघष म खूब सक्रिय थे। १८ वष की आयु म ही वे १९३० म पहली बार जेल गये।

१९३५ म फिरोज गाधी विद्याध्ययन करने के लिए इगलैंड गये। ६ ७ साल का उनका लन्दन मे प्रवासी जीवन विविध गतिविधिया से भरपूर रहा। फिरोज गाधी के साथ अध्ययन करन वाले उनके साथी श्री हिम्मत सिंह, ससद सदस्य न जो सस्मरण बताये हैं उनसे आभास मिलता है कि जैसे जैस राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितिया बदलती गइ वैसे वैस उनके विचारा का क्षितिज भी उच्च से उच्चतर होता चला गया। ल दन म अध्ययन करते समय अन्तर्राष्ट्रीय कानून और कूटनीतिक सम्ब घ उनके प्रिय विषय थे। इन दोनो विषयो पर उ ह पारगत होने की वहा पूरी सुविधायें मिली और उ हाने उन सुविधाआ का पूरा लाभ उठाया। उ हाने बी० एस० सी० की डिग्री प्राप्त की।

ल दन म पढते समय फिरोज गाधी और उनके साथिया पर ब्रिटिश ससदीय प्रणाली का बडा गहरा प्रभाव पडा था। वे स्वाधीन भारत मे भी शासन की वैसी ही पद्धति चालू करने की कल्पनाए किया करते थे। पर तु १९३६ ३७ म ब्रिटिश प्रधानम त्री और सरकार ने लोकत त्र और ससदीय प्रणाली का जो मजाक बनाया था, उस व्यवस्था के प्रति उनके मन पर बडा विपरीत प्रभाव पडा था। इटली के फासिस्टा और जमनी के नाजियो का हौसला इतना अधिक बढ गया था कि वे लोकत त्रीय ताकता का कदम कदम पर भटके दे रह थे तथा कडी से कडी शर्तें मनवा रह थे। चेम्बर लेन प्रत्यक प्रश्न पर फासिज्म के सामन भुकते थे। वे एक ओर जनत त्र और ससदीय प्रणाली की प्रशसा करते थे और दूसरी ओर नाजिया तथा फासिस्टा से समझौत कर रह थे।

जा भारतीय विद्यार्थी ल दन मे विद्याध्ययन कर रहे थे वे ब्रिटेन की इस दारगी नीति पर क्षुब्ध थ। फिराज गाधी के मन म ब्रिटेन की ससदीय प्रणाली के प्रति गहरी उदासीनता के भाव उत्प न हान लगे थे। यह उदासीनता केवल फिराज गाधी तक ही सीमित नही थी। सभी भारतीय विद्यार्थी ऐसा अनुभव कर रहे थे।

ल दन में उ होंने केवल विद्याध्ययन ही नही किया वल्कि बहुत स निकट से उन वर्गों तथा सामाजिक नेताओं के असली रूपा का देखन का भी अवसर प्राप्त किया जा यथास्थितिवाद की रक्षा के लिए उन दुश्मना के साथ भी समझौता

करते हैं जो रात दिन ससदीय जनतन्त्र का उन्मूलन करने की घोषणाए करते रहते हैं। जो भारतीय विद्यार्थी अपने देश से वहा विद्याध्ययन करने जाते थे उनका मन केवल पुस्तको तक सीमित नहीं रह सकता था। उन दिनो यारोप और विशेष तौर पर लन्दन पूरे ससार की प्रमुख घटनाओ का केन्द्र बिन्दु था। वहा रह कर उन्होंने उन घटनाओ को बडी सूक्ष्मता के साथ देखा, जो विश्व को नया मोड दे रही थी और दुनिया का दृष्टिकोण बदल रही थी। फिरोज गाधी १९३६ ३७ मे पूरे लन्दन म घूम घूम कर भारतीय विद्यार्थियो को यह प्रेरणा देने लगे थे कि अब "समय आ गया है जब उन्हे समाजवादी शक्तियो का साथ देने के लिए कटिबद्ध हो जाना चाहिए।"

उन दिनो एक अन्य भारतीय पारसी जिनका नाम सापुरजी सकलतवाला था, इगलैण्ड म भारतीय विद्यार्थियो पर अत्यधिक प्रभाव रखते थे। सकलतवाला विश्वविख्यात मार्क्सवादी थे। वे प्रसिद्ध भारतीय पारसी परिवार के थे और सर शोहरावजी सकलतवाला के सगे छोटे भाई थे। वे ऐसे प्रवासी भारतीय थे जो ब्रिटिश ससद मे लन्दन के साऊथ बेटरक क्षेत्र से सदस्य भी निर्वाचित हुए थे। महात्मा गाधी तथा प० नेहरू जी से सकलतवाला के घनिष्ठ सम्बन्ध थे। फिरोज गाधी भी सकलतवाला से अक्सर मिला करते थे। उनके बौद्धिक चिन्तन का उन पर व्यापक प्रभाव पडा था। फिरोज गाधी का सम्पर्क एक दूसरे भारतीय नेता, रजनी पाम दत्त के साथ भी था जो विश्वविख्यात मार्क्सवादी थे। वे भारत के प्रसिद्ध राष्ट्रवादी नेता और देशभक्त रमेश चन्द्र दत्त के पुत्र थे। श्री रमेश दत्त इस सदी के प्रारम्भ मे भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस के अध्यक्ष रह चुके थे।

उन हलचल भरे वर्षों मे फिरोज गाधी ने अपनी गतिविधियो द्वारा न केवल भारतीय विद्यार्थियो को बल्कि लन्दन के अन्य जन समुदायो को भी प्रभावित किया। जो भारतीय छात्र उनके साथ विद्याध्ययन कर रहे थे वे आगे चल कर भारत के राजनीतिक जन जीवन के अग्रणी नेता बने। भूपेश गुप्त, मोहन कुमार-मगलम, रजनी पटेल, रेनु चक्रवर्ती, फिरोज गाधी, निखिल चक्रवर्ती, हिम्मत सिह, ज्योति बसु एन० के० कृष्णन, अशोक सेन, पार्वती कृष्णन और रमेश चन्द्रा आदि भारतीय छात्रो की ऐसी टोली थी जो भारत के जन जीवन म करीब ३० ४० वर्षो तक जगमगाते रहे और आज भी जगमगा रहे हैं।

ये विद्यार्थी यूरोप की घटनाओं से इतने अधिक प्रभावित हो चुके थे कि उनके सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण बदल गये थे। वे सभी प्रगतिशील चिन्तन की धारा मे सम्मिलित हो गये थे तथा समाजवाद और साम्राज्यविरोध के प्रभाव म निरन्तर आगे चल गये। इस टोली मे से बहुत कम लोग ऐसे थे जिन्हे फासिज्म पसन्द था और जो समाजवाद की ओर अग्रसर नही होना चाहते थे

इस वास्तविकता को सभी लोग स्वीकार करते हैं कि सन ३५ से १९४१ तक की अवधि में जो भारतीय विद्यार्थी लन्दन में विद्याध्ययन कर रहे थे उनका न केवल जीवन का दृष्टिकोण ही बदल गया था बल्कि उनमें से भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन को आगे चलकर हजारों नये नेता और सच्चे कार्यकर्ता भी मिले थे। ब्रिटेन के मुक्त वातावरण ने न केवल भारत के स्वाधीनता संघर्ष के लिए बल्कि पूरे ब्रिटिश उपनिवेशों की जनता के मुक्ति आन्दोलनों के लिए बड़ी मात्रा में कार्यकर्त्ता और नेता पैदा किये थे। इस संदर्भ में यह कहना असंगत न होगा कि अनेक प्रगतिशील ब्रिटिश नागरिकों ने अपने उपनिवेशों की जनता के कन्धे से कन्धा मिलाकर ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ संघर्षों में भाग लिया था। हम भारतीय बेन ब्रैडले लिस्टर हचिंसन और फिलिप स्प्रैट जैसे अंग्रेज क्रान्तिकारियों को कभी नहीं भूल सकेंगे जो भारत की स्वाधीनता के लिए अपने हिन्दुस्तानी साथियों के साथ मेरठ बाल्शेविक षडयन्त्र केस में गिरफ्तार किये गये थे और जिन्हें लम्बी लम्बी सजाएं दी गयी थीं। ब्रिटिश कम्युनिस्ट पार्टी के अलावा लेबर पार्टी में भी ऐसे अनेक ब्रिटिश नेता थे जो भारत की स्वाधीनता के लिए ब्रिटिश शासकों पर निरन्तर दबाव डाल रहे थे। प्रसिद्ध ब्रिटिश समाजवादी नेता हेरारड लास्की और अन्य जागरूक अंग्रेज भारत की आजादी का समर्थन कर रहे थे।

लन्दन में विद्याध्ययन करने वाले भारतीय विद्यार्थी और प्रगतिशील ब्रिटिश नागरिक तथा लेबर पार्टी जिस भारतीय नेता का सर्वाधिक आदर करते थे, वह महात्मा गांधी के बाद प० जवाहर लाल नेहरू थे। उन्हें प्रगतिशील राष्ट्रीय धारा का मुख्य प्रवक्ता माना जाता था। जिस समय भारत में प्रतिक्रियावादी शक्तियां बहुत उभर रही थीं और उन्होंने कांग्रेस संगठन पर शिकंजा कस लिया था तब पंडित जी अक्सर बहुत परेशान रहा करते थे। इसका वर्णन हम अपनी दूसरी पुस्तक—'नेहरू और मार्क्सवाद' में विस्तारपूर्वक कर चुके हैं। परन्तु पंडित जी व्यवहार कुशल समाजवादी थे। वे प्रतिक्रियावाद की इस बाढ़ को रोकने की योजना कार्यान्वित कर सकते थे। उन्होंने यूरोप में ही इन प्रगतिशील चिन्तकों के सहयोग से एक योजना बनाई थी। जिस समय १९३५-३६ में वे कमला जी की बीमारी के संदर्भ में यूरोप गये हुए थे लोजान में रजनी पाम दत्त के साथ उनकी एक महत्वपूर्ण बैठक हुई थी। इस बैठक में यह निर्णय किया गया था कि लन्दन में पढ़ने वाले विद्यार्थी प्रगतिशील विचारधारा के हैं और उन्हें कांग्रेस में सम्मिलित होकर राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन को प्रगतिशील मोड़ देना चाहिए। प्रगतिशीलता और धर्मनिरपेक्षता के आधार पर ही राष्ट्र की एकता मजबूत करना सम्भव होगा। प्रगतिशील साम्राज्यविरोधी राष्ट्रवादी शक्तियां

ो एकता राष्ट्रीय आन्दोलन को दृढ करती रही।

इस घटना की पुष्टि भूतपूर्व राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन् के पुत्र गोपालजी ने र्टिन जी की जीवनी में की है। आगे चलकर स्वय रजनी पाम दत्त ने भी लोजान में हुए इस मीटिंग की पुष्टि की।

सन् १९३६ में भारतीय विद्यार्थी स्पेन की घटना पर सबसे अधिक चिन्तित थे। विदेशी फासिस्टों से सहयोग लेकर जनरल फ्रांको स्पेन की लोकतन्त्रीय शक्तियों पर प्रहार कर रहे थे। फिरोज गांधी और अन्य भारतीय विद्यार्थियों को इंगलैंड और फ्रांस के विश्वासघात पर बड़ा भारी क्षोभ हुआ था। फिरोज गांधी उच्च मानवीय आदर्शों से कितने अधिक प्रभावित थे, इस बात का पता इसी से चल जाता है कि वे स्पेन में लोकतन्त्र की रक्षा के लिए भारतीय छात्रों का अन्तर्राष्ट्रीय ब्रिगेड में शामिल होने का आह्वान कर रहे थे। कुछ विद्यार्थी इसमें शामिल हु भी। परन्तु ब्रिटेन के प्रगतिशील तत्वों तथा भारतीय छात्र समुदाय और स्वयं प जवाहरलाल नेहरू ने इस प्रश्न पर भिन्न दृष्टिकोण अपनाया था। उनका विचा था कि छात्रों को लोकतान्त्रिक शक्तियों के समर्थन में और फासिज्म के विरो में जनमत तैयार करने तक ही सीमित रहना चाहिए। उनका यह भी विचार विकि अधिक से अधिक धन संग्रह करके लोकतन्त्रीय स्पेन की सहायता कर आवश्यक है। परिणामस्वरूप इंगलैंड में भारतीय छात्रों की एक सघर्ष समि का गठन किया गया। इस समिति ने अन्तर्राष्ट्रीय वाहिनी की सहायता करने लिए ब्रिटेन में धन-संग्रह का अभियान चलाया। इस समिति के संयोजक हिम सिंह बनाये गये और फिरोज गांधी कोषाध्यक्ष चुने गये। स्पेन में लोकतन्त्र रक्षा का सवाल ऐसा युगान्तरकारी प्रश्न बन गया था जिसे लेकर नेहरू और वी० के० कृष्ण मेनन के बीच पहली बार जो घनिष्ठ सम्पर्क कायम वह निरन्तर बढ़ता ही चला गया।

आज संसार में कुछ लोग सिद्धान्त और विचारधारा के बिना ही राज करने की हिमायत करते हैं। परन्तु यह प्रश्न बहुत ही महत्वपूर्ण है कि व्यक्ति राजनीति में भाग क्यों लेता है? क्या शोषणयुक्त समाज में कोई नीति परस्पर विरोधी वर्गों के लिए समान हित की हो सकती है? जो भी व व्यक्ति राजनीति में भाग लेता है क्या उसके लिए यह सोचना आवश्यक न कि वह ऐसा क्यों कर रहा है एवं राजनीति में भाग लेकर वह किन वर्गों के में और किनके विरोध में काम करना चाहता है। राजनीति व्यक्तिगत व्य नहीं है। यह अपने निजी हानि-लाभ की दृष्टि में रख कर भी नहीं की जा स जो लोग ऐसा करते हैं उन्हें बहुत शीघ्र ही राजनीतिक जीवन में बाहर जाना पड़ता है। यही कारण है कि जब फिरोज गांधी और दूसरे

विद्यार्थी इंग्लैण्ड में विद्याध्ययन करते समय स्पेन के गृहयुद्ध की घटनाओं से अत्यधिक उद्विग्न थे तो वे निजी व्यक्तिगत कारणों से नहीं बल्कि राजनीतिक कारणों से थे। वे जिन लक्ष्यों से प्रेरित होकर भारतीय राजनीति में उभर रहे थे, स्पेन में उन लक्ष्यों की हत्या की जा रही थी। इसी प्रकार यद्यपि वे ब्रिटिश साम्राज्यवादियों को देश से बाहर निकालने के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने के लिए उद्यत थे और राजनीतिक स्वाधीनता की वे देवी की तरह उपासना करते थे परन्तु फिर भी वे इस स्वाधीनता को इससे भी बड़ी उपलब्धि के लिए इस्तेमाल करना चाहते थे। फिरोज गांधी और उनके सभी साथियों का दृढ़ मत था कि केवल समाजवाद के आधार पर ही भारत को गरीबी और अज्ञान से मुक्ति दिलाई जा सकती है।

इंग्लैंड में विद्याध्ययन करते समय फिरोज गांधी का मानसिक चिन्तन पूर्णतया धर्मनिरपेक्ष हो चुका था। उन्होंने अपने आपको नेहरूजी की चिन्तन परम्पराओं के साथ पूर्णतया तन्मय कर लिया था।

नेहरूजी प्रबलतम साम्राज्य विरोधी थे। उन्होंने अपने जीवन में कभी भी साम्राज्यवाद के साथ समझौता नहीं किया। विपरीत इसके, वे उन तमाम शक्तियों को एक सूत्र में पिरो देना चाहते थे जो मानव समाज की मुक्ति और खुशहाली के लिए संघर्ष कर रही हैं। यही कारण है कि वे एक समाजवादी विचारक होने के नाते जहाँ सोवियत संघ के साथ गहरा लगाव रखते थे वहाँ उपनिवेशवाद के विरुद्ध और फासिज्म के खिलाफ संघर्ष करने वाले तमाम राष्ट्रों के देशभक्तों के आन्दोलनों में भी एकता स्थापित करने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहते थे।

परन्तु वे यह भलीभांति जानते थे कि जब तक गृह नीति के क्षेत्र में तमाम प्रगतिशील शक्तियों की एकता कायम नहीं हो जाती तब तक न तो सामन्ती परम्पराओं के विरुद्ध संघर्ष किया जा सकता है न रूढ़िवादी संस्कृतियों के अवशेष मिटाये जा सकते हैं और न साम्राज्यवाद के षड्यन्त्रों का सफाया किया जा सकता है।

यही कारण है कि नेहरूजी राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय दोनों क्षेत्रों में देशभक्त प्रगतिशील तत्वों और समाजवादी शक्तियों के बीच अटूट एकता स्थापित करने का प्रयत्न करते रहते थे।

आज भी हमारा देश श्रीमती इन्दिरा गांधी के नेतृत्व में इन दोनों मूल सिद्धान्तों का अनुसरण करता है। यही कारण है कि हिन्दुस्तान की राजनीति में चाहे अनेक प्रकार के उतार चढ़ाव आते रहे हैं परन्तु वह निश्चित दिशा में नव निर्माण की ओर अग्रसर होता रहता है और विघ्नकारी शक्तियों का कुचल देने

की क्षमता रखता है। नेहरू जी ने जिस सैद्धान्तिक बुनियाद पर हिन्दुस्तान की राजनीति प्रतिष्ठित की थी उसमें साम्प्रदायिकता, जातीय संकीर्णता, राष्ट्रीय विघटन और फासिज्म के लिए कोई गुंजायश नहीं है।

फिरोज गांधी इन दोनों मूल सिद्धान्तों के प्रबल पक्षधर थे।

वे मार्च, १९४१ में हिन्दुस्तान लौटे। स्वदेश वापिस आने समय उनके राजनीतिक विचार परिपक्व हो चुके थे। यहां आने के तुरन्त बाद उन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन की समस्याओं के बारे में बहुत कम सोचा और राष्ट्रीय स्वतन्त्रता की समस्याओं के बारे में ही सोचते और संघर्ष करते रहे।

इंगलैण्ड में विद्याध्ययन करते समय फिरोज गांधी केवल स्पेन के गृहयुद्ध तथा अन्य राजनीतिक संघर्षों में ही रुचि नहीं लेते थे। वे साम्राज्य विरोधी आन्दोलनों तथा संगठनों के निर्माण में भी सक्रिय भाग लेते थे। उन दिनों महान भारतीय सपूत वी० के० कृष्ण मेनन इंगलैण्ड में ही रह रहे थे और इण्डिया लीग के माध्यम से विरोधी राष्ट्रीय मुक्ति अभियान चला रहे थे। उन्होंने इण्डिया लीग में वी० के० कृष्ण मेनन के नेतृत्व में कई वर्षों तक अनथक कार्य किया और इस संगठन को भारतीय स्वाधीनता संघर्ष के लिए प्रभावशाली माध्यम बना दिया।

१९३६ में अपनी माता की दुःखद मृत्यु तथा पिता के जेल में भेज दिये जाने के बाद इंगलैण्ड में अपना अध्ययन चालू करने के लिए इन्दिरा जी भी लन्दन चली आईं। वे विद्याध्ययन करने के साथ साथ साम्राज्य विरोधी आन्दोलनों में भी भाग लेती थी। इसके लिए उन्होंने भी इण्डिया लीग को अपनी संगठित कार्यवाहियों का माध्यम बनाया जहां फिरोज गांधी पहले से ही भाग ले रहे थे। इन्दिरा जी भी स्पेन की घटनाओं पर क्षुब्ध थी तथा अपने पिता की तरह लोकतान्त्रिक शक्तियों की विजय के लिए जनमत तैयार करने का अभियान चला रही थी। विद्याध्ययन, सक्रिय राजनीतिक आन्दोलन पूर्व परिचित फिरोज गांधी के साथ मिल कर किये गये आन्दोलनों और श्री वी० के० कृष्ण मेनन के स्नेह एवं नेतृत्व ने इन्दिराजी को माता की मृत्यु तथा पिता की जेल यात्रा की पीड़ा सहन करने की शक्ति प्रदान की थी।

विवाह और पारिवारिक जीवन

मार्च १९४१ म फिरोज गाधी इन्दिरा के साथ इ गलैण्ड से जलयान द्वारा भारत वापिस लौटे थे। जिस यान से वे भारत लौटे थे उसम इ गलण्ड मे विद्याध्ययन करने वाले अनेक भारतीय छात्र भारत वापिस लौटे थे। वहा विद्याध्ययन चालू रखना दूभर हाता जा रहा था। आये दिन शत्रुओ के विमान बम वर्षा करते थे और हर समय ब्लेक आउट (अन्धकार) छाया रहता था। कक्षायें तथा शिक्षा सस्थायें बन्द थी। सरकार विदेशियो की सुरक्षा की जिम्मेदारी लेने मे असमर्थ थी।

इसके अलावा भारत मे साम्राज्यवाद के विरोध मे और राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिए प्रबल जनान्दोलन की सम्भावनायें तेज होती जा रही थी। इ गलण्ड म अध्ययन करने वाले प्रत्येक छात्र और छात्रा का मन भारत की घटनाओ की ओर लगा हुआ था। वे यह चाहते थे कि मातृभूमि की स्वाधीनता के लिए किए जा रहे इन आदोलनो म वे अवश्य भाग लें और अपने राजनीतिक कर्त्तव्यो का पालन करें।

यद्यपि फिरोज गाधी और इन्दिरा जी के बीच परिचय बहुत पुराना था, वे साथ साथ राजनीतिक आन्दोलनो मे भाग लेते रहे थे तथा इ गलैण्ड मे अध्ययन करते समय और इण्डिया लीग मे भारतीय स्वाधीनता के लिए सघर्ष करते समय उन्होने एक दूसरे को बहुत सन्निकट से देखा था। फिर भी प्रारम्भ म यह परिचय केवल राजनीतिक और सामाजिक था और वे राजनीतिक साथियो के रूप म आन्दोलन म काय करते थे। परन्तु आगे चलकर कुछ पारिवारिक और ऐतिहासिक परिस्थितियो ने ऐसा मोड लिया कि वे दोनो दाम्पत्य सूत्र म बध गये। देश के बडे से बडे नेता और गण्यमान्य व्यक्तियो ने विवाह की वेदी पर एकत्रित होकर वैदिक पद्धति से किये जा रहे उस विवाह सस्कार को न केवल

समथन किया बल्कि अपने पवित्र आशीवादो से नवदम्पति को विभूषित भी किया।

नेहरू परिवार के परम शुभचिन्तक और हितैषी राष्ट्रपिता ने इस अवसर पर अपना आशीर्वाद प्रेषित करके वर वधू को विशेष रूप से अलकृत किया।

कर्नाटक प्रदेश के वतमान राज्यपाल और नेहरू परिवार के साथ पिछली आधी शताब्दी से भी अधिक समय तक सहयोगी के रूप म काय करने वाले वयोवृद्ध काग्रेस नेता और देशभक्त श्री उमाशकर दीक्षित ने इस विवाह के सम्बन्ध मे बडा रोचक सस्मरण दिया ह। उसम वे लिखते हैं कि फिरोज गाधी को मैंने पहली बार देखा, माच १९४२ म आनन्द भवन म इन्दिरा जी के साथ उनके विवाहोत्सव पर। वह एक अपूव सौंदय सौम्य और शालीनता का अविस्मरणीय दृश्य था। देश के कोने कोने से आये परिवार के मित्रो एव निकट सम्बन्धियो की कुछ चुनी हुई मडली के बीच—सीमित आमन्त्रित जनो का बहुमत इलाहाबाद और सयुक्त प्रात (जिसे अब उत्तर प्रदेश कहते हैं) से आया था और ये लोग ७ या ८ कुर्सियो की पक्तियो मे, जिनके बीच बहुत सकरा रास्ता छोडा गया था, बैठे हुए थे—विवाह का यह अनूठा उत्सव सम्पन्न हुआ। बनारस के एक विद्वान शास्त्री जी आये थे, उन्होंने प्रामाणिक परम्पराओं पर आधारित वेद का पाठ किया उच्च किन्तु मधुर ध्वनि मे और ये सादा किन्तु मनमोहक विवाह सम्पन्न कराया। आनन्द भवन के पिछवाडे की ओर के खुले दालान के अगले हिस्से के मध्य मे इन्दिरा जी और फिरोज गाधी खडे थे और जवाहरलाल जी तथा विजयलक्ष्मी पडित हाथो म एक छोटी सी टोकरी उठाये हुए थे जिसम गुलाब के फूलो की सुगन्धित पखुडियां थीं जिन्हे वे शास्त्री जी द्वारा उच्चरित प्रत्येक मन्त्र के अन्त मे वर-वधू पर फेंकते थे। हर दो मिनट के बाद वे अन्दर जाते और हर बार और गुलाब के फूल लेकर आते। अन्त मे मन्त्रोच्चारण समाप्त हुआ और उसी के साथ वह सक्षिप्त समारोह भी सम्पन्न हुआ।

डा० सरोजिनी नायडू, डा० कैलाश नाथ काटजू, श्री रफी अहमद किदवई, मौलाना अबुल कलाम आजाद, डा० बी० सी० राय, डा० राजेन्द्र प्रसाद, श्री सम्पूर्णानन्द, श्री लाल बहादुर शास्त्री और अन्य गण्यमान्य व्यक्तियो ने इस विवाह मण्डप की शोभा बढाई।

फिरोज गाधी सिद्धान्तनिष्ठ राजनीतिक नेता थे। राजनीतिक व सामाजिक कार्यों म अत्यधिक व्यस्तता के कारण अपने परिवार की देखभाल के लिए वे समय नहीं निकाल पाते थे। इन्दिरा जी का जीवन भी बडी-बडी राजनीतिक जिम्मेदारियो के कारण बहुत अधिक व्यस्ततापूण रहता रहा ह। इसके अलावा, अपने पिता की सेवा और देखभाल करना भी उनके जीवन का सर्वोपरि धम था। उनकी सेवा के

कारण ही पण्डित जी इतनी लम्बी आयु तक इतने सक्रिय रह सके और देश का नेतत्व करते रहे। यदि १९६२ म माओवादी भारत पर विश्वासघातपूण आक्रमण न करते तो जिस तत्परता से इन्दिरा जी उनकी देखभाल और सेवा करती थी, उससे यह आशा करना स्वाभाविक है कि इस महान सन्त राजनीतिज्ञ से देशवासी अभी बहुत दिनो तक नेतृत्व प्राप्त करत रहत।

परन्तु इन जबरदस्त राजनीतिक गतिविधियो के बावजूद फिरोज गाधी और इन्दिराजी जी अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियो को न केवल निभाते रहे है बल्कि आदश माता पिता की तरह उन्होने अपन दोनो होनहार बच्चो का पालन पोषण तथा शिक्षण किया था।

फिरोज गाधी उच्च कोटि के पत्रकार प्रबन्धक एव सासदिक थे। ससद सदस्य निर्वाचित होने के बाद तो उनका घर सदा ही जनता से भरा रहता था और व उसकी समस्याओ के सुलझाने म व्यस्त रहते थे। परन्तु उन्होने अपने राजनीतिज्ञ व तथ्यो के मुकाबिले पारिवारिक जिम्मेदारियो को कभी खडा नही होने दिया। सन्तुलित ढग से दोनो जिम्मेदारियां निभाते रहे।

राजीव और सजय पुत्र रत्न हैं। उनके जन्म न फिरोज गाधी मे पितत्व की भावनायें उभार कर उनके मानवीय व्यक्तित्व को और भी अधिक मानवतापूर्ण एव आकषक बना दिया था। ये दोनो भाई अपने पिता के समान सुन्दर, सौम्य, दढ प्रतिज्ञ, प्रभावशाली और कत्तव्यनिष्ठ हैं।

इन दोनो भाइयो की देखभाल और लालन पोषण मे स्वय पण्डित जी बहुत रुचि लेते थे। कभी कभी वे इनके साथ घटो गुजारा करते थे जिससे उन्हे स्वय को भी लाभ पहुचता था। राजनीति थकावट लाती ह। उस समय ये दोनो भाई भोले बालक थे। उनके सम्पक से उन्ह सन्तोष तथा सुख प्राप्त होता था। दूसरी ओर इन दोनो भाइयो को उस महान व्यक्ति की भुजाओ म खेलन का सौभाग्य मिलता था जो विश्व की राजनीति की धुरी बनी हुए थे।

राजनीतिक उथल-पुथल के वर्ष

फिरोज गांधी उन साधारण नागरिकों में नहीं थे जो शादी विवाह की औपचारिकताओं में ही सीमित रह जाते हैं। अगस्त, १९४२ में आन्दोलन का दमन करने के लिए साम्राज्यवाद ने जो दमन चक्र चलाया था उसमें विवाह के ६ महीने बाद ही ये गिरफ्तार कर लिए गये थे। पूरे देश [illegible] धर-पकड़ चल रही थी। सभी प्रमुख नेता जेलों में बन्द कर दिये गये थे।

१९४२ के स्वाधीनता आन्दोलन में फिरोज गांधी को तीसरी बार जेल जीवन व्यतीत करना पड़ा। जेल में भी उन्होंने जिस निर्भीकता और बुद्धिमत्ता का परिचय दिया था उससे अन्य बन्दी साथियों को जबर्दस्त प्रोत्साहन मिलता था।

सन् १९४२ का वर्ष भारत के स्वाधीनता संघर्ष के इतिहास में जन विद्रोह का वर्ष माना जाता है। वैसे तो ब्रिटिश साम्राज्यवादी यह दावा करते थे कि वे फासिज्म के विरोधी हैं और संसदीय लोकतंत्र की रक्षा के लिए युद्ध कर रहे हैं। वे दावा भी करते थे कि भारत और दूसरे औपनिवेशिक देशों की फासिज्म से रक्षा करना उनका राजनीतिक कर्तव्य है। परन्तु संसदीय लोकतंत्र की रक्षा करने का दम भरने वाले साम्राज्यवादी भारतीय जनता एवं दूसरे उपनिवेशों की जनता पर स्वयं ही अत्याचार ढा रहे थे जैसे साम्राज्यवादी ढाते हैं। इसके अलावा, जापानी फ़ैसिस्टवादियों का दबाव बढ़ जाने पर वे उन देशों की जनता को उन्हीं के भाग्य पर छोड़ देते थे जिनकी रक्षा करने की वे बार-बार [illegible] करते रहते थे। ऐसी दशा में भारतीय नेताओं ने महात्मा गांधी के नेतृत्व में [illegible] सीधा प्रश्न पूछा कि "ब्रिटेन को अपने इरादे स्पष्ट करने चाहिए। वे इरादे [illegible] से नहीं बल्कि व्यवहार में ही स्पष्ट हो सकते हैं।"

परन्तु साम्राज्यवादी बौखलाए हुए थे। वे थोड़ी भी [illegible] को [illegible] तैयार नहीं थे। वे भारतीय जनता को युद्ध में बिना उसके [illegible]

जनता इसके लिए तयार नहीं थी। १९४२ के अगस्त महीने मे अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के बम्बई अधिवेशन म एक राय से "अंग्रेजो! भारत छोड़ो" आन्दोलन का अभियान छेड़ा गया। पूरा देश आन्दोलन म सम्मिलित था।

श्री फिरोज गांधी के विवाह को अभी ६ महीने भी पूरे नहीं हुए थे कि वे अन्य आन्दोलनकारियों की भांति संघर्ष के प्रारम्भ म ही पकड कर जेल म डाल दिये गये। इंदिरा जी भी उनके साथ गिरफ्तार कर ली गयी।

फिरोज गांधी जेल से मुक्त हुए तो चारों ओर देश म निराशा व्याप्त थी। पूरा राष्ट्र किंकर्त्तव्यविमूढ था। बड़े नेता अभी भी जेल में ही थे। उनकी आर्थिक स्थिति भी विशेष अच्छी नहीं थी और जीविकोपार्जन के लिए कुछ न कुछ करना आवश्यक था।

परन्तु वे जीविकोपार्जन के लिए ऐसा काय नहीं करना चाहते थे जिससे देशभक्ति के काय म बाधा आती हो। उन दिनों 'नेशनल हेरल्ड' पर साम्राज्यवादी लगातार हमले कर रहे थ। इस पत्र की स्थिति डांवाडोल थी। १९४६ स ५० तक उ होंने नेशनल हेरल्ड दनिक की स्थिति संभालने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगाई और उसम कामयाब रहे।

इसके बाद वे 'इंडियन एक्सप्रेस' पत्र मे आये तथा उनका सहयोग पाकर यह पत्र खूब चमका। पर तु यहां आने के बाद भी उन्होंने 'नेशनल हेरल्ड' के प्रति अपनी रुचि कम नहीं की। उसे निरंतर सहयोग देते रहे। उनकी प्रतिभा और काय क्षमताओं का आदर करते हुए १९४८ म ही उन्हें भारत की संविधान सभा का सदस्य चुन लिया गया था जो संविधान के निर्माण का और साथ ही साधारण कानून बनाने का दोनों ढंग का काय करती थी। लखनऊ म रहते समय वे राजा बख्शी के मकान मे रहते थ।

१९५२ म प्रथम लोकसभा म निर्वाचित होने के बाद वे कुछ समय तक लोकसभा के अंदर काय करने की प्रक्रिया का गम्भीर अध्ययन करते रहे। उनकी कार्यवाहियों मे अधिक सक्रिय भाग नहीं लिया।

परन्तु १९५५ ५६ के आते आते व लोकसभा म प्रभावशाली वक्ता बन गये। जिस प्रश्न को भी उन्होंने उठाया उसे इतनी अच्छी तरह और तैयारी के साथ उठाया कि किसी के लिए भी उसे अनसुना करना सम्भव नहीं रहा।

लोकसभा म इतनी प्रमुखता ग्रहण करने के बाद भी फिरोज गांधी न अपनी पुरानी परम्पराओं तथा मित्र मण्डली से सम्बन्ध विच्छेद नहीं किया। यही कारण है कि दिल्ली म आने के बाद जीवनपर्यन्त उन्होंने एक व्रत निभाया था। वे प्रातःकाल का नाश्ता प्रधानमन्त्री निवास स्थान म करते थे, दोपहर का भोजन श्री अजीत प्रसाद जैन के यहां और रात का खाना अपने अनन्य मित्र केशवदेव

मालवीय के यहा स्रात रहे।

कुछ विशेष आदतो ने जीवनपयन्त उनका साथ दिया था। उदाहरण के लिए पुस्तको का पठन-पाठन और सग्रह करना उनकी बहुत पुरानी आदत थी। पुस्तकें खरीदने के लिए उन्हें पसे की कभी कमी अनुभव नही की। अधिकाधिक व्यस्तता के दिनो म भी नई पुस्तकें पढने के लिए समय निकाल ही लेते थे।

इसके अलावा विभिन्न प्रकार के फूलो का चयन करना, उन्हें उगाना और पेड पौधे लगाना फिरोज गाधी का सबसे प्रमुख शौक था। कभी कभी वे इस ओर अन्य काम छोड कर भी ध्यान देते थे। उनकी मृत्यु के बाद इन्दिराजी ने उन फूल पौधो को प्रधानमन्त्री निवास स्थान म भिजवा दिया था।

फिरोज गाधी मध्यमवर्गीय स्थिति से उठे और राजनीतिक जीवन के सबसे ऊचे शिखरो तक पहुचे। उनम अपने वग के सभी गुण विद्यमान थे।

फिरोज गाधी के जीवन के सदभ म कुछ विशष व्यक्तियो की चर्चा करना खास तौर पर जरूरी है। ऐसा किये बिना उनके जीवन की कहानी अधूरी ही रह जायेगी। सवश्री गोपीनाथ श्रीवास्तव, अंसार हरवानी, आर० डी० धवन और रफी अहमद किदवई उनके ऐसे अभिन्न एव अनन्य सहयोगी थे जिनके विचारो और कार्यों की छाप उनके जीवन पर पडी थी। १९४१ मे जब फिरोज गाधी लन्दन से वापिस लौटे थे और उन्होंने सोवियत चित्रो तथा प्रगतिशील साहित्य की प्रदशनी का आयोजन किया था उसके प्रमुख सयोजक उनके ये अभिन्न सहयोगी ही थे। उस समय सोवियत साहित्य और पत्र पत्रिकाए भारत मे नही आ सकती थी। फिरोज गाधी बडे कौशल के साथ उस "गर कानूनी" साहित्य को भारत लाये थे और उसकी प्रदशनी लगाई थी।

यदि इससे भी करीब ६ वष पुरानी घटना का उल्लेख किया जाय तो उससे इन लोगो के पारस्परिक सम्बन्धो का सिंहावलोकन भली भाति किया जा सकता है। अक्तूबर, १९३६ मे अखिल भारतीय स्टूडेंटस् फेडरेशन की नागपुर म स्थापना की गयी थी। असार हरवानी उसके प्रथम अखिल भारतीय महामन्त्री बने थे और फिरोज गाधी लन्दन म भारतीय विद्यार्थी फेडरेशन की शाखा के नेता थ। इसी फेडरेशन की बर्मा देश की शाखा के महामन्त्री आग साग थे जो बाद मे बर्मा के प्रधानमन्त्री बने। साम्राज्यवादियो ने इनकी हत्या करवा दी थी।

फिरोज गाधी और उनके पूर्वोक्त सहयोगियो ने इसके अलावा भी हिन्दुस्तान म एक बडा निर्णायक काम किया था। लन्दन से लौटने के बाद १९४१ म फिरोज गाधी ने अपने सहयोगियो की सहायता से सबसे पहले लखनऊ म भारत-सोवियत मैत्री सघ की स्थापना की थी। यह मैत्री सघ आज भारत म वटवृक्ष के समान विशाल आकार ग्रहण कर चुका है।

घटना भरे जीवन का अन्त

फिरोज गाधी का जीवन घटनाओ से भरा हुआ था। एक के बाद दूसरा उतार चढाव आया, परन्तु फिरोज गाधी उससे प्रभावित हुये बिना अपने लक्ष्य की ओर लगातार बढते रहे। भारत की स्वाधीनता के उपरान्त देश जटिल समस्याओ मे जकडा हुआ था।

देश की आजादी तो आयी परन्तु उसकी पूर्ववेला म साम्राज्यवाद ने देश का बटवारा करके करोडो लोगो को बेघरबार कर दिया। १० १० और २० २० हजार की टोलिया पेशावर से कलकत्ता तक शरणार्थी बन कर निराशा के अन्धकार मे घूम रही थी। देश की आर्थिक व्यवस्था जर्जर थी। स्वाधीन सरकार के पाव अभी जमे नही थे। चारो ओर हिंसा और अराजकता का बोलबाला था। राजनीतिक जीवन मे विष भरा हुआ था। साम्प्रदायिक पार्टिया जन जीवन को अस्त व्यस्त कर रही थी। साम्प्रदायिक दगो की आग भडकी हुई थी। अविश्वास ने राष्ट्र का मनोबल तोड दिया था। ऐसा प्रतीत होता था जैसे किसी भयानक दानव ने जग कर हमारा सब कुछ विध्वस्त कर दिया है।

ब्रिटिश साम्राज्यवाद तो चला गया था परन्तु अपने पीछे अपने सहायको, दलालो की बहुत बडी फौज छोड गया था। य थ ६०० देशी राजे रजवाडे जिन्हे यह अधिकार दिया गया था कि वे चाहे तो पाकिस्तान म शामिल हो सकते हैं, चाहे हिन्दुस्तान का अग बन सकते है और चाहे तो अपने आपको प्रभु सत्ता सम्पन्न राष्ट्र के रूप मे घोषित कर सकते है। इससे तमाम सामन्तशाहो ने देश की राजनीतिक अस्थिरता का लाभ उठाया और रियासतो की जनता पर बर्बर अत्याचार ढाने शुरू कर दिये।

इसी प्रकार पुराने नौकरशाहो के विशेषाधिकारो को ब्रिटिश साम्राज्य ने पहले ही सरक्षण दिलवा दिया था। उनके माध्यम से ब्रिटिश साम्राज्य अभी भी

अपने हितो की रक्षा करने का प्रयत्न करता था और स्वतन्त्र राज्यसत्ता को गुमराह करने म कभी कभी सफल हो जाता था।

यद्यपि सभी राष्ट्रीय नेता इस आकस्मिक विपत्ति का सामना करने के लिए सक्रिय थे, परन्तु इसमे निर्णायक भूमिका केवल बापू ही निभा सकते थे। बापू एक ओर तो वृद्धावस्था के कारण निबल थे और दूसरी ओर अपने देश के दो टुकडो मे बट जाने की व्यथा से पूर्णतया मर्माहत थे। उन्होने अतिम सास तक भारत का बटवारा स्वीकार नही किया था। उनकी रही-सही जीवन आशा उस रक्त मे बह निकली थी जो पेशावर से लेकर कलकत्ता तक अपने देशवासियो के ही छुरो से बहाया जा रहा था। वे जहा कही भी साम्प्रदायिक दगो की ज्वालाए भडकती देखते थे वही उसे बुझाने दौडते थे। उनकी नोआखली की पदयात्रा उतनी ही विख्यात है जितना डाडीमार्च। वे जहा कही भी जाते थे भडकती हुई आग शान्त हो जाती थी। प्रशासन को प्रगतिशील मोड देने की सबसे बडी जिम्मेदारी प० नेहरू के कधो पर आ पडी थी। प० नेहरू करोडो की भीड म भी अकेले थे। जब वे थके मादे घर लौटते थे तो फिरोज गाधी इदिरा जी के साथ उनकी देखभाल करते थे।

इसके बाद ३० जनवरी, १९४८ का वह दर्दभरा अभागा दिन आया जब एक हिन्दू सम्प्रदायवादी गुण्डे ने राष्ट्रपिता पर गोलियो की बौछार की और उन्हे हमेशा के लिए हमसे छीन लिया। चारो ओर निराशायें और समस्यायें ही खडी थी।

परन्तु यह देश जीवट का है। बुरे से बुरे दिनो म भी अपनी हिम्मत नही खोता और अन्धकार मे से भी रास्ता निकाल लेता है।

तमाम देशी रियासतो का भारत मे विलयनीकरण कर दिया गया। साम्प्रदायिक उपद्रव शान्त कर दिये गये। राष्ट्र के पुनर्निर्माण के लिए पचवर्षीय योजनायें चालू की गयी। जो एकाधिकारी पूजीपति और निजी क्षेत्र के लोग राष्ट्र की समस्त उपलब्धियो को आत्मसात् करके उसे दीन-हीन बनाने का प्रयत्न कर रहे थे, उन पर अकुश लगाया गया। निजी क्षेत्र की पूजीवादी प्रणाली के स्थान पर एक समानान्तर सार्वजनिक क्षेत्र का भवन खडा किया गया जो आज विकसित होते-होते पूरे राष्ट्र के आर्थिक जीवन को अपनी शीतल छाया मे समेटता जाता है।

जिस समय देश स्वाधीन हुआ था, उस समय वह मुश्किल से १६ लाख टन स्टील पैदा करता था। यह मात्रा भारत जैसे विशाल देश के आर्थिक विकास के लिए अतीव नगण्य थी। परन्तु आज भिलाई, बोकारो, राउरकेला और दुर्गापुर के फौलाद कारखाने पौन करोड टन के लगभग स्टील पैदा करके राष्ट्र के

मन म ठोस आशा का सचार कर रहे है। बहुत शीघ्र ही भारत डेढ करोड टन स्टील पैदा करने लगेगा।

इसके अलावा एन्टीबायोटिक्स, ऋषिकेश तथा भोपाल और हरिद्वार आदि के विशाल विद्युत उपकरणो के उत्पादन केन्द्र, सिन्दरी का कारखाना, राची का भारी मशीन उद्योग चितरजन का लोकोमोटिव कारखाना, भाखरा नागल बाध और इसी प्रकार के करीब १०० अरब रुपये मूल्य के विशाल सस्थान सार्वजनिक क्षेत्र की शोभा बढा रहे हैं। इन सस्थानो की सफलता ने देश का आर्थिक पिछडापन दूर कर रखा है और धीरे-धीरे भारत कृषिमूलक राष्ट्र के स्थान पर उद्योगमूलक राष्ट्र बनता जा रहा है। ये सब चमत्कार विशाल सार्वजनिक क्षेत्र की प्रभावपूर्ण उपलब्धिया हैं।

परन्तु सार्वजनिक क्षेत्र पर लगातार प्रहार किये गये है। जो लोग देश की समस्त उपलब्धियो को अपनी तिजोरियो मे मुनाफा के रूप मे बन्द कर लेना चाहते हैं उन्हे सार्वजनिक क्षेत्र का विकास पसन्द नही है। दूसरी पचवर्षीय योजना के उपरान्त जब सार्वजनिक क्षेत्र ठोस आकार ग्रहण करना शुरू कर लेता है तो पूजीपतियो और उनके विचारको न उस पर लगातार प्रहार किये हैं। तब कौन व्यक्ति था जिसने अपनी पूरी शक्ति लगा कर सार्वजनिक क्षेत्र की न केवल रक्षा की थी बल्कि उसके विस्तार के लिए सैद्धान्तिक तर्क भी प्रस्तुत किये थे ?

सार्वजनिक क्षेत्र की रक्षा के सघर्ष की यह कहानी भारतीय लोकसभा के इतिहास म अमर बन गइ है। इस पुस्तक के तीसरे अध्याय म उस सघर्ष के बारे म विस्तारपूर्वक विचार किया गया है।

जब सार्वजनिक क्षेत्र पर निरन्तर प्रहार हो रहे थे तथा इजारेदार पूजीपति राष्ट्र की सम्पदाओ को लूटने के लिए षड्यन्त्र रच रहे थे उस समय उनके विरुद्ध अर्जुन की तरह सघर्ष करने वाला वह वीर योद्धा मैदान से हट गया। उसे साम्राज्यवादी मैदान से नहीं हटा सके और न इजारेदार घराने कभी उसका मुह बन्द कर सके। परन्तु दारुण मृत्यु ने उसे मैदान से हटा दिया और हमेशा के लिए उसका मुह बन्द कर दिया।

८ सितम्बर १९६० को प्रात ७ बजकर ४५ मिनट पर फिरोज गांधी ने सदा सदा के लिए अपनी आखें बन्द कर ली। यह कितनी बडी विडम्बना है कि ठीक ४ दिन बाद उन्हे अपना जीवन की अडतालीसवी जयन्ती मनानी थी। परन्तु जब वह जयन्ती की ओर अग्रसर हो रहे थे, ... उस समय वह अचानक पटाक्षेप हो गया। पडितजी यह समाचार सुनकर ... रह गए। इन्दिराजी इस तरह व्याकुल और व्यथित हुई जैसे कि कभी भी

पहले किसी न उन्हें नहीं देखा था। वे उदासीन थीं और प्रात काल ही केरल से लौटी थीं। कांग्रेस अध्यक्ष के नाते वे अपनी सागठनिक जिम्मेदारियां पूरी करने के लिए केरल गई थीं। जिस समय फिरोज गांधी ने आखिरी सांस लिये, उस समय वे उनके पास बैठी थीं। परन्तु दुर्भाग्य से उनके दोनों पुत्र राजीव और सजय देहरादून में थे। वे तुरन्त अपने पिता के अंतिम दर्शन के लिए वहां से दौड़े आये। इसी प्रकार एक चार्टर्ड विमान तहमीना को लेने के लिए इलाहाबाद भेजा गया।

पूरा देश इस दुखद समाचार से व्यथित था। लोग यह विश्वास करने को तैयार नहीं थे कि इस घटना भरे जीवन का इस प्रकार आकस्मिक अन्त हो जायेगा।

फिरोज गांधी कुछ दिनों से सीने में पीड़ा अनुभव कर रहे थे। उन्हें डाक्टरों ने पूर्ण विश्राम करने की सलाह दी थी। ७ सितम्बर १९६० को दोपहर बाद रोजाना की तरह उन्होंने संसद में अपना कार्य पूरा किया था। इसके उपरान्त वे शारीरिक परीक्षा के लिए विलिंगडन अस्पताल पहुंचे थे। वे इतने प्रसन्न चित्त थे कि डाक्टरी परीक्षा के बाद उन्होंने काफी का एक प्याला लिया। परन्तु पहली घूंट भरते ही वे कुर्सी पर ढह कर गिर पड़े। उन्हें तुरंत शैया पर पहुंचाया गया। दवाएं और इंजेक्शन लेते समय वे अपनी असह्य पीड़ा की परवाह न करके अपने चिकित्सकों से बातचीत कर रहे थे। परन्तु अचानक पीड़ा इतनी बढ़ गयी कि दवाएं प्रभावहीन साबित होने लगीं। बड़े से बड़े हृदय विशेषज्ञ भी उनकी सहायता करने में असमर्थ साबित हुए। प्रात काल करीब ४ बजे अन्त में कुछ देर के लिए उन्हें नींद आयी और करीब साढ़े तीन घंटे बाद उनकी आंखें खुलने के बाद वे पुन असह्य पीड़ा से व्याकुल हो उठे। इसके बाद यह पीड़ा कभी नहीं दबी। प्रात काल ७ बज कर ४५ मिनट पर उन्होंने अंतिम सांस खींचे। दो साल के अन्दर उन्हें दूसरी बार दिल का यह दौरा पड़ा था जो जानलेवा साबित हुआ। घटनाओं तथा उमंगों से भरा यह जीवन हमेशा के लिए बुझ गया।

फिरोज गांधी की असामयिक मृत्यु का समाचार दिल्ली और दूर-दूर तक जंगल की आग की तरह फैल गया। कुछ ही क्षणों में उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों की भीड़ नर्सिंग होम में इकट्ठी होने लगी। आगंतुकों में मन्त्री, संसद सदस्य, पत्रकार और वे साधारण लोग थे जो फिरोज गांधी को व्यक्तिगत रूप से या उनके कार्यों द्वारा जानते थे। उन्हें प्रधानमन्त्री के निवास स्थान, तीन मूर्ति पहुंचाया गया। वहीं से उनकी अंतिम यात्रा निकली।

अंतिम यात्रा प्रारम्भ होने से पहले तीन मूर्ति भवन में विभिन्न धर्मों के अनुयायियों ने अपने-अपने ढंग से धार्मिक कृत्यों का सम्पादन किया। शोक संतप्त लोगों की अंतहीन पंक्ति लगातार बढ़ती जा रही थी। इस पंक्ति में वे असहाय

और निधन लोग भी थे जिनके लिए फिरोज गांधी ने जीवनभर संघर्ष किया था। इन असहाय लोगों की भीड देखकर और उनका करुण क्रन्दन सुनकर आसानी से यह अनुमान लगाया जा सकता था कि निर्दय मृत्यु ने फिरोज गांधी को उठा कर किन लोगों को सजा दी है। अनेक वृद्ध, स्त्री और पुरुष हक्के-बक्के से उनके शव के पास खडे थे। वे अपने बारे में सोच रहे थे कि अब उनकी बात कौन कहेगा? जिस समय संसद में फिरोज गांधी के लिए श्रद्धांजलि अर्पित की जा रही थी तो पंडित जी ने कहा था—

"मुझे यह मालूम नहीं था कि फिरोज इतने लोकप्रिय थे।"

शाम के छः बजे तीन मूर्ति भवन से अन्तिम यात्रा शुरू हुई थी। यह अन्तिम जुलूस दो मील से भी अधिक लम्बा था। जब यह साऊथ एवन्यू, डलहौजी रोड, विजय चौक, इण्डिया गेट, तिलक ब्रिज और रिंग रोड पार करके यमुना पर निगम बोध घाट पहुंचा तो जनता के धैर्य का बांध टूट गया। स्वयंसेवकों के लिए भीड को नियन्त्रण में रखना सम्भव नहीं रहा। उनके बडे पुत्र राजीव ने वैदिक ऋचाओं के साथ अपने पिता का दाह-संस्कार सम्पन्न किया।

उनके अस्थि अवशेष इंदिराजी इलाहाबाद ले गयीं। वहां त्रिवेणी संगम पर उन्हें प्रवाहित कर दिया गया। उनके कुछ अवशेष गुजरात राज्य के सूरत क्षेत्र में भेज दिये गये जो उनके पारसी परिवार का बहुत बडा केन्द्र है।

विचारधारा और व्यक्तित्व

विचारधारा और व्यक्तित्व

फिरोज गाधी एक कमठ राजनीतिक नेता थे। उनके कार्यों का सही-सही मूल्याकन करने के लिए उनकी विचारधारा और सामाजिक दृष्टिकोण से परिचित होना परम आवश्यक है। विचारधारा ही किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण एव निखार करती है।

यद्यपि यह सही ह कि फिरोज गाधी न विचारधारा के माध्यम से राजनीतिक आदोलना और सामाजिक गतिविधिया मे प्रवेश नही किया। सवसाधारण जनता के जीवन का सुखमय बनाने तथा भारत की स्वाधीनता की इच्छा से वे राजनीतिक आदोलन की ओर आकृष्ट हुए और वही से उह सामाजिक विचारधारा की आवश्यकता अनुभव हुई। इसमे स देह नही ह कि कुछ लाग पहले विचारधाराए ग्रहण कर लेत है और वाद म सक्रिय आदालनो म भाग लेत है। परन्तु जब आदोलना म विभिन प्रकार के उतार चढाव एव जटिलताए अनुभव हाती हैं तो वे आमतौर पर डगमगा जाते हैं और अपना रास्ता छाड दत ह।

परन्तु जो लाग पहले जनादालना म आते हैं और विभिन समस्याओ का समाधान करन के लिए किसी विचारधारा का ग्रहण करत हैं वे लाग न ता आदालना से विमुख होत है और न विचारधाराओ के प्रति उनका आकपण समाप्त हाता है।

१९५२ के बाद भारतीय ससद के अदर और बाहर जब फिरोज गाधी के चारा ओर राजनीतिक गतिविधियों का प्रबल वेग प्रारम्भ हुआ तो अपन कठिन अनुभवा और सामाजिक परिस्थितियों का मूल्याकन करत हुए व इस परिणाम पर पहुचे कि भारतीय स्वाधीनता का अपन सुसगत विकास के लिए आर्थिक आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर हाना चाहिए। उह भारत के सामाजिक विकास

और राष्ट्रीय उत्थान की दिशा में इतना अटूट विश्वास था कि जब अनेक अवसरों पर उनके वर्ग विरोधी उन पर तीखे प्रहार किया करते थे तब न तो वे कभी घबराये और न उन्होंने आत्मरक्षा के लिए उस अभेद्य दुर्ग की सहायता मांगी जिसका नाम जवाहरलाल नेहरू था। यद्यपि यह सही है कि पंडितजी की भुजाओं की विशाल छत्र छाया में करीब ४० वर्षों तक भारत जैसा विशाल देश संरक्षण प्राप्त करता रहा है और अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करता रहा है। परन्तु उन्होंने पण्डितजी के संरक्षण के सहारे राजनीति नहीं चलाई।

उनमें यह गम्भीर आत्मविश्वास और आस्था कहां से उत्पन्न हुई? यह समाजवादी विचारधारा ही थी जिस पर वे युवावस्था से ही विश्वास करने लगे थे और डटे रहे थे। उसी ने यह आत्मविश्वास उत्पन्न किया था।

"जीवन बीमा के राष्ट्रीयकरण का प्रश्न कोई अकेला सवाल नहीं है। हमारे राष्ट्रीय नियोजन का ही यह एक अभिन्न अंग है। हमारा लक्ष्य समाजवाद की स्थापना करना है। मैं यह अनुभव करता हूं कि जीवन बीमा का राष्ट्रीयकरण उस दिशा में एक साहसपूर्ण कदम है। जिन आदर्शों का हम प्रचार करते हैं उनके ऊपर अमल करना आवश्यक है। तभी इस देश के लोगों का यह विश्वास होगा कि जो कुछ हम कहते हैं उस पर विश्वास करते हैं।" (२ मार्च, १९५६)

ये शब्द यह सिद्ध करते हैं कि फिरोज गांधी समाजवाद और राष्ट्रीयकरण में कितनी आस्था रखते थे और वे केवल शब्दाडम्बर के लिए इन ऊंचे आदर्शों की दुहाई देने वाले व्यक्ति नहीं थे।

वास्तव में यह प्रवृत्ति राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन में भी स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है। इस आंदोलन में दो तरह के लक्ष्यों को लेकर लोग सम्मिलित हुए थे। एक भाग ऐसे लोगों का था जो राजनीतिक परिवर्तन लाने के पक्ष में तो था जो केवल शासकों को बदल देने में दिलचस्पी रखता था। उसकी इच्छा थी कि गोरे हिन्दुस्तान से चले जाएं और भारतीयों के हाथों में सत्ता स्थापित हो जाए। परन्तु फिरोज गांधी इतने मात्र से संतुष्ट नहीं थे। वे प्राय: १९३१ और ३२ में जब कि उनकी आयु बहुत कम थी, अपने जेल के साथियों से यह प्रश्न पूछा करते थे कि हम किस बात के लिए जेल काट रहे हैं? वे अक्सर कहा करते थे कि यदि स्वाधीनता का अर्थ केवल 'गोरों' का शासन बदल कर 'कालों' का शासन स्थापित कर देना मात्र है तो उसे वे बहुत बड़ा परिवर्तन नहीं मानते। ऐसे अनेक लोग अभी जीवित हैं जिनसे फिरोज गांधी प्राय: स्वाधीनता के राजनीतिक व आर्थिक स्वरूप के सम्बन्ध में वाद विवाद किया करते थे। उनकी इच्छा राजनीतिक सत्ता में परिवर्तन के साथ साथ आर्थिक सत्ता में परिवर्तन लाने की थी और यही कारण है कि जब १९४७ में स्वाधीनता की उपलब्धि के उपरांत वह संविधान सभा

तथा १६५२ की प्रथम लोकसभा मे निर्वाचित होने के पश्चात फिरोज गाधी को भारतीय ससद मे अपनी विचारधारा का प्रतिपादन करने का सुअवसर प्राप्त हुआ तो उनके मस्तिष्क तथा चिन्तन मे शोषक वर्गों के प्रति व्याप्त क्रोध की भावना ज्वालामुखी की तरह भडक उठी। वे बार-बार यह प्रश्न करते कि भारतीय ससद के रूप म जो एक उच्चतम मच उन्हे अपनी भावनाओ की अभिव्यक्ति के लिए उपलब्ध हुआ है उसका वे किस उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रयोग करें ?

इसम सन्देह नही है कि फिरोज गाधी आस्थावान् जनतन्त्रवादी थे और ससदीय लोकतन्त्र म उनकी अटूट निष्ठा थी। लेकिन व ससदीय जनतन्त्र को केवल वाद विवाद का और अपने दिल की भावनाये प्रकट करने का मच मात्र नही मानते थे। उनका यह विश्वास था कि ससदीय जनतन्त्र को पूजीपतियो की इजारेदार प्रवृत्तियो और कुटिल चेष्टाओ का भडाफोड करने का अचूक साधन बनाया जा सकता है तथा आर्थिक जीवन मे सार्वजनिक क्षेत्र का विकास करके मिश्रित अर्थ व्यवस्था को पूर्ण समाजवाद की ओर अग्रसर किया जा सकता है।

यही कारण है कि स्वाधीनता मिलने के पश्चात जब हिन्दुस्तान अपने विकास के रास्ते पर चलने लगा तो उसके सामने न तो कोई राजमार्ग था, और न कोई बनी बनाई योजना थी। चारो ओर काटे बिछे हुए थे, विभिन्न भाषाए जातिया और सस्कृतिया राष्ट्रीय एकता मे बिखराव उत्पन्न करने को उद्यत थी और इतने विशाल देश को राष्ट्र की स्वीकृति अथवा मान्यता के बिना एक राजनीतिक सत्ता के आधीन रखना सम्भव नही था। परन्तु सौभाग्य से देश की बागडोर ऐसे महान व्यक्ति के हाथो म थी, जो ऊचे और दूरतम क्षितिज तक देख सकता था जिसने लम्बी अवधि तक राष्ट्रीय स्वाधीनता सघर्ष मे नेतृत्व की गरिमा पूरी की थी और जो राष्ट्रपिता महात्मा गाधी की राष्ट्रीय मान्यताओ को विश्व के समाजवादी आन्दोलन की परम्पराओ के साथ जोडने की असाधारण क्षमता रखते थे। उन्ही प० जवाहर लाल नेहरू ने ससदीय जनतन्त्र के रूप मे राष्ट्र को नई दिशा प्रदान की और इसे समाजवादी आर्थिक विकास के लिए अमोघ अस्त्र के रूप म विकसित करने के अभियान मे फिरोज गाधी की भूमिका इतिहास मे अमर रहेगी।

फिरोज गाधी ससद को केवल वाद विवाद का मच मात्र नही मानते थे। १६ दिसम्बर १९५७ को लोकसभा म अपने भाषण म उन्होंने कहा था —

"ससद को अपनी चौकसी और नियन्त्रण का अधिकार उन सबसे बडी और सबसे ताकतवर वित्तीय सस्थाओ के ऊपर भी बरतना चाहिए और सार्वजनिक धन के अपहरण की प्रवृत्तियो को रोकना चाहिए।"

इस प्रकार व ससद की सीमाओ को केवल ससद की चार दीवारी तक

सीमित नहीं रखना चाहते।

संसद का महत्व बताते हुए २० फरवरी १६५८ को फिरोज गांधी ने यह दावा किया कि —

जीवन बीमा के सम्बन्ध में संसद में जो विचार विनिमय किया गया और सामूहिक चिन्तन का प्रदर्शन हुआ उससे यह स्पष्ट हो जाता है कि संसदीय लोकतन्त्र की प्रहार शक्ति किसी से कम नहीं है।"

आगे उन्होंने संसद सदस्यों के सम्बन्ध में कहा कि "हम सार्वजनिक निगमों के अभिभावक हैं और अपनी जिम्मेदारियों को भली-भांति अनुभव करते हैं।"

संसद और सार्वजनिक संस्थाओं के सम्बन्ध में फिरोज गांधी संसद को उनकी जननी के स्थान पर महत्व देते थे। इसके महत्व के सम्बन्ध में उन्होंने एक बार कहा था —

"जीवन बीमा निगम हमारी संसद का बच्चा है और इस पर मुझे एक कहानी याद आती है जो किसी दिन मुझे एक गांव में सुनने को मिली थी। यदि कोई चीता मुझ पर हमला करता है तो मैं भाग खड़ा होता हूं और मैं सोचता हूं कि शायद भाग ही जाऊंगा परन्तु यदि वह चीता मेरे बच्चे पर हमला करता है तो शायद मैं अपने बच्चे को बचाता हुआ चीते के हाथों मर जाना पसन्द करूंगा। ये परिस्थितियां हैं जो आदमी को बदल देती हैं। ऐसी स्थिति में जीवन बीमा निगम को संसद ने बनाया है और हम उसे किसी आदमखोर के जरिये अर्थात निजी क्षेत्र के पूंजीपतियों के जरिये खाया जाना पसन्द नहीं कर सकते।" (२० फरवरी १६५८)

राष्ट्र नेता प० नेहरू यह समझ गये थे कि जनतन्त्र की कुछ कमजोरियां भी हैं। और साथ ही फिरोज गांधी के लिए यह समझना कठिन नहीं था कि इस संसदीय जनतन्त्र को सच्चे जनतन्त्र के या समाजवादी लोकतन्त्र के रूप में विकसित किये जाने के मार्ग में मुख्य बाधाएं क्या-क्या है? उन्होंने यह समझने में देर नहीं लगाई कि पुरानी नौकरशाही और अधिकारी वर्ग संसदीय लोकतन्त्र को समाजवादी लोकतन्त्र के रूप में परिणत नहीं होने देना चाहते। और इसी प्रकार, कुछ औद्योगिक पूंजीपति जिन्होंने विदेशी साम्राज्यवादियों और स्थानीय नौकरशाहों के साथ तारतम्य स्थापित कर लिया है जो यथास्थितिवाद की रक्षा करने में दिलचस्पी रखते है जिन्होंने देश के तमाम आर्थिक साधनों पर या तो नियंत्रण स्थापित कर लिया है या उनका निर्णायक प्रभाव कायम हो गया है वे लोग राजनीतिक स्वाधीनता और देश की आर्थिक स्थिति का केवल अपने लिए इस्तेमाल करना चाहते हैं। सर्वसाधारण जनता को राष्ट्र की उपलब्धियों से वंचित करने के लिए वे हर समय सचेष्ट रहते हैं।

इसमे सन्देह नही है कि आज पूरे देश मे एकाधिकारी पूजीपतियो के खिलाफ प्रबल जनमत है। इसी प्रकार, सावजनिक क्षेत्र की उपयोगिता मे किसी को भी सन्देह नही रह गया है। देश के आर्थिक विकास म साम्राज्यवादियो की ओर से मिलने वाली 'सहायता' पर एक भी देशभक्त निभर नही होना चाहता और प्रत्येक प्रबुद्ध नागरिक यह समझ गया है कि पूजीपतियो के हाथो मे करोडो अरबो की दौलत का एकत्रित होना न तो उनकी किसी विशेष काय कुशलता और क्षमता का परिचायक है और न उनकी विशेष बुद्धि का। सभी लोग यह समझ गये है कि आम उपभोक्ताओ की लूट खसोट कर राष्ट्रीय सम्पदाओ का अपहरण करके तथा हिस्सेदारो की जेब काट कर ही इजारेदार कम्पनिया रातो रात करोडपति से अरबपति हो जाती है। परन्तु यह सामाजिक चेतना किन लोगो के परिश्रम का फल है? फिरोज गाधी उन सबसे पहले और प्रभावशाली धनुधरो म है जिन्होने सवप्रथम भारतीय ससद म मूदडा तथा डालमिया जैन जसे पूजीपतियो के कुटिल षडयन्त्रो पर निशाना साधा था, उन्हे जनता की दृष्टि मे बेनकाब कर दिया था और उनकी करतूतो का न केवल भडाफोड किया था, बल्कि उन्हे राष्ट्र की अदालत के कठघरे मे भी खडा कर दिया था।

१६ दिसम्बर १६५७ को लोकसभा मे भाषण करते हुए फिरोज गाधी ने पूजीवादी व्यवस्था और आर्थिक अनियमितताओ के विरोध में जो भावनाये प्रकट की थी उन्हे केवल विद्रोह की सज्ञा दी जा सकती है। उन्होने अध्यक्ष को सम्बोधित करते हुए कहा —

"इस वाद विवाद में भाग लेते हुए मेरा मन विद्रोह कर रहा है। जब हालत इतनी गई गुजरी हो जाये तो चुप बठना एक अपराध है। जो लोग सावजनिक क्षेत्र की गलतियो को उजागर करने के लिए अवसर की तलाश में रहते हैं उन्हें हम बता देना चाहते हैं कि हम सावजनिक क्षेत्र की आलोचना से कतई नहीं घबराते।"

आज जीवन बीमा निगम सावजनिक क्षेत्र की महत्वपूण वित्तीय सस्था है। क्या इससे इन्कार किया जा सकता है कि फिरोज गाधी यदि निजी पूजी और वित्तीय क्षेत्र के काले कारनामो को उजागर न करते तो यह महत्वपूण सस्था सावजनिक क्षेत्र की शोभा बढा पाती? इसी प्रकार कुछ पूजी के धडियाल राष्ट्र की सम्पदाए डकार रहे थे और साथ ही सेठजी की पदवियो से विभूपित होकर राष्ट्र के सम्मान का उपभोग भी कर रहे थे। उस समय इस अकेले वीर पुरुष ने उनके शोषण की तरफ अगुली उठाई। शासक पार्टी को अपने वाक् प्रहारो से मजबूर कर दिया कि उनकी जन विरोधी चेष्टाओ पर कडा अकुश लगाया जाय। पूजीपति हरीदास मूदडा की असलियत को बेनकाब करके प्रखर वाणी के इस तेजस्वी वक्ता

ने मूदडा को आर्थिक अपराधियो की श्रेणी मे खडा कर दिया। उसने इस बात की भी चिंता नही की कि उनके पिता के समान प्रधानमत्री किसी धर्मसकट का अनुभव तो नही करेंगे। उस पूरे वातावरण मे उस समय के वित्त मत्री का मत्रिमण्डल से त्याग पत्र देने के अलावा कोई दूसरा उपाय नही सूझा और एक बडे भारी नौकरशाह को नागरिक सेवा से निवृत्ति लेनी पडी।

कुछ लोग थे जो ससद मे केवल थोथे भाषण दिया करते थे, इसे अपने वाणी कौशल के प्रदर्शन का एक मच मात्र मानते थे और जिन्होने यह कभी नही समझा कि लोकसभा को जनता की आवाज उठाने का और उसके अधिकारो की रक्षा का एवम जनता के दुश्मनो के विरुद्ध प्रभावशाली मोर्चाबन्दी करने का निर्णायक मच भी बनाया जा सकता है। ऐसे ससद सदस्यो को श्री फिरोज गाधी की कर्तव्य निष्ठा और क्रातिकारी भावनाओ से प्रेरणा लेनी चाहिए। परन्तु उनके भाषणो मे यह बात बार बार दोहरायी गयी है कि व (फिरोज गाधी) इस सदन के सम्मानित और अग्रिम पक्ति' के सदस्य नही है। वे अपने आपको हमेशा 'बैक बेंचर" कहकर पुकारते रहे। यदि ऐसे ही 'बैक बेंचर" कहते है तो 'फर्स्ट रकर' (प्रथम पक्ति) किसे कहेगे? वास्तव मे यह उनकी विनयशीलता या अनुकरणीय विनम्रता ही थी जिसने उनकी योग्यता पर हमेशा चार चाद लगाये थे।

फिरोज गाधी की यह दृढ धारणा थी कि ससदीय लोकतन्त्र के पिछले दरवाजो पर उसके दुश्मनो ने कब्जा कर रखा है। उनका यह विश्वास था कि चोरबाजारी करने वाले जमाखोर, भ्रष्टाचारी और समाजवाद विरोधी तत्वो ने ससदीय जनतत्र के पिछले द्वार पर पूरी तरह अधिकार करके उसे प्रभावहीन करने की चेष्टा की है। जो कुछ वे कहा करते थे वह उनकी मृत्यु के ठीक १५ साल बाद आज सभी को स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हो गया है। यदि प्रधानमत्री श्रीमती इदिरा गाधी लोकतत्र के पिछवाडे पर कब्जा करने वाले इन समाजविरोधी भ्रष्ट तत्वो से न निबटती और उन्हे ठिकाने लगाने मे कामयाब न हो पाती तो भारतीय लोकतत्र मूल मे डुबा दिया जाता। आर्थिक विकास के तमाम रास्ते रोक दिये जाते। तब भारत को बगलादेश और चिली के सर्वनाशी मार्ग पर चलने से कौन रोक पाता?

फिरोज गाधी की मृत्यु के पश्चात तो प्रतिक्रियावादियो ने ससद का उपहास करने का एक निन्दनीय प्रयास सुनियोजित ढग से किया था। जो ससद प्रजातान्त्रिक क्षमता सामाजिक अनुशासन तथा आर्थिक विकास का प्रभावशाली माध्यम बन सकती थी उसे इस प्रकार के दयनीय नाटको मे उलझा कर रख दिया गया कि घोर गीरव देशवासियो की दृष्टि मे उस की उपादेयता और गरिमा भग होने लगी। ससदीय जनतत्र के पिछले द्वार पर कब्जा करने वाले जिन समाज

विरोधी तत्वों का सफाया करने का अभियान फिरोज गांधी ने चलाया था, वे पूरे आर्थिक, राजनीतिक और संसदीय ढांचे पर इस तरह प्रभावी होते गये कि पूरा सामाजिक जीवन अस्त-व्यस्त होने लगा, जीवन की मर्यादाएं समाप्त होने लगी, तस्करी, चोरबाजारी और काले धन का संचय व्यापार का दूसरा नाम हो गया, औद्योगिक विकास के नाम पर कोटा, परमिट और लाइसेंसों का दुरुपयोग करना आम बात हो गई और भ्रष्टाचार इस तरह फल चुका था कि उसकी चर्चा संसद में कोई उत्तेजना पैदा नहीं करती थी। हम यह अच्छी प्रकार जानते हैं कि अनेक अवसरों पर फिरोज गांधी, संसद के अन्दर और बाहर ऐसे समाजविरोधी तत्वों का दमन करने के लिए संकटकालीन अधिकारों का उपयोग करने की सलाह देने तक में संकोच नहीं करते थे। बहरहाल प० नेहरू ने मिश्रित अर्थ-व्यवस्था के रूप में राष्ट्रीय अर्थतन्त्र के विकास की जिस प्रणाली का प्रारम्भ किया था वह दो वर्गों के ऊपर विश्वास करके ही प्रारम्भ की गई थी। मिश्रित अर्थ-व्यवस्था में निजी क्षेत्र पर यह विश्वास किया गया था कि उसका संचालन करने वाले पूंजीपति इस हद तक मुनाफा नहीं कमायेंगे कि राष्ट्र के आर्थिक विकास के काम में आने वाले राष्ट्रीय स्रोत सूख जाय। परन्तु उन्होंने इस विश्वास की रक्षा नहीं की। इसी प्रकार सार्वजनिक क्षेत्र का प्रबन्ध और देखरेख करने वाले उच्च अधिकारियों पर यह भरोसा किया गया था कि वे निजी लाभ के लिए इस क्षेत्र का शोषण नहीं करेंगे, निजी क्षेत्र की तुलना में इसकी क्षमताओं का विस्तार करेंगे, तथा निजी क्षेत्र के पूंजीपतियों के साथ घुलमिलकर सार्वजनिक क्षेत्र को घाटे के कगार पर नहीं पटक देंगे। परन्तु बाद का अनुभव कटुतापूर्ण था जिसमें निजी क्षेत्र के पूंजीपतियों तथा सार्वजनिक क्षेत्र के संचालक, अधिकारियों ने विश्वासों के अनुरूप कार्य नहीं किये।

यही कारण है कि फिरोज गांधी ने संसद के मंच को समाजविरोधी तत्वों का अनावरण करने के लिए इस्तेमाल किया। धीरे धीरे संसद के अन्दर और बाहर जहां देखो, इन्हीं भ्रष्ट तत्वों के पक्ष से राजनीति करने वालों की चीख पुकार सुनाई देती थी। आज जब ये सब प्रश्न मौलिक रूप से पूरे राष्ट्र को नये सिर से विचार करने के लिए बाध्य कर रहे हैं तो तंग आकर हमारी प्रधानमंत्री को उस निरंकुश राजनीति और संसदीय दुरुपयोग पर पाबन्दी लगानी पड़ी। इसके वांछित परिणाम दृष्टिगोचर होने लगे हैं।

इसका प्रारम्भिक सूत्रपात फिरोज गांधी ने बहुत पहले कर दिया था। जिस निर्ममता के साथ उन्होंने भ्रष्ट राजनीतिज्ञों, उद्योगपतियों और नौकरशाहों का भंडाफोड़ किया था उसी निर्ममता का सहारा लेकर जब तक उनकी गति विधियों पर रोक नहीं लगाई जाती तब तक राष्ट्र का असन्तुलन हटाना और उसे

सही दिशा मे ले जाना सम्भव नही था।

फिरोज गाधी हर प्रकार के शोषण और अन्याय के विरोधी थे। आर्थिक अनियमितताओ का विरोध करना वह अपना कर्तव्य समझते थे परन्तु इस कर्तव्य का पालन करने मे यदि कोई टोका-टोकी करता था तो उसे वे कभी क्षमा नही करते थे। जिस समय वे डालमिया-जैन की आर्थिक अनियमितताओ पर ६ दिसम्बर १९५५ को जोरदार प्रहार कर रहे थे तो वित्त मत्रालय से सम्बन्धित श्री महावीर त्यागी ने उन्हे बीच मे टोका और अपनी बातो के समर्थन मे फिरोज गाधी से सबूत मागा। उन्हे प्रत्युत्तर देते हुए फिरोज गाधी ने कहा—'मेरे लिए सबूत देना कैसे सम्भव हो सकता है? मैं एक गैर सरकारी सदस्य हू। आप सरकार में मत्री हैं, मैं सरकार नहीं हू। आप आइये और मेरी जगह बैठिये, मुझे वहा जाने दीजिये और अपनी जगह उठने दीजिये। तब मैं आपको सबूत दे दूगा।"

फिरोज गाधी ने भविष्य वक्ता की तरह उन तमाम समस्याओ को उसी समय उठा दिया था जब बहुतो के लिए ऐसा सोचना भी सभव नही था। उन्होने सर्वोच्च न्यायालय और ससद की सर्वोच्चता के सैद्धान्तिक विवाद मे ससद को सर्वोच्चता का स्थान दिया था। निजी सम्पत्ति को मानव के मौलिक अधिकारो मे स्थान देने का विरोध किया था। इजारेदार कम्पनियो की सम्पत्तियो का राष्ट्रीयकरण करने के माग मे यदि सविधान बाधक हो तो उसमे सशोधन करके परिवर्तन की माग की थी और न ऐसी प्रत्येक बाधा को हटा देना चाहते थे जो देश के प्रगतिशील आर्थिक रूपान्तरण मे बाधक बनती हो। फिरोज गाधी शब्द के पूरे अर्थों मे क्रान्तिकारी और समाजवादी थे। पुस्तक के तीसरे भाग मे उन्ही के शब्दो का उल्लेख करके उनकी सैद्धान्तिक मान्यताओ का विस्तारपूर्वक प्रतिपादन किया गया है।

फिरोज गाधी पूजीपतियो की आर्थिक अनियमितताओ को रोकने के लिए साधारण कानूनो को पर्याप्त नही मानते थे। यहा तक कि वे आर्थिक अपराधो का दमन करने के लिए भी आवश्यकता हो तो सविधान में सशोधन को अनिवार्य मानते थे। एक बार उन्होने कहा था —

"मैने ये कुछ तथ्य सरकार के सामने रखे हैं। जिस तरीके से सरकार काम करती है उससे कोई नतीजा निकलने वाला नहीं है। साधारण कानूनी कार्यवाहियों से हम किसी परिणाम पर नहीं पहुच सकते। यह एक बहुत लम्बी प्रक्रिया है। सविधान को भी इसमें बाधा के रूप में कहा जाता है। कानूनों की बनावट ऐसी है कि ये केवल साधारण अपराधियों का दमन कर सकते हैं। इसलिए कि जब ये अपराधी कोई अपराध करते हैं तो अपने पीछे कुछ न कुछ निशान छोड़ जाते हैं। परन्तु ये आर्थिक अपराधी अपने पीछे कोई निशान भी

बाकी नहीं छोड़ते। उनकी तलाश करना भी मुश्किल है। इसलिए सरकार को हिम्मत के साथ आगे बढ़ना चाहिये और साहस के साथ कदम उठाने चाहिए। तभी उन्हें दबाया जा सकता है। (६ दिसम्बर १९५८ लोकसभा में भाषण)

यदि फिरोज गांधी की मजबूत विचारधारा न होती और उनका जीवन प्रगति-शील लक्ष्यों से प्रेरित न होता तो इतनी दृढ़ता के साथ राष्ट्र के भीतर शत्रुओं के विरुद्ध मोर्चाबन्दी करना उनके लिए कदापि सम्भव न होता। किसी निश्चित विचारधारा के अभाव में बड़े से बड़ा पद तो प्राप्त किया जा सकता है तथा अवसरवादी ढंग से जीवन की समस्त सुविधाओं का उपभोग भी किया जा सकता है, परन्तु उसके बिना राष्ट्र का निर्माण नहीं किया जा सकता, उसके शत्रुओं के विरुद्ध निर्मम संघर्ष नहीं चलाया जा सकता और इतिहास में वह स्थान प्राप्त नहीं किया जा सकता जो फिरोज गांधी ने प्राप्त किया है।

व्यक्तित्व का क्रमिक विकास

सामाजिक समस्याओ के प्रति फिरोज गाधी का चि तन बहुत सवेदनशील था। यह सवेदनशीलता ही उ हे अधिकाधिक जन समस्याओ की ओर आकृष्ट करती थी, राष्ट्रीय स्वाधीनता आ दोलन की ओर उ हे प्रेरित करती थी। और जो व्यक्तिगत समस्याए सामूहिक रूप धारण करती थी उनके समाधान के लिए वे बहुत धीरे धीरे अपने अनुभवो और परिस्थितियो के अनुसार प्रगतिशील चि तन की ओर आकृष्ट होते गये।

फिरोज गाधी जीवन की उन समस्त कठिनाइयो से परिचित थे जिनमे से एक औसत भारतवासी को गुजरना पडता है। उनका प्रारम्भिक अध्ययन, जसा कि बताया जा चुका ह एक साधारण स्कूल म हुआ था, किसी पाश्चात्य ढग के शिक्षा सस्थान म नही। उनका छात्र जीवन उन साधारण आर्थिक स्थिति वाले छात्रो के बीच गुजरा है जि हे अपनी दैनिक समस्याए हल करन के लिए कुछ न कुछ जोड ताड करनी पडती है। इसी प्रकार जब व केवल १८ वष की आयु के थे तो १६३० और ३२ के सविनय अवज्ञा आ दोलनो म हिस्सा लते थ और साधारण स्वय सेवको की तरह स्वतत्रता सग्राम के सनिको क कत्तव्य पूर करत थे। इन आ दोलनो म हिस्सा लन क कारण ही इलाहाबाद के उस होनहार नौजवान का नेहरू परिवार के साथ घनिष्ठ सम्पक हुआ है। यह सवविदित ह कि अपन नि स्वाथ स्वभाव और कत्तव्यपरायणता क व्यक्तिगत गुणो के कारण ही वे श्रीमती कमला नेहरू के भी स्नेहभाजन बने थ।

परन्तु यह सोचना अथहीन है कि यह साहसी नवयुवक केवल अपन इ ही गुणो क कारण प्रमुख सामाजिक भूमिका निभान म समथ हो सका। इसका असली कारण तो उनक व्यक्तित्व का क्रमिक विकास है। अय सकडो भारतवासी १६३५ ३६ म इगलैण्ड म विद्याध्ययन कर रह थ। उनके मस्तिष्क पर उस

समय के योरोप में घटित होने वाली घटनाओं का उतना गहरा असर नहीं पड़ा जितना फिरोज के मस्तिष्क पर पड़ा। उन घटनाओं ने संवेदनशील फिरोज गांधी की पूरी चिंतन परम्परा को ही बदल डाला।

इतना ही नहीं, अपने देश में ऐसे राजनीतिक नेताओं की भी कमी नहीं थी, जो शत्रु को मित्र वाली कौटल्यकालीन राजनीति पर यकीन करते थे। वे यह मानते थे कि यदि हिटलर और उसका सहयोगी जापान ब्रिटिश साम्राज्यवादियों को पराजित कर देता है तो वे हिन्दुस्तान की आजादी का भी संदेश ले आते हैं। इस तरह, वे लोग फासिज्म को अपने सहयोगी के रूप में देखते थे। परन्तु कांग्रेस के बड़े नेताओं में नेहरू जी और छोटी पीढ़ी में फिरोज गांधी ऐसे प्रमुख व्यक्ति थे जिन्होंने इस अवसरवादी राजनीति को प्रोत्साहन नहीं दिया। उन्होंने फासिज्म के विरुद्ध अपनी पूरी शक्ति से आवाज उठाई।

सम्भव है यदि योरोप की इन ऐतिहासिक परिस्थितियों से फिरोज गांधी को न गुजरना पड़ता तो उन्हें फासिज्म से उतनी घृणा न हुई होती, पूंजीवादी तत्वों की कुटिलताओं से वे परिचित न हो पाते और समाजवाद के प्रति उनका इतना गहरा लगाव न हो पाता जो मानव जीवन की सभी समस्याओं के समाधान करने के लिए प्रयत्नशील है।

यद्यपि यह सही है कि १९३४, ३५ और ३६ के वर्षों में हिन्दुस्तान में समाजवादी आन्दोलन में बहुत बड़ा उभार हुआ है। देश में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना हुई। परन्तु सोशलिस्ट पार्टी के बनावटी वामपथ और कृत्रिम समाजवाद ने फिरोज गांधी को कभी अपनी ओर आकृष्ट नहीं किया, वे कभी उसके सदस्य नहीं बने। परन्तु जब अवाडी अधिवेशन में कांग्रेस ने पहली बार स्पष्ट शब्दों में समाजवादी लक्ष्य की घोषणा की तो फिरोज गांधी उमंग में उछल पड़े। उन्हें इस बात पर कभी सन्देह नहीं था कि हिन्दुस्तान आज नहीं तो कल समाजवाद की ओर अवश्य अग्रसर होगा और उन प्रतिक्रियावादी शक्तियों को मुंह की खानी पड़ेगी जो उसके समाजवादी रास्ते में बाधाएं पहुंचाती हैं। इसी तरह, उन्हें इस बात पर भी विश्वास था कि गांधी और नेहरू की कांग्रेस अनिवार्य रूप में समाजवाद की विजय के लिए सफल अभियान चलाएगी।

अतः इस ऐतिहासिक सत्य को सामने रख कर फिरोज गांधी कभी निष्क्रिय नहीं हुए। उन्होंने संसद की सदस्यता का पूरा लाभ उठा कर देश की प्रगति के दुश्मनों पर और विशेष रूप से बड़े उद्योगपतियों तथा बैंक-कम्पनियों के तरीकों, भ्रष्टाचार पर निर्मम प्रहार किए ताकि ये लोग जनता को आर्थिक और धरातल न गिरा सकें।

पाठकों को यह जान कर आश्चर्य होगा कि तेल कम्पनियों के

करने की एव तल म आत्मनिभरता प्राप्त करने की माग का सबस अधिक प्राय मिकता दने वाला म फिराज गांधी सबमे पहले थे। बल्कि वे भारतीय तेल शाधक सस्थान के सबसे पहले अध्यक्ष भी थे जिन्हाने इसकी समावनाआ पर विचार किया था। फिरोज गाधी चिली और ग्वाटेमाला की दु खद घटनाआ स भा पहन यह समझ चुके थे कि साम्राज्यवादी तथा विदेशी तल कम्पनिया राष्ट्रा के आर्थिक विकास एव स्वाधीनता की शत्रु हैं। वे प्रगतिशील सरकारा का तख्ता उलट दती हैं। वे बार-बार तेल कम्पनिया के राष्ट्रीयकरण की माग अकारण नहीं करते थ।

आज तो सावजनिक क्षत्र उस समय की तुलना म हजारा गुना अधिक विशाल आकार ग्रहण कर चुका ह जब फिरोज गाधी उसकी स्थापना और विकास के लिए सघप किया करत थ। परन्तु यह देखकर उनके अनक पुराने साथी खेद प्रकट करते है कि निजी क्षेत्र के जिस भ्रष्टाचार का उन्मूलन करन के लिए फिरोज गाधी जबदस्त सघप किया करते थे वह यद्यपि आज उतना ही शक्तिशाली नहा ह जितना पहले था और उसके जहरीले दात ताडे जा रहे है फिर भी वह उतना ही खतरनाक है।

हम लोग जो उनके बताए हुए रास्ते पर चल रह है और सावजनिक क्षत्र के निमाण के माध्यम से भारत म समाजवादी व्यवस्था की स्थापना के लिए प्रयत्नशील हैं उनसे बार बार प्रेरणा लेते है। सावजनिक क्षेत्र के जन उद्योगा की सफलता के लिए निजी क्षत्र की कुचेष्टाआ से सावधान रहना और उनकी ताड फोड की नीतिया का विराध करना आज भी अनिवाय बना हुआ है।

फिरोज गाधी के व्यक्तित्व का तथा साथ ही उनकी विचारधारा का क्रमिक विकास बडी मनोरजक कहानी है। जैस जस वे जनान्दोलना म गहरे उतरते गये, और सबसाधारण जनता के साथ उनका सम्पक बढता गया वसे वस अपनी आयु की परिपक्वता के अनुसार उनका बौद्धिक स्तर और सद्धान्तिक विचारधारा भी परिपक्व होती गयी।

फिरोज गाधी उन सौभाग्यशाली व्यक्तिया मे थे जिन्हाने अपना राजनीतिक जीवन, बौद्धिक चिन्तन परम्परा और सामाजिक जीवन की उपलब्धिया अपन स्वय के प्रयत्ना से अजित की थी और परिस्थितिया के अनुसार उन्ह क्रमिक विकास की आर अग्रसर किया था।

निजी क्षेत्र के समालोचक

यह बात तो सब लोग जानते हैं कि फिरोज गांधी प्रभावशाली संसदीय प्रवक्ता थे। जब भी कभी वे संसद में बोले पूरी तैयारी के साथ बोले। जिस प्रसंग को भी वे उठाते थे, उसे तर्कसंगत परिणाम तक पहुंचाते थे। परन्तु बहुत कम लोग यह बात जानते हैं कि निजी क्षेत्र को वे किस दृष्टि से देखते थे? उनका यह दृढ़ मत था कि राष्ट्रीय अर्थतंत्र का निर्माण तथा आर्थिक आत्मनिर्भरता सार्वजनिक क्षेत्र के द्वारा ही सम्भव है।

जिस समय सरकार ने जीवन बीमा के राष्ट्रीयकरण की घोषणा की और संसद में विधेयक प्रस्तुत किया उस समय फिरोज गांधी सर्वाधिक आह्लादित व्यक्ति अनुभव होते थे। इसका महत्व बताते हुए उन्होंने कहा कि "कलम की एक ही नोक से सरकार औद्योगिक प्रतिष्ठानों में अंशभागी बन गयी है। मेरा विश्वास है कि निजी क्षेत्र के समवायों तथा प्रतिष्ठानों में जीवन बीमा कम्पनियों के हिस्से १२ प्रतिशत से कम नहीं हैं। इसका अर्थ हुआ कि जीवन बीमा का राष्ट्रीयकरण करके सरकार ने निजी क्षेत्र के प्रतिष्ठानों में १२ से १५ प्रतिशत तक के अंशों पर अपना अधिकार कर लिया है। इसमें संदेह नहीं है कि इससे निजी क्षेत्र के पूंजीपतियों में घबराहट फैल गयी है। इसीलिए बहुत सी आपत्तियां खड़ी की जा रही हैं। ये आपत्तियां एक ओर तो पूंजीशाहों की ओर से खड़ी की जा रही हैं और दूसरी ओर मेरे मित्र अशोक मेहता की ओर से लाई जा रही हैं। परन्तु यदि अध्यादेश द्वारा यह राष्ट्रीयकरण न किया जाता तो बड़ी भयानक आर्थिक परिस्थितियां सामने आकर खड़ी हो जातीं। (२ मार्च, १९५६ को लोकसभा में भाषण)

यही कारण है कि जब हरिदास मूंदड़ा और राम कृष्ण डालमिया की अनियमितताओं तथा भ्रष्टाचार के विरोध में उन्होंने आवाज उठाई तो कुछ लोगों ने यह कह कर इसकी उपेक्षा करनी चाही कि इन दो व्यक्तियों के विरोध में आवाज

उठाना या यह तात्पर्य नहीं है कि "फिरोज गांधी पूरे निजी क्षेत्र या पूंजीवादी व्यवस्था के आलोचक हो गए हैं। क्योंकि इन दो पूंजीपतियों ने विशेष प्रकार की अनियमितताओं तथा भ्रष्टाचार का परिचय दिया है, इसीलिए वे इनकी आलोचना करते हैं।" परन्तु यह दावा निराधार है। फिरोज गांधी बिड़लाओं की समाज विरोधी चेष्टाओं का भी उतना ही प्रबल विरोध करते थे जितना मूंदड़ा या किसी दूसरे पूंजीपति का। यह सर्वविदित है कि बहुत दिनों तक और राष्ट्रीय स्वाधीनता की उपलब्धि से पहले ही राष्ट्रीय नेताओं के साथ बिड़लाओं के घनिष्ठ सम्पर्क रहे हैं। परन्तु इसके बावजूद फिरोज गांधी ने पूंजीवाद की सामान्य असंगतियों तथा समाजविरोधी प्रवृत्तियों का विरोध करते समय किसी भी विशेष पूंजीपति को कोई छूट नहीं दी।

उदाहरण के लिए जिस समय फिरोज गांधी अपने ६ दिसम्बर १९५८ के ऐतिहासिक भाषण में आर्थिक अनियमितताओं की आलोचना कर रहे थे, उस समय एक माननीय सदस्य ने उन्हें टोका और कहा कि दूसरे लोग भी अनियमितताएं करते हैं। फिरोज गांधी ने एक सैद्धांतिक उत्तर दिया और कहा कि "दूसरे लोग भी ऐसा करते हैं। मैंने यह कभी नहीं कहा कि केवल कुछ विशेष लोग ही इस प्रकार की अनियमितताएं बरतते हैं।"

यह बात और भी महत्वपूर्ण है कि टाटा और फिरोज गांधी जहां एक ही धर्म अथवा जाति से सम्बन्ध रखते थे एवं दोनों ही अल्पसंख्यक थे, वहां दूसरी ओर टाटाओं का भी राष्ट्रीय नेताओं और आन्दोलन के साथ गहरा सम्पर्क रहा है परन्तु इसके बावजूद फिरोज गांधी ने इस व्यक्तिगत सम्पर्क को अधिक महत्व न देकर राष्ट्रीय अर्थतंत्र के विकास को ही सर्वोपरि महत्व दिया था। यही कारण है कि राष्ट्रीयकरण की आवाज ऊंची उठाते समय सबसे पहले उन्होंने टाटाओं के लोकोमोटिव वर्क्स के राष्ट्रीयकरण करने की भी आवाज उठाई थी।

जैसा कि कहा जा चुका है फिरोज गांधी आर्थिक अनियमितताओं के विरोधी थे और पूंजीवादी एकाधिकारी व्यवस्था के समालोचक थे। परन्तु इसके बावजूद उन्होंने कुछ विशिष्ट एकाधिकारी पूंजीपतियों की विशेष आलोचना की थी। इसका स्पष्टीकरण देते हुए उन्होंने कहा—"इन थोड़े से पूंजीपतियों ने तमाम पालिसी होल्डरों और विनियोजकों का नैतिक बल तोड़ डाला है। ये वे लोग हैं जिन्होंने बीमा के व्यवसाय को कलंकित एवं पतित किया है। जीवन बीमा वास्तव में एक सहकारी उपक्रम है जिसमें एक सामान्य शत्रु मृत्यु के खिलाफ मिलकर संरक्षण प्राप्त किया जाता है। परन्तु जल्दी ही लाखों लोगों को यह अनुभव हो गया कि मुख्य खतरा तो वास्तव में इन पूंजीपतियों से है जो उनकी छोटी छोटी

जनता को और उनकी जान को खा रहे हैं।" (७ मार्च, १९५९ का लोक सभा में भाषण)

जिस समय संसद के अन्दर और बाहर विरोध पार्टी निजी क्षेत्र पर [illegible] कर रहे थे उस समय अधिकांश लोग यह समझ पाने में असमर्थ थे कि [illegible] इस "ऊँचे-नीचे" के पीछे मूल कारण क्या है? वे क्यों बार-बार उन्हें जनता के कठघरे में खड़ा करने पर जोर देते हैं? और उन्हें उसी दृष्टि से [illegible] पकड़ना चाहते हैं जैसे सामाजिक अपराधी पकड़े जाते हैं। कुछ लोग इसका यह भी अर्थ निकालते थे कि विरोध पार्टी कुछ पूंजीपतियों से 'व्यक्तिगत' राग-द्वेष रखती है। यह अवस्था के विचार से, व्यक्तिगत विरोधी किसी का मानना था।

परन्तु स्वर्गीय मधु के १५ साल बाद जब आपातस्थिति में रह रहे हैं तब हिन्दुस्तान का बच्चा-बच्चा पूंजीपतियों की चेष्टाओं और समाजविरोधी क्रियाओं से भली भांति परिचित हो चुका है। आपातस्थिति ने काले धन को [illegible] करने वालों को करीब १६ अरब रुपये का काला धन खुले बाजार में लाने के लिए मजबूर कर दिया है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के साथ षड्यन्त्र करके तथा प्रतिक्रियावादी राजनीतिक पार्टियों और उग्र वामपंथियों को अपना हथियार बना कर [illegible] ने भारतीय प्रजातंत्र और समाजवाद की गतिविधियों के खिलाफ जो षड्यन्त्र रचे थे वे कानून से बाहर होते जा रहे थे। [illegible] कानूनों और [illegible] की सामान्य परिपाटी द्वारा इन षड्यन्त्रों को विफल करना असम्भव हो गया था। पूरे साल भर तक आपातस्थिति के बावजूद यद्यपि इन षड्यन्त्रों ने अपना [illegible] बदल लिया है व खुले में आने से हट कर गुप्त रूप से राष्ट्रविरोधी कार्य कर रहे हैं परन्तु अभी भी वे निर्मूल नहीं किये जा सके हैं। अब सभी लोग यह समझ गए हैं कि पूंजीवादी सामाजिक प्रणाली में किस प्रकार के रोड़े अटकाता है [illegible] है, आदि।

एक बार सार्वजनिक क्षेत्र को बदनाम करने के लिए उनकी [illegible] की गयी तथा एक जांच की मांग करने वाले पूंजीपतियों से विरोध [illegible] ने पूछा था—'वास्तव में यह जांच किसके विरुद्ध बैठायी जानी चाहिये? यह जांच उन ठेकेदारों के खिलाफ बैठायी जानी चाहिये जो सार्वजनिक क्षेत्र को माल देते हैं। यही वह मोड़ है जहां सारी अनियमिततायें तथा भ्रष्टाचार जन्म पाता है। उन्होंने मांग की कि उच्च ज्योतिषियों के [illegible] बैठायी जानी चाहिए जो सार्वजनिक क्षेत्र में ठेकेदारी का काम [illegible] यह पता लगाने में थोड़ी सी भी देर नहीं लगेगी कि हमारे [illegible] भ्रष्टाचार फैलाने वाले कौन लोग हैं" उन्होंने कहा कि [illegible]

और फसाने वाले दूसरो को भ्रष्टाचारी कह कर खुद बच निकलना चाहते हैं।'

(३१ मार्च १६५६, लोकसभा भाषण)

वे सार्वजनिक क्षेत्र के खिलाफ मच बैठाने की माग करने वालो को लताड देते हुए कहते हैं कि —"सेठजी सार्वजनिक क्षेत्र की अनियमितताओ और भ्रष्टाचार के सम्बन्ध में जाच बठाने की माग तो बहुत करते हैं परन्तु जिस निजी क्षेत्र से वे सम्बन्धित हैं उन पूजीपतियो के काले कारनामो की जाच करने के लिये वे माग नहीं करते। (३१ मार्च १६५६, लोकसभा भाषण)

जसे जैसे देश के आर्थिक साधन विकसित होते जाते हैं वैसे-वैसे निजी क्षेत्र का सचालन करने वाले पूजीपतियो उद्योगपतियो और व्यापारियो के प्रभाव म निरतर वृद्धि होती जाती है। एक समय ऐसा भी आया था कि उनके इसी भयानक रूप पर अकुश लगाने के लिए कुछ राजनीतिक नेताओ ने घोषणाए की थी कि या तो "मैं स्वय मिट जाऊ गा और या फिर भ्रष्टाचार का उन्मूलन कर दूगा।" श्री गुलजारी लाल नन्दा ने आठ महीने के अन्दर भ्रष्टाचार का उन्मूलन करने का बीडा उठाया था। भ्रष्टाचार तो नही मिटा, परन्तु गुलजारी लाल नन्दा राजनीति के एक किनारे पर जरूर हो गये। केवल १६७५ मे आपात स्थिति लागू होने के बाद ही यह पू जीवादी भयानक दैत्य कुछ नियत्रण मे किया जा सका है।

फिरोज गाधी वीर पुरुष थे। वे विरोधियो के सामने कभी नही गिडगिडाये। उन्हे छूट देना भी वे उचित नही मानते थे। यही कारण है कि १६ दिसम्बर १६५७ को लोकसभा मे भाषण करते हुए उन्होने आर्थिक अपराधियो को चुनौती देते हुए कहा था कि, "आज इस सदन में जोरदार प्रहार होने जा रहा है क्योंकि जब मै प्रहार करता हू तो पूरी शक्ति के साथ करता हू। और यह आशा करता हू कि मेरा विरोधी मुझ से भी बडा प्रहार करेगा। मैं यह भूला नहीं हू कि दूसरा पक्ष भी पूरी तरह गोला बारूद से तयार बठा है।"

फिरोज गाधी म कितना साहस था, यह इसी से जाना जा सकता ह कि निजी क्षेत्र के बडे-बडे प्रभावशाली लोगो की ओर उन्होने अगुली उठाने का और उनके उद्योगो का राष्ट्रीयकरण करने का महत्व बताया। फिरोज गाधी वे पहले व्यक्ति थे जिन्होने एम्बसेडर, स्टैंडड तथा फीएट आदि महगी कारो के मुकाबले यह आवाज उठाई थी कि सवसाधारण जनता और मध्यम वग के लाभ के लिए छोटी कारो का निर्माण किया जाय। कार के नामकरण सस्कार भी बडे लुभावने किये गये थे, जसे कि छोटी कार, जनता कार सस्ती कार, जन-साधारण के लिए कार, आदि।

एक अन्य उद्धरण से भी यह भलीभाति सिद्ध हो जाता है कि फिरोज गाधी

करते नही थकते। उन्हे मुहतोड उत्तर देते हुए फिरोज गाधी ने कहा था —
"क्या हिन्दुस्तान शिपयार्ड कम्पनी निजी क्षेत्र में नहीं थी। सरकार ने निजी क्षेत्र को इस कम्पनी के कन्धो पर बहुत बडी जिम्मेदारी सौंपी थी और यह आशा की थी कि इस कम्पनी से देश को बडे बडे जहाज मिलेंगे। परन्तु इसका उल्टा हुआ। वहा जो कुछ भी किया गया उसे धन्नासेठ हजम कर गये। जब उन्होंने सब कुछ गुड गोबर कर दिया तो मजबूर होकर सरकार को यह कम्पनी अपने हाथो में लेनी पडी। जिस समय सरकार ने इसे अपने हाथो में लिया, उस समय वहा टिन की एक चादर तक नसीब नहीं हुयी। आज सार्वजनिक क्षेत्र के हाथों में पहुचने के बाद हिन्दुस्तान शिपयार्ड एक के बाद दूसरा जहाज बनाकर समुद्र में उतार रहा है। हमारा देश इस कम्पनी के काम पर गर्व करता है।"

(३१ मार्च १९५६, लोक सभा भाषण)

"इन लोगो की इच्छा यह है कि देश अपना कारोबार और उद्योग धधे इन पूजीपतियो को सौंप दे और खुद चैन से सो जाय। उन्होने पूजीवाद के प्रति अपना गहरा रोष और आक्रोश अभिव्यक्त करते हुए कहा था कि "इन्होंने मानव सम्पत्ति में केवल दो शब्द जोडे हैं—एक है चोरबाजारी और दूसरा है पगडी।"

फिरोज निजी क्षेत्र और बडे पूजीपतियो की चालाकियो से भलीभाति परिचित थे। उनकी विफलताओ का प्रदर्शन करते हुए इन पर वे तर्कसगत प्रत्याक्रमण करते है —

"इसके बाद श्री सोमानी द्वारा नेपा मिल पर किये गये हमलो का उत्तर देते हुये फिरोज गाधी पूछते हैं —इस फक्ट्री को किसने शुरू किया था? इसे पूजीपतियो ने निजी क्षेत्र में शुरू किया था, उन्होने खराब मशीनें मगवाई, खराब भवन बनवाये। जब निजी क्षेत्र को अपने बुरे दिन आते दिखाई देने लगे तो उन्होंने इस फक्ट्री के तमाम बही खाते जला डाले। और वे नेपा फक्ट्री को छोडकर भाग गये। इस समय सरकार इस कम्पनी को चला रही है। रोजाना यहा २० टन न्यूजप्रिंट बनता है। सरकार जल्दी ही १०० टन बनाने लगेगी। जब निजी क्षेत्र सब कुछ भस्म कर देता है और नाकामयाब हो जाता है तो उस पर कोई आक्षेप नहीं लगता, तब ये आलोचक निजी क्षेत्रो की बुराइयो की ओर ध्यान नहीं खींचते। परन्तु जब सरकार निजी क्षेत्र का कारोबार शुरू करती है तो सोमानी साहब चिल्ला उठते हैं—अरे तुम कितनी बुरी तरह काम करते हो?"

(३१ मार्च १९५६, लोकसभा भाषण)

जैसे-जैसे निजी क्षेत्र के मानस का विकास होता गया वैसे वैसे उसके राजनीतिक दावपेंच इतने असहनीय हो उठे कि सरकार पर दबाव डालने के लिए वे चौराहो पर चुनौतिया देने लगे तथा मिश्रित अर्थव्यवस्था में से सार्वजनिक

क्षेत्र का [illegible] तथा निजी क्षेत्र के पूंजीपतियों को सौंप देने के लिए [illegible] था। वे [illegible] को प्रभावहीन बनाने के लिए अधिक [illegible] राजनैतिक [illegible] न होने देना चाहते थे। [illegible] सिद्धान्त [illegible] ने यह नहीं माना [illegible] कि आर्थिक प्रभाव न बढ़े [illegible] और [illegible] पूंजीपति ऐसी [illegible] प्रतिज्ञा [illegible] होते हैं। इसीलिए वे निजी क्षेत्र की बार-बार आलोचना करते थे और उनका विस्तार रोकना चाहते थे।

करते आ रहे हैं।

पूंजीपतियो की समाज विरोधी प्रवतिया से फिरोज गाधी अत्यधिक असन्तुष्ट थे। उन्हे यह विश्वास ही नही था कि यदि उन्ह सरकार अपने सहयोग और साझेदारी मे लेकर काम करती है तो वे मुनाफाखोरी को प्राथमिकता न देकर जनसेवा और देशभक्ति को प्राथमिकता देंगे। इसीलिए उन्होने कहा था कि "मेरा सरकार को यह अन्तिम सुझाव है कि उसे भविष्य में कभी भी किसी निजी कम्पनी के साथ न हानि, न-लाभ के आधार पर कोई समझौता नहीं करना चाहिए।"

(५ सितम्बर १९५० को लोकसभा मे भाषण)

इतिहास ने यह प्रमाणित कर दिया ह कि सावजनिक क्षेत्र के सुसगत विस्तार की बात करके और निजी क्षेत्र की कटु-आलोचना करके फिरोज गाधी ने अपनी सूझबूझ का ही परिचय दिया था।

निजी क्षेत्र को कम लागत का और सावजनिक क्षेत्र को अधिक वेतन भत्ते आदि देने के कारण अपव्ययपूण बतान वालो को मुहतोड उत्तर देते हुए फिरोज गाधी एक निजी क्षेत्र की कम्पनी के द्वारा अपने अधिकारी को दी जा रही सुविधाओ का उल्लेख करते हुए उदाहरण देते है —"इस समझौते के अनुसार निदेशक श्रोफड को निम्नलिखित सुविधायें प्राप्त होगी —६ हजार ७५० रु० मासिक वेतन (२) एक प्रतिशत कमीशन (३) ६ हजार रु० प्रति वर्ष–यातायात भत्ता (४) ६ हजार रु० सालाना स्वागत भत्ता (५) श्रोफड का व्यक्तिगत पारिवारिक (जिसमें उनकी पत्नी सम्मिलित है) पूरा डाक्टरी खर्चा (६) श्रोफड का यह अधिकार होगा कि वह अपनी कम्पनी से पूछ कर पूरे ३ महीने के लिये काम से गर हाजिर हो सकते हैं और उन्हे पूरी सुविधायें प्राप्त होती रहेगीं। (७) बम्बई से इगलण्ड तक आने जाने में एक बार कम्पनी उनको अपनी पत्नी के साथ आने के दोहरे टिकटो का वमानिक किराया देगी।

(३१ माच १९५६ को लोकसभा म भाषण)

एव उदाहरण से परिणाम निकालते हुये वे घापणा करते है कि –

"हम इन तरीको को अपना कर समाजवाद की ओर नहीं बढ सकते। ये करतूतें सदमे पहुचाने वाली हैं। केवल दो व्यक्ति इस प्रकार मोटी-मोटी रकमें खच करते हैं, इसे सहन नहीं किया जा सकता।"

(३१ माच १९५६, लोकसभा भाषण)

आस्थावान नेहरूवादी

पं० जवाहर लाल नेहरू फिरोज गांधी के श्वसुर मात्र ही नहीं थे। वे फिरोज गांधी के आदरणीय गुरु और नेता बहुत पहले ही बन चुके थे। नेहरूजी जीवन पर्यन्त समाजवादी बने रहे और राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन की विचारधारा का समाजवादी विचारधारा के साथ मिला कर प्रवाहित करने में वे पूरे संसार के अनुकरणीय सिद्धांत शास्त्री माने जाते रहे हैं। उन्होंने सदा ही सचेत रूप में इस बात की चेष्टा की है कि समाजवादी आन्दोलन को राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन के मुकाबले खड़ा करके उसे कमजोर करने वालों का प्रभावहीन कर दिया जाय। यही कारण है कि हिंदुस्तान की इन दोनों प्रमुख विचारधाराओं में पं० नेहरू सदा अग्रणी स्थान पर रहे हैं।

फिरोज गांधी केवल राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिए ही संघर्ष नहीं कर रहे थे, बल्कि वे एकाधिकारी पूंजीपतियों पर अंकुश लगाने की उनके कुकृत्यों का भंडा-फोड़ करने की, पूंजीवाद की आम असंगतियों का वर्णन करके समाजवाद के लिए अनुकूल वातावरण बनाने की और उसकी ऐतिहासिक अनिवार्यता का प्रतिपादन करने की सफल चेष्टायें भी करते रहे हैं।

यही कारण है कि संसद के अंदर और बाहर उनकी समस्त गतिविधियां एक निश्चित लक्ष्य से प्रेरित हो कर चलती थीं जिससे कि वे और भी अधिक प्रभावशाली बन जाती थीं। अपने जीवन को निश्चित लक्ष्य विशेष की ओर प्रेरित करके फिरोज गांधी ने निजी स्वार्थ और सत्ता संघर्ष की परिधि से अपने आपको हमेशा बाहर रखा। यही कारण है कि जब वे सार्वजनिक हितों के प्रश्नों को उठाते थे और समाजविरोधी तत्वों पर धुआंधार बौछार करते थे तो उनके विरोधी भी उनकी आलोचना करने के स्थान पर अपनी ही आत्मालोचना करने के लिए बाध्य हो जाते थे। उन्हें दुलार-पुचकार कर, या कोई प्रलोभन दे कर अथवा पार्टी

अनुशासन का भय दिखा कर समाजवादी नीतियों के समर्थन की ओर से विमुख नहीं किया जा सकता था। उन्होंने अपने जीवन में कभी भी समाजवाद के मन्त्रों से सुलह समझौते नहीं किए। नेहरूवाद जो कि भारतीय परिस्थितियों में समाजवाद का पर्यायवाची हो गया है में उनकी आस्था अर्थविश्वासपूर्ण नहीं थी।

हम जीवन में ऐसे अनेक लोगों को जानते हैं जो किसी व्यक्ति के सामाजिक अपराधों की अवहेलना कर देते हैं और यह सोच कर मुंह नहीं खोलते कि किसी विशेष अवसर पर वह व्यक्ति उनके काम भी आ सकता है। हम ऐसा भी देखते हैं कि उनकी आलोचना अनिवार्य हो जाने पर भी दबी जबान से की जाती है और संसदीय तरीका बता कर अपनी आलोचना का तीखापन हटा दिया जाता है। और ऐसा तो प्रायः होता ही रहता है कि उच्च पदों पर स्थित प्रभावशाली लोगों के समाजविरोधी चरित्र की आलोचना जान-बूझ कर नहीं की जाती। परन्तु फिरोज गांधी इसके अपवाद थे। उनके समकालीन संसद सदस्यों को यह भली भांति याद है कि जब फिरोज गांधी ने जीवन बीमा कम्पनी के राष्ट्रीयकरण के सिद्धान्त का जोरदार समर्थन किया था और इस कम्पनी के भ्रष्टाचार तथा अनियमितताओं का कठोर भण्डाफोड़ किया था तो खुद फिरोज गांधी को बड़े धर्म संकट का सामना करना पड़ा था।

परन्तु पण्डित जी उन लोगों में थे जो सामाजिक हितों के मुकाबिले अपनी व्यक्तिगत रुचियों और अरुचियों को अधिक महत्व नहीं देते। इसी विश्वास ने फिरोज गांधी और अनेक प्रमुख व्यक्तियों में यह साहस उत्पन्न किया था कि वे जनहित में सामाजिक यथार्थ का प्रतिपादन कर सकते थे। इन आलोचनाओं के लिए अपेक्षित साहस भी उन्हें नेहरूवाद से ही प्राप्त होता था।

फिरोज गांधी लोकतन्त्र में अटूट आस्था रखते थे, परन्तु वे उन लोगों का मजाक बनाया करते थे जो लोकतन्त्र को समाजवाद के मुकाबले में रखने का प्रयत्न करते थे।

देखने में वे बहुत सीधे सादे और साधारण व्यक्ति प्रतीत होते थे। परन्तु उनकी सिद्धान्तनिष्ठा बहुत प्रखर थी। अनेक अवसरों पर उनके साथी यह अनुभव करके हैरान रह जाते थे कि इस व्यक्ति में विचारों की यह दृढ़ता कहां से और कैसे उत्पन्न हुई है?

जैसा कि इस पुस्तक के अन्य पृष्ठों पर बताया गया है कि नेहरूवाद अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी आन्दोलन और भारत के राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन का समन्वय है। अर्थात वह देश की स्वाधीनता एवं आर्थिक आत्मनिर्भरता और विश्व के समाजवादी आन्दोलन के बीच तारतम्य स्थापित करने वाला एक संतुलित क्रान्तिकारी आन्दोलन है। फिरोज गांधी नेहरूवाद के इस सैद्धान्तिक सूत्र को

भलीभांति समझते थे। यही कारण है कि समाजवादी होते हुए भी वे कभी जीवन मे समाजवादी पार्टी के सदस्य नही बने। अशोक मेहता, लोहिया और जे० पी० मण्डली से वे हमेशा दूर ही रहे। उनके विचार से ये झूठी समाजवादी पार्टिया और नेता वास्तव मे समाजवाद मे यकीन नही करती थी। ये पार्टिया मूल रूप से वैज्ञानिक समाजवाद तथा समाजवादी शिविर के देशो की समाज व्यवस्था पर कीचड उछालती रहती थी। वे अपनी पूरी शक्ति के साथ अमरीकी साम्राज्यवाद के सकुचित हितो की पैरवी करती थी और जनता को भ्रम मे रखने के लिए वामपक्षी एव समाजवादी शब्दावली का प्रयोग करती थी। समाजवादी विचार-धारा का विरोध करना ही उनका असली लक्ष्य था। पण्डित नेहरू ने भी इसी कारण कभी इन तथाकथित समाजवादी पार्टियो को सहयोग नही दिया।

यद्यपि यह सही है कि वे वैज्ञानिक समाजवाद मे गहरी आस्था रखते थे, भारत सोवियत मैत्री सघ के सस्थापको की सूची मे फिरोज गाधी का नाम केवल पहला और दूसरा ही रखा जा सकता है। परन्तु दूसरे और तीसरे दशक मे लेनिन की मृत्यु के बाद मार्क्सवादी आन्दोलन जिस सकुचित वामपक्षी मार्ग पर चल निकला था उसने उसे विश्व के स्वाधीनता आन्दोलनो की विपरीत दिशा मे मोड दिया था। इससे फिरोज गाधी को अतीव कष्ट एव सद्धान्तिक उलझने होती थी। नेहरूवाद ऐसी ही ऐतिहासिक परिस्थितियो मे देश के लाखो सचेत नवयुवको को एक ठोस वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है जिसमे राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलनो और समाजवादी आन्दोलनो के बीच तारतम्य स्थापित होता था। वास्तव मे जसी जटिल परिस्थितियो मे नेहरू जी देश की नाव खे रहे थे और चारो ओर के दबावो तथा प्रतिदबावो का मुकाबला करके देश की राजनीति को एक निश्चित दिशा मे चला रहे थे उससे भिन्न रास्ता अपनाना किसी भी दूसरे वैज्ञानिक समाज-वादी के लिए सभव नही था।

कौन जानता था कि अन्त मे यह वामपथी भटकाव इस पार्टी को दो टुकडो मे बाट देगा।

ऐसी दशा मे फिरोज गाधी (सिद्धान्तनिष्ठ) नेहरूवादी होने के कारण जीवनपर्यन्त एक ओर तो वामपथी अवसरवाद से सघर्ष करते रहे और दूसरी ओर दक्षिणपथी प्रतिक्रियावाद से लोहा लेते रहे। फिरोज गाधी क्या थे इसका अनुमान उनके सहयोगियो को देखकर भली भाति लगाया जा सकता है। उनके अभिन्न मित्रो और सहयोगियो की गिनती मे वे ही लोग आते थे जो सच्चे देश-भक्त होने के अलावा वैज्ञानिक समाजवाद मे भी विश्वास करते थे। वे चाहे काग्रेस मे हो या काग्रेस से बाहर हो, उनके अभिन्न मित्र सच्चे समाजवादी ही थे। सर्वश्री केशव देव मालवीय, रफी अहमद किदवई, असार हरवानी, रजनी पटेल,

भूपेश गुप्त रेणु चक्रवर्ती और अजीत प्रसाद जैन आदि अपने विचारा के कारण ही उनके जीवनपर्यन्त के सहयोगी और अभिन्न मित्र रहे हैं।

यदि सही अर्थों मे वैज्ञानिक समाजवाद और राष्ट्रीय स्वाधीनता की आका क्षाओ का समन्वय ही नेहरूवाद है ता फिरोज गाधी पूरी तरह नेहरूवादी थे और इस माग से वे एक क्षण के लिए भी कभी नही भटके।

इसमे सन्देह नही है कि जब भी कभी काग्रेस पर दक्षिणपथी प्रतिक्रियावाद का दबाव बढने लगता था एव स्वय नेहरू जी की स्थिति कमजार होने लगती थी तब वे काग्रेस से बाहर आकर उनसे लोहा लेने की ठानने लगते थे। उनके अनेक मित्रो ने हम बताया है कि कभी कभी वे कम्युनिस्ट पार्टी मे सम्मिलित होकर दक्षिणपथी प्रतिक्रियावाद से लोहा लेने की ठानते थे। परन्तु यह सोचकर अपने को काबू मे रख लेते थे कि यह पार्टी भी वामपथी अवसरवाद के भटकाव म बह जाती है।

इस तरह, यह अनुमान लगाया जा सकता है कि फिरोज गाधी किस जीवट के व्यक्ति थे और उनकी सिद्धान्तनिष्ठा कितनी अनुकरणीय थी।

जीवन बीमा कम्पनी के राष्ट्रीयकरण की माग

कुछ लोग यह चर्चा करते हैं कि फिरोज गाधी का जीवन बीमा निगम को सार्वजनिक क्षेत्र म लेने का या उसका राष्ट्रीयकरण करने का अभियान आकस्मिक था। उसके पीछे उनकी कोई सैद्धान्तिक विचारधारा और तथ्य नही थे। कुछ लोग यह आरोप भी लगाते हैं कि मूदडा और डालमिया-जैन के गलत कामों से रुष्ट होकर ही फिरोज गाधी ने राष्ट्रीयकरण की माग उठाई थी। यह कि व सिद्धान्त रूप से सार्वजनिक क्षेत्र एव पूजीवाद के आलोचक नही थे। कुछ खास लोगो की विशेष प्रवृत्तिया का ही वे विरोध किया करते थे। परन्तु इस प्रकार की बातें करना या तो द्वेष मूलक हैं और या अज्ञान मूलक है।

फिरोज गाधी सिद्धान्त रूप से मुख्य उद्योगो और आर्थिक सस्थाओ के राष्ट्रीयकरण के एव सार्वजनिक क्षेत्र के प्रबल समर्थक थे। उनका यह दृढ विश्वास था कि राष्ट्रीयकरण सार्वजनिक क्षेत्र का विस्तार करता है। सार्वजनिक क्षेत्र देश को आर्थिक आत्मनिर्भरता की ओर ले जाता है, देश को साम्राज्यवाद की कुटिलताओ का मुकाबला करने के लिए सक्षम बनाता है और उससे समाजवादी पुनर्निर्माण के लिए अनुकूल वातावरण बनता है। वे डालमिया-जैन या मूदडा के प्रति किसी द्वेषपूर्ण दृष्टिकोण के कारण राष्ट्रीयकरण का समर्थन नही करते थे।

यही कारण है कि २ मार्च १९५६ को लोकसभा मे जीवन बीमा के राष्ट्रीयकरण सम्बन्धी विधेयक का समर्थन करते हुए कहा था —

"मैं इस विधेयक का पूरे हृदय से समर्थन करता हू और वित्त मन्त्री तथा सदन को इसके लिए बधाई देता हू। मैं निजी क्षेत्र के दायरे से सार्वजनिक क्षेत्र में जीवन बीमा के प्रवेश का स्वागत करता हू। अब कोई यह शिकायत नहीं कर सकता कि ससदीय जनतत्र की गति धीमी है।"

प्रश्न यह उठता ह कि फिराज गाधी न जीवन बीमा और ऐसे ही दूसर वित्तीय सस्थाना का राष्ट्रीयकरण करने के लिए ही सबसे पहले आवाज क्या उठाई ? यह प्रश्न बहुत प्रासगिक है। सावजनिक क्षेत्र का निमाण करते समय सावना के अभाव की सबसे अधिक दुहाई दी जाती रही ह। परन्तु जीवन बीमा और दूसरी बीमा कम्पनिया म जो धन लगाया जाता है वह धन सवसाधारण जनता का है, पूजी पतिया का नहीं है और वह अप्रत्यक्ष रूप मे सावजनिक क्षेत्र की ही सचित निधि मानी जानी चाहिए। परन्तु यह सम्पूण निधि सावजनिक क्षेत्र का विकास करन के बजाय निजी क्षेत्र के विकास के लिए काम म आती रही है। यही कारण ह कि फिराज गाधी न बहुत दूरगामी दृष्टिकोण से काम लिया और सबसे पहला अभियान इन वित्तीय सस्थाना का राष्ट्रीयकरण करन के लिए चलाया जो सावजनिक क्षेत्र के लिए लाभदायक हो सकते हैं।

परन्त निजी क्षेत्र प्रशासन और अथव्यवस्था म अपनी जडें गहराई के साथ जमा कर बठा हुआ था। उसने इन वित्तीय सस्थाओ के सावजनिक क्षेत्र के अन्तगत आ जाने के बाद भी अपनी स्वाथ वत्ति का परित्याग नहीं किया। उसने ऐसे तरीके निरन्तर अपनाय तथा अपना रहा है जिनका सहारा लेकर उसने सावजनिक क्षेत्र की वित्तीय सस्थाओ का पूरी तरह शोषण किया और अपने प्रभाव का लगातार विस्तार किया है। फिराज गाधी इस ओर भी सावधान थे और उन्होंने इस प्रवत्ति पर बडी सावधानी से प्रहार किया ह।

इसके बाद फिरोज गाधी का ध्यान 'टेलको' की ओर आकृष्ट हुआ। यह सब विदित ह कि 'टाटा लोकोमोटिव और इजीनियरिंग वक्स' जिस तरह की अनियमितताए दिखला रहा था उससे न केवल टाटाओ के अकूत मुनाफा म वद्धि हो रही थी, बल्कि राष्ट्र को अपूरणीय आर्थिक हानि उठानी पड रही थी। अधिक मूल्य देकर भारतीय रेलो को घटिया किस्म के इजन खरीदने पड रह थे। इस पारसी नौजवान ने, जो अब अपनी आयु म परिपक्वता के साथ साथ सद्धान्तिक परिपक्वता भी प्राप्त कर चुका था, राष्ट्रीय हिता के मुकाबले अपने इस सजातीय पारसी धनासेठ का पक्ष नहीं लिया। उन्होंने विस्तारपूवक भारतीय ससद को यह बताया और पूरी ससद को अपने विचारो स सहमत किया कि 'टेलको' का राष्ट्रीयकरण करना राष्ट्र एव समाज के हित म क्यो ह तथा इसस राष्ट्र को उस क्षति स बचाया जा सकता ह जो उसके विकास को प्रभावित कर रही थी। यहा हमारे लिए किसी विशेष आर्थिक व वित्तीय शाखा के राष्ट्रीयकरण की नीति पर प्रकाश डालना आवश्यक नहीं है बल्कि यह बताना अनिवाय ह कि फिराज गाधी राष्ट्रीयकरण के प्रश्न पर किस सद्धान्तिक दृष्टिकोण और मान्यता स प्रभावित हो कर इतना जोर देत थ।

एक बार ६ सितम्बर १९५६ को लोकसभा म बोलते हुए रेलवे बोर्ड तथा टाटा लाकोमोटिव और इजीनियरिंग के बीच हुए समझौते की भत्सना करते हुए उन्होंने बहुत रोष भरे शब्दो म कहा था —"यह समझौता बहुत कपटी, षडयन्त्र पूर्ण और भ्रान्तिजनक है।

"जब हम अगस्त १९४७ मे अपनी स्वाधीनता की खुशियो में झूम रहे थे तभी रेलवे बोर्ड के किसी मेम्बर ने आजादी के ठीक पाच दिन बाद २० अगस्त को इस समझौते पर हस्ताक्षर कर दिये और २ वर्ष पहले से यानी १९३४ से उनको मान लिया गया।"

किसी औद्योगिक सस्थान का राष्ट्रीयकरण करना फिरोज गाधी के लिए साध्य अथवा लक्ष्य नही था बल्कि एक लक्ष्य तक पहुचने का अनिवार्य साधन मात्र था। यह सभी जानते हैं और पीछे कहा भी जा चुका है कि उनके जीवन का लक्ष्य समाजवाद की स्थापना करना था और इसके लिए व विशिष्ट ऐतिहासिक परिस्थितिया मे राष्ट्रीयकरण को समाजवाद का महत्वपूर्ण साधन मानते थ। एक बार 'टेल्को' पर बहस के समय उन्होंने ससद मे सरकार को चुनौती देते हुए कहा था —

"देश मे ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई है कि भारत सरकार के सामने केवल एक ही विकल्प है कि वह टाटाओ को बुला कर कहे कि टाटा लोकोमोटिव इजीनियरिंग वर्क्स का सार्वजनिक क्षेत्र मे अधिग्रहण किया जा रहा है। यदि आज आप ऐसा नही करते, तो मुझे दृढ विश्वास है, कि आपको यह काम कल अवश्य करना पडेगा। (५ सितम्बर १९५७, लोक सभा भाषण)

फिरोज गाधी के ये चुनौती भरे शब्द किसी भावावेश के कारण नही कहे गये थे। यह उनका सुनिश्चित मत था। और ससद को उन्होंने इस दिशा म प्रेरित करने के लिए जो भगीरथ प्रयत्न किये थे उनकी पूरी झलक अन्यत्र दी गई है।

अपने व्यक्तिगत अनुभवो के आधार पर फिरोज गाधी ने सरकार को इस बात म भी सहमत कर लिया था कि राष्ट्रीयकरण का विरोध करने वाली यह कम्पनी ३० सितम्बर, १९४६ मे खुद ही यह स्वीकार कर चुकी थी कि 'यदि वह अपनी वित्तीय कठिनाइया दूर करने म सफल न हो सकी तो सरकार द्वारा उसके अधिग्रहण किये जाने पर उसे कोई आपत्ति नही होगी।" यह एक विडम्बना ही है कि दो तीन साल की अवधि के बाद भी इस कम्पनी ने जो अनियमितताए और दोहरे मानदण्ड अपनाये थे उनके कारण वह एक ओर तो घाटे की चर्चाए करती रही और दूसरी ओर सरकार द्वारा अधिग्रहण करने के विरोध म हर प्रकार के छल-कपट अपनाती रही। उसने सरकार को कई करोड का घाटा देकर अपनी आर्थिक स्थिति मे सुधार कर लिया, जैसा कि निजी क्षेत्र प्राय किया करता है। यद्यपि फिरोज गाधी के टाटाओ के साथ बडे गहरे निजी सम्पर्क थे, परन्तु यह

उच्च कोटि का देशभक्त सामाजिक हितों की तुलना में अपने निजी सम्बन्धों को अधिक महत्व नहीं देता था। यही कारण है कि फिरोज गांधी ने टाटाओं के साथ रियायत बरतने के लिए प्रशासन पर निर्ममतापूर्वक प्रहार किये और उस पर यह आरोप लगाया कि जब निजी क्षेत्र के पूंजीपतियों के स्वार्थों पर अंकुश लगाने का प्रश्न आता है तो यह प्रशासन किसी प्रकार की भी चौकसी का परिचय नहीं देता। टेलको कम्पनी के राष्ट्रीयकरण करने पर अत्यधिक जोर देने का एक कारण यह भी था कि फिरोज गांधी इस कम्पनी द्वारा सरकारी साधनों का अपहरण किये जाने की नीति के कटु आलोचक थे।

परिशिष्ट में दिये गये स्वर्गीय फिरोज गांधी के कुछ भाषणों के अंश इस बात की पुष्टि करते हैं कि यह देशभक्त राष्ट्रीय हितों को कितनी प्राथमिकता देते थे और जब भी कभी और जहां भी कहीं उन्हें यह अनुभव हुआ कि निजी क्षेत्र और सरकारी शासन तन्त्र आपस में घुलमिल कर राष्ट्रीय सम्पदाओं का भक्षण कर रहे हैं, तभी और वहीं वे निशाना साध कर समाजविरोधी तत्वों पर प्रहार करते थे। इसीलिए कभी-कभी उनकी ध्वनि में इतनी गहरी कटुता और आवेश की झलक तक आ जाती थी जिसमें यह अनुभव होने लगता था कि वे सार्वजनिक सम्पत्ति के अपहरण पर उतने ही व्यथित हैं जितना व्यथित कोई अन्य व्यक्ति अपनी निजी सम्पत्ति के अपहरण पर होता है।

फिरोज गांधी तीक्ष्ण बुद्धि के थे। जब सरकार और शासनतंत्र में बैठे हुए लोग उनके प्रभावशाली तर्कों को प्रभावहीन करने के लिए इधर-उधर की किस्से कहानियां सुना कर तथा वाक् छल करके संसद में कोहरा फैलाने का प्रयत्न करते थे तो वे आसानी से उन चालाकियों को भांप जाते थे और उन्हें निरस्त्र कर देते थे। उन्हें यह देख कर और भी बुरा लगता था कि जो आर्थिक एवं औद्योगिक शाखाएं सार्वजनिक क्षेत्र में लाई जाती हैं उनके प्रशासनिक पदों पर बैठे हुए नौकरशाह उनकी कार्यकुशलता घटाते हैं, जान-बूझ कर उन्हें घाटे के दलदल में धकेलते हैं और निजी क्षेत्र के मालिकों तथा प्रबन्धकों से मिलकर इस क्षेत्र को जनता की नजरों में गिराने का प्रयत्न करते हैं। यही कारण है कि इस देशभक्त की तीखी आलोचना का शिकार उन नौकरशाहों को भी होना पड़ता था जो सार्वजनिक क्षेत्र के साधनों को निजी क्षेत्र की सेवा के लिए अर्पित देते थे।

इस अवसर पर यह ध्यान दिलाना आवश्यक है कि १९५५–५६ में जब एक बार निजी क्षेत्र के प्रवक्ताओं ने मिल कर सार्वजनिक क्षेत्र को बदनाम करने के लिए संसद में यह प्रस्ताव रखा कि सार्वजनिक क्षेत्र की त्रुटियों के कारणों की जांच की जाय तो इस प्रस्ताव के ऊपर बोलते हुए फिरोज गांधी ने यह घोषणा की थी कि "मैं इस बात पर लज्जित नहीं हूं कि सार्वजनिक क्षेत्र की त्रुटियों के

कारणो की जाच के लिए आयोग बैठाने की माग की जा रही है। मैं सावजनिक क्षेत्र की विजय के लिए सघप करने वाला योद्धा हू। मैं उनमे से एक हू, जिन्होने जीवन बीमा के राष्ट्रीयकरण के लिए सघप किया था। मैं यह चाहता हू कि देश की जनता और यह सदन अच्छी तरह से जान ले कि सावजनिक क्षेत्र की तह मे क्या हो रहा है ?"

काग्रेस मे और देश की अय प्रगतिशील सस्थाओ म सावजनिक क्षेत्र की स्थापना और विजय के लिए सघप करने वाले हम हजारो-लाखो लोगो को फिरोज गाधी की इस साहसपूण आस्था से प्रेरणा मिलती है। आज भी ऐसा अनुभव होता है कि समाजवाद की पूण विजय के लिए राष्ट्रीयकरण के माग को पूणतया निष्कटक करन का अभियान चलाने वाला यह योद्धा हमारे बीच म है और समाज विरोधी तत्वो को पहले की ही तरह जम कर चुनौती दे रहा है।

आर्थिक नियोजन का आधार क्या ?

फिरोज गांधी आर्थिक विकास की प्रत्येक समस्या को, चाहे वह तात्कालि हो या मौलिक सदा ही सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य में देखते थे। परन्तु हमारे देश में ऐसे लोगों की भी कमी नहीं है जो आर्थिक विकास और उत्पादन बढ़ाने के गम-नाम नारे तो बहुत लगाते हैं परन्तु यह कभी नहीं सोचते कि आर्थिक नियोजन के बिना आर्थिक साधनों का विकास और उत्पादन में वृद्धि करना आज की परिस्थिति में कदापि सम्भव नहीं है। फिरोज गांधी आर्थिक उत्पादन को निजी क्षेत्र के लालची उद्योगपति की दृष्टि से कभी नहीं देखते थे। आर्थिक विकास पर जोर देते समय वे प्राय उसके आम पक्षों और विपक्षों पर बल दिया करते थे। उदाहरण के लिए—

'आर्थिक नियोजन क्या ? आर्थिक नियोजन किसके लिए ? आर्थिक नियोजन कैसे ? और आर्थिक नियोजन की दिशा क्या ? आदि।

इन प्रश्नों का उत्तर जब तक नहीं दिया जाता तब तक आर्थिक नियोजन की वास्तविक रूपरेखा तैयार नहीं की जा सकती। यदि किसी देश के आर्थिक एवं वित्तीय साधनों पर निजी क्षेत्र का प्रभुत्व बना रहता है और सरकार के हाथों में अत्यल्प मात्रा में ही ये साधन रहते हैं तो सरकार के लिए आर्थिक नियोजन कर पाना कदापि सम्भव नहीं है। नियोजन करने वाला ही साधनों का स्वामी होना चाहिए। आर्थिक साधन निजी पूंजीपतियों के हाथ में हों और आर्थिक नियोजन सरकारी हाथों में हो यह अन्तर्विरोध आर्थिक अराजकता उत्पन्न करने के अलावा किसी लाभदायक नियोजन की ओर देश को नहीं ले जा सकता।

इसीलिए फिरोज गांधी ने आर्थिक नियोजन को सार्वजनिक क्षेत्र के साथ जोड़ने का प्रयत्न किया था। उनका यह दृढ़ विश्वास था कि समाजवाद के बिना किसी देश का आर्थिक नियोजन सम्भव नहीं है।

जब भी कभी उन्होंने किसी वित्तीय या आर्थिक शाखा के राष्ट्रीयकरण पर जोर दिया तभी वे यह बताना भी नहीं भूलते थे कि उस उद्योग में काम करने वाले मजदूरों की आर्थिक स्थिति पर इसका विपरीत प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए। अनेक अवसरों पर संसद में उन्होंने ऐसी शाखाओं के, जिनका राष्ट्रीयकरण किया जा रहा था, मजदूरों के वेतना में वृद्धि करने की और उनके बकाया वेतनों का तुरन्त भुगतान करने की ओर सरकार का ध्यान आकृष्ट किया था।

यही कारण है कि प० जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व में जब शासक पार्टी बार-बार आर्थिक नियोजन पर जोर देती थी और समाजवाद की स्थापना का प्रश्न केवल प० नेहरू की व्यक्तिगत रुचि का प्रश्न बनकर रह जाता था तो बहुत से विचारवान् कांग्रेस कार्यकर्ता यह बात समझ पाने में असमर्थ रहते थे कि समाजवाद के बिना आर्थिक नियोजन कैसे संभव हो सकता है ? अतः जब कांग्रेस ने अवाडी अधिवेशन में समाजवाद की स्थापना का नारा दिया तो न केवल अन्तर्विरोध समाप्त हो गया बल्कि लाखों कार्यकर्ताओं में इस कार्यक्रम के अपनाये जाने से उत्साह की लहर भी दौड़ी। फिरोज गांधी इसके अभिनन्दन-कर्त्ताओं में प्रथम थे।

लम्बे अंग्रेजी राज्य ने भारत के स्वाभाविक आर्थिक विकास में गतिरोध उत्पन्न कर रखा था। थोड़े से पूंजीपति साम्राज्यवादियों की दया पर जिन आर्थिक शाखाओं का विकास कर रहे थे उनके लक्ष्य अत्यधिक सीमित थे। ये उद्योग और आर्थिक शाखाएं उनके निजी स्वार्थों की पूर्ति करने में भी असमर्थ थीं। देश का आर्थिक काया पलट करना तो उनके द्वारा सोचा भी नहीं जा सकता था। ब्रिटिश कम्पनियां भारतीय पूंजीपतियों के माध्यम से, बल्कि कहना चाहिए कि ठेकेदारी प्रथा द्वारा कच्चे माल का भारत से निर्यात करने में और औद्योगिक (पक्का) माल इंगलैंड से भेजकर इनके द्वारा भारतीय जनता का शोषण करने में दिलचस्पी रखती थीं इसका नतीजा यह हुआ कि एक ओर तो भारतीय नगरों का उभार रुका रहा और दूसरी ओर देश की ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था इस लूट-खसोट से बर्बाद होती गयी। जब किसानों को उनकी पैदावार के पूरे दाम नहीं मिलते थे और वे ब्रिटिश उद्योगों के लिए सस्ता कच्चा माल देने के लिए अर्द्ध दासों की तरह खेतों में काम करते रहते थे एवं अपनी आय का ८० प्रतिशत भाग जमींदारों और साहूकारों को लगान एवं सूद के रूप में देते रहते थे तो भारत की खेती में विनियोग के लिए उनके पास साधनों का अभाव रहना स्वाभाविक था। इस दोहरी मार ने भारत की कृषि व्यवस्था को चकनाचूर कर दिया। भारत में पूंजीवादी आर्थिक विकास का मार्ग तो साम्राज्यवाद ने रोका ही, साथ ही पूंजीवाद की पूर्ववर्ती आर्थिक परिस्थितियों की भी उसने हिंसा द्वारा रक्षा की।

ये परिस्थितिया घोर प्रतिक्रियावादी थी और देश की प्रगति रोक रही थी।

इस आर्थिक पिछडेपन को समाप्त करने के लिए आर्थिक नियोजन करना और अधिकाधिक औद्योगिक तथा वित्तीय शाखाओ को सावजनिक क्षेत्र म लाना राष्ट्र के आर्थिक विकास क लिए अनिवाय था। इस पूरे अभियान म शासक पार्टी को फिरोज गाधी के प्रतिभाशाली योगदान का जो लाभ पहुचा है उसने पूरे ससद के इतिहास म उन्हें अमर कर दिया है।

आर्थिक नियोजन और समाजवाद म आस्था की घोषणा बहुत पहले ही हमारे निशाव नेहरू ने १६३६ म कर दी थी। लाड लोथियन को १७ जनवरी, १६३६ मे एक पत्र लिखते हुए उन्होंने कहा था

'मुझे पता नही है कि उस समाज से जो मुनाफाखोरी और पूजी के सचय पर आधारित है हम उस समाज की ओर कैसे बढ सकते हैं जो समाजवादी माग पर चलता है। इसलिए हमारे लिए यह अनिवाय हो जाता है कि हम उस समाज का ढाचा बदल दें जो मुनाफाखोरी और पूजी के सचय पर आधारित है। हम उन वाछित आदतो और विचारधाराओ का नया विकास करना होगा जो समाजवादी माग पर अग्रसर हो सकती है, और इसके लिए हम पूरी पूजीवादी व्यवस्था म पूण परिवतन लाना होगा।

समाजवाद कैसे आयगा ? आप कहते हैं कि पदावार के साधनो और वितरण प्रणाली के सवव्यापी राष्ट्रीयकरण से यह प्राप्त नही किया जा सकता क्या इसका यह अथ है कि एक नई सभ्यता वतमान स्थिति से भिन्न आधार पर नही बनाई जा सकती ? यह हो सकता है कि व्यक्तिगत पहलकदमी के आधार पर चलने वाले एक बडे क्षेत्र को छोड दिया जाय। जसे कि सास्कृतिक क्षेत्र आदि हैं। परन्तु उत्पादन और वितरण के क्षेत्रो का राष्ट्रीयकरण करना तो अनिवाय है। यह हो सकता है कि कुछ अधूरे कदम उठाये जाय परन्तु निजी क्षेत्र और सावजनिक क्षेत्र जो पूणतया परस्परविरोधी हैं, साथ साथ नही चल सकते। इन दोनो मे से एक की छाट करनी ही होगी। और जो व्यक्ति समाजवाद का लक्ष्य बनाकर चलता है वह सावजनिक क्षेत्र का ही समथन करता है।" (पुरानी चिटिठया)

इस प्रकार करीब ४० साल पहले भविष्य वक्ता नेहरू ने आर्थिक नियोजन और राष्ट्रीयकरण को समाजवाद की स्थापना का अनिवाय अग बताया था। कहना न होगा कि फिरोज गाधी इसी विचारधारा से पूणतया प्रभावित थे और उनके सम्पूण जन सघर्षों से सम्बधित कायकलाप पूणत इसी विचारधारा से अनुप्राणित थे।

वसे सावजनिक क्षेत्र और राष्ट्रीयकरण के सम्बध म पिछले ३० ४० वर्षों से अनेक प्रकार के भ्रम और गलत फहमिया पैदा करने के प्रयत्न किये गय है। यह

सर्वविदित है कि देश का सबसे बडा प्रचार साधन दैनिक समाचार पत्र और पत्रिकाए निजी क्षेत्र के नियन्त्रण म है और उन्होने सावजनिक क्षेत्र को हर तरह से बदनाम करने के प्रयत्न किये हैं। फिर भी राष्ट्रीय नेतत्व ने प्रत्येक अवसर पर राष्ट्रीयकरण के प्रश्न का जन मानस मे अच्छी प्रकार प्रतिष्ठित करन मे कोई कमी नही छोडी है। यदि अतिश्योक्ति न समभी जाय तो यह दावा करना उचित होगा कि आर्थिक विकास और सावजनिक क्षेत्र के निर्माण के प्रश्न पर पडित जवाहरलाल नेहरू के बाद फिरोज गाधी का स्थान दूसरा है जिन्होने इनके सम्बन्ध म फले भ्रम और असगतिया का जोर दार तरीके से निराकरण किया है।

राष्ट्रीयकरण अपन अन्दर अनिवाय रूप से दो वास्तविकताओ को समेट कर चलता है। पहली, निजी सम्पत्ति और मुनाफाखोरी की प्रवृत्ति का सामाजिक, आर्थिक ढाचे म से उन्मूलन करना और ऐसे सावजनिक स्वामित्व के क्षेत्र का निर्माण करना जहा पैदावार के साधनों पर सरकारी नियन्त्रण हो और जो धीरे धीरे समाजवाद म सक्रमण की परिस्थितिया प्रदान कर सके। दूसरी, निजी क्षेत्र की निजी सम्पत्ति और उत्पादन साधनो को कानून द्वारा सामाजिक नियत्रण मे लेकर राष्ट्रीयकरण की ओर अग्रसर होना।

इसम सदेह नही है कि काग्रेस ने समय समय पर देश के आर्थिक ढाचे के सम्बन्ध मे और आर्थिक नियोजन एव उसके माध्यम से समाजवाद मे सतरण के बारे म जो भी प्रस्ताव पास किये है उनका सन्निकटतम सम्बन्ध पिछले ५० वर्षों से नेहरू परिवार के साथ रहा है। यह विधि का आकस्मिक सयोग है या उसकी सुविचारित काय प्रणाली है, इसके बारे मे कोई विवाद नही किया जा सकता। लेकिन यह एक ठोस सच्चाई है कि निजी क्षेत्र की बुराइयो को बताते हुए और सावजनिक क्षेत्र तथा समाजवाद की स्थापना को अनिवाय कहते हुए प० नेहरू ने पूजीवाद की असगतियो को सबसे पहले जनता के सामने प्रकट किया था। इसके बाद नौजवान फिरोज गाधी ने उस परम्परा को जोरदार ढग से अग्रसारित किया और आज श्रीमती इन्दिरा गाधी आर्थिक नियोजन, राष्ट्रीयकरण और समाजवाद की उपलब्धिया को न केवल चार-चाद लगा रही है बल्कि उसके विरोध को भी निरस्त्र कर रही है।

यह कहना सवथा सही है कि काग्रेस म समाजवादी आन्दोलन का सद्धान्तिक विजय अभियान अप्रैल, १९३६ म काग्रेस के लखनऊ अधिवेशन म प्रारम्भ होता है जिसकी अध्यक्षता प० नेहरू ने की थी। उन्होन समाजवाद के सम्बन्ध मे चलन वाली तमाम बहसो का उपसहार करते हुए स्पष्ट शब्दो म अपन अध्यक्षीय भाषण म यह घोषणा की थी कि 'काग्रेस एक नई सभ्यता का निर्माण करना चाहती है जो मौजूदा पूजीवादी व्यवस्था के मुकाबले पूणतया भिन्न है।"

प० नेहरू उससे भी बहुत पहले भारतीय अर्थव्यवस्था में क्रान्तिकारी परिवर्तनों की कल्पना किया करते थे। मई, १९२९ में बम्बई में भारतीय कांग्रेस कमेटी की मीटिंग में सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों के बारे में जो प्रस्ताव पास हुआ था उसमें भी इन परिवर्तनों की स्पष्ट झलक मिलती थी।

जो लोग यह आरोप लगाते हैं कि राष्ट्रीयकरण, आर्थिक नियंत्रण और समाजवाद के सम्बन्ध में पिछले कुछ वर्षों से जरूरत से ज्यादा जोर दिया जा रहा है तथा कांग्रेस को उसके परम्परागत रास्ते से भटकाने के षड्यन्त्र किए जा रहे हैं उन्हें याद दिलाने के लिए यह काफी है कि अगस्त १९३१ में कांग्रेस ने मौलिक अधिकार सम्बन्धी अपने प्रसिद्ध प्रस्ताव में यह घोषणा की थी कि—

"जनता के शोषण का अन्त करने के लिए राजनीतिक स्वाधीनता में आर्थिक स्वाधीनता का सम्मिलित किया जाना चाहिए। तभी करोड़ों भूखे भारतीयों को भूख से बचाया जा सकता है। इन्हीं घोषणाओं में एक महत्वपूर्ण घोषणा यह थी कि राज्य तमाम मुख्य उद्योगों, सार्वजनिक सेवाओं, खनिज साधनों, रेलवे, जलमार्ग, जहाजरानी और दूसरे प्रमुख साधनों का अपने स्वामित्व में ले लेगा।"

१९४२ में जब कि भारतीय स्वाधीनता का अरुणोदय हो रहा था, कांग्रेस ने यह निश्चय किया था, कि राष्ट्र के आर्थिक विकास के लिए आवश्यक योजनाएं तथा विभिन्न योजनाओं में समन्वय करना आवश्यक होगा ताकि राष्ट्र की सम्पत्ति और शक्ति कुछ व्यक्तियों और व्यक्ति समूहों के नियन्त्रण में न चली जाय। मूल औद्योगिक उत्पादनों और वितरण के साधनों पर चाहे वह भूमि हो या उद्योग अथवा अन्य वित्तीय संस्थाएं आदि हों, सभी पर सामाजिक नियंत्रण अथवा मिल्कियत स्थापित की जायगी ताकि स्वतन्त्र भारत में एक सहकारी कामन वैल्थ (सहकारी भ्रातृ मण्डल) की स्थापना की जा सके।

नवम्बर १९४६ में अपने मेरठ अधिवेशन में स्वाधीनता से करीब ९ महीने पहले कांग्रेस ने पुनः यह घोषणा की थी कि—

"विशेषाधिकार युक्त वर्गों को यह सुविधा नहीं दी जायेगी कि वे सर्वसाधारण जनता का शोषण करते रहें, और आज की तरह असमानता को कायम रख सकें।"

परन्तु नवम्बर, १९४७ में स्वाधीनता के ठीक तीन महीने बाद अपने दिल्ली अधिवेशन में कांग्रेस ने यह स्पष्ट निश्चय किया था कि "आर्थिक ढांचा अधिकाधिक उत्पादन करेगा परन्तु वह निजी एकाधिकारों का निर्माण नहीं कर सकेगा, और राष्ट्र की सम्पत्ति थोड़े से हाथों में केन्द्रित नहीं होने दी जायगी।" सितम्बर १९४८ में कांग्रेस ने नागरिक अधिकारों में आर्थिक नियोजन और नियोजित अर्थ-व्यवस्था के सम्बन्ध में विशेष जोर दिया था।

१९५० में जब प्रथम पंचवर्षीय योजना की रूपरेखा तैयार की जा रही थी,

था। पूंजीपतियों की इजारेदार कम्पनियों ने आर्थिक नियोजन, राष्ट्रीयकरण और समाजवाद की विचारधारा पर विशेष प्रहार शुरू किये थे। उन्हें यह अनुभव हो गया था कि अब सत्ता कांग्रेस के हाथों में आ गई है और वह अपनी घोषित नीतियों पर अमल करने का प्रयत्न करेगी। परन्तु इन पूरे प्रहारों के बावजूद कांग्रेस ने जनवरी १९५५ में अपने प्रसिद्ध अवाडी अधिवेशन में न केवल नियोजित अर्थव्यवस्था की आवश्यकता को दोहराया बल्कि यह भी कहा कि "निजी क्षेत्र में चलने वाली जो आर्थिक शाखाएं राष्ट्रीय हितों के विरुद्ध आचरण करेंगी उन्हें सरकार अपने हाथों में ले लेगी।"

इस प्रकार शुरू से ही कांग्रेस ने आर्थिक विकास के लिए प्रगतिशील नीतियों को मान्यता दी है। आर्थिक नियोजन की घोषणाएं भी उसी नीति का अनिवार्य अंग थीं। कांग्रेस इन नीतियों के साथ बहुत पहले से जुड़ी हुई है और प्रत्येक बड़े सम्मेलन तथा अधिवेशन में उसने उन घोषणाओं को बार-बार दोहराया है। यह बात नहीं है कि आर्थिक नियोजन का क्या आधार हो, इस प्रश्न पर उसने विचार ही नहीं किया है। परन्तु फिर भी फिरोज गांधी ने अनेक अवसरों पर देश के आर्थिक विकास का भाग्य नियोजन एवं सार्वजनिक क्षेत्र के साथ जोड़ा था।

शुरू से ही कांग्रेस इजारेदार घरानों की प्रतिक्रियावादी प्रवृत्तियों के प्रति सावधान रही है। परन्तु इन इजारेदार घरानों ने बड़ी राजनीतिक कुशलता के साथ उसकी नीतियों में तोड़फोड़ एवं विभ्रम उत्पन्न करने के प्रयत्न किये हैं। वे लोग बार-बार कांग्रेस संगठन पर कब्जा जमाने का प्रयत्न करते रहे तथा बोगस सदस्य भर्ती का अभियान चला कर इस संगठन को प्रभावहीन करने का प्रयत्न करते रहे हैं। कभी-कभी कांग्रेस संगठन के बड़े-बड़े पदों पर ऐसे व्यक्तियों का अधिकार हो जाता था जो कांग्रेस की मूल नीतियों के सर्वथा विपरीत मान्यता रखते थे। बाद के दिनों में यह प्रवृत्ति और भी खतरनाक रूप में सामने आयी। उदाहरण के लिए कांग्रेस विभाजन की पूर्व वेला में फरीदाबाद में अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए निजलिंगप्पा ने ऐसी बातें दोहरायी थीं जिन्हें कोई इजारेदार घराना भी नहीं पसन्द करता था। यद्यपि इससे पहले भी कामराज योजना के माध्यम से पं० नेहरू ने [illegible] प्रतिक्रियावादी तत्वों को प्रशासन के ऊंचे पदों से हटा दिया था, परन्तु इस नीति का कार्यान्वयन मंजिल तक नहीं पहुंचाया जा सका।

इसके बाद जब भी कभी कांग्रेस में नीतियों के सवाल पर जबरदस्त संघर्ष छिड़ जाता था, तब हमेशा ही संगठन पर प्रतिक्रियावादियों की पकड़ सबसे अधिक मजबूत हो जाती थी। पंडित जी इस पकड़ से परेशान रहते थे और बार [illegible] श्रीमती इन्दिरा गांधी प्रधानमन्त्री के नाते में भी इन लोगों ने जोर प्रहार [illegible]। परन्तु ये उधर कभी भी जनता तक नहीं पहुंच पाते थे। यही

कारण है कि वामपक्षी प्रगतिशील विचारको को या तो पराजित हो जाना पडता था या वे चुप कर दिए जाते थे और या फिर काग्रेस सगठन छोडने के लिए बाध्य कर दिये जाते थे। इन तीनो कारणो से प्रतिक्रियावादी तत्वो की आ बनती थी और वे पहले से भी अधिक ढीठ होकर सरकार को अपने सकेतो पर नचाने का प्रयत्न करने लगते थे।

परन्तु १९६९ मे इतिहास पुनरावृत्ति नही करता और आगे की ओर बढता है। बैंक राष्ट्रीयकरण राजाओ के विशेषाधिकारो का अन्त और उप राष्ट्रपति श्री गिरि के चुनावो की समस्याओ पर चलने वाले सघर्षो मे करोडो भारतीय जनता ने सीधा हाथ बटाना शुरू कर दिया। बाहर के दबाव से अन्दर का प्रतिक्रियावाद टूट गया। वह काग्रेस छोड कर बाहर चला गया। सगठन पर वामपक्षी प्रगतिशील शक्तियां अधिक प्रभावशाली स्थिति मे उभरी। काग्रेस के पूरे इतिहास मे यह एक नया मोड था।

अपने जीवनकाल मे फिरोज गाधी ने प्रगतिशील नीतियो की घोषणा और उनके विपरीत आचरण के विरोध मे अन्तर्विरोध की ओर बार-बार जनता और सरकार का ध्यान आकृष्ट किया था।

इस आर्थिक व सामाजिक अन्तर्विरोध का दिग्दर्शन ससद मे जिन लोगो ने कराया, उनमे फिरोज गाधी सर्वाधिक सचेत थे। उन्होने बार-बार मन्त्रियो और सम्पूर्ण सरकार को चेतावनी दी कि उनकी नाक के नीचे वे इजारेदार घराने फल फूल रहे है जिन्होने राष्ट्र के आर्थिक साधनो को अपनी तिजोरियो मे बन्द कर लिया है। उनके प्रबल प्रहारो से विवश होकर अनेक अवसरो पर सरकार को ऐसे मन्त्रियो के खिलाफ या तो कार्यवाही करनी पडी और या वे स्वय त्यागपत्र देकर सरकार से पृथक हो गये जिन्होने जाने या अनजाने मे इजारेदार घरानो को लूट मचाने का अवसर दिया था। फिरोज गाधी ने उन भ्रष्ट अधिकारियो को भी नही बख्शा जो अपने व्यक्तिगत स्वार्थों मे लिप्त होकर इन समाजविरोधी इजारेदारो और भ्रष्ट मन्त्रियो के बीच सम्पर्क का माध्यम बने हुए थे।

कुछ लोग यह आक्षेप करते है कि फिरोज गाधी का इजारेदार घरानो पर निर्मम प्रहार करना अनावश्यक था। वे लोग तो उन सुविधाओ का ही लाभ उठा रहे थे जो समय-समय पर सरकार की ओर से उन्हे दी जाया करती थी। परन्तु इन्होने केवल इतना ही नहीं किया है। इन लोगो ने अपनी आर्थिक इजारेदारी का लाभ उठा कर राजनीतिक इजारेदारी के भी प्रयोग किये थे। अर्थात् अनेक अवसरों पर उन्होने ऐसे स्वनामधन्य और सच्चे देशभक्त मन्त्रियो तक को मन्त्रि मण्डल से बाहर निकालने के लिए प० नेहरू पर दबाव डाले थे जिन्हें वे अपनी इच्छा से कभी बाहर न निकालते।

उदाहरण के लिए, १९६२ में चीन द्वारा भारत पर आक्रमण के समय इन घरानों ने अपने समाचार पत्रों द्वारा स्व० वी० के० कृष्ण मेनन की चरित्र हत्या करने का और उस युद्ध में भारत की पराजय का पूरा उत्तरदायित्व श्री मेनन पर थोपने का कुटिल षडयन्त्र रचा था। राजनीतिक इतिहास का प्रत्येक विद्यार्थी यह जानता है कि प० नेहरू श्री मेनन पर कितना भरोसा करते थे। सब लोग यह भी जानते हैं कि आज के प्रशंसनीय रक्षा उत्पादन के नियोजन का एकमात्र श्रेय मेनन का ही है। वे यह भलीभांति जानते थे कि साम्राज्यवाद भारतीय सीमान्तों के चारों ओर जो षडयन्त्र रच रहा है उसका निशाना भारत की आर्थिक आत्म-निर्भरता है। उसमें वह बड़े पैमाने पर तोड़फोड़ करना चाहता है। चीनियों के आकस्मिक और विश्वासघातपूर्ण आक्रमण पर यदि भारत को क्षणिक धक्का लगा भी था, तो इस का यह अर्थ कदापि नहीं था कि श्री मेनन की व्यक्तिगत कमजोरियां या राजनीतिक चिंतन इसके लिए जिम्मेदार था। वास्तव में ये इजारेदार घराने और उनके पैसे पर राजनीतिक दुकान चलाने वाले दक्षिणपंथी प्रतिक्रियावादी स्वयं भी यह भलीभांति जानते थे कि समसामयिक परिस्थितियों में भारत के लिए श्री मेनन से अधिक उपयुक्त रक्षामन्त्री दूसरा नहीं हो सकता था।

यदि ये प्रतिक्रियावादी वस्तुतः हमलावर चीन के विरुद्ध संघर्ष में ढिलाई के कारण श्री मेनन पर रुष्ट होते तो इसके लिए उन्हें अपनी ही आत्मालोचना करने की आवश्यकता थी। यह कौन नहीं जानता कि जब श्री मेनन अपना रक्षा बजट प्रस्तुत करते समय भारतीय जवानों के लिए अच्छे हथियारों तथा शस्त्र आदि एवं यातायात के मार्गों तथा वाहनों की मांग करते थे तो मन्त्रिमण्डल के अन्दर बैठे हुए तथाकथित गांधीवादी नेता मोरारजी देसाई एवं संसद में विरोध पक्ष में शोर मचाने वाले जे० बी० कृपलानी तथा संसद के बाहर प्रगतिशील नीतियों के विरोध में जहर उगलने वाले जयप्रकाश नारायण गांधीजी के नाम पर यही कहते थे कि हथियारों की मांग क्यों करते हो ? रक्षा बजट बढ़ाने का प्रयत्न क्यों कर रहे हो ? और यह कि भारतीय स्वाधीनता को किसी भी ओर से कोई खतरा नहीं है और रक्षा के मद में खर्च होने वाला धन उन साधनों में लगा देना चाहिए जो यातायात और उद्योग धंधों में काम कर रहे हैं, आदि।

इसका अर्थ हुआ कि इजारेदार घराने अपने प्रभावशाली समाचार-पत्रों और इन राजनीतिक नेताओं द्वारा श्री मेनन के रक्षा प्रयत्नों पर खर्च होने वाला पैसा कल-कारखानों की स्थापना करने के नाम पर हथिया लेना चाहते थे।

इसके अलावा, एक और कारण भी था जिस पर ये इजारेदार घराने श्री मेनन से रुष्ट रहते थे। जब तक रक्षा विभाग श्री मेनन के हाथों में नहीं आया था तब बड़े पूंजीपति घराने ही सेना के बड़े ठेकेदार भी होते थे। वही खाना, पीना,

वर्दिया, जूते और दूसरा सामान सेना का माहय्या किया करते थे। सनिक उत्पादन प्रारभ नही हुआ था, इसीलिए कुछ हथियारो और वाहनो की पूर्ति भी ये पूजीपति ही करते थे। सडक व पुल बनाना एव अधिकाश कामभार ठेकेदारो पर ही निभर रहता था। बडे सेनाध्यक्षो तथा बडे ठेकेदारो के बीच मिलीभगत रहती थी। वे दोनो माला माल होते थे और साधारण सैनिको को अच्छा खाना और कपडा एव वर्दिया तक नही मिल पाती थी। सडको और पुलो के निर्माण की झूठी रिपोर्टें दे कर करोडो रुपया अपनी जेबो म डाल लिया जाता था और राष्ट्रीय सुरक्षा खतरे मे डाल दी जाती थी। अपने मुनाफा के लिए देश को खतरे म डालते समय उन्ह कोई डर नही लगता था।

श्री मेनन न बडे स्तर की पूर्ति और रक्षा उत्पादन तथा यातायात का काम ठेकेदारो के हाथो से ले लिया। निजी क्षेत्र से निकल कर यह काम सावजनिक क्षेत्र मे आया तो सेना का पूरा वातावरण ही बदल गया। सनिको को अच्छा खाना, कपडा और वर्दिया मिलने लगी। अच्छे सुरक्षात्मक विमान बनाये जाने लगे जिन्होन आगे चल कर पाकिस्तान आक्रमण के समय अच्छे जौहर दिखाय। ये ठेकेदार कैसी सडक बनाया करते थे इसका भण्डाफोड चीनी आक्रमण के समय हुआ। नक्शो मे सडके और पुल बने हुए थे, जब कि मौके/पर वियाबान जगल थे। ठेकेदारो के इस विश्वासघात के कारण भारतीय जवानो को चीनी आक्रमण कारियो के सामने मुह की खानी पडी थी। परन्तु इन ठेकेदारो और उनके प्रति क्रियावादी राजनीतिक प्रवक्ताओ ने १९६२ के युद्ध मे भारत के अपमान की जिम्मेदारी केवल श्री मेनन पर डाली। अपने अपराधो पर परदा डालने के लिए इस सच्चे देशभक्त को बलि पर चढाया गया।

परन्तु यह गुस्सा केवल मेनन पर ही नही उतारा गया। अन्य प्रगतिशील व्यक्तियो पर भी तीखे प्रहार किय गये ह।

वे श्री मेनन पर इसलिए नाराज नही थे कि उन्होन देश की रक्षा व्यवस्था म किसी प्रकार की ढील की थी, व तो श्री मेनन पर इसलिए रुष्ट थे कि भारतीय मन्त्रिमण्डल म श्री मेनन दूसरे प्रभावशाली व्यक्ति थ जो कदम कदम पर इजारेदार घरानो के शोपण का विरोध करते थे और उन पर कठोर अकुश लगाने के लिए प० नेहरू के हाथ मजबूत करते रहते थे। य लोग श्री मेनन को मन्त्रिमण्डल से हटा कर प० नेहरू की प्रगतिशील नीतियो को कमजोर कर देना चाहते थे।

केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल और अनक राज्य मन्त्रिमण्डलो म उन मन्त्रियो को भी जो प० नेहरू की परम्पराओ पर चलने का प्रयत्न करते रह थे और देश की अर्थ-व्यवस्था का आर्थिक नियोजन तथा राष्ट्रीयकरण की ओर ले जाना चाहते थ, उनके विरोध का निशाना होना पडा है। बहुतो को य लोग किसी-न किसी महान

से बदनाम करते ही रहे हैं, उनकी चरित्रहत्या करते रहे हैं और मन्त्रिमण्डलों से बाहर धकेलने में कामयाब होते रहे हैं। एक जमाना था कि श्री केशव देव मालवीय इनके हमलों का मुख्य निशाना थे, जिन्हें वर्तमान प्रधानमन्त्री ने गुणवत्ता के आधार पर न केवल राजनीति में पुनः प्रतिष्ठित किया है बल्कि उनकी लगन और कार्यक्षमताओं का पूरा लाभ उठा कर ऊर्जा की महत्वपूर्ण औद्योगिक शाखा का कार्यभार भी सौंपा है। देश को ऊर्जा में आत्मनिर्भरता की ओर ले जाने में उनका बड़ा योगदान रहा है।

हमें यह कहते हुए गर्व अनुभव होता है कि जब भी कभी फिरोज गांधी के जीवनकाल में संसद के अन्दर प० नेहरू की प्रगतिशील आर्थिक नीतियों पर कुटिल प्रहार किये गये तभी उन्होंने अर्जुन की तरह दृढ़संकल्प के साथ प्रतिक्रियावादियों पर अपने वाक् बाणों का निर्मम प्रहार किया था।

इस प्रसंग में एक प्रश्न यह भी उठाया जाता है कि फिरोज गांधी ने इजारेदार कम्पनियों के राष्ट्रीयकरण पर जोर देते हुए गैर इजारेदार कम्पनियों के राष्ट्रीयकरण पर जोर नहीं दिया इसका क्या कारण है ? यह समझना कोई जटिल समस्या नहीं है। फिरोज गांधी लघु और मध्यम स्तर के उत्पादन को राष्ट्र के आर्थिक विकास में बाधक नहीं मानते थे। जिन लोगों ने वैज्ञानिक समाजवाद के प्रथम सिद्धान्तकारों की रचनाओं का अध्ययन किया है वे यह भलीभांति जानते हैं कि समाजवादी व्यवस्था के विजयी हो जाने के बाद भी लम्बे समय तक छोटा और मध्यम श्रेणी का उत्पादन सहन किया जाता है। न केवल सहन किया जाता है बल्कि उन्हें हर प्रकार का सहयोग एवम् संरक्षण भी प्रदान किया जाता है। लेनिन और प० नेहरू दोनों ने ही इस बारे में विस्तारपूर्वक लिखा है कि इन आर्थिक शाखाओं को सहयोग देकर समाज की तात्कालिक आवश्यकतायें पूरी कराने में इनसे मदद ली जा सकती है।

परन्तु जब भारतीय संसद और सरकार में इजारेदार कम्पनियों के राष्ट्रीय करण की चर्चाएं चलीं तथा उनकी अनियमितताओं पर रोक लगाने की योजनाएं नने लगीं तो उन्होंने छोटे तथा मध्यम श्रेणी के उत्पादकों को गुमराह करना ह कर दिया। वे अपने अखबारों के जरिये और कानाफूसी से यह प्रचार कर थ कि 'आज मूंदड़ा या डालमिया जैन की बारी है तो कल छोटे छोटे उत्पादकों मध्यम श्रेणी के उद्योगपतियों का भी राष्ट्रीयकरण किया जायेगा। सरकार पूंजी को समाप्त करने पर तुली हुई है।' यह वैसा ही प्रचार था जैसे १९५२ में जमींदारी खात्मा कानूनों को लागू करते समय बड़े जमींदार और ी छोटे व मध्यम किसानों को यह कह कर बरगलाया करते थे कि "कल त भी छीन जाएंगे और सबकी जमीन भूमिहीनों में विभक्त कर दी

जायेगी। सरकार किसानी अर्थ-व्यवस्था को नष्ट करके सहकारी कृषि-व्यवस्था को पूरे देश पर लागू करना चाहती है।" आदि आदि।

ये इजारेदार घराने यह भूल जाते हैं कि जैसे हजारों छोटी मछलियों को खा खा कर एक बड़ी मछली मोटी हो जाती है, उसी तरह, ये इजारेदार घराने लाखों छोटे छोटे उत्पादकों को खा-खाकर मोटे इजारेदार बनते हैं। सरकार इन छोटे उत्पादकों का उन्मूलन नहीं करती है, विपरीत इसके, उन्हें हर प्रकार का संरक्षण देती है। परन्तु फिर भी ये इजारेदार घराने यह नहीं कहते कि हम इन छोटे और मध्यम श्रेणी के उत्पादकों को खा कर मोटे होते हैं बल्कि अपनेआपको उनका हमपेशा और मददगार कहकर उन्हें सरकार के खिलाफ लड़ने के लिए उकसाते हैं जो हर तरह से इन को संरक्षण और प्रोत्साहन देती है। इनके भक्षक अपने को संरक्षक बताते हैं और संरक्षक सरकार को उनका भक्षक कहकर बदनाम किया जाता है।

अनेक अवसरों पर इजारेदार कम्पनियों के अखबारों ने फिरोज गांधी की राष्ट्रीयकरण की नीतियों के विरुद्ध इसीलिए जहर उगला गया कि वे छोटे उत्पादकों और मध्यम श्रेणी के उद्योगपतियों का इजारेदारों के साथ मिल कर एक विनाशकारी मोर्चा बनाने से रोकते थे।

इस प्रकार, प्रत्येक विवेकशील व्यक्ति यह अनुभव कर सकता है कि आर्थिक नियोजन एवं आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए फिरोज गांधी सार्वजनिक क्षेत्र में औद्योगिक व वित्तीय शाखाओं को क्यों लाना चाहते थे। उनका यह कहना तर्कसंगत था कि जब तक सरकार के हाथों में उत्पादन एवं वितरण के साधन नहीं आ जाते तब तक सुचारु ढंग से नियोजन का कार्य लक्ष्यों की ओर नहीं बढ़ सकता। इसी लक्ष्य से प्रेरित हो कर फिरोज गांधी राष्ट्रीयकरण की दृढ़ता के साथ पैरवी करते थे।

फुलवाडी के नीचे का ज्वालामुखी

फिरोज गाधी हसमुख, सुदर और मधुर व्यक्ति थे। इसम दो राय नही है कि एक बार जो भी व्यक्ति उनके सन्निकट सम्पक म आ जाता था, फिरोज को भूलना उसके लिय आसान नही था। दिल्ली और इलाहाबाद म ऐसे हजारो लोग हैं जिनमे घरेलू कमचारियो स लेकर मन्त्रिमण्डल म सम्मानित पदो पर आसीन प्रमुख व्यक्ति तक शामिल है जो फिरोज गाधी का नाम आ जान पर विह्वल हो उठते है और अत्यधिक स्नेह और आदर स उन्हे याद करते है।

उनके व्यक्तिगत जीवन के सम्बन्ध म अब तक के पृष्ठो पर सक्षेप मे यथा-सम्भव परिचय देने का प्रयत्न किया गया है। ऊचा उठने के लिए समाज म जो बडी से बडी सुविधाए हो सकती ह व उन्हे उपलब्ध थी। व्यक्तित्व सुदर था। विलायत म रह कर उच्च शिक्षा प्राप्त कर चुके थे। उनकी भाषण कला प्रभावोत्पादक थी। इस देश का सबसे बडा व्यक्ति और राष्ट्र-निर्माता उनका श्वसुर था। महात्मा गाधी से लेकर केन्द्रीय और राज्य मन्त्रिमण्डलो के अनेक प्रमुख सदस्यो तक उनका घनिष्ठ सम्पर्क था। परन्तु इस सबके बावजूद फिरोज गाधी अपने व्यक्तित्व का विस्मरण करके हमेशा ही उन लक्ष्यो स प्रेरित हो कर काय करते थे जो उन्हे अत्यधिक प्रिय थे और जो लक्ष्य भारतीय जनता को उसकी गरीबी के दलदल से निकाल कर सुख और शान्ति के शिखर पर पहुचा सकते थे।

फिरोज गाधी को अपने वास्तविक बुद्धि वैभव और आदर्शों के प्रति निष्ठा का परिचय देने का समय बहुत कम मिला। जब वे अपनी गरिमा और उच्चता के प्रारम्भिक शिखरो को ही छू रहे थे उसी समय दारुण मृत्यु न अचानक हमला बोल कर उनकी इह लीला समाप्त कर दी। परन्तु इस छोटी सी अवधि म ही अपन बुद्धि वैभव की जो छटा और कर्तव्यनिष्ठा उन्होने दिखायी थी, उसकी छाप

इतनी चमत्कारपूर्ण है कि जैसे-जैसे समय आगे बढ़ता जाता है वैसे वैसे उनके कार्य-कलापों के प्रति देशवासियों के संस्मरण और यादगारें घनीभूत होकर पीछे की ओर मुड़ती जाती हैं।

यद्यपि यह सही है कि ऊपर से देखने में फिरोज गांधी एक हंसती हुई फुलवाडी के समान प्रतीत होते थे परन्तु उनके अंतराल में जिस किसी ने भी झांक कर देखा, वह यह नहीं भुला सकता कि वे एक भयानक धधकते हुए ज्वालामुखी के समान थे। इस ज्वालामुखी में घनीभूत आत्मविश्वास और आत्मसम्मान की ज्वालाएं देदीप्यमान रहती थीं। शोषित जनता के साथ होने वाले अन्याय और शोषण के विरुद्ध क्रोध की चिंगारियां छिटकती रहती थीं। और इस जनता की मुसीबतों को बढ़ाने वाले इजारेदारों, साम्राज्यवादियों और बड़े जमींदारों के ऊपर वे बिजली की कड़क की तरह टूट कर गिरने को हर समय तैयार रहते थे। भारतीय संसद में उनके भाषण इसके प्रमाण हैं।

और यह बात नहीं है कि वे केवल साधनहीन और शोषित भारतीय जनता पर होने वाले अन्याय और जुल्म पर ही क्रोध किया करते थे। उनके पुराने साथी यह भली भांति याद करते हैं कि स्पेन के गृहयुद्ध में फासिज्म के विरोध में और श्रमजीवी जनता के समर्थन में वे हाथ में बंदूक लेकर संघर्ष करने के लिए किस तरह छटपटाया करते थे।

यहां तक कि इंगलैंड में अध्ययन करने के उपरांत और दूसरे महायुद्ध का प्रारम्भ होने से पहले जब वे देश वापिस आये तो उनकी आर्थिक परिस्थितियां उन्हें मजबूर करती थीं कि वे नौकरी या छोटा सा व्यापार चला कर अपने लिए जीविका साधनों का संचय करें। मगर एक क्षण के लिए भी उन्होंने अपने सम्बन्ध में या अपने परिवार की आर्थिक परिस्थितियों के बारे में नहीं सोचा और कांग्रेस के एक वफादार सैनिक के रूप में वे तीसरी बार स्वाधीनता संघर्ष में कूद पड़े।

उनके मन में शोषण और अन्याय के विरुद्ध इतनी तीव्र आग सुलगती रहती थी कि वे शोषण और अन्याय से किसी शर्त पर भी समझौता करने के लिए तैयार नहीं थे। उन्होंने अपनेआपको एक सिद्धांतनिष्ठ समाजवादी और नेहरूवादी के रूप में ढाला था। उनकी इस सिद्धांतपरायणता ने अनेक अवसरों पर चोटी के नेताओं के मनों में असन्तोष की भावनाएं तक उत्पन्न की थीं। परन्तु फिरोज अपने सिद्धांतों से अलग हट कर किसी बड़े से बड़े नेता की कृपा प्राप्त करने की चेष्टा नहीं करते थे। आर्थिक और सामाजिक जीवन में यहां तक कि राजनीतिक जीवन में भी बेईमानी और अवसरवाद बरतना फिरोज गांधी के लिए असम्भव था। अपने इस स्वभाव के कारण कभी-कभी अपनी मित्र मंडली और अभिभावकों के बीच उन्हें आलोचना के शब्द भी सुनने को मिल जाते थे। परन्तु वास्तव में

फिरोज गाधी अहकारी नही थे। अपन आत्मसम्मान और मर्यादा की रक्षा के लिए यदि उन्ह कभी बडे से बडा बलिदान भी करना पडता था तो उसे करने म व कभी आगा पीछा नही दखत थ।

अपन आत्मसम्मान और कर्तव्यपरायणता के प्रति फिरोज गाधी इतन सचेत रहते थ कि व पडितजी क दामाद होन की विशेष स्थिति का लाभ उठाने की कभी चेष्टा नही करते थ। स्वाधीनता के उपरान्त हमारी राजधानी नई दिल्ली पूरे विश्व के बडे लोगो की यात्रा स्थली बन गई थी। बडे बडे देशो के राष्ट्राध्यक्ष प्रधानमन्त्री, राजनता शासनिक लेखक और समाज सुधारक हिन्दुस्तान की यात्राए किया करते थ। उन अवसरो पर फिरोज गाधी की उपस्थिति न कवल स्वाभाविक समझी जाती थी बल्कि प्रासगिक भी थी। परन्तु जब तक तब तक उन्होने कभी भी अपने आपको इन समारोहो पर नही थोपा। वे यह कभी नही चाहते थ कि पडितजी के साथ अपन विशेष सामाजिक रिश्ते का कदम कदम पर प्रदशन कर।

व्यक्तिगत वार्तालाप और चर्चाओ म तथा ससद के केन्द्रीय कक्ष म शान्त गम्भीर दिखाई दने वाले फिरोज गाधी जब ससद के वाद विवादो म किसी शोषक की अनियमितता और भ्रष्टाचार का भण्डाफोड किया करत थे तो वे इस तरह टूट पडते थ जस कोई मनस्वी चीता मदमस्त हाथी पर टूट पडता ह।

इसका क्या कारण था ? इसका कारण और कुछ नही था उनका कट्टर समाजवादी होना था। हमारा पार्टी सगठन शुरू से ही विभिन्न विचारधाराओ और आर्थिक हितो तथा राजनीतिक परम्पराओ का प्रयाग सगम रहता आया ह। इसम नेहरूजी की विचारधारा अपन स्वच्छ और धवल समाजवादी विचारो के साथ बहती हुई दृष्टिगोचर होती रही ह। फिरोज गाधी काग्रेस सगठन म नेहरूवादी परम्परा के प्रबल और समझौताहीन पक्षधर थे। कभी कभी ऐसा भी होता था कि पडितजी दूसर अनेक तत्वो का साथ लेकर चलने के लिए उनक हितो और विचारधाराओ से क्षणिक तालमेल बठा लेते थे। ऐसे इजारेदार तत्वो को और उनके समथक मन्त्रियो को भी वे अपने साथ लेकर चलते थ जिनके अलग हट जाने स राष्ट्रीय एकता म दरार पडने का डर था और नवस्वाधीन भारत के गृहयुद्ध के झझावात म जा फसने की आशका हो जाती थी। परन्तु फिरोज गाधी ऐसा नही कर सकते थ। वास्तव म वे प० नेहरू से भी अधिक कट्टर नेहरूवादी थे।

इस अवसर पर यह कहना अप्रासगिक न होगा कि पडित नेहरू न जिन नव युवको को पदयात्राए करके और गरीबो की झोपडियो मे कई-कई सप्ताह तक विश्राम करके जन राजनीति करने की दीक्षा दी थी उनकी पक्ति म फिरोज गाधी

अगली ओर खडे थे। इसी गहरे जन सम्पर्क ने फिरोज गाधी मे जनता के प्रति वह आकर्षण उत्पन्न किया था कि जब वे उसके पक्ष का समर्थन करने के लिए तथा उसके विरोधियो पर प्रहार करने के लिए खडे होते थे तो ऐसा प्रतीत होता था जैसे कि वह मूक जनता स्वय उनके सामने खडी है तथा अपनी पैरवी का समर्थन कर रही है।

सभी यह मानते हैं कि फिरोज गाधी मे स्वाधीनता और समाजवाद के लिए सघर्ष करने की जो असाधारण क्षमताए विद्यमान थी उन्ही के कारण उन्हे देशवासियो का इतना गहरा सम्मान मिला था। स्वतन्त्रता और समाजवाद की तथा विशेष रूप से सार्वजनिक क्षेत्र के विजय अभियान की जो परम्परा फिरोज गाधी ने डाली थी वह उन्ही की तरह अनेक देशवासियो को आज भी प्रेरित और उत्साहित करती रहती है।

कुशल वार्ताकार

विकटतम, तनावपूर्ण परिस्थितियों मे भी जहा दो परस्परविरोधी हितो मे जबदस्त मुठभेड की नौबत आ जाती थी, वे तनाव कम करने की तथा सफलता की मजिल तक वार्ताए ले जाने की कला मे असाधारण रूप से दक्ष थे। अपने हृदय के उग्रतम आवेगो को समाज के हित मे दबा कर और गम्भीर मुद्रा म सौजन्यपूर्ण वातावरण तैयार करके वार्ताए चालू करना और उन्हे टूटने न देना फिरोज गाधी का दैनिक काय-कलाप था। फिरोज गाधी जन साधारण के प्रिय नेता थे और अति कुशल वार्ताकार थे।

उनके इस असाधारण गुण की चर्चा करते हुए अमर शहीद ललित नारायण मिश्र न एक स्थान पर लिखा है—

"१९६० मे जब केन्द्रीय सरकार के कमचारियो ने आम हडताल का आह्वान किया तो दिल्ली मे चारो ओर वातावरण तनावपूर्ण हो गया। उधर राज कमचारी सघप से वापिस हटने का नाम नही ले रहे थे और दूसरी ओर सरकार उनकी मागे मानने को तैयार नही थी। तब फिरोज गाधी ने इस गतिरोध को दूर किया था। केन्द्रीय सरकार ने श्री गुलजारी लाल नन्दा को सरकार की ओर से वार्ता चालू करने के लिए नियुक्त किया।" श्री ललित नारायण मिश्र लिखत हैं कि पूरे दस दिन तक फिरोज गाधी ने इस सकट का हल निकालने के लिए जो लम्बी वार्ताए चलायी व किसी किसी दिन तो बारह घटे तक चलती रहती थी और एक-एक दिन मे आठ-आठ, दस-दस मतबा बैठकें बुलाई जाती थी। इन पूरी वार्ताओ म फिरोज गाधी ने जो कुशल वार्ताकार की भूमिका निभायी उसी का यह नतीजा था कि देश पर आया हुआ सकट टल गया। इस वार्ता मे सभी ने यह अनुभव किया कि फिरोज गाधी म एक उच्च कोटि के प्रशासक की असाधारण योग्यता विद्यमान थी। वे कभी हडताली नेताओ की युक्तियो को धैयपूवक लम्बी अवधि

तरह सुनते थे, कभी उन्हें मनाते थे और कभी उन्हें धमकाते और मायूस भी करते थे। हड़ताली नेताओं से बात करते समय कभी कभी वे इतने कठोर हो जाते थे कि बुरे नतीजों की चेतावनी तक देने लगते थे। परन्तु वही फिरोज गांधी जब सरकार और उसके प्रतिनिधि नन्दा जी से बातें करते थे तो हड़ताली नेताओं के समर्थन में ऐसे प्रभावशाली तर्क देते थे कि उन नेताओं को भी पीछे छोड़ देते थे जो हड़ताल की तैयारियां कर रहे थे, यहां तक कि अवसर आने पर पंडितजी के सामने भी हड़ताली नेताओं की मांगों की पैरवी किया करते थे। और यदि एक तथाकथित हड़ताली नेता न दगा करते तो आखिर हड़ताल का कार्यक्रम चालू न किया होता तो इसमें कोई दो राय नहीं है कि फिरोज गांधी के प्रयत्न राष्ट्रीय संकट टालने में पूर्ण सफल होते।'

फिरोज गांधी का व्यक्तित्व आम तौर पर गम्भीर रहने का था। वे हल्के और छिछले व्यक्ति नहीं थे। उन्हें दूर से देखने वाले आम तौर पर यह सोच लेते थे कि फिरोज गांधी से मित्रता करना और उसे निभाना कोई आसान काम नहीं है। परन्तु उन्हें नजदीक से देखने वाले यह भलीभांति जानते हैं कि उनसे मैत्री करना बहुत आसान था उसे चालू रखना और भी आसान था और जब तक कोई व्यक्ति अपनी ओर से बेरुखापन नहीं दिखाता था तब तक फिरोज गांधी अपने मित्र के प्रति पूर्णतया वफादार रहने का प्रयत्न करते थे। वास्तव में उनके स्वाभाविक गुण तभी निखर कर सामने आते थे जब फिरोज गांधी अपने मित्रों के बीच घिरे रहते थे। वे बालकों की तरह खिल खिला कर हंसते थे, अपने मित्रों का प्रगाढ़ आलिंगन करते थे और इस तरह उनके मित्रों की श्रेणी में किसी व्यक्ति का सम्मिलित हो जाना बड़े गर्व की बात समझी जाती थी। परन्तु यह बात नहीं है कि वे अपने मित्रों के गुण दोषों से अपरिचित रहते हों। अपने मित्रों और साथियों के गुण-दोषों को समझने के बाद ही कोई व्यक्ति उनका सही मूल्यांकन कर सकता है और उनके प्रति अपने सामाजिक और व्यक्तिगत कर्तव्यों का पालन कर सकता है। इस दृष्टि से फिरोज गांधी व्यक्तित्व के सर्वोत्तम निर्णायक थे। बहुत कम अवसरों पर उन्होंने अपने साथियों और मित्रों का चुनाव करने में गलती की होगी।

फिरोज गांधी के दो गुण सर्वविदित हैं—वे निर्भीक व्यक्ति थे और साधन हीनों को देख कर विकल जाना उनके स्वभाव में सम्मिलित था। इसी मात्रा में वे साधन सम्पन्नों के कुत्सित कार्यों पर आघात भी करते थे और यही कारण है कि उनकी अनियमितताओं का विरोध करते समय उन्होंने कभी उसके परिणामों की चिन्ता नहीं की। यद्यपि यह सही है कि बड़े धन्नासेठों और करोड़पतियों से उन्हें कोई व्यक्तिगत घृणा नहीं थी और न वे उनसे कोई द्वेष किया करते थे, परन्तु

अनेक अवसरा पर यह देखा गया है कि वे करोडपतिया की दावता और समारोहा मे बहुत कम भाग लेत थे और प्राय ऐसे निमन्त्रणा को धयवादपूवक अस्वीकार कर देते थे। यहा तक भी हुआ है कि कुछ करोडपति यदि उनसे मिलने गये ता उन्हान मिलन म भी अरुचि दिखाई। विपरीत इसके, टक्मी ड्राइवर टाकिय, हलकारे, रिक्शावाले प्राइमरी स्कूलो के अध्यापक और सडक कटने वाले तथा घरेलू कमचारी और मामूली स दपतरा के लिपिक अपनी कठिनाइया का बखान करते हुए उन्ह चौबीसो घटे घेरे रहते थे। फिरोज गाधी इन ईमानदार लागो के बीच अपने को पा कर बहुत आनन्दित अनुभव करत थे। आमतौर पर वे उनकी शिकायतें सुनते थे, उनके प्राथना पत्र लेत थे, उन पर अपनी टिप्पणिया लिखते थे, तथा मन्त्रिया और अधिकारियो तक उनकी शिकायतें पहुचाते थ। यहा तक कि समाज का काई भी उपेक्षित और प्रताडित व्यक्ति फिरोज गाधी के दरबार मे आकर कभी उपेक्षित नही लौटा।

फिरोज गाधी आर्थिक और सामाजिक अर्थो म न केवल साधारणतौर पर एक प्रगतिशील व्यक्ति भी थे, बल्कि व क्रान्तिकारी थे। वे सच्चे अर्थों मे समाजवादी थे। और यही कारण है कि आर्थिक नियोजन तथा श्रम और पूजी सम्बन्धी विवादा क अवसरो पर जब व धाराप्रवाह भाषण देने खडे होत थे ता ऐसा प्रतीत होता था जसे कि यह व्यक्ति इस बात पर बहुत क्रुद्ध ह कि वतमान समाज व्यवस्था के परिवतन म विलम्ब क्या किया जा रहा है? अत जब भारतीय ससद म सम्पत्ति कर के लगाये जाने पर विचार किया जा रहा था, ता फिरोज गाधी सबसे अधिक बेचैन थे कि उसकी माना अधिक से अधिक क्या नही बढायी जाती तथा य कानून शीघ्रातिशीघ्र व्यवहार म क्या नही लाय जात?

जन साधारण के नेता के रूप म फिराज गाधी कई कारणा से विख्यात है। वे सब साधारण लागो की तरह कठिन परिश्रम करते थ। रात देर तक जगना, विभिन समस्याआ पर पढना और टिप्पणिया लिखना सूर्यादय से पहले ही जग जाना, दैनिक कृत्या से निपट कर टाइपराइटर लेकर बैठ जाना, अपने हाथ से टाइप करना, ससद के अन्दर और बाहर उठाय जान वाल प्रश्ना पर टिप्पणिया अकित करना, आठ बजे के बाद दस बजे तक लगातार दा घटे सैकडो पीडितो से वाता करना, उनकी समस्याए सुनना और समाधान सोचना, य ऐस कष्ट साध्य काय थे जिन्हे करने म फिराज गाधी कभी आलस्य अनुभव नही करते थे।

अनेक अवसरो पर फिरोज गाधी पीडित क कष्टा पर इतन विह्वल हा जान थे कि शायद वह व्यक्ति भी स्वय इतना विह्वल न होता हा जा अपनी पीडा सुना रहा ह। वह प्रत्येक समस्या की, चाहे वह छोटी हा या बडी गहराइ मे जान का प्रयत्न करते थे। समस्याआ के विस्तार म और मूल म बैठ कर उनका समाधान

ढूंढना फिरोज गांधी की आदत में शामिल था।

फिरोज गांधी संसद में ज्यादा नहीं बोलते थे। उनकी इस आदत से कभी कभी लोग यह समझ बैठते थे कि शायद फिरोज गांधी बोलना ही नहीं जानते। परन्तु वे जब बोलने खड़े होते थे तो पूरी तैयारी के साथ बोलते थे। जब उन्हें कोई विशेष बात नहीं कहनी होती थी तो संसद का समय कभी व्यर्थ में नष्ट नहीं करते थे। परन्तु जब वे किसी प्रश्न पर पूरी तैयारी के साथ बोलने के लिये खड़े होते थे तो पूरा सदन कान लगा कर सुनता था। पूरा सरकारी शासनतन्त्र सावधान हो जाता था। और यह कहने वाले लोग कि—"क्या फिरोज गांधी बोलना ही नहीं जानते ?" उनका धाराप्रवाह भाषण सुनकर चकित रह जाते थे।

क्रांतिकारी सासदिक

करीब १०० वर्षों से क्रांतिकारी समाजवादी आन्दोलन में यह बहस छिडी हुई है कि समाजवादी क्रांति के लिए ससद की क्या और कितनी उपयोगिता है? कुछ लोग इसे वाद विवाद का अखाडा मान समझते रहे हैं और उसकी उपयोगिता के सम्बन्ध में सदेह प्रकट करते रहे हैं। दूसरी ओर, कुछ ऐसे लोग भी थे जो ससद में अपनी बातें दोहरा देने के उपरान्त यह मान लेते थे कि उनके राजनैतिक कर्त्तव्य पूरे हो गये हैं तथा ससद में दिये गये उनके सुझावों की ओर ध्यान देना या न देना अथवा उनकी आलोचनाओं पर पुनर्विचार करना या न करना केवल उन लोगों का काम है जो शासन की जिम्मेदारियों पर बैठे हैं। परन्तु फिरोज गांधी ससद के बारे में इस प्रकार के विचार नही रखते थे।

फिरोज गाधी एक क्रांतिकारी सासदिक थे। वे न केवल ससद की राजनीतिक उपयोगिता को उचित महत्व देते थे बल्कि उनका यह दृढ विश्वास था कि किसी महत्वपूर्ण प्रश्न पर उद्दीप्त सदन के बहुमत को अपने साथ लिया जा सकता है और उसका दबाव डालकर बडे से बडे क्रांतिकारी सुधार कराये जा सकते है। यदि उन्हे यह विश्वास न होता तो इजारेदार पूंजीपतियों के विरोध मे जब अनेक अवसरो पर उन्होंने अपने आलोचनात्मक प्रहार किये तो वह इच्छित परिणाम कदापि सामने न आता जो बाद मे सामने आया।

यह उन्ही के प्रयत्नो का फल था कि हिन्दुस्तान के दो सबसे बडे धनासेठ—डालमिया जैन और हरिदास मूदडा सामाजिक अपराधियों की तरह जेल की दीवारो के अन्दर रखे गये, उनके आर्थिक अपराधो की जांच की गई और आज भी पूरा राष्ट्र उन्हें सामाजिक अपराधियों के रूप में देखता है। यदि फिरोज गांधी जोरदार तरीके से उनके गुनाहो को बेनकाब न करते तो शायद वे सफेदपोश आर्थिक अपराधी समाज के सामने प्रतिष्ठित धनासेठो की तरह सामाजिक सम्मान का

अनुभव करते रहते।

प्राय यह प्रश्न पूछा जाता है कि दो बडे धन्नासेठों को जेल भिजवाने से क्या वह समाज व्यवस्था ही बदल गई है जो ऐसे आर्थिक अपराधियों को जन्म देती है? यह भी कहा जाता है कि इसके बाद भी खाद्य पदार्थों में मिलावट करना, सड़ी गली चीजें बेचना, सामाजिक सम्पदाओं का अपहरण करना और आर्थिक अपराधियों का खुले आम घूम घूम कर अपने अपराधों को निर्भय होकर चालू रखना क्या बन्द हो गया है? यह कोई नहीं कहता कि दो आर्थिक अपराधियों को जेल भिजवा देने से समाज व्यवस्थाएं बदल जाती हैं। इस उद्देश्य को सामने रखकर फिरोज गांधी ने उनके खिलाफ आवाज उठाने का प्रयत्न भी नहीं किया था। परन्तु मुख्य प्रश्न यह है कि क्या पूंजीवाद की असंगतियों और समाज विरोधी प्रवृत्तियों का बोधपाठ किये बिना भी कोई जन-आन्दोलन पूंजीवाद के विरुद्ध खड़ा किया जा सकता है? इसके अलावा, यदि पूरी व्यवस्था नहीं बदली जा सकती तो सभी आर्थिक अपराधियों को अदालतों के कठघरे में नहीं खड़ा किया जा सकता तो क्या उन लोगों को भी इसके लिए छूट दे देनी चाहिए जो अपने समाज विरोधी कार्यकलापों में किसी प्रकार की भी मर्यादा कायम नहीं रखते? इसी लिए फिरोज गांधी द्वारा भ्रष्ट इजारेदार कम्पनियों का भण्डाफोड करना एक क्रान्तिकारी सांसदीय कर्तव्य की ओर भी संकेत करता है।

सार्वजनिक क्षेत्र का चाहे जितना विस्तार हो गया हो और प्रशासन उसे चाहे जितना प्रोत्साहन देता हो परन्तु आज भी निजी क्षेत्र और उद्योग एवं आर्थिक शाखाएं इतनी शक्तिशाली हैं कि उनके राजनीतिक प्रभाव को आसानी से नहीं आंका जा सकता। वे बहुत दूर बैठे-बैठे ही रस्सी घुमाते हैं तथा देखते ही देखते प्रशासन की दिशा मोड़ देने का प्रयत्न करते हैं।

इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि आज भी औसत कांग्रेस कार्यकर्ता यही मानता है कि सार्वजनिक क्षेत्र का विस्तार करना और निजी क्षेत्र को संतुलित करना कांग्रेस सरकारों की मूलभूत नीतियां हैं। परन्तु यह प्रश्न पूछा जा सकता है कि फिरोज गांधी की तरह ऐसे कितने कांग्रेसजन हैं जो निजी क्षेत्र के प्रवक्ताओं द्वारा सार्वजनिक क्षेत्र पर किये गये प्रहारों के विरोध में उतने ही संवेदनशील हैं। प्रगतिशील विचारों के वामपंथी लोगों के लिए फिरोज गांधी आज भी आदर्श हैं।

यद्यपि यह सही है कि पिछले साल भर में इजारेदार कम्पनियों और राज घरानों की समाज विरोधी प्रवृत्तियों पर सरकार ने जितने प्रहार किए हैं तथा विशेष रूप में स्वयं प्रधानमंत्री ने जैसी चौकसी दिखाई है वैसी स्वाधीनता के बाद की पूरी अवधि में कभी नहीं दिखायी गयी है तथा उसके वांछित परिणाम भी दृष्टिगोचर होने लगे हैं। परन्तु इसके बावजूद भी पूंजीपति अपनी हरकतों से

बाज़ नहीं आते है। जरा सी चूक होते ही तथा निगाह हटते ही वे तालाबन्दी और छटनी प्रारम्भ कर देते हैं वस्तुओं के दाम बढ़ाने लगते हैं कालेधन का संचय शुरू कर देते हैं, जमाखोरी, चोरबाजारी और मिलावट का बाजार गरम कर देते हैं। ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि पूंजीवाद इन कुत्सित प्रवृत्तियों के बिना जीवित ही नहीं रह सकता है।

यही कारण है कि आपातस्थिति के बावजूद सरकार को बार बार चेतावनी देनी पड़ती है और कठोर कदम उठाने पड़ते हैं।

सत्ता के केन्द्र मे सत्ता से दूर

फिराज गाधी भारत की राजनीतिक सत्ता के केन्द्र मे थे। वे प्रारम्भ से ही ऊची से ऊची राजनीतिक गतिविधियो म सम्मिलित थे और पहली लोक सभा एव उससे पहले सविधान सभा के सदस्य थे। अनेक महत्वपूर्ण आयोगो म उन्होंने भाग लिया था और कुछेक महत्वपूर्ण आयोगो के वे सम्मानित अध्यक्ष भी थे। भारतीय राजनीति की सत्ता के स्वामी के वे अत्यन्त सन्निकट थे और पूरे १२ वर्षों तक वह सत्ता उनके चारो ओर घूमती रही। परन्तु फिरोज गाधी उससे निरन्तर दूर हटते रहे और हमेशा दूर ही रहे।

क्या वे सत्ता के योग्य नही थे ? ऐसी बात नही है। ऐसे व्यक्तियो का वरण करके सत्ता की देवी अपनेआपको धन्य अनुभव करती है। सत्ता जिस लक्ष्य के लिए अपनाई जाती है, वह मजिल अपने आप समीप आने लगती है। परतु शायद अभी भारतीय समाज और आर्थिक परिस्थितिया ऐसी नही है जिनम फिराज गाधी जैसे सिद्धान्तनिष्ठ लागो का सत्ता पर प्रतिष्ठित किया जा सके और सत्ता उन्हे देर तक सहन करती रह सके।

इसके क्या कारण थे ? नीचे की पक्तिया मे इस प्रश्न पर विचार करना बडा आवश्यक प्रतीत होता है।

फिरोज गाधी मे यद्यपि प्रशासक की समस्त याग्यतायें और क्षमतायें विद्यमान थी। वे जिस काय को भी हाथ मे ले लेते थे, उसे सुसगत परिणाम और वाछित मजिल तक पहुचाने म अद्वितीय क्षमता रखते थे। परन्तु इन क्षमताओ के बावजूद वे एक क्रान्तिकारी थे और यथास्थितिवाद के साथ समझौता करना उनके स्वभाव के सवथा विपरीत था। जिस समाज मे अनेक वग हो और अन्तर्विरोधी सामाजिक हितो म निरन्तर सघष चलता रहता है उसमे सत्ता मे बैठा हुआ शासक अनेक भाषाय बोलने को बाध्य होता है तथा परस्परविरोधी घोषणाओं

मे सन्तुलन कायम रखना उसका स्वभाव बन जाता है। परन्तु फिरोज गाधी के लिए दो भाषायें बोलना असभव था ।

यही कारण है कि उनके वास्तविक गुण और योग्यतायें उस समय हजारो गुणा अधिक प्रभावशाली ढग से मुखरित हो उठती थी जब वे समाज के आर्थिक व राजनीतिक विरोधियो के विरुद्ध सघर्ष करते थे। सघर्ष से विरत फिरोज गाधी साधारण व्यक्ति प्रतीत होते थे।

नि सन्देह, कुछ लोगो मे दोनो गुण और क्षमतायें समान रूप से विद्यमान रहती हैं। वे वर्ग युक्त समाज मे सामाजिक न्याय और देशभक्ति के लिए क्रान्ति कर सकते है और सत्ता मे आने के बाद उसे इन्ही लक्ष्यो की प्राप्ति के लिए अधिक कारगर ढग से इस्तेमाल भी कर सकते हैं। परन्तु ये विशेषतायें बिरले लोगो मे होती है। प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाधी इसकी अपवाद हैं। वे जितनी मात्रा मे क्रान्तिकारी हैं, समाजविरोधी वर्गों के विरुद्ध कठोर से कठोर सघर्ष करने की क्षमता रखती है, उतनी ही मात्रा मे कुशल प्रशासक भी है। उन्होने अद्वितीय ढग से सत्ता को राष्ट्र के नवनिर्माण कार्यों मे और साथ ही समाजविरोधी तत्वो का दमन करने मे इस्तेमाल किया है। अब तक के सभी प्रधानमन्त्रियो मे वे ही इन दोनो विशेषताओ मे सन्तुलन स्थापित कर सकी हैं।

निष्ठावान् फिरोज गाधी ने कभी सत्ता के लिए सत्ता की इच्छा नही की। इच्छा करते ही वह तुरन्त पूरी हो जाती। परन्तु इसके स्थान पर प्रगतिशील शक्तियो के समर्थन मे और प्रतिक्रियावादी शक्तियो के विरुद्ध निर्मम सघर्ष करने मे ही उन्होने अपनी पूरी शक्ति का सदुपयोग करना उचित समझा था। उनकी इसी ऐतिहासिक भूमिका के लिए वे याद किये जाते हैं। यह प्रगतिशील विचारधारा ही उनका व्यक्तित्व है और इस व्यक्तित्व के द्वारा ही उन्होने ससद के इतिहास मे अपना अपूर्व स्थान बनाया था।



समाजवाद के लिए सघर्ष



इजारेदार व्यवस्था पर तीखा प्रहार

जब भी कभी भारतीय ससद म इजारेदार घराने और उनके प्रतिनिधि सावजनिक क्षेत्र पर कुटिल प्रहार करते थे, उस समय फिरोज गाधी के लिए चुप बठना असम्भव हो जाता था। व सावजनिक क्षेत्र की सुरक्षा के लिए ही तत्पर नही रहत थे बल्कि इस व्यवस्था को बदनाम करने के लिए उसके विरोधी जो प्रचार करत थे उन्हे निरस्त करना भी उनके स्वभाव म सम्मिलित हो गया था।

३१ माच सन् ५६ की बात है। श्री जी० डी० सोमानी जो स्वय भी बडे उद्योगपति एव व्यवसायी थे तथा सावजनिक क्षेत्र के कटु आलोचक थे, उन्होने ससद म एक प्रस्ताव रखा।

इस प्रस्ताव का आशय था कि सावजनिक क्षेत्र के कायकलाप की, उसमे लगाई गई पूजी की तथा राष्ट्र को होने वाले हानि लाभो की जाच करने के लिए एक आयोग नियुक्त किया जाय। इस प्रस्ताव मे यह माग की गई थी कि विभिन्न सावजनिक क्षेत्रो की आर्थिक शाखाओ ने अपने सामने नियोजन, विकास और आर्थिक उपलब्धियो के जो लक्ष्य निर्धारित किये हैं उनम कहा तक सफलता मिली है ?

इस आयोग का यह भी मकसद था कि वह इन सस्थाओ म लगाई गई पूजी की तुलना उन लाभो से करे जिनकी इनसे अपेक्षा की गई है।

यह देखना कि प्रारम्भ म जो अनुमानित लागत के आकडे तय किय गये थे, क्या उन्ही से य सस्थान खडे कर दिये गये है तथा ऐसे ही सस्थान जो निजी क्षेत्र मे चल रहे हैं, उनम कितनी अनुमानित पूजी का विनियोग हुआ है ?

सावजनिक क्षेत्र के पृथक-पृथक उद्योगो की कायक्षमता का पता लगाना और यह देखना कि उनम से कितने मुनाफे म चल रहे है और कितने घाटे

चल रहे हैं ? यह भी देखना कि इन संस्थाओं से सरकार को कितनी अ
होती है ?

इस बात का पता लगाना कि ये संस्थाएं अपने उत्पादित माल का म
किस तरह निर्धारित करते हैं और उसका क्या औचित्य है ?

ये संस्थान अपना हिसाब किताब किस तरह रखते हैं ? उनकी समाल
नात्मक आर्थिक समीक्षा किस तरह की जाती है और हिसाब का लेखा जो
प्रकाश में लाया जाता है या नहीं ?

यह देखना कि कच्चे माल का कोटा देते समय, स्टील, सीमेंट तथा अ
आवश्यक साज सज्जाओं की पूर्ति करने में सरकारी खरीदारी में रेलवे का
की पूर्ति करने में इन संस्थाओं को क्या वे ही सुविधाएं दी जाती हैं जो नि
क्षेत्र में काम करने वाले इसी तरह के संस्थानों को दी जाती है या इनके स
पक्षपात किया जाता है ?

इसके बाद प्रस्ताव में यह मांग की गयी है कि सार्वजनिक क्षेत्र
संस्थानों की जांच पड़ताल के लिए नियुक्त आयोग को यह अधिकार हो
चाहिए कि यह इनके कार्य कलाप से सम्बंधित अन्य प्रश्नों पर भी अपनी रि
दे सकता है।

प्रस्ताव में बड़े जोरदार ढंग से यह मांग की गयी कि उन उद्योगपति
और व्यापारियों को इस आयोग में स्थान दिया जाय जिन्हें उद्योग चलाने
और व्यावसायिक कारोबार का अच्छा अनुभव हो आदि।

श्री सामानी ने जिस समय भारतीय संसद में यह प्रस्ताव रखा चारों अ
सन्नाटा छा गया। प्रगतिशील विचारों के देशभक्त लोगों को यह समझने में
नहीं लगी कि इस कुटिल आक्षेप का मूल उद्देश्य क्या है ? श्री सोमानी ग
आयोग के माध्यम से एक ओर तो सार्वजनिक क्षेत्र की आर्थिक शाखाओं
बदनाम करना चाहते थे और दूसरी ओर सार्वजनिक क्षेत्र को कठघरे में ख
करके उद्योगपतियों तथा व्यावसायिक लोगों द्वारा उस पर कुटिल प्रहार कर
चाहते थे। संसद में ऐसे लोगों की भी कमी नहीं थी, जिन्होंने इस प्रस्ताव
समर्थन किया।

देशवासी उस स्वाभिमानी व्यक्ति के योगदान को कभी भूल नहीं सक
जिसने सदन में खड़े होकर इस प्रस्ताव का विरोध किया था। फिरोज गांधी
प्रस्ताव करने वालों पर प्रत्याक्रमण करते हुए यह आक्षेप लगाया कि क्या ऐसा
भी सार्वजनिक क्षेत्र गिनाया जा सकता है जिसके निदेशक पदों पर गैर सरका
लोग विद्यमान न रहते हों। उन्होंने हिन्दुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड का उदाहर
देते हुए कहा कि इसमें ११ निदेशक हैं। इनमें एक प्राविधिक निदेशक है औ

एक विदेशी है। बाकी निदेशकों में सावजनिक क्षेत्र से सम्बन्धित लोग नही है बल्कि उन्होंने नाम गिनाते हुए कहा कि क्या निम्नलिखित लोग निजी क्षेत्र के कर्ता-धर्त्ता नही है? उदाहरण के लिए—(१) श्री घमस सटाऊ (हम नही कह सकते कि य कैसे सरकारी आदमी है)। (२) श्री तुलसीदास किलाचन्द, ससद सदस्य (३) श्री मिजाइन जोन (४) लाल चन्द हीरा चन्द ससद सदस्य (५) शांति कुमार मुरार जी य सभी लोग निजी क्षेत्र के कर्ता धर्ता है।

फिरोज गांधी न चुनौती भरे लहजे म कहा—"यद्यपि मैने इस प्रस्ताव का विरोध करने की बात कही है परन्तु साथ ही मैं प्रस्तावक को साहस के लिए बधाई देता हू।

'उन्होंने अपने भाषण म तथ्यों को तोड मरोडकर सावजनिक क्षेत्र पर कुटिल प्रहार किये है और निजी क्षेत्र की, जिससे व सम्बन्ध रखते है ऐसी लुभावनी तस्वीर पेश की है, जैसे कि वह कोई स्वर्ग हो।'

फिरोज गांधी ने कटाक्ष करते हुए पूछा—'मान लीजिये इस सावजनिक क्षेत्र म अनियमितताए तथा भ्रष्टाचार मौजूद है। तो भी सावजनिक क्षेत्र को भ्रष्टाचार के गड्ढे म धकेलने वाला कौन है? ये रिश्वत देन वाले तथा रिश्वत दे कर लाभ उठाने वाले कौन लोग है? व कौन लोग है जिन्होंने हिन्दुस्तान के राष्ट्रीय जीवन मे विष भर दिया है। य व ही लोग है जो ठेकेदारी करते है, कारोबार चलाते ह और जो उद्योग धधो के मालिक ह।"

इस प्रकार फिरोज गांधी ने सावजनिक क्षेत्र पर प्रहार करने वाले लोगों पर प्रत्याक्रमण करते हुए उन्हे सही तौर पर राष्ट्रीय प्रगति और सामाजिक शांति का दुश्मन बताया। उन्होंने जोरदार तरीके से घोषणा की कि सावजनिक क्षेत्र म काम करन वाल अधिकारियो को भ्रष्ट करने की जिम्मेदारी निजी क्षेत्र के मुनाफाखोर लोगो पर है। यह बात उन्होन केवल अपनी कल्पना के आधार पर नही कही। उन्होन कहा कि कितनी ही अदालतो म तथा कितन ही विवादो म इस बात का फैसला हो चुका है। जब अदालतो म भ्रष्टाचार के य विवाद गय तो यह निणय होन म देर नही लगी कि सावजनिक क्षेत्र को भ्रष्ट करन की मुख्य जिम्मेदारी निजी क्षेत्र के लोगो पर है।

फिरोज गांधी ने प्रति प्रश्न करते हुए पूछा—"वास्तव म यह जाच किसके विरुद्ध बठायी जानी चाहिए? यह जाच उन ठेकेदारो के खिलाफ बठायी जानी चाहिए जो सावजनिक क्षेत्र को माल देते है। यही वह मोड है जहा सारी अनियमितताए तथा भ्रष्टाचार अपने कदम बढाता है। उन्होंने माग की कि उक्त उद्योगपतियो के विरुद्ध यह जाच बठायी जानी चाहिए जो सावजनिक क्षेत्र मे ठेकेदारी का काम करते है। तब यह पता लगन म थोडी सी भी देर नही लगेगी कि हमार



सामने झूठ बोलते हुए नही घबराते जब कि सिन्दरी का कारखाना अपना खाद २७० रुपये टन बेचता है। परन्तु एक निजी क्षेत्र की फैक्टरी भी है जो ३४५ रुपये टन खाद बेचती है। और विदेशो से जो खाद आता है उसका मूल्य ३०५ रुपये प्रति टन है। यह निजी क्षेत्र गरीब किसानो को लूटता रहता है और सोमानी जसे सेठो को इसके बारे मे कुछ भी नही कहना है। निजी क्षेत्र का उद्योग चाहे जो कुछ करे, परन्तु सोमानी जसे पूजीपति झूठे आकडे बता बताकर सावजनिक क्षेत्र को ही बदनाम करने के लिए कमर कसे रहते हैं।

इस पर पूजीवाद के समथक एक सदस्य ने आपत्ति की। क्या इस प्रकार के आक्षेप लगाना ससद मे उचित है ?

अनेक सदस्य एकदम बोल पडे—हा, बिल्कुल उचित है।

इस पर उपाध्यक्ष महोदय ने हस्तक्षेप करते हुए कहा—शब्द असंसदीय नही है, परन्तु माननीय सदस्य उन शब्दो म जितना जोर डाल रहे हैं वह ठीक प्रतीत नही होता।

एक माननीय सदस्य—तो क्या जोर दिये बगैर शब्द का उच्चारण सही है ?

उपाध्यक्ष—हा, जोर डाले बगैर साधारणतया कहे गये शब्द सही है।

फिरोज गाधी इन बेमतलब की बातो मे अपना सिर न खपा कर असली प्रश्न की ओर मुखातिब होते हुए श्री सोमानी के आक्षेपो का उत्तर देते हैं। उन्होने कहा कि श्री सोमानी सिन्दरी कारखाने को बदनाम करते हुए उस पर आपत्ति करते है कि उसने पहले अनुमानित आकडो स अधिक खच किया है। पहले अनुमानित आकडे १३ करोड रुपये थे और उस कारखाने पर वास्तविक लागत २३ करोड रुपये आई है। मूल अनुमान १० करोड ५३ लाख रुपये का था। और यह अनुमान १९४४ मे प्रचलित मूल्यो के आधार पर लगाया गया था। इसके बाद जमीन के भी बढे हुए मूल्य अदा किये गय। जमीन १९४५ के मूल्यो के आधार पर अधिगृहीत करने की सूचना दी गयी थी।

इसी प्रकार मूल अनुमानित आकडो के बाद कुछ दूसरे खर्चे सामने आय। नया पावर हाऊस बनाना जरूरी समझा गया। जल वितरण प्रणाली की व्यवस्था भी आवश्यक थी जिस पर २ करोड ३८ लाख रुपये का अनुमानित खर्चा आया। तथा इसके बाद विस्तारपूवक फिरोज गाधी उन तमाम खर्चो की ओर सदन का ध्यान आकृष्ट करते हैं जो स्वाधीन भारत म बढे हुए खर्चो के आधार पर आये।

एक माननीय सदस्य ने निजी क्षेत्र पर कटाक्ष करते हुए बीच म व्यवधान करते हुए कहा कि ये खर्चे भी निजी क्षेत्र की करतूतो के कारण ही बढे हैं जिसने सीमेंट और लोहे आदि के मूल्यो म लगातार वृद्धि की है।

फिरोज गाधी इसके बाद सिन्दरी खाद कारखाने के उत्पादन की ओर आते

हैं। उन्होंने कहा कि इस कारखाने ने १९५५ में ३ लाख २१ हजार टन खाद पैदा किया। यह उत्पादन बहुत संतोषजनक है। और सदन को इस फैक्टरी में काम करने वाले लोगों को बधाई का तार भेजना चाहिए।

फिरोज गांधी सार्वजनिक क्षेत्र पर लगाये गये मिथ्या आरोपों का सहन करने में असमर्थ थे। उन्होंने श्री सोमानी की ओर मुखातिब होते हुए कहा था कि उनका यह कहना सही नहीं है कि सिन्दरी का कारखाना अपना सालाना लेखा प्रकाशित नहीं करता। उन्होंने चुनौती देते हुए कहा कि सिन्दरी कारखाने का सालाना लेखा मेरे पास है और सोमानी साहब को मैं चुनौती देता हूं कि वे निजी क्षेत्र के किसी भी कारखाने का ऐसा लेखा दिखाएं जिसमें उन तमाम तथ्यों पर खुल कर प्रकाश डाला गया हो जिन पर इस कारखाने ने डाला है। उन्होंने एक दूसरे निजी क्षेत्र के समर्थन की आपत्तियों को निरस्त करते हुए कहा कि ये सार्वजनिक क्षेत्र के कारखाने दैनिक भत्ता तथा यात्रा भत्तों की वैसी लूट-मार नहीं करते जैसी निजी क्षेत्र के कारखाने करते हैं। उन्होंने पूछा कि जिस कारखाने में १२ करोड़ ३३ लाख रुपये की लागत लगी है उसके निदेशक यदि ४ हजार ६५० रुपये टी० ए० और डी० ए० में खर्च कर देते हैं तो क्या यह बहुत बड़ी रकम है? यदि इतनी ही लागत वाले किसी निजी क्षेत्र के कारखाने की टी० ए०, डी० ए० की रकम से तुलना की जाय तो देखने वाला की आंखें फटी की फटी रह जाएंगी।

इसके बाद फिरोज गांधी ने श्री सोमानी के इस कथन का उत्तर दिया कि निजी क्षेत्र को सारा कारोबार सौंप कर देश को निश्चिन्त हो जाना चाहिए। उन्होंने कहा— कि चितरंजन का कारखाना और टेलको दोनों ही रेलवे इन्जन बनाते हैं तथा दोनों के मूल्यों में करीब-करीब दुगुने का अन्तर क्या है? उन्होंने आश्चर्य प्रकट किया कि टाटा लोकोमोटिव कारखाने का इंजन चितरंजन कारखाने के मुकाबले तो दुगुन मूल्य का है ही लेकिन विदेशों से जो इन्जन मंगाये जाते हैं उनके मुकाबले भी करीब करीब दुगुनी कीमत का है। क्या निजी क्षेत्र को देश अपना सारा कारोबार सौंप कर इसी तरह निश्चिन्त होगा?

इसके बाद उन्होंने सार्वजनिक क्षेत्र की हिन्दुस्तान एंटीबायोटिक्स फैक्टरी के उत्पादन में वृद्धि की चर्चा की। उन्होंने कहा कि इस फैक्टरी ने ९० लाख मेगा यूनिट पेनसिलिन पैदा करने की योजना बनाई थी। पिछले कुछ वर्षों में इस फैक्टरी ने अपने लक्ष्य से कुछ अधिक पेनसिलिन पैदा करके सार्वजनिक क्षेत्र की श्रेष्ठता स्थापित कर दी है। उन्होंने एक दूसरी सार्वजनिक क्षेत्र की फैक्टरी हिन्दुस्तान केबल्स का उदाहरण देते हुए कहा कि इस फैक्टरी ने मार्च १९५६ में ५१० मील केबिल उत्पन्न किया है जब कि ४७० मील केबिल उत्पन्न करना था। और इन तारों का मूल्य विदेशों से मंगाये गये तारों के मुकाबले कम है। अब ये

दुगुना केवल पैदा करने की आशा कर रहे हैं।

टेलिफोन फैक्टरी ने जिस तरह से अपना काम प्रारम्भ किया है उस पर हिंदुस्तान संतोष प्रकट करता है।

यह सब कहने के बाद फिरोज गांधी ने सोमानी जैसे सेठों से प्रति प्रश्न करते हुए पूछा कि क्या हिंदुस्तान शिपयार्ड कम्पनी निजी क्षेत्र में नहीं थी? सरकार ने निजी क्षेत्र की इस कम्पनी के कंधों पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी सौंपी थी और यह आशा की थी कि इस कम्पनी से देश को बड़े बड़े जहाज मिलेंगे। परन्तु इसका उलटा हुआ। वहां जो कुछ भी किया गया, उसे धन्नासेठ हजम कर गये। जब उन्होंने सब कुछ गुड़-गोबर कर दिया तो मजबूर होकर सरकार को यह कम्पनी अपने हाथों में लेनी पड़ी। जिस समय इसे सरकार ने अपने हाथों में लिया, वहां टिन की एक चादर तक नसीब नहीं हुई। और आज सार्वजनिक क्षेत्र के हाथों में पहुंचने के बाद हिंदुस्तान शिपयार्ड एक के बाद दूसरा जहाज बना कर समुद्र में उतार रहा है। हमारा देश इस कम्पनी के काम पर गर्व करता है।

इसके बाद श्री सोमानी के नेपा मिल पर किये गये हमलों का उत्तर देते हुए फिरोज गांधी पूछते हैं — इस फैक्टरी को किसने शुरू किया था? इसे पूंजीपतियों ने निजी क्षेत्र में शुरू किया था, उन्होंने खराब मशीनें मंगवाई, खराब भवन बनाये और जब निजी क्षेत्र को अपने बुरे दिन आते दिखायी देने लगे तो उन्होंने इस फैक्टरी के तमाम बही खाते जला डाले। और वे नेपा फैक्टरी को छोड़ कर भाग गये। इस समय सरकार इस कम्पनी को चला रही है। रोजाना वहां २० टन न्यूज प्रिन्ट बनता है। सरकार जल्दी ही १०० टन रोजाना बनाने लगेगी। जब निजी क्षेत्र सब कुछ नष्ट कर देता है और नाकामयाब हो जाता है तो उस पर आक्षेप कोई नहीं लगाता। तब ये आलोचक निजी क्षेत्र की बुराइयों की ओर ध्यान नहीं खींचते। परन्तु जब सरकार निजी क्षेत्र का कारोबार शुरू करती है तो सोमानी साहब चिल्ला उठते हैं—'अरे, तुम कितनी बुरी तरह काम कर रहे हो?"

इसके बाद फिरोज गांधी ने बहुत प्रभावशाली ढंग से निजी क्षेत्र के दो समर्थकों— के० सी० सोंधिया और बोगावत के आक्षेपों का उत्तर देते हुए कहा कि यह प्रचार मिथ्या है कि निजी क्षेत्र के मुकाबले सार्वजनिक क्षेत्र के अधिकारियों को अधिक वेतन मिलता है तथा वे अधिक टी० ए० और डी० ए० लेते हैं। विपरीत इसके, सार्वजनिक क्षेत्र के बड़े अधिकारी मंत्रालयों में सचिव के पदों पर काम करते हैं और सार्वजनिक क्षेत्र के कार्यों की अतिरिक्त देख भाल करते हैं। उनके भत्ते और टी० ए०, डी०ए० आदि की सुविधाएं नाम मात्र की होती हैं। इसके बाद उन्होंने निजी क्षेत्र के पूंजीपतियों की लूट की ओर संकेत करते हुए एक

दस्तावेज का हवाला दिया जिसमे क्लिक उद्योग के निदेशक और क्लिक उद्योग लिमिटेड के बीच हुए समझौते का उल्लेख किया गया है। इस समझौते के अनुसार निदेशक शोफड को निम्नलिखित सुविधाए प्राप्त होगी – ६ हजार ७५० रुपये मासिक वेतन (२) एक प्रतिशत कमीशन (३) ६ हजार रुपये प्रति वर्ष यातायात भत्ता (४) ६ हजार रुपये सालाना स्वागत भत्ता (५) शोफड का व्यक्तिगत, पारिवारिक, जिसमे उनकी पत्नी सम्मिलित है, पूरा डाक्टरी खर्चा (६) शोफड को यह अधिकार होगा कि वह कम्पनी से पूछ कर तीन महीना के लिए अपने काम से गैर हाजिर हो सकते हैं और उ ह पूरी सुविधाए प्राप्त होती रहेगी। (७) बम्बई से इग्लड तक जान-आने के लिए साल म एक बार कम्पनी उनको पत्नी के साथ आने जाने के दोहरे टिकटो का वैमानिक किराया देगी।

इस प्रकार निजी क्षेत्र की लूट खसोट पर तीखा प्रहार करते हुए फिरोज गाधी न कहा—

'हम इन तरीको को अपना कर समाजवाद की ओर नही बढ़ सकत। य सब करतूतें सदमे पहुचाने वाली हैं। केवल दो व्यक्ति इस प्रकार मोटी मोटी रकमे खच करत हैं इसे सहन नही किया जा सकता।"

फिरोज गाधी के इस विस्तत भाषण की ध्वनि से पाठक यह जान गय होंगे कि पूजीवाद एव निजी क्षेत्र के प्रति फिरोज गाधी का रोष केवल सतही नही था। वे सिद्धान्त रूप से उसके आलोचक थे और पूजीपतियो के जालबट्टा तथा तिकडमो से हार्दिक घृणा करते थे। पाठक यह समझ सकते हैं कि इजारदार व्यवस्था पर जसे तीखे प्रहार उ होने किये हैं वह आकस्मिक विस्फोट नही था, बल्कि उनके सैद्धान्तिक विश्वासो और आस्थाओ का फल था।

विद्रोही समाजवादी

अकेले जिस भाषण ने फिरोज गाधी को भारतीय ससद के इतिहास मे अमर कर दिया है, वह १६ दिसम्बर १९५७ का भाषण है। इस भाषण ने भारतीय ससद मे सनसनी पैदा कर दी। जीवन बीमा निगम की निधियो का विनियोजन करने के प्रश्न पर वाद विवाद का प्रारम्भ करते समय उन्होने कहा था—

"अध्यक्ष महोदय, मेरा मन विद्रोह कर रहा है। जब सार्वजनिक निधि का दुरुपयोग हो रहा हो, तो चुप रहना पाप है।"

प्रश्न यह है कि विद्रोह की यह भावना फिरोज गाधी मे क्यो उत्पन्न हुई? इसका उत्तर फिरोज गाधी स्वय देते है। बडी शक्तिशाली वित्तीय सस्था की निधियो के दुरुपयोग की 'परीक्षा" का सवाल फिरोज गाधी को आगबबूला कर देता है। वे यह सब सहन करने को तैयार नही है कि सार्वजनिक सम्पत्ति का लाभ उठा कर मुट्ठी भर धन्नासेठ मालामाल होते रहे और जनता भूखो मरती रहे।

परन्तु फिरोज गाधी केवल सम्पत्तिधारी वर्गो पर ही अपना क्षोभ प्रकट नही करते। प्रशासनिक अधिकारी भी उनकी आलोचना से नही बचते जब फिरोज कहते है कि—"आश्चर्य तो इस बात का है कि किस प्रकार जीवन बीमा समवाय इस प्रकार के सौदो मे फस गया?"

फिरोज गाधी की समझ मे यह बात नहीं आती कि प्रशासन का कार्यभार जिन जिम्मेदार मन्त्रियो के हाथो मे हो, वे जनता के धन का दुरुपयोग कैसे सहन कर सकते है। अपने कर्त्तव्य के प्रति जागरूक फिरोज गाधी यह भलीभाति जानते हैं कि जिस ऐतिहासिक कर्त्तव्य का पालन करने के लिए वे ससद के मच का सदुपयोग कर रहे है उससे बहुत से प्रभावशाली लोग नाराज हो जाएगे। परन्तु इसकी परवाह न करते हुए फिरोज गाधी अपने वक्तव्य की भूमिका बाधते हुए कहते हैं—

"मैं आज कुछ कड़ी चोटें करने जा रहा हूं और मुझे पता है कि दूसरा पक्ष भी पूरी तरह तयार है।"

यह दूसरा पक्ष कौन है? वह इजारेदार पूंजीपतियों का गिरोह है जो राष्ट्रीय सम्पदा का अपहरण करता है। यही कारण है कि संसद को पूरे तथ्यों से परिचित न कराकर जब चुपचाप हरीदास मुंदड़ा की डूबती हुई नाव को किनारे लगाने के लिए भारत सरकार ने अपने करोड़ों रुपये बलि चढ़ा दिये तो फिरोज गांधी के लिए इसे अनदेखा करना सम्भव नहीं था। उन्होंने भारत सरकार के वित्तमंत्री की ओर मुखातिब होते हुए पूछा "मुंदड़ा से किये गये सौदे की जानकारी संसद को क्यों नहीं दी गई?—क्या यह संसद के विशेषाधिकार का उल्लंघन नहीं है? क्या मैं पूछ सकता हूं कि इसे (सौदे को) गुप्त क्यों रखा गया?" जब माननीय वित्त मन्त्री १६ नवम्बर को यह घोषणा करते हैं कि "यह विनियोजन सौदा करने वालों तथा निगम का अन्ततः लाभ पहुंचाने के लिए किया गया है, किसी (मुंदड़ा) का पक्षपात करने के लिए नहीं किया गया है" तो फिरोज गांधी ने संसद में सिंह गर्जन करते हुए एक के बाद दूसरे आंकड़े प्रस्तुत किये और यह सिद्ध कर दिया कि मुंदड़ा के साथ पक्षपात करने के लिए ही वित्त मन्त्रालय ने इतनी बड़ी धनराशि भेंट चढ़ा दी।

इस आर्थिक षड्यन्त्र का भण्डाफोड़ करते हुए उन्होंने अपनी कुशल वक्तृत्व कला का परिचय देते हुए यह घोषणा की कि २५ जून, १६५७ को मुंदड़ा के १ करोड़ २५ लाख रुपये के शेयर चुपचाप खरीद लिये गये। इसके बाद यही शेयर १६ बार खरीदे गये और यह राशि बढ़कर १ करोड़ ५६ लाख रुपये हो गई। उन्होंने कटाक्ष करते हुए पूछा कि "क्या यह पक्षपात नहीं है?"

'मेरा कहना है कि जीवन बीमा निगम ने संसद के विशेषाधिकार का उल्लंघन किया है कि उसे मुंदड़ा से किये गये सौदे की जानकारी ही नहीं दी गई। मैं पूछ सकता हूँ कि इसे गुप्त क्या रखा गया? १६ नवम्बरको वित्तमन्त्री ने कहा था कि विनियोजन से ही बीमा करानेवालों तथा निगम का अन्ततः लाभ रहेगा, इस विचार से ही यह सौदा किया गया था, किसी का पक्षपात करने के लिए नहीं। क्या इसी नीति को कार्यान्वित करने के लिए श्री मुंदड़ा के १, २५ ००,००० के २५ जून १६५७ को खरीद लिये गये। और १६ बार इसी के अंश खरीदे गये और यह राशि १,५६ ०० ००० की हो गई। क्या यह पक्षपात नहीं। एक बार तो यह सौदा उस दिन किया गया जबकि कलकत्ता और बम्बई दोनों के स्टाक एक्सचेंज बन्द थे। और मैंने प्रश्न पूछा था कि क्या कुछ महीने पूर्व कुछ अंश बाजार दर से ऊंचे दरों पर खरीदे गये थे। वित्त मन्त्री ने उत्तर दिया था कि ऐसा कुछ नहीं हुआ।'

इस सौदे की मनमानियो की ओर सकेत करते हुए फिरोज गाधी कहते हैं कि "एक बार तो यह सौदा उस दिन किया गया जबकि कलकत्ता और बम्बई दोनो के स्टाक एक्सचेंज ब द थे। और जब मैंने यह प्रश्न (सरकार से) पूछा था, क्या कुछ महीने पूर्व कुछ अश (शेयर) बाजार की दर से ऊची दरो पर खरीदे गये थे" तो वित्त म त्री का उत्तर था कि "ऐसा कुछ नहीं हुआ है।"

फिर फिरोज गाधी न वित्त म त्री के इस वक्तव्य को चुनौती देत हुए उ ही के वक्तव्य के उल्लेख से यह सिद्ध कर दिया कि 'सरकार ने ७७ हजार और ३ लाख रुपय की धनराशि मुदडा को अधिक देकर अनुग्रहीत किया है' उ ह सबसे अधिक दु ख इस बात का था कि मुदडा के इस निकाय को इतना अच्छा क्यो समझा गया कि उ ही के शेयरो का १९ बार सौदा किया गया और इन सौदो म ३१ लाख रुपये मुदडा की झोली मे डाल दिये गये। इस स्पष्टवक्ता ससदीय नेता ने इस षडय त्र का भण्डाफोड करते हुए सौदे का कारण बताया

"मेरा मत तो यह हे कि मुदडा जबकि आर्थिक सकट म थे तो हमारी सरकार उनकी सहायता को पहुच गई और लोगो के पैसो से जुआ खेल लिया।"

इसके बाद फिरोज गाधी मुदडा निकाय के आकडो के गोरखध धे का मजाक बनाते है। उनका कहना है कि मदडा न अपनी आर्थिक स्थिति को छिपाने के लिए बैलेंस शीट (सन्तुलन पत्र) भी प्रकाशित नही किया। और स्पष्ट है कि सन्तुलन पत्र के बिना किसी निकाय के घाटे या मुनाफे मे रहन की स्थिति का पता नही लगाया जा सकता। इसके अलावा कोई भी विनियोजक जब अपना पसा किसी निकाय मे लगाता है तो उसका मूल्याकन करना आवश्यक समझता है कि उसका पैसा डूब तो नही जायगा और विनियोजित धनराशि कुछ न कुछ लाभाश देने म समर्थ होगी या नही। पर तु यहा बडी मात्रा मे धनराशि लगा दी गई, मु दडा निकाय का स तुलन पत्र भी देखने का प्रयत्न नही किया गया और हानि लाभ का मूल्याकन करने की चेष्टा भी नही की गई। इसके अलावा, धनराशि का विनियोग इतने उतावलेपन के साथ किया गया है कि सरकार को हानि के अलावा और कुछ मिल ही नही सकता था और शायद सरकार हानि प्राप्त करने म ही रुचि रखती थी। इस खेदजनक स्थिति का प्रतिपादन करते हुए फिरोज गाधी कहते है—

"यदि यह सौदा २४ तारीख के स्थान पर २१ को होता तो निगम को १० लाख ७३ हजार रुपय कम देन पडते। यदि २० को होता तो ६ लाख ४२ हजार रुपय कम देना पडता, १९ और १८ को यह कमी क्रमश ११ लाख ५२ हजार और १३ लाख ४७ हजार रुपये की होती। १७ को यह १३ लाख ६२ हजार का

होती। और यदि यह खरीद १० जून को कर ली जाती तो २० लाख ८३ हजार रुपये कम देने पड़ते।" (१६ दिसम्बर १९५७ का लोकसभा भाषण)

इस प्रकार फिरोज गांधी केवल मनोगत नहीं थे। इजारेदार पूंजीवाद के खिलाफ अपने मन का आक्रोश ही प्रकट नहीं करते बल्कि ठोस तथ्यों के आधार पर वस्तुस्थिति का प्रतिपादन करते हैं।

फिरोज गांधी पूरी संसद को अपने साथ लेकर चलने के आदी थे। वे अकेले कभी संघर्ष नहीं करते थे। अपने इसी ऐतिहासिक भाषण में उन्होंने अध्यक्ष महोदय को अपने अभियान में सम्मिलित करते हुए कहा था —

'श्रीमान अध्यक्ष महोदय — आपने २६ जून को मेरे एक प्रश्न को स्पष्ट करते हुए कहा था— माननीय सदस्य जानना चाहते हैं कि इस समवाय के अंशों की गिर रही कीमत के कारण निगम अथवा सरकार ने इस विनियोजना के रूप में सहायता दी।"

वास्तव में फिरोज गांधी ने एक कुशल तर्कशास्त्री के रूप में सदन के अध्यक्ष को अपने पक्ष में खड़ा करके राजनीतिक कौशल का परिचय दिया था।

जो बात उन्हें सबसे अधिक दुखद प्रतीत होती है वह है निगम या सरकार का जान-बूझ कर ऐसा आर्थिक वातावरण बनाना जिसमें कि मुंदड़ा समवाय के अंशों की कीमतें अस्थायी रूप में बढ़ा दी जायें और उन्हें खरीद कर मुंदड़ा की आर्थिक सहायता की जाय। यह एक गम्भीर आरोप था और कोई साहसपूर्ण व्यक्ति ही इस बात को कह सकता है। उन्होंने कहा कि —

'२५ जून को मण्डी को ऊपर उठा कर कीमतें ऊंची की गयीं और सौदा कर लिया गया।"

बात यही है २५ जून को मंडी को ऊपर उठाकर कीमतें ऊंची की गईं और सौदा कर लिया गया। बाद में रुख नीचे का हुआ। १३ दिसम्बर को १, २४, ४४, ००० रुपये की निगम की विनियोजना का मूल्य ३॥ लाख कम हो गया। बीमा कराने वालों को कितनी हानि उठानी पड़ी। ऐसे समवायों के अंश खरीद लिए जिस की आर्थिक अवस्था कभी भी ठीक नहीं कही जा सकती। २५ जून को विनियोजन करने से पूर्व निगम के विनियोजन बोर्ड के सदस्यों से भी परामर्श से अपनी मर्जी से १, २४ ००,००० का विनियोजन कर दे। यह कोई छोटी रकम तो नहीं है। वित्त मंत्री बतायें कि बोर्ड के सदस्यों ने इस पर कोई आपत्ति नहीं की? क्या इन समवायों की आर्थिक स्थिति के ठोस होने के सम्बन्ध में सरकार के पास पूरे प्रमाण थे। कपड़ा आयुक्त के प्रतिवेदन से पता चलता है कि ब्रिटिश इंडिया कारपोरेशन को बकाया न पैसा देना बंद कर दिया क्योंकि उसकी आर्थिक अस्थिरता के कारण भारत के राज्य बैंक, अथवा रक्षित बैंक से कर्जा प्राप्त नहीं

हुआ था। परन्तु जीवन बीमा निगम ने इन में धन विनियोजित किया।"

"प्रश्न यह है कि जो वित्त मन्त्रालय और निगम इस प्रकार जान बूझकर जनता के धन का, निगम व संरक्षक हैं व्यक्तिगत मुनाफाखोरों को सौंप देते हैं क्या उन्हें क्षमा किया जा सकता है? उन्होंने कहा कि जब बनावटी तौर पर कीमतें ऊंची उठा दी गयीं तो उनका गिरना स्वाभाविक था। यही कारण है कि १३ दिसम्बर का १ करोड़ २४ लाख रुपये की निगम की विनियोजित धनराशि का मूल्य ३७ लाख रुपये गिर गया। और इस प्रकार, ६ महीने की छोटी सी अवधि में बीमा कराने वाले सीधे सादे लोगों को ३७ लाख रुपये की धनराशि से वंचित कर दिया गया।"

फिरोज गांधी ने इस अवसर पर जो महत्वपूर्ण प्रश्न वित्तमन्त्री से पूछे, वे और भी सनसनीखेज हैं। उन्होंने कहा कि 'एक करोड़ चौबीस लाख रुपये की धनराशि मूंदड़ा समवाय को सौंपते समय उनकी आर्थिक स्थिति जानने का प्रयत्न किया गया कि नहीं? इसी प्रकार २५ जून को विनियोजन करने से पूर्व निगम के विनियोजन बोर्ड के सदस्यों का भी परामर्श लिया गया कि नहीं? क्या बोर्ड के सभापति को यह अधिकार है कि वह बिना किसी से परामर्श किये अपनी मरजी से ही इतनी बड़ी धनराशि का विनियोजन कर दे? इसके अलावा, उन्होंने वित्त मन्त्री से पूछा कि बोर्ड के सदस्यों ने इस पर कोई आपत्ति प्रकट की या नहीं और क्या इन समवायों की आर्थिक स्थिति के सम्बन्ध में उन्हें सरकार के पास आये हुए पूरे प्रमाण पत्रों को देखने का मौका मिला? इन प्रश्नों के उपरान्त फिरोज गांधी स्वयं ही एक निर्णायक उत्तर देते हैं।

'कपड़ा आयुक्त के प्रतिवेदन से पता चलता है कि ब्रिटिश इंडिया कार्पोरेशन (मूंदड़ा समवाय) को बैंकों ने पैसा देना बन्द कर दिया था, क्योंकि उसकी आर्थिक स्थिति खराब थी। इसी प्रकार और भी कई समवायों की आर्थिक स्थिति खराब थी। इसी प्रकार, और भी कई समवायों की आर्थिक अस्थिरता के कारण भारत के राज्य बैंक अथवा रक्षित बैंक से कर्जा प्राप्त नहीं हुआ था। परन्तु जीवन बीमा निगम ने इन समवायों में धन विनियोजित किया।

इस प्रकार जीवन बीमा निगम के अधिकारियों, वित्त मन्त्रालय और मूंदड़ा समुदाय के बीच चलने वाले आर्थिक षड्यन्त्रों का इतनी स्पष्टता के साथ भण्डा-फोड़ कर दिया कि षडयन्त्रकारियों को अपना मुंह छिपाना भारी हो गया।

फिरोज गांधी यह अच्छी तरह जानते थे कि जिन आर्थिक अनियमितताओं के कारण मूंदड़ा समवाय की स्थिति विघटन की ओर जा रही है, उसे इस तरह बचाना उचित नहीं था। इसी घटनाक्रम की ओर संकेत करते हुए वे अपने भाषण में कहते हैं—

"२३ मार्च के दिन मुदडा गुट की आर्थिक स्थिति इतनी खराब थी कि उसे किसी भी ओर से कर्जा नही मिल रहा था । १० जून का कपडा आयुक्त की रिपोर्ट म भी यही कहा गया था । परन्तु ठीक १८ दिन के बाद निगम की निधि को बुरी तरह स उसम विनियोजित कर दिया गया । यदि सारी स्थिति का अध्ययन कर लिया जाता तो ऐसी भूल कभी भी न की जाती ।"

इस प्रकार फिरोज गाधी न वित्त मत्रालय और जीवन बीमा निगम के अधिकारियों पर यह स्पष्ट आरोप लगाया कि उन्होंने जनता के धन का ऐसी जगह विनियोग किया जिसका दिवाला तुरन्त निकलने वाला था और जिसकी प्रतिष्ठा पूरी तरह नष्ट हो चुकी थी । इतना ही नही उन्होंने यह भी कहा कि 'कुछ अशा मे इस समवाय की सहायता करने के लिए निगम एव वित्त मत्रालय न जाली अशो के आधार पर भी अदायगी की है ।" यह एक भयानक आरोप है और उन्होंन माग की कि ' मैं इस मामले का स्पष्टीकरण चाहता हू ।"

उन्होंन लोकतन्त्र की मर्यादा को ऊचा उठाते हुए चुनौती भरे लहजे म एक प्रश्न पूछा —

' क्या इस लोकतन्त्र मे हम इस प्रकार लोगो का गला काट सकते है ?

इसके बाद उन्होंन वित्त मत्री की ओर मुखातिब होते हुए पूछा—

' जब औद्योगिक वित्त निगम के विरुद्ध इस प्रकार के आरोप थ तो उस समय के वित्त मत्री श्री देशमुख ने एक विरोधी पक्ष के सदस्य के सभापतित्व म जाच समिति नियुक्त की । क्या हमारे वित्त मत्री वही रास्ता अपनाएगे ?"

जिस समय श्री फिरोज गाधी जाली कागजो के आधार पर निगम की ओर से दी गई धनराशि पर स्पष्टीकरण की माग कर रहे थे तो श्री महावीर त्यागी ने व्यवधान करते हुए हसने का प्रयत्न किया । परन्तु मनस्वी फिरोज गाधी इस गम्भीर आरोप का मजाक मे टाले जाने पर अत्यधिक क्षुब्ध होते है और कहते हैं "य हमने की बात नही है ।'

वित्त मत्री टी०टी० कृष्णमाचारी ने उनके आरोपो का महत्व घटाते हुए यह दावा किया कि जीवन बीमा निगम की ओर से विनियोजित की गई धनराशि कोई नई घटना नही है । सरकार पहले भी अन्य आर्थिक शाखाओ जैसे—जैसवुन रलवे और दूसरे सस्थानो म विनियोजन करती रही है । श्री फिरोज गाधी हर चुनौती का मुह तोड जवाब देते है । उन्होंने प्रत्युत्तर देते हुए कहा—

' हा, करती रही ह । परन्तु केवल अच्छे सस्थानो म ।"

इसके बाद टी०टी० कृष्णमाचारी न क्रोध भरे लहजे म कहा—

' फिरोज गाधी न जो आरोप लगाये हैं व केवल लापरवाही क नही है । उन्होंने पूछा कि 'भुगतान करने मे पहले सही कागजो की देखभाल भी की गई या नही ?

स्पष्ट है कि वित्त मत्री के पास इस गम्भीर आराप का काइ उत्तर नही था। और उन्हाने अपन भाषण म स्पष्ट रूप से यह स्वीकार किया कि वे अपनी जिम्मेदारी से इन्कार नही कर सकते।

परन्तु उन्हाने इस प्रश्न का टालन का भी प्रयत्न किया और दावा किया कि कागजा की दखभाल कर ली गई थी। परन्तु फिरोज गाधी को बहकाना फुसलाना सम्भव नही था। उन्हाने वित्त मत्री से पूछा कागजा की दखभाल कब की गई थी ? वित्त मत्री न कहा—भुगतान करन के समय। इस पर फिरोज गाधी न पूछा ? क्या सभी कागजा की ? वित्त मत्री—हा, सभी कागजा की। परतु यह कहत हुए वित्त मत्री यह जानत थे कि यह पूण सत्य नहीं है। और उन्हान कहा कि बडी सख्या म खरीदे गये शेयर अब निर्धारित किये जा रहे है। इस पर फिराज गाधी ने पूछा—आज-कल ही तो ?

वित्त मत्री—बहुत पहले से।

फिरोज गाधी—पिछले सप्ताह से।

वित्त मत्री—नही, मैं ऐसा नही साचता।

फिराज गाधी—तो क्या मैं आपको टोकू। यह प्रश्न २९ नवम्बर को सामने आया था।

डा० रामसुभग सिंह—यह ४ सितम्बर को भी उठ चुका है।

फिराज गाधी—१६ दिन गुजर चुके ह। क्या यह सही नही ह कि पिछले १५ दिना से निर्धारण हुआ है और बहुत से अभी भी लटके हुए है ?

वित्त मत्री—बहुत कम लटके हुए है।

इसके बाद अनेक माननीय सदस्या ने वित्त मन्त्री से टोका टोकी शुरू की और पूरे सदन का वातावरण अशान्त हा उठा।

वित्त मन्त्री परेशान होकर कहते ह 'मुझ पर रहम खाइय। मैं केवल उन्ही तथ्या का दोहरा रहा हू जिन्ह मैं जानता हू। मेरे साथ जिरह नही हो रही ह। परतु फिराज गाधी का यह कहना सही नही ह कि माच महीन स ही काई व्यक्ति इसके लिए षड्यन्त्र कर रहा था। अशा के मूल्या म उतार चढाव हाता ही रहता ह।"

वित्त मन्त्री के इस कथन पर पूरा सदन हस पडता ह।

परतु वित्त मन्त्री उस गम्भीरता से लेने के बजाय आक्षेप करते हैं कि 'हसी उडान से काई लाभ नही ह। इस पर फिरोज गाधी खडे होकर कहते हैं—

"अशा के मूल्या म उतार चढाव २१ तारीख के बाद आता है। १० जून को २४ और २५ के मुकाबले अशों का मूल्य कम रहता ह।" परन्तु वित्त मत्री के पास इसका कोई उचित जवाब नही था।

"२३ मार्च के दिन मुंदड़ा ग्रुप की आर्थिक स्थिति इतनी खराब थी कि उसे किसी भी ओर से कर्जा नहीं मिल रहा था। १० जून को कपड़ा आयुक्त की रिपोर्ट में भी यही कहा गया था। परन्तु ठीक १५ दिन के बाद निगम की निधि को बुरी तरह से उसमें विनियोजित कर दिया गया। यदि सारी स्थिति का अध्ययन कर लिया जाता तो ऐसी भूल कभी भी न की जाती।"

इस प्रकार फिरोज गांधी ने वित्त मंत्रालय और जीवन बीमा निगम के अधिकारियों पर यह स्पष्ट आरोप लगाया कि उन्होंने जनता के धन का ऐसी जगह विनियोग किया जिसका दिवाला तुरन्त निकलने वाला था और जिसकी प्रतिष्ठा पूरी तरह नष्ट हो चुकी थी। इतना ही नहीं उन्होंने यह भी कहा कि "कुछ अंशों में इस समवाय की सहायता करने के लिए निगम एवं वित्त मंत्रालय ने जाली अंशों के आधार पर भी अदायगी की है।" यह एक भयानक आरोप है और उन्होंने मांग की कि "मैं इस मामले का स्पष्टीकरण चाहता हूं।"

उन्होंने लोकतन्त्र की मर्यादा को ऊंचा उठाते हुए चुनौती भरे लहजे में एक प्रश्न पूछा —

'क्या इस लोकतन्त्र में हम इस प्रकार लोगों का गला काट सकते हैं?'

इसके बाद उन्होंने वित्त मंत्री की ओर मुखातिब होते हुए पूछा—

"जब औद्योगिक वित्त निगम के विरुद्ध इस प्रकार के आरोप थे तो उस समय के वित्त मंत्री श्री देशमुख ने एक विरोधी पक्ष के सदस्य के सभापतित्व में जांच समिति नियुक्त की। क्या हमारे वित्त मंत्री वही रास्ता अपनाएंगे?'

जिस समय श्री फिरोज गांधी जाली कागजों के आधार पर निगम की ओर से दी गई धनराशि पर स्पष्टीकरण की मांग कर रहे थे तो श्री महावीर त्यागी ने व्यवधान करते हुए हंसने का प्रयत्न किया। परन्तु मनस्वी फिरोज गांधी इस गम्भीर आरोप को मजाक में टाले जाने पर अत्यधिक क्षुब्ध होते हैं और कहते हैं 'ये हंसने की बातें नहीं है।"

वित्त मंत्री टी०टी० कृष्णमाचारी ने उनके आरोपों का महत्व घटाते हुए यह दावा किया कि जीवन बीमा निगम की ओर से विनियोजित की गई धनराशि कोई नई घटना नहीं है। सरकार पहले भी अन्य व्यापारिक शाखाओं जैसे—जैसबुग रेलवे और दूसरे संस्थानों में विनियोजन करती रही है। श्री फिरोज गांधी हर चुनौती का मुंह तोड़ जवाब देते है। उन्होंने प्रत्युत्तर देते हुए कहा—

हां, करती रही है। परन्तु केवल अच्छे संस्थानों में।'

इसके बाद टी०टी० कृष्णमाचारी ने क्रोध भरे लहजे में कहा—

'फिरोज गांधी ने जो आरोप लगाये हैं वे केवल लापरवाही के नहीं है। उन्होंने पूछा कि भुगतान करने से पहले सही कागजों की देखभाल भी की गई या नहीं?

स्पष्ट है कि वित्त मंत्री के पास इस गम्भीर आरोप का कोई उत्तर नहीं था। और उन्होंने अपने भाषण में स्पष्ट रूप से यह स्वीकार किया कि वे अपनी जिम्मेदारी से इन्कार नहीं कर सकते।

परन्तु उन्होंने इस प्रश्न को टालने का भी प्रयत्न किया और दावा किया कि कागजों की देखभाल कर ली गई थी। परन्तु फिरोज गांधी को बहकाना फुसलाना सम्भव नहीं था। उन्होंने वित्त मंत्री से पूछा कागजों की देखभाल कब की गई थी ? वित्त मंत्री ने कहा—भुगतान करने के समय। इस पर फिरोज गांधी ने पूछा ? क्या सभी कागजों की ? वित्त मंत्री—हां, सभी कागजों की। परन्तु यह कहते हुए वित्त मंत्री यह जानते थे कि यह पूर्ण सत्य नहीं है। और उन्होंने कहा कि बड़ी संख्या में खरीदे गये शेयर अब निरीक्षित किये जा रहे हैं। इस पर फिरोज गांधी ने पूछा—आजकल ही तो ?

वित्त मंत्री—बहुत पहले से।

फिरोज गांधी—पिछले सप्ताह से।

वित्त मंत्री—नहीं मैं ऐसा नहीं सोचता।

फिरोज गांधी—तो क्या मैं आपको टोकूं। यह प्रश्न २६ नवम्बर को सामने आया था।

डा० रामसुभग सिंह—यह ४ सितम्बर को भी उठ चुका है।

फिरोज गांधी—१६ दिन गुजर चुके हैं। क्या यह सही नहीं है कि पिछले १५ दिनों से निर्धारण हुआ है और बहुत से अभी भी लटके हुए हैं ?

वित्त मंत्री—बहुत कम लटके हुए हैं।

इसके बाद अनेक माननीय सदस्यों ने वित्त मंत्री से टोका टोकी शुरू की और पूरे सदन का वातावरण अशांत हो उठा।

वित्त मंत्री परेशान होकर कहते हैं मुझ पर रहम खाइये। मैं केवल उन्हीं तथ्यों को दोहरा रहा हूं जिन्हें मैं जानता हूं। मेरे साथ जिरह नहीं हो रही है। परन्तु फिरोज गांधी का यह कहना सही नहीं है कि मार्च महीने से ही कोई व्यक्ति इसके लिए षड्यन्त्र कर रहा था। अंशों के मूल्यों में उतार चढ़ाव होता ही रहता है।"

वित्त मंत्री के इस कथन पर पूरा सदन हंस पड़ता है।

परन्तु वित्त मंत्री उसे गम्भीरता से लेने के बजाय आक्षेप करते हैं कि "हंसी उड़ाने से कोई लाभ नहीं है। इस पर फिरोज गांधी खड़े होकर कहते हैं—

"अंशों के मूल्यों में उतार चढ़ाव २१ तारीख के बाद आता है। १० जून को २४ और २५ के मुकाबले अंशों का मूल्य कम रहता है।' परन्तु वित्त मंत्री के पास इसका कोई उचित जवाब नहीं था।

इस पूरे वाद विवाद को किसी सैद्धांतिक निष्कर्ष पर पहुचने से रोकते हुए महावीर त्यागी प्रश्न को व्यक्तिगत जिम्मेदारी की ओर मोडने का प्रयत्न करते हैं। वे पूछते हैं —इस पूरे कांड की जिम्मेदारी किस पर है? वित्त मंत्री जी पर है या श्री एच०एम० पटेल पर है या किसी दूसरे पर है?

परन्तु अध्यक्ष महोदय बीच में हस्तक्षेप करते हैं और इसका उचित उत्तर देते है।

श्रीमती सुचेता कृपलानी बहस को सिद्धान्त की धुरी से हटा कर केवल मुदडा तक सीमित करने के लिए प्रश्न पूछती हैं कि "केवल मुदडा समवाय के साथ ही यह समझौता क्या किया गया, किसी दूसरे समवाय के साथ क्या नही किया गया?"

अध्यक्ष महोदय ने इस प्रश्न का भी महत्व नही दिया।

वित्त मन्त्री फिरोज गाधी को यह बताने का प्रयत्न करते हैं कि "२३ जून को मुदडा उनसे मिले थे और विचार विनिमय किया था।' परन्तु फिरोज गाधी चौकस वकील की तरह उत्तर देते हैं 'उस दिन रविवार था।"

परन्तु वित्त मन्त्री इस प्रश्न की अहमियत को टालते हुए कहते हैं कि "हां, वह दिन रविवार हो सकता है।" परन्तु पूरा सदन अच्छी तरह जान गया कि छुट्टी वाले दिन वित्त मन्त्री का मुदडा के साथ वार्तालाप करना किसी विशेष दिलचस्पी का ही परिचायक हो सकता है।

इसके बाद वित्त मन्त्री अंशों के मूल्यांकन के सम्बन्ध में ऐसा कथन करते हैं जैसे कि उन्होंने भुगतान करने से पहले उनका मूल्य जानने का प्रयत्न किया हो। परन्तु बीच में ही रोक कर फिरोज गाधी पूछते है —

"क्या ये आंकडे टेलिप्रिन्टर द्वारा प्राप्त किये गये।"

वित्त मन्त्री 'ऐसा हो सकता है।'

इन आंकडो को फिरोज गाधी ने गलत बताया और पी० टी० आई० पर आवश्यकता से अधिक भरोसा करने की आलोचना की।

इसके बाद वित्त मन्त्री विनियोजन कमेटी का "खरीदारी" के सम्बन्ध में सूचना देने की बात दोहराते हैं। इस भ्रामक वक्तव्य के द्वारा वित्त मन्त्री पूरे सदन को इस गलतफहमी में डालने का प्रयत्न करते हैं जैसे कि विनियोजन कमेटी को एक ओर रख कर मनमानी नही की गई थी। परन्तु फिरोज गाधी इस बारीक अन्तर को भली भाति समझते थे। उन्होंने तुरन्त टोकते हुए प्रश्न किया—'क्या २३ तारीख से पहले ही विनियोजन कमेटी से परामर्श कर लिया गया था?'

वित्त मन्त्री इसका अस्पष्ट उत्तर देने का प्रयत्न करते हैं।

परन्तु अध्यक्ष महोदय पुनः बहस में हस्तक्षेप करते हैं और वित्त मन्त्री को

ओर से उत्तर देते हुए कहते है कि "नहीं ऐसा नहीं किया गया।"

इसके बाद महावीर त्यागी इस पूरी बहस को उसके आर्थिक और सैद्धान्तिक धरातल से हटा कर ऐसा मोड़ देने का प्रयत्न करते है जिसका फिरोज गांधी द्वारा उठाये गये मौलिक तत्वों से कोई सम्बन्ध नहीं था। उदाहरण के लिए वे पूछते है कि "जांच की मांग इस आधार पर नहीं की जा रही है कि जिन समवायों को यह धनराशि दी गई है, उनकी आर्थिक स्थिति ठोस थी या नहीं ?" बल्कि वे इस आधार पर जांच की मांग करते है कि धनराशि के भुगतान की पद्धति ठीक थी या नहीं ?

परन्तु सदन में श्री महावीर त्यागी का यह पतरा नहीं चला।

इसके बाद बाध्य होकर वित्त मन्त्री सदन को आश्वासन देते है कि "जांच करनी होगी।' फिरोज गांधी : तो आप जांच के लिए तैयार हैं। सवाल समय का है ? ' वित्त मन्त्री : 'जांच करनी होगी।'

फिरोज गांधी : 'क्या उसमें संसद सदस्यों का प्रतिनिधित्व होगा ?" वित्त मन्त्री : "मैं कह नहीं सकता।

इस बहस के अन्त में फिरोज गांधी एक सैद्धान्तिक घोषणा करते है :

"मैं राष्ट्रीयकरण का पक्षपाती हूं। इसलिए हमें जांच से डरना नहीं चाहिए और तह तक पहुंचने का प्रयत्न करना चाहिए।'

इस प्रकार फिरोज गांधी मुन्ध्रा कांड को इसलिए महत्व नहीं देते प्रतीत होते कि उन्हें मुन्ध्रा से कोई विशेष शिकायत थी या कि वे वित्तीय विनियोजन की किसी पद्धति पर सन्तुष्ट नहीं है, बल्कि वे सिद्धान्त रूप से राष्ट्रीयकरण के पक्षपाती हैं और सार्वजनिक क्षेत्र की सम्पत्ति का निजी क्षेत्र के पूंजीपतियों द्वारा अपहरण किये जाने के विरोधी है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उन्होंने संसद में संघर्ष का जो बिगुल बजाया था, उससे पूरे सदन का ध्यान उनकी ओर गया था।

अपने भाषण के प्रारम्भ में ही फिरोज गांधी ने यह चेतावनी दी थी कि आज की बहस में बहुत तीखे प्रहार और कठोर आक्रमण होने है। क्योंकि जब मैं प्रहार करता हूं तो तीखा प्रहार करता हूं। और अपने आप पर विरोधी की ओर से अधिक तीखे प्रहारों की उम्मीद करता हूं। इसलिए मैं पूरी तरह से सावधान हूं कि दूसरा पक्ष मुझ पर भारी टी० एन० टी० का प्रहार करेगा।

इस पर एक सम्मानित सदस्य ने मजाक करते हुए कहा—टी० एन० टी० नहीं बल्कि टी० टी० जिसका अर्थ होता है वित्त मन्त्री—टी० टी० कृष्णमाचारी।

इसी प्रारम्भिक भूमिका से आगे आने वाली बहस का सदस्यों ने पूरा-पूरा आभास प्राप्त कर लिया था।

जीवन बीमा समवाय के राष्ट्रीयकरण के समर्थन मे

पूजीवाद के विरोध मे और समाजवाद की अच्छाई का वर्णन करने म लच्छेदार भाषा का प्रयोग करना बडा आसान होता है। परन्तु वैज्ञानिक ढग से पूजीवाद की असगतियो का दिग्दर्शन कराना और समाजवाद की स्थापना के लिए किन्ही ठोस माध्यमो का सुझाव देना उसी व्यक्ति के लिए सरल होता है जो समाजवाद म न केवल विश्वास करता हो बल्कि उसकी विजय के लिए अनथक प्रयत्न करता हो एव उसकी पूरी जानकारी रखता हो।

यही कारण है कि जब २९ फरवरी १९५६ को लोकसभा म उस समय के वित्त मन्त्री सी० डी० देशमुख न लाइफ इश्योरेंस अध्यादेश (जीवन बीमा अध्यादेश) आपत्कालीन व्यवस्था १९५६ को सदन की स्वीकृति के लिए उसके पटल पर रखा तो सबसे पहले उसके समर्थन म फिरोज गाधी खडे हुए। उन्होंने घोषणा की —

"मैं इस विधेयक तथा माननीय वित्त मन्त्री के विचारो से पूर्णतया सहमत हू तथा जीवन बीमा के सार्वजनिक क्षेत्र मे आने का हार्दिक स्वागत करता हू।"

यह बहस २ मार्च, १९५६ को जीवन बीमा (आपातिक उपबन्ध) विधेयक पर प्रारम्भ होती है।

इसके बाद फिरोज गाधी वित्त मन्त्री को इस कठिन कार्यकलाप के सम्पादन पर भूरि भूरि बधाई देते हैं। और उन्होंने यह भी कहा कि 'वित्त मन्त्री के इस कार्य से यह साबित हो जाता है कि लोकतन्त्र धीमा नही है।' जनहित के महत्वपूर्ण कार्यों का सम्पादन बडी तेजी के साथ लोकतन्त्र म भी किया जा सकता है। इसके बाद फिरोज गाधी इस प्रश्न की सद्धान्तिक विवेचना म उतरते है और कहते हैं —

"जीवन बीमा के राष्ट्रीयकरण का पूरा प्रश्न राष्ट्रीय नियोजन और नियोजन प्रणाली के सन्दर्भ में देखा जाना चाहिए। हमारा मुख्य लक्ष्य समाजवाद की

इस राष्ट्रीयकरण से कुछ उद्योगपतियों तथा वित्तीय संस्थाओं के मालिकों में घबराहट फैल गई है। परन्तु उन्हीं के गलत कार्यों के कारण यह व्यवसाय बदनाम हुआ था और राष्ट्रीयकरण करके ही उसे इस बदनामी से बचाया जा सकता था।

उन्हीं के शब्दों में —

“मेरा विचार है कि यह सरकारी समवायों और संस्थानों में लगभग १२ प्रतिशत जीवन बीमा की पूंजी लगी हुई है। इस अध्यादेश से हमने इस प्रकार, कुल अंश पत्रों का १२ से १५ प्रतिशत तक अपने अधिकार में कर लिया है।”

(७ मार्च १९५६, लोकसभा)

इस अवसर पर फिरोज गांधी ने दक्षिणपंथियों और वामपंथी प्रचारवादियों की सम्मिलित आपत्तियों का जिस तरह निरस्त्र किया है उसकी जितनी प्रशंसा की जाय कम है। उदाहरण के लिए उद्योग एवं बीमा के प्रभुओं ने राष्ट्रीयकरण की नीति को लेकर सरकार पर जोरदार हमले किए हैं। परन्तु दूसरी ओर अशोक मेहता ने यह कह कर इस नीति पर हमला किया है कि अध्यादेश के द्वारा जीवन बीमा का राष्ट्रीयकरण करना आपत्तिजनक है। फिरोज गांधी ने बड़ा जोर देकर कहा—

‘मैं यह जानता हूं पूरी तरह नहीं तो आंशिक रूप में जानता हूं कि यदि अध्यादेश के द्वारा जीवन बीमा का राष्ट्रीयकरण न किया जाता तो स्थिति बहुत भयानक हो जाती। उन्होंने वित्तमन्त्री की गवाही में पेश करते हुए बताया कि वे विस्तारपूर्वक इसके कारणों का उल्लेख कर चुके हैं और उन्होंने विस्तार में जाना उचित नहीं समझा।’

परन्तु आज राजनीति का प्रारम्भिक विद्यार्थी भी यह समझ चुका है कि यदि अध्यादेश के द्वारा इस महत्वपूर्ण वित्तीय संस्था का राष्ट्रीयकरण करने के बजाय संसद में विधेयक ला कर इसका प्रयत्न किया जाता तो ये भ्रष्ट जीवन बीमा समवायों के मालिक कितना घोटाला करते और रात ही रात में अरबों रुपया इधर से उधर कर देते।

फिरोज गांधी केवल अच्छे अर्थशास्त्री और राजनीतिज्ञ ही नहीं थे उनमें बहुत अच्छे प्रशासक के गुण भी विद्यमान थे। उन्होंने अपने भाषण में प्रसिद्ध मृच्छकटिक नाटक का उल्लेख करते हुए बड़े मार्मिक ढंग से कहा—‘घोड़ा काबू में रखने के लिए लगाम जरूरी है और हाथी के लिए जंजीर।’

इस राष्ट्रीयकरण की नीति का समर्थन करते हुए फिरोज गांधी बीमा कराने वाले सीधे सादे लोगों को स्मरण करते हैं। उन्होंने कहा कि ‘उन लोगों का विश्वास बीमा मालिकों ने खण्डित कर दिया उनके साथ धोखा किया और यदि अध्यादेश द्वारा इनके राष्ट्रीयकरण की नीति को कठोर कदम कह कर

पुकारा जाता है, तो इसके लिए यह मालिक खुद
कराने वाले ग्राहकों के सामने यह खतरा खड़ा है
उन्हें बचाया है या बीमा समवायों में अपनी बच
डूब जाने का डर है।'

इसके बाद फिरोज गांधी ऊपर से पवित्र और
बीमा मालिकों के असली स्वरूप का भण्डाफोड़ क
जीवन बीमा समवायों की सम्पत्ति का अपहरण क
रते है। इस सम्बन्ध में उन्होंने विस्तारपूर्वक
अर्थशास्त्र मे प्रतिपादित गबन करने के चालीस उपा

श्री गाडगिल—गबन के ४० उपाय तो आपने ब
लिखा है वह भी तो बताइए।

फिरोज गांधी—कौटल्य ने अपने अर्थशास्त्र म
हैं। उनमें से कुछ का उल्लेख करते हुए बड़े रोचक
दोहराते हैं—

'पहले वसूल करना और बाद में लिखना जा
लिख दिया गया जो वसूल करना था परन्तु वसूल
वसूल करना बहुत मुश्किल है उसे वसूल किया हुआ
जा चुका है उसे वसूल न किया गया लिख देना जो
वसूल किया गया लिख देना आंशिक रूप से वसूल
पूरे वसूल किये गये को आंशिक लिखना, एक अंश का
उल्लेख करना, एक स्रोत से प्राप्त करके दूसरे स्रो
आदि।

एक माननीय सदस्य—'कौटल्य महान परमात्म
फिरोज गांधी— मेरे पास समय कम है। मैं सद
उपाध्यक्ष—माननीय सदस्यों का यह भय है
चालीस तरीकों का पता नहीं है वे भी माननीय स
जाएंगे।

फिरोज गांधी—कौटल्य कहते हैं—

'देय धन को न देना, जो अदेय है उसको दिया
जाने वाली राशि को असमय देना आदि आदि।"

इस प्रकार कौटल्य पूंजीवाद की असंगतियों और
मों उस युग में वर्णन करते हैं जब पूंजीवाद बहुत प्रा
इससे यह निष्कर्ष निकलना स्वाभाविक है कि जो

जिम्मेदार है। सारा बीमा
गया था कि जो कुछ भी
त एकत्रित की है उस सबके

सीधे सादे दीखने वाले इन
रते हुए कहते है कि उन्होंने
रने के अनेक उपाय निकाल
कौटल्य द्वारा अपने प्रसिद्ध
यों पर प्रकाश डाला।
तायें पर कौटल्य ने जो दण्ड

गबन के ४० उपाय बताये
ढंग से फिरोज गांधी यहां

में वसूल किया गया पहले
नहीं किया गया, जिसको
लिख देना, जो वसूल किया
वसूल नहीं किया गया उसे
किये गये को पूरा लिखना,
प्राप्त करके दूसरे अंश का
त के नाम लिखना, आदि

था।"

का सहयोग चाहता हूं।
कि जिन्हें गबन के सभी
य के भाषण के बाद जान

हुआ लिखना, समय पर दी

समाजविरोधी चेष्टाओं से
रम्भिक अवस्था में था।
पूंजीवाद अपनी प्रारम्भिक

अवस्थाओं में इतना समाजविरोधी था वह अपनी प्रौढ़ावस्था में समाज पर दया माया का व्यवहार क्या करेगा ?

इस अवसर पर फिरोज गांधी एक वैज्ञानिक समाजवादी सिद्धान्त का प्रतिपादन करने से नहीं चूके। उन्होंने बीमा समवायों और बैंक उद्योगों के साथ एकाकार होने की प्रक्रिया पर प्रकाश डाला। यह बात उन्होंने एक विशेष लक्ष्य से प्रेरित होकर कही। उनका आशय इस वास्तविकता पर प्रकाश डालना था कि जब बीमा समवाय और बैंक उद्योगों के साथ घुलमिल जाते हैं तो सामाजिक भ्रष्टाचार चरम सीमा पर पहुंच जाता है। पूंजीवाद में इजारेदारी प्रवृत्तियां उग्र हो उठती हैं तथा साधारण अंकुश द्वारा ऐसे पूंजीवाद को नियन्त्रण में रखना कदापि सम्भव नहीं होता। यद्यपि यह सही है कि उनके भाषण से पहले अशोक मेहता और गुरुपदस्वामी ने भी इस प्रक्रिया का उल्लेख किया था और ऐसे उद्धरण देने प्रारम्भ किये थे जिनसे बीमा कम्पनियों और बैंकों का उद्योगों के साथ एकाकार होना परिलक्षित होता था। परन्तु वे दोनों यद्यपि समाजवादी नेता थे, तो भी पूंजीवाद के कुत्सित चेहरे पर पड़े हुए इस नकाब का हटाने में दिलचस्पी नहीं रखते थे। इसीलिए उन्होंने अनायास ही इस प्रक्रिया का उल्लेख अवश्य कर दिया परन्तु जल्दी ही उसे बन्द कर दिया और उदाहरण देने स्थगित कर दिये।

फिरोज गांधी पटु संसदीय प्रवक्ता थे। स्थिति को तुरन्त भांप लेना उनके लिए बड़ा आसान था। उन्होंने अशोक मेहता की ओर संकेत करते हुए कहा कि उन्होंने इस प्रक्रिया के बारे में उद्धरण देने प्रारम्भ किये थे। परन्तु बीच में ही उसे बन्द कर दिया। 'पता नहीं क्यों ?' और इसके बाद उन्होंने विस्तारपूर्वक उस प्रक्रिया पर प्रकाश डाला जिसके अनुसार बड़े उद्योगपतियों के रिश्ते बीमा कम्पनियों तथा बैंकों के साथ स्थापित होते जा रहे थे। उन्होंने कहा—

'बिड़ला बड़े उद्योगपति हैं, परन्तु साथ ही रूबी जनरल इन्श्योरेंस कम्पनी, न्यू एशियाटिक, बाम्बे लाइफ एण्ड यूनाइटेड कार्मशियल बैंक, सिंघानिया का नेशनल इन्श्योरेंस, नेशनल फायर एण्ड जनरल इन्श्योरेंस, फ्री इण्डिया जनरल इन्श्योरेंस और हिन्दुस्तान कार्मशियल बैंक, टाटाओं की न्यू इण्डिया इन्श्योरेंस कम्पनी, सेंट्रल बैंक आफ इण्डिया, थापरों का हरक्यूलिस स्टैंडर्ड जनरल बैंक, और हिन्द बैंक, तुलसीदास किलाचन्द की यूनिवर्सल इन्श्योरेंस कम्पनी और बैंक आफ बड़ौदा और इसके बाद डालमिया जैन का बहुत सी कम्पनियों से सम्पर्क इसका उदाहरण है।'

डालमिया जैन के सम्बन्ध में फिरोज गांधी ने एक नये षड्यन्त्र का उद्घाटन करते हुए यह प्रकाश डाला था कि किस प्रकार बड़े पूंजीपति सर्वसाधारण जनता के हितों की बलि चढ़ाते हैं और लाखों लोगों को बरबाद करके धन्नासेठ बनते

हैं। उन्होने कहा कि —

"शान्ति प्रसाद जैन भारत बीमा कम्पनी के निदेशक उसी दिन चुने गये जिस दिन डालमिया-जैन गिरफ्तार होकर जेल भेजे गये। डालमिया जैन के स्वामित्व मे भारत बीमा और भारत बैंक दोनो थे जिनका दिवाला निकल चुका था। और अब उनके स्वामित्व मे पंजाब नेशनल बैंक है। लाखो लोगो ने इसमे अपनी धन-राशि जमा की है और ५८ करोड रुपया इन कम्पनियो मे प्रीमियम का जमा किया है।'

फिरोज गाधी ने बीमा कम्पनियो के संगठन मे पूजीपतियो के व्यक्तिगत योगदान की खिल्ली उडाते हुए जोरदार तर्क दिया था। उन्होने कहा —

'बीमा कम्पनियो का प्रारम्भ करते समय बहुत कम पूजी की आवश्यकता होती है। ओरियन्टल बीमा कम्पनी हिन्दुस्तान की सबसे बडी बीमा कम्पनी है, जिसकी प्रदत्त पूजी केवल ६ लाख रुपये है और उसका व्यवसाय लगभग ७६ करोड रुपये है।"

ओरियन्टल बीमा समवाय को ले लीजिये। इसकी प्रदत्त पूजी ६ लाख रुपया है तथा जीवन निधि ७६ करोड रुपया है। आज देश मे लगभग १७० बीमा समवाय है जिनमे से वित्त मंत्री के अनुसार २५ का दिवाला निकल चुका है तथा २५ ने अपनी निधि का इस प्रकार दुरुपयोग किया है कि उन्हे अपना व्यापार दूसरे समवाय को हस्तातरण करना पडा तथा हानि बीमा कराने वालो को उठानी पडी।"

इस प्रकार ये कम्पनियां अत्यल्प पूजी से अपने कार्य का प्रारम्भ करती है और जनता की छोटी छोटी बचतो से पूजी का विस्तार करके उन बचतो को इजारेदार कम्पनियो तथा उद्योगपतियो को सौप देती है। जब इन कम्पनियो का दिवाला निकल जाता है तब वे दूसरी कम्पनियां प्रारम्भ कर देते है और सब साधारण जनता के हितो का बलिदान कर देते है।

'वर्तमान समवायो को ले लीजिये ६६ समवायो ने बीमा नियन्त्रक को ७ ७ १९५८ का अपना लेखा तथा विवरण प्रस्तुत नही किये थे। २३ ने १९५४ के लेखा तथा विवरणो को अक्तूबर, १९५५ तक प्रस्तुत नही किया है। १७० मे से केवल १० समवायो को प्रशासको ने अपने हाथ मे ले लिया है। अध्यादेश जारी हो जाने के पश्चात् ४ समवाय और इसमे सम्मिलित हो गये हैं। यह गैर-सरकारी क्षेत्र का प्रबन्ध है।'

देशभक्त फिरोज गाधी जब सार्वजनिक क्षेत्र और निजी क्षेत्र की उपलब्धियो के सम्बन्ध मे विचार विमर्श करते हैं तो उनका तुलनात्मक अध्ययन निजी क्षेत्र की असंगतियो को उजागर करता है तथा सार्वजनिक क्षेत्र की महान्

उपलब्धियों पर प्रकाश डालता है। अपने भाषण में निजी क्षेत्र की कम्पनियों पर प्रहार करते हुए वे कहते हैं कि १९५४ में इन निजी समवायों ने ४४ करोड़ रुपया एकत्रित किया। और लगभग १५॥ करोड़ रुपया इस धनराशि के एकत्रित करने पर खर्च कर दिया। परन्तु १९५१-५२, १९५२-५३, १९५३-५४ में सरकार ने अपनी अल्प बचत योजना के अन्तर्गत क्रमशः ४८.६ करोड़, ४८.७ करोड़, तथा ४५.६ करोड़ रुपया एकत्रित किया जबकि बीमा समवायों ने इन्हीं वर्षों में क्रमशः ४०.७ करोड़, ४५.२ करोड़ और ४७.८ करोड़ रुपया एकत्रित किया।"

विचारणीय समस्या यही है जिस पर फिरोज गांधी जोर देते हैं कि "निजी क्षेत्र की कम्पनियां ४४ करोड़ रुपया एकत्रित करने में १५॥ करोड़ रुपया खर्च कर देता है जब कि सार्वजनिक क्षेत्र महिला स्वयं सेवक संगठनों और कुछ अधिकारियों की स्वच्छिक सहायता से कर इससे अधिक धनराशि बगैर किसी खर्च के एकत्रित कर देता है।"

अपने प्रारम्भ काल से ही निजी क्षेत्र के प्रचारक सार्वजनिक क्षेत्र की कार्यकुशलता पर निरंतर प्रहार करते रहे हैं। परन्तु फिरोज गांधी ने निजी क्षेत्र की कार्यकुशलता के सम्बन्ध में जो आपत्तियां की थीं उनका समाधान करने में वह असमर्थ रहा। उदाहरण यहां —

"वर्तमान समवायों को ले लीजिये। ६६ समवायों ने बीमा नियन्त्रक को ७-७-१९५५ को अपना लेखा तथा विवरण प्रस्तुत नहीं किये थे। २३ ने १९५४ के लेखा तथा विवरण को अक्तूबर १९५५ तक प्रस्तुत नहीं किया। १७० में से केवल ११ समवायों को प्रशासकों ने अपने हाथ में ले लिया। अध्यादेश जारी हो जाने के पश्चात् ४ समवाय और इसमें सम्मिलित हो गये है। यह गैर सरकारी (निजी) क्षेत्र का प्रबन्ध है।

वह बात नहीं है कि केवल किसी लापरवाही के कारण ये विवरण एवं लेखा प्रस्तुत नहीं किये गये हैं। इन समवायों की कार्यकुशलता पर प्रहार करते हुए फिरोज गांधी बीमा निदेशक के निर्णय का उल्लेख करते हैं —

'बीमा निदेशक ने विवरण प्रस्तुत न करने के सम्बन्ध में अपने प्रतिवेदन में लिखा है कि ये विवरण केवल इसलिए प्रस्तुत नहीं किये गये हैं *क्योंकि ये समवाय उनको प्रस्तुत करने की इच्छा अथवा क्षमता नहीं रखते हैं।"*

क्या फिरोज गांधी का यह वक्तव्य इस बात का पर्याप्त प्रमाण नहीं है कि वे निजी क्षेत्र के सम्बन्ध में अथवा व्यक्तिगत पूंजीपतियों और पूंजीवादी प्रणाली के बारे में क्या राय रखते थे तथा उसे स्थानान्तरित करके सार्वजनिक क्षेत्र की स्थापना एवं समाजवादी विनियोजन के सम्बन्ध में अत्यधिक आस्थावान क्या थे?

इस अवसर पर अशोक मेहता ने मुख्य समस्या की ओर से सदन का ध्यान हटाने के लिए एक गौण प्रश्न उठाया उनकी शिकायत थी कि बीमा निदेशक को ऐसी कम्पनियों के विरुद्ध कदम उठाना चाहिए। परन्तु यह समस्या का समाधान नही है, केवल लीपा-पोती है। फिरोज गाधी ने इस भटकाने वाले प्रश्न को सही अर्थों म समझ कर प्रतिप्रश्न किया ?

"मैं नही जानता कि बीमा निदेशक ने कोई कार्यवाही क्या नही की ? मैं इससे अत्यधिक परेशान हू परन्तु पूर्णतया विचार करने पर मुझे ज्ञात हुआ है कि कार्यवाही करना बडा कठिन है। दो वर्ष पूर्व सरकार एक समवाय का प्रशासक नियुक्त करना चाहती थी। परन्तु कानूनी सलाहकारो न बताया कि ऐसा नही किया जा सकता।"

इसके बाद उन्होंने कहा है "बीमा अधिनियम का दस बार सशोधन किया जा चुका है। परन्तु आप सशोधन करते रहिए और बीमा समवायो के स्वामी इस प्रकार के रास्ते निकालते रहेंगे जिससे कि वे जनता को लूटते रहे। बीमा समवाय के स्वामी मालदार होते है। निदेशक यह कैसे जान सकता है कि वह कब भ्रष्ट होने जा रहा है।'

इस सम्बन्ध म कानूनी पचीदगियो और मुकदमेबाजी की ओर सकेत करते हुए फिरोज गाधी कहते है कि आमतौर पर इन जटिलताओ का लाभ उठाकर पूजीपति वर्ग अपने स्वार्थो की रक्षा कर लेते हैं। उन्होंने कहा कि—"बीमा निदेशक ने कार्यवाही क्यो नहीं की ? पहले मैं भी यही सोचता था। परन्तु पूर्णतया विचार करने पर मुझे ज्ञात हुआ है कि कार्यवाही करना बड़ा कठिन है। दो वर्ष पूर्व सरकार एक समवाय का राष्ट्रीयकरण करना चाहती थी। परन्तु कानूनी सलाहकारो ने बताया कि ऐसा नहीं किया जा सकता।" (पूर्वोक्त)

बाद के अनुभव ने इसकी पुष्टि कर दी है कि उनका यह सोचना कितना सही था। पूजीपतियो के खिलाफ चाहे जितना कड़ा कानून बना दिया जाय वर्तमान कानूनी ढाचे मे अपने लिए वे सरक्षण प्राप्त कर ही लेते है।

इस प्रकार हम यह गम्भीरतापूर्वक सोच सकते है कि अपने आप को समाजवादी कहने वाले अशोक मेहता केवल बीमा निदेशक की लापरवाही को बहाना बना कर इजारेदार पूजीपतियो की समाज विरोधी चेष्टाओ पर पर्दा डालने का प्रयत्न करते है। विपरीत इसके, फिरोज गाधी बीमा निदेशक को भी उस इजारेदार व्यवस्था के सपूर्ण षड्यन्त्र का एक अग भर मानते है जो भ्रष्टाचार का शिकार हो सकता है और भ्रष्टाचार से अपने आप को बचा भी सकता है। परन्तु वह अर्थ व्यवस्था के दोषो का निराकरण नही कर सकता। इसके लिए फिरोज गाधी के शब्दो मे निजी क्षेत्र का सम्पूर्ण ढाचा बदलना और उसके स्थान पर नये

सार्वजनिक क्षेत्र की स्थापना करना अनिवार्य हो जाता है।

इसके बाद फिरोज गांधी कौटल्य के अर्थशास्त्र का एक शानदार उदाहरण देते जिसमें कहा गया है कि "मछलियां पानी में रहती है। वे चारों ओर पानी से घिरी रहती है। वे पानी पीती दिखाई नहीं देती। परन्तु पानी वे जरूर पीती हैं। ठीक इसी प्रकार, चारों ओर दौलत से घिरे हुए लोग जो उसका कारोबार करते हैं उसका भक्षण अवश्य करते हैं। परन्तु भक्षण करते हुए बहुत कम दिखाई देते हैं।"

निजी क्षेत्र पर प्रहार करते हुए फिरोज गांधी जीवन बीमा समवाय का बड़े दुःख के साथ और क्षोभ के साथ उल्लेख करते हैं।

"इसने इस देश के नागरिकों की दृष्टि में अपने आप को बहुत गिरा लिया है। बीमा उद्योग मानव समाज की सेवा का माध्यम नहीं रह गया है। यह बीमा धारकों के विरुद्ध अपराधपूर्ण षड्यन्त्र में बदल गया है।"

इस प्रकार फिरोज गांधी यह मानने के लिए तैयार नहीं हैं कि इस व्यवसाय में कुछ सुधार करके या व्यक्तियों में परिवर्तन करके अथवा नये नियम बना कर बीमा उद्योग को जन सेवा के लायक बनाया जा सकता।

फिरोज गांधी विस्तारपूर्वक बीमा कम्पनियों में आम तौर पर चल रही अनियमितताओं और लूट खसोट के आचरणों का जब विवेचन कर रहे थे तो उनके विरोधियों के लिए उनके प्रहार असह्य हो उठे। वे उनके आक्षेपों का समाधान करने में असमर्थ थे। यही कारण है कि एक माननीय सदस्य ने यह कह कर उन्हें चुप कराना चाहा कि फिरोज गांधी सदन का बहुत अधिक समय ले चुके हैं।

जी० डी० सोमानी जो बड़े उद्योगपति थे। उन्होंने आपत्ति उठाई "फिरोज गांधी एक बात को बार बार दोहरा रहे हैं।"

परन्तु फिरोज गांधी चुनौतियों का सामना करने में सक्षम थे। उन्होंने सोमानी की ओर संकेत करते हुए कहा —

"मैं आपकी चुनौती स्वीकार करता हूं। आप बीमा समवायों की बैलेंस शीट या लेखा पुस्तक दिखाइये।"

जी० डी० सोमानी — लेखा पुस्तकें मौजूद है। इस पर उपाध्यक्ष महोदय ने हस्तक्षेप किया और माननीय सदस्यों को अपनी ओर मुखातिब होने के लिए मजबूर किया।

इसके बाद फिरोज गांधी ने एक के बाद दूसरी कम्पनी की अनियमितताओं के सम्बन्ध में सदन का ध्यान आकृष्ट किया।

बीमा उद्योग अब देश की जनता की भलाई नहीं कर रहा है। प्रत्युत बीमा धारी को लूटने का षड्यन्त्र है। इन समवायों के व्ययगत अनुपात की जांच मैंने की है। १९५३ में ज्वाल इंडिया जनरल इंश्योरेंस कम्पनी का दो वर्षों का व्यय

गत अनुपात ३६ प्रतिशत था। इन्ही वर्षो तथा अवधि मे भास्कर इन्श्योरेंस का व्ययगत अनुपात ५५ प्रतिशत, बम्बई लाइफ इन्श्योरेंस का ४६ प्रतिशत, बम्बई म्युचुअल का ३७ प्रतिशत, फ्री इंडिया जनरल का ३१ प्रतिशत, हिन्दुस्तान कोआपरटिव का ३८ प्रतिशत, लक्ष्मी इन्श्योरस का ३६ प्रतिशत लाग लाइफ इन्श्योरेंस का ६६ प्रतिशत, नशनल इन्श्योरस का ३८ प्रतिशत, न्यू एशियाटिक का ४७ प्रतिशत, न्यू ग्रेट इन्श्योरेंस का ३७ प्रतिशत, न्यू इंडिया का ४० प्रतिशत, ओरियन्टल का २० प्रतिशत, रूबी जनरल का ४० प्रतिशत, कमर्शियल इन्श्योरेंस का १०० प्रतिशत रहा है।"

"एम्पायर आफ इंडिया इन्श्योरेंस कम्पनी का व्ययगत अनुपात १४ प्रतिशत ह। यह सबसे कम है तथा यह केवल इस कारण कि इसका प्रबन्ध, प्रशासक के हाथ म है।"

पूजीपति किस तरह लूटपाट और घोटाला करत ह इसे बताते हुए फिरोज गाधी कहते है कि "वित्त मन्त्री न जीवन निधि के उस प्रयोग की ओर निर्देश किया है। उन्हाने कुछ उदाहरण दिये तथा कुछ मैं प्रस्तुत करता हू। एक बीमा समवाय के स्वामी का एक अन्य समवाय था। दूसरे समवाय न बम्बई म कुछ भूमि ११,४०,०७७ रुपये म खरीदी। कुछ माह पश्चात् यह भूमि पहले समवाय का ४०,६०,६५४ रुपये मे बेच दी गई। दाना का स्वामी एक ही व्यक्ति था।

दूसरा उदाहरण लीजिये। बीमा समवाय न एक बैंक के कुछ शेयर खरीदे तथा बैंक का दिवाला निकल गया। मैं यह भी बता देना चाहता हू कि वह अपनी सस्था के शेयर कम मूल्य पर खरीद रह थे तथा इस प्रकार इस बीमा समवाय निधि से धन कमा रह थे।

तीसरा उदाहरण, इस समवाय ने बिहार की कोयले की खाना म शेयर खरीदे तथा दुबारा बेनामीदारो को बेच दिय। चौथे समवाय ने भी ऐसा ही किया। पाचवें समवाय ने बम्बई की एक कपडा मिल म २६ लाख रुपये के शेयर खरीद। उसी दिन ये शेयर ५२,००० रुपय की हानि उठा कर बेच दिये गय। छठे समवाय ने बम्बई की एक दूसरी कपडा मिल के ४७,७०,००० रुपये के शेयर खरीदे। यह भी उसी दिन १,५६,००० रुपये की हानि उठाकर बेच दिये गय। सातवें समवाय ने बम्बई के एक समाचार पत्र मे २६ १० ००० रुपय क शेयर खराद। कुछ माह पश्चात यह भी ६७,५८० रुपय की हानि उठा कर बेच दिये गय। आठवे समवाय ने निदेशक टिप्पणी पुस्तिका मे पष्ठो पर गिनती ही नही लिखी थी। ६वें मामले मे न्यायवादी का अधिकार एक ऐसे व्यक्ति को दिया गया था जो बिल्कुल अजनबी था। वह न ता इस बीमा कम्पनी के निदेशक बाड का काई सदस्य था और न ही कोई लेखा अधिकारी आदि था। यह एक विचित्र मामला

है। कुछ प्रकार के लेन देनो मे मूल्यांकन किया गया है। मैं आपको एक मूल्यांकन रिपोर्ट का उद्धरण पढ़कर सुनाता हूं।

वास्तव मे यदि फिरोज गांधी के मन मे निजी पूंजीपतियों और उद्योगपतियों की समाज विरोधी कुचेष्टाओ के विरुद्ध क्रोध की आग न भड़कती हुई होती तो वे उन्हे "अपराधपूर्ण षडयन्त्रकारियों" की सज्ञा प्रदान न करते।

फिरोज गांधी बीमा कम्पनियो के राष्ट्रीयकरण की पैरवी करते हुए इन कम्पनियो मे काम करने वाले कर्मचारियों के हितो की उपेक्षा नही कर सकते थे। यही कारण है कि सरकार को सावधान करते हुए उन्होने यह चेतावनी दी थी —

"सरकार को बीमा कम्पनियो के कर्मचारियों को यह आश्वासन देना चाहिए कि वह उन्हें सेवा से मुक्त नहीं करेगी। वास्तव मे इस व्यवसाय के प्रगति करने की सम्भावनाएं हैं। अत किसी भी कर्मचारी को निकलने की कोई युक्ति नहीं दिखाई देती है। कुछ ऐसी भी शिकायतें हैं कि कुछ कम्पनियों के कर्मचारियों को उनका वेतन नही दिया गया है। वित्त मंत्री को इस ओर भी ध्यान देना चाहिए।"

इस प्रकार हम यह देख सकते हैं कि बड़े उद्योगपतियों की क्रूर शोषण वृत्ति पर प्रबल प्रहार करने वाले फिरोज गांधी कर्मचारियो के लिए कितने मृदुल व्यवहार के पक्षपाती थे। प्रत्येक समाजवादी विचारक के लिए ऐसा करना स्वाभाविक है।

सरकारी नीति और दृष्टिकोण का समर्थन करते हुए फिरोज गांधी जनता को आश्वासन देते हैं कि

"अब सरकार बीमा कम्पनियो का प्रबन्ध अपने हाथों में लेने जा रही है। शीघ्र ही उनका राष्ट्रीयकरण होने जा रहा है। मुझे आशा है कि जनसाधारण और पॉलिसी होल्डर सभी सरकार का सहयोग देने के लिए आगे आएंगे।" (पूर्वोक्त)

इस ऐतिहासिक वादविवाद का समापन करते हुए फिरोज गांधी अन्त मे शोषक पूंजीपतियों पर कटाक्ष करते हुए रहीम का एक दोहा दोहराते हैं और दावा करते हैं कि

'तरुवर फल नहिं खात हैं
सरवर पियै न पान।"

"पर सरकारी क्षेत्र की सबसे बड़ी कमी यही है कि वह केवल फल से ही प्यार करता है और वृक्ष की कोई चिन्ता नहीं करता।" (पूर्वोक्त)

सर्वसाधारण जनता और मजदूर तथा किसान "वृक्ष" का उत्पादन "फल" है पूंजीपति उत्पादक को कुर्बान करके उत्पादन पर अधिकार जमाता है।

गया है। जैसे कि महावीर इन्श्योरेंस कम्पनी।

एक माननीय सदस्य ने कटाक्ष करते हुए कहा —हनुमान जी का नहीं महावीर त्यागी का नाम रखा गया है।

उपाध्यक्ष महोदय —नहीं! माननीय मन्त्री के नाम पर नहीं। महावीर शब्द से आशय हनुमान जी का ही है।

फिरोज गांधी —इसी शृंखला में डालमिया-जैन ने अपनी बीमा कम्पनी का नाम भारत नाम से रखा।

इस प्रकार फिरोज गांधी ने पूंजीपतियों की धर्म, देश और जाति के नाम का शोषण करने की आम प्रवृत्ति की आलोचना की। इसके बाद फिरोज गांधी ने उस प्रक्रिया का विस्तारपूर्वक उल्लेख किया जिसमें रामकृष्ण डालमिया और उनके प्रचारकों ने इस बड़ी पूंजी के संचय के लिए एक बड़ा सा धार्मिक वातावरण खड़ा करने का प्रयत्न किया और धार्मिक जनता को यह समझाने की चेष्टा की कि डालमिया जैन के पास अपार धनराशि किसी जाल बट्टे के कारण नहीं बल्कि भाग्य की बदौलत संचित हुई है।

फिरोज गांधी ने भारत बीमा समवाय के सम्बन्ध में कुछ कहने से पूर्व सदन को रामकृष्ण डालमिया के बारे में कुछ बताना जरूरी समझा। १६४६ में वह अमरीका गये। उन्होंने संवाददाताओं को अनेक बयान दिये। 'डाइजेस्ट' नामक पत्रिका के एक लेख में हवाला देते हुए फिरोज गांधी ने डालमिया जैन के निम्नलिखित शब्दों का उल्लेख किया है —

'सेठ डालमिया कहते हैं —'मैं एक ज्योतिषी के पास गया, उसने मुझे बताया कि दो महीने के भीतर मेरे पास ३० हजार डालर हो जाएंगे। पहले तो मैं हंसा, फिर प्रति दिन सवेरे मैं गंगा में स्नान करते समय ईश्वर का नाम जपने लगा और एक दिन इंगलैंड से मेरे पास एक तार आया कि 'मैं चांदी खरीद लूं।'

"चांदी खरीदने के लिए रुपये की समस्या शीघ्र ही हल हो गई। सेठ डालमिया ने ज्योतिषी से ३० हजार डालर उधार लिए। चांदी के इस सट्टे के पश्चात जवाहरात, कपास अलसी का तेल, चीनी इत्यादि की सट्टेबाजी हुई। सेठ डालमिया ने १० हजार रुपया कमाया।'

इस प्रकार फिरोज गांधी ने उन धार्मिक अन्धविश्वासों पर कटु प्रहार किए, जिनका सहारा ले कर यह धनासेठ अपनी समाज विरोधी चेष्टाओं पर पर्दा डालने का प्रयत्न करते हैं। इस पूरी कहानी का सारांश क्या है? सेठ डालमिया भारत की जनता को यह समझाना चाहते हैं कि रात ही रात में लखपति से करोड़पति हो जाने की भविष्यवाणी ज्योतिषी पहले ही कर चुके थे। करोड़पति होना उनके भाग्य में लिखा था। इसके अलावा गंगा में स्नान करते समय ईश्वर

का नाम जपने से ये करोडपति बने है न कि किसी प्रकार की सट्टेबाजी और जालबट्टे के कारण।

वास्तव मे फिरोज गाधी यह कहकर न केवल पूजीवाद के जन विरोधी रूप का भडाफोड कर रहे थे बल्कि उन धार्मिक अधविश्वासो पर भी चोट कर रहे थे, जिनका ये लोग आमतौर पर सहारा लेते है। यही कारण है कि सदन मे एक सज्जन वी० जी० देशपाण्डे उनके इस वक्तव्य पर आपत्ति करते है। वे कहते है कि असगत बाते कही जा रही है। यहा केवल सगत बात कही जानी चाहिए।

परन्तु पूरा सदन और उपाध्यक्ष फिरोज गाधी के वक्तव्य का समर्थन करते है। इस अवसर पर उपाध्यक्ष का निम्नलिखित वक्तव्य विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

उपाध्यक्ष महोदय सदन के सामने मुख्य बात प्रशासक की शक्ति के सम्बन्ध मे है। यदि सरकार अथवा कोई अन्य प्राधिकारी जो प्रशासक नियुक्त करे, यह आवश्यक समझे कि प्रथम निरोधक कार्यवाही के रूप मे कार्य प्रबन्ध सम्भाल लिया जाना चाहिए तो प्रशासक को आदेश जारी करने का अधिकार प्राप्त होगा कि सम्पत्ति का हस्तान्तरण न किया जाए। तीन महीने के भीतर वह पक्ष न्यायालय मे जा कर आदेश को रद्द करवा सकता है। यह बताने के लिए कि ये विशेष अधिकार कितने आवश्यक है सट्टेबाजी की चर्चा की गई है। इस लिए इतिहास बताया जा रहा है। तीसरे पक्ष ने जो रुपया आकस्मिक मृत्यु आदि की स्थिति मे अपने जीवन की सुरक्षा आदि के लिए दिया है उस रुपये को किस प्रकार सट्टे मे लगाया जाता है और इसलिए प्रशासक को विशेष शक्ति प्रदान करना किस प्रकार आवश्यक है, मेरे विचार मे माननीय सदस्य इसी कारण इन बातो की चर्चा कर रहे है।

फिरोज गाधी जैसा कि कहा जा चुका है चुनौती का जवाब दिये बिना नही रहते थे। उन्होने श्री देशपाडे की ओर मुखातिब होते हुए कहा —

"मै सदन के नियमो को आपसे ज्यादा अच्छी तरह से जानता हू। मुझे बात चालू रखने दीजिये।"

उन्होने अपनी बात दोहराते हुए कहा कि सेठ डालमिया ने १५ वर्ष हुए उद्योग की ओर रुख किया। उन्होने डालमिया जैन के बटवारे के बाद अगस्त या सितम्बर १९४९ मे हुई एक भेट वार्ता की भी चर्चा की। इस भेंट के अवसर पर एक अमरीकी सवाददाता स्त्री भी वहा विद्यमान थी। सेठ डालमिया के उद्योगो की सूची से वह इतनी प्रभावित हुई कि इस सम्बन्ध मे कुछ और अधिक जानने की जिज्ञासा उसके मन मे उत्पन्न हुई। उसने पूछा कि इन कम्पनियो मे आपकी

क्या स्थिति है ? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए फिरोज गाधी उस संक्षिप्त चर्चा का उल्लेख करते हैं

डालमिया—मेरी स्थिति कोई नही है।

प्रश्न – क्या आप इन कम्पनिया के सचालको के बोर्ड के सदस्य नही हैं ?

उत्तर नही।

प्रश्न आपका इन कम्पनिया से क्या सम्बन्ध है ?

उत्तर "मैं इन सबका स्वामी हू।"

इसके बाद फिरोज गाधी ने व्यग्यपूर्ण लहजे मे कहा—' मैं सदन को उस व्यक्ति के बारे मे बताना चाहता हू कि वह कैसा है। वह बीमा कम्पनिया, बैंको, सीमेंट कम्पनिया और न जाने किन किन कम्पनिया का स्वामी बना हुआ है और न जाने कैसा व्यक्ति है। अब मैं आपको यह बताना चाहूगा कि इन बीमा कम्पनिया का करोडो रुपया किन कम्पनिया की निधि मे लगाया गया है और उनका दुरुपयोग किया गया है।"

इस पर उपाध्यक्ष महोदय चौंकते हैं। वे कहते हैं —

"माननीय सदस्य यह सुझाव दे रहे है कि प्रशासक को और अधिक विस्तृत अधिकार दिये जाने चाहिए।"

परन्तु फिरोज गाधी सिद्धान्त रूप से यह मानने को तैयार नही थे कि केवल प्रशासक नियुक्त कर देने से पूजीवाद की जन-समाज विरोधी चेष्टाओ पर अकुश लगाया जा सकता है। उन्होने उपाध्यक्ष महोदय को प्रत्युत्तर देते हुए कहा कि —

"महोदय, मैं बीमा कम्पनिया के राष्ट्रीयकरण का सुझाव देता हू। जितनी जल्दी यह कर दिया जाय उतना ही अच्छा है।"

परन्तु सोशलिस्ट नेता एम० एस० गुरुपदस्वामी को फिरोज गाधी का यह कथन ठीक नही लगा। उन्होंने कटाक्ष करते हुए कहा—

"माननीय सदस्य कांग्रेस पार्टी मे रहने योग्य नही हैं। अर्थात् उन्हे बाहर निकल जाना चाहिए।'

इस प्रकार हम यह देखते है कि अशोक मेहता, गुरुपदस्वामी और दूसरे समाजवादी नेता भारत बीमा कम्पनी और अन्य समवायो मे केवल प्रशासक नियुक्त कर देने मात्र से सन्तुष्ट थे जबकि शासक पार्टी के प्रमुख प्रवक्ता फिरोज गाधी केवल अकुश लगा देने से या प्रशासक नियुक्त कर देने से सन्तुष्ट नही थे। उन्होने अपनी माग को स्पष्ट शब्दो मे दोहराया कि वे बीमा कम्पनिया पर अकुश लगाने मात्र से सन्तुष्ट नही है बल्कि उनका राष्ट्रीयकरण करना सही समझते हैं।

इसके बाद फिरोज गाधी बडे रोचक ढग से उस लम्बी प्रक्रिया का वर्णन करते हैं जिससे गुजरते हुए डालमिया-जैन एक के बाद दूसरी कम्पनियो पर कब्जा करने का अभियान चलाते है तथा हिन्दुस्तान के सबसे बडे सेठो की गिनती मे आ जाते हैं। वे कहते हैं—

"सन् १९४६ मे 'डालमिया जैन' ने बम्बई मे हाथपाव फैलाने शुरू किये। उन्होने अक्तूबर १९४६ मे साढे तीन करोड रुपये की भारी रकम से बम्बई मे 'सपूरजी बारूचा मिलो और 'माधोजी धमसे मनुफैक्चरिंग कम्पनी' अथवा मिलो को खरीदा। डालमिया जैन की कार्यवाही का ढग बहुत ही ठोस प्रकार का है। इस कम्पनी को अपने अधिकार में ले लो, उस कम्पनी पर अपना अधिकार जमा लो। आधे दर्जन झूठी कम्पनिया पर अपना अधिकार कर लो। उनका प्रिय ढग यह था कि कई कम्पनिया के हिसाब किताब आपस मे मिला कर गडबड कर दो। अक्तूबर, १९४६ मे इन दोनो मिलो पर उन्होने अपना अधिकार किया। अक्तूबर १९४६ मे इस दल के पजे मे 'बैनट कोलमैन एण्ड कम्पनी' आई। इसे 'सपूरजी बारूचा और 'माधोजी धमसे मिलो' ने खरीदा था। यह कहा तक विधिवत था या नही, यह वित्त मन्त्री बता सकते है।"

इस अवसर पर फिरोज गाधी डालमिया-जैन की हरकतो की ओर कटाक्ष करते हुए कहते है—

"डालमिया जैन के सधे हुए हाथ है। जब वे कही हाथ डालते है तो खाली हाथ नही लौटते। उनका तरीका है किसी कम्पनी पर पहले अधिकार करो। उसके जरिये दूसरी कम्पनी पर झपट्टा मारो और फिर दर्जनो दूसरी झूठी-सच्ची कम्पनियो पर कब्जा करो और इसमे सबसे ज्यादा सधा हुआ तरीका है कि बहुत सी कम्पनियो के खातो मे इस प्रकार का घोटाला कर दो कि उन्हे एक-दूसरे से पृथक करना असम्भव हो जाय। और इसके लिए वे बहुत सदिग्ध, गैर-कानूनी तरीके अख्तियार करते है।"

स्पष्ट है कि बीमा समवायो की पूजी का दुरुपयोग करके ही डालमिया-जैन ने करोडो अरबो रुपये की सम्पत्ति पर अधिकार जमाया। उदाहरण के लिए बैनट कोलमैन एण्ड कम्पनी बीमा कम्पनी के साथ घनिष्ट सम्बन्ध मे जुडी हुई थी। और इसी आदान प्रदान की प्रक्रिया मे डालमिया-जैन ने उस पर अधिकार कर लिया। इसी बात को स्पष्ट करते हुए फिरोज गाधी ने एक बडे और प्रसिद्ध घोटाले का वर्णन निम्नलिखित शब्दो मे किया है।

"बैनट कोलमैन एण्ड कम्पनी" का बीमा कम्पनियो से बहुत ही गहरा सम्बन्ध था। अब दोनो मिलो ने "बैनट कोलमैन एण्ड कम्पनी" के अश खरीदने आरम्भ

किये। लेकिन ये अंश मूल 'बैनेट कोलमन' के हाथों में नहीं थे। १९४६ में किसी समय 'डालमिया-जैन' ने ३८०८३ पूर्वाधिकार अंशों में ३२,००० और ७,७५० साधारण अंशों में से ८,८०० अर्जित किये थे। अक्तूबर १९४६ तक ये अंश दयाल डालमिया, श्रेयांस प्रसाद जैन और शान्ति प्रसाद जैन के नामों में हस्तान्तरित कर दिये गये थे। यह कार्यवाही लगभग डेढ़ करोड़ रुपये के खर्च पर की गई और अंशों पर इन तीनों व्यक्तियों का अधिकार था। रुपया कहां से आया, यह मुझे मालूम नहीं है। ये अंश जिन्हें इन तीन व्यक्तियों ने खरीदा था और जो इनके अधिकार में थे कम्पनियों को दिये जाने लगे। अक्तूबर से दिसम्बर १९४६ तक इन मिलों ने 'बनेट कोलमन एण्ड कम्पनी' के १६,३५० पूर्वाधिकार अंशों की पहली किश्त खरीदी। ३१ मार्च, १९४७ को ५२,९२,००० रुपये की कीमत पर 'बनेट कोलमैन एण्ड कम्पनी' के ९,५०० पूर्वाधिकार अंशों को खरीदा। ये दोनों कम्पनियां 'बनेट कोलमैन एण्ड कम्पनी' की मालिक बन गईं।

यह आंकड़ों का गोरख धंधा न तो सदन की समझ में आया और न उपाध्यक्ष की। पूरे सदन की आशंकाओं का निवारण करते हुए उपाध्यक्ष महोदय पूछते हैं —

'क्या ये सब भारत बीमा कम्पनी के रुपये से शुरू हुई थी?"

फिरोज गांधी 'जी हां ये सभी आपस में सम्बन्धित हैं।"

उपाध्यक्ष महोदय— बीमा कम्पनियों के संरक्षक कम्पनियों की अवहेलना और दुरुपयोग करते हैं। परन्तु यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि भारत बीमा कम्पनी ने कमर्शियल कम्पनी अथवा बनेट कोलमन एण्ड कम्पनी या किसी अन्य कम्पनी अथवा व्यक्ति के नाम रुपया लगाया और उस रुपये के जाया होने का भय है। किसी दूसरी घटना की चर्चा करने से पहले यह बताना आवश्यक है कि उस बात से भारत बीमा कम्पनी का क्या सम्बन्ध है?"

फिरोज गांधी भारत बीमा कम्पनी के साथ उनके सम्बन्धों की चर्चा करने से पहले उन्होंने अपनी बात को पूरा करते हुए बताया कि—

'३१ मार्च, १९४७ को 'सपूर जी बारूचा मिल' के पास ५२,९२,००० रुपये के ९,५०० पूर्वाधिकार अंश थे और इसी दिन ३७,६७,५०० रुपये की लागत से ६८५० पूर्वाधिकार अंश 'माधोजी धमसे मिल' के पास बनेट कोलमन एण्ड कम्पनी के थे। बनेट कोलमन का स्वामित्व इन दोनों टेक्सटाइल मिलों के हाथ में था। उनके व्यापार का स्वरूप बिल्कुल भिन्न है। इस लिए इस कम्पनी में रुपया लगाना कहां तक विवेचित था यह मैं नहीं जानता।'

अब मैं एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रविष्टि की चर्चा करता हूं। इसका सम्बन्ध भी अंश खरीदने से है और मैं आपको बताऊंगा कि किस प्रकार दूसरे विभिन्न

बकों और कम्पनियों को 'बैनट कोलमन एण्ड कम्पनी' की सहायता के लिए उसके अशों को खरीदने के लिए लाया गया।

"२ मई, १९४७ को 'ग्वालियर बैंक' से ८४,००,००० रुपय की राशि निकाली गई। ग्वालियर और बम्बई एक दूसरे से दूरी पर स्थित है। परन्तु उसी दिन मिलों द्वारा 'बनट कोलमैन एण्ड कम्पनी' को १५,००० और पूर्वाधिकार अश खरीदने के लिए ८४,००,००० रुपय या इससे कुछ अधिक रकम दी गई और व इस कम्पनी की मालिक हो गई। श्री देशमुख जानते है कि कुछ वर्ष पश्चात् 'ग्वालियर बैंक' परिसमाप्त हो गया था।"

इस प्रकार फिरोज गाधी ने भारत बीमा समवाय के माध्यम से दूसरी करोडो रुपये की मिल्कियत की कम्पनियो पर कब्जा करने की प्रक्रिया को विस्तारपूर्वक बताया।

यह बात नही है कि इस आर्थिक घोटाले का भडाफोड नही हुआ था। इन दोनो के पास 'बनट कोलमन' के एक करोड ७८ लाख रुपय के अश थे। इन दोनो कम्पनियो के लेखा परीक्षक चिन्तित थे कि अब क्या होगा? और जो कुछ हो रहा था, उसे वे पसन्द नही करते थे। व लेखा परीक्षक थे— फर्गुसन और बिल्लीमोरिया। उन्होने लेखा परीक्षाओ पर हस्ताक्षर करने से या उनका प्रमाणित करने से इन्कार कर दिया। उन्होने इस सौदे को भी प्रमाणित नही किया। कुछ सचालक भारत बीमा कम्पनी के है, और कुछ बनट कोलमन के और कुछ किन्ही दूसरी कम्पनियो के सचालक थे। बहुत सी कम्पनियो के सचालक एक ही थे। लेखा परीक्षको ने १०,३२,६१६ रुपये की प्रथम मद की पुष्टि करने से भी इन्कार कर दिया था। यह रकम डालमिया सीमेट एण्ड पेपर मार्केटिंग कम्पनी आफ इण्डिया को पेशगी दी गई थी। ३१ मार्च, १९४७ को डालमिया सीमेट एण्ड पेपर मार्केटिंग कम्पनी का २३,५३,००० रुपया कम्पनी को देना था। यह रुपया साफ कर दिया गया। और कम्पनी से रुपया उधार ले लिया गया। ३० नवम्बर, १९४७ को १ करोड ८३ लाख ५६ हजार ७९९ रुपये की पहली किस्त उधार ली गई।

इसके बाद 'माधोजी धमसे मनुफक्चरिंग कम्पनी' की ९ लाख रुपय की दूसरी पेशगी की किस्त भी लेखा परीक्षको ने प्रमाणित नही की। इस सम्बन्ध में २८ फरवरी, १९४७ को हिसाब में कम्पनी द्वारा डालमिया सीमेट एण्ड पेपर मार्केटिंग कम्पनी से ९ लाख रुपय की वसूली दिखायी गई थी। यह रकम भारत बैंक लिमिटेड में जमा करवाई गई। परन्तु उतनी ही रकम उसी दिन इस बैंक से निकाल ली गई और कम्पनी द्वारा माधो जी धमसे मनुफक्चरिंग कम्पनी लिमिटेड को दी गई। १४ मार्च, १९४७ को इसके बिल्कुल विपरीत किया गया

जिसके परिणामस्वरूप माधोजी धमसे मैनुफैक्चरिंग कम्पनी लिमिटेड को ६० लाख रुपये पशगी अदा कर दिय गये। इस पूरी प्रक्रिया पर तीखा व्यग करते हुए फिरोज गाधी कहते है —

"यह कितनी शानदार प्रक्रिया है।"

इसके बाद लेखा परीक्षक भी मुह ताकते रह और जिस कम्पनी को ६ लाख रुपये अदा करने थे वे लम्बी प्रक्रिया द्वारा उसे अदा कर दिय गय।

इसके बाद फिराज गाधी तीसरी मद का उल्लेख करत है। कम्पनी न भारत बैंक लिमिटेड से ४२ लाख रुपये की राशि ली। इस सम्बन्ध म दोना लेखा परीक्षको न सकेत किया कि २७ दिसम्बर, १९४६ का भारत बक लिमिटेड से ४२ लाख रुपये की रकम नक्द उधार ली गई। उसी दिन यह रकम डालमिया सीमट एण्ड पेपर मार्केटिंग कम्पनी लिमिटेड की किताबा म हस्तान्तरित कर दी गई। ३ जनवरी, १९४७ को यानी करीब ३ महीने बाद डालमिया सीमट एण्ड पेपर मार्केटिंग कम्पनी लिमिटेड ने इतनी ही रकम हस्तान्तरित की और उधार की रकम का नक्द भुगतान हो गया। फर्गूसन और बिल्लीमारिया न अपनी लेखा परीक्षाआ मे इस पर निम्नलिखित टिप्पणी की —

"शेयर होल्डरा का ध्यान इस प्रश्न की ओर आकृष्ट किया जाता है कि य पेशगी अदायगिया और विनियोजना जो कम्पनी की आर से किय गये है और जा कम्पनी की आर से उधार खाते म ली गई रकम है क्या उन्हे कार्यान्वित करन का अधिकार कम्पनी को ह ? इस उल्लेख के बाद फिरोज गाधी न उन दोना लखा परीक्षका के दुर्भाग्य पर आसू बहात हुए कहा —

'कुछ महीने पश्चात् दाना लेखा परीक्षका ने त्यागपत्र द दिया और वे कम्पनी से अलग हो गये।"

उनका स्पष्ट सकेत इस बात की ओर है कि य हृदयहीन कम्पनिया उन ईमानदार लेखा परीक्षका का एक क्षण के लिए भी सहन नही कर सकती जो उनकी जालसाजिया का बर्दाश्त नही करते। यही कारण है कि इन दाना लखा परीक्षका को त्यागपत्र दकर कम्पनी से पृथक् हो जान के लिए बाध्य कर दिया गया।

इसके बाद फिराज गाधी इस कम्पनी के सारे लेनदन के दिलचस्प पहलू की ओर मुडते हैं। उनके कथनानुसार लगभग २ या २॥ वष बनट कौलमन एण्ड कम्पनी' न भारत बीमा कम्पनी के साथ कुछ लनदन किया। परन्तु डालमिया जैन की कुछ कम्पनिया म रुपया लगान पर बीमा नियन्त्रक न भारत बीमा कम्पनी के खिलाफ आपत्ति की। सम्भवत इसी आपत्ति क कारण कम्पनी का रुपया वापिस दन के लिए कहा गया। इसक प्रतिकार के लिए उन्होने बहुत

चालाकी का रास्ता अख्तियार किया। उन्होंने बम्बई म बोरीबन्दर म 'टाइम्स आफ इडिया का भवन बेच दिया। इसी प्रकार, दिल्ली के भवन और एक गोदाम भी बेच दिया। ये सब भवन भारत बीमा कम्पनी को बहुत ऊचे मूल्य पर बेचे गय। इस पर सरकार ने आपत्ति की और वह आदान प्रदान रोक दिया गया। इस सदभ का मूल्याकन करते हुए फिरोज गाधी निष्कष निकालते हैं कि —

"आज इसी सौदबाजी के कारण भारत बीमा कम्पनी को अभी भी बैनट कोलमैन एण्ड कम्पनी से एक करोड रुपये शेष लेने है।"

इस पूरे आर्थिक आदान प्रदान के घपले का मूल्याकन करते हुए फिरोज गाधी यह सकेत करते है कि आतरिक काय सचालन म क्या हो रहा है, हम नही जानते। लेकिन भारत बीमा कम्पनी भी बैनट कोलमैन एण्ड कम्पनी के स्वामियो तथा प्रबन्धको के कामो के फलस्वरूप खतरे म है। जो लेखा बैनट कोलमन एण्ड कम्पनी के न्याय निर्णाता के सामने प्रस्तुत किया गया उसके सम्बन्ध मे न्याय निर्णाता ने अपने निणय म कहा है कि विवाद की अगली मद एक विशेष पक्ष को कमीशन के रूप म अदायगी है। इस सदभ म असलियत को उजागर करते हुए फिरोज गाधी कहते है —

'यह कमीशन भी उस सगठन को दे दिया गया है जिसका नियन्त्रण डालमिया के हाथो म है। और इसकी रकम कई लाख रुपये थी। और जब उस सगठन के नाम पूछे गये तो कम्पनी के प्रतिनिधि न उनके नाम बतान स यह कहकर इन्कार कर दिया कि ऐसा करना कम्पनी के हित म नही है। परन्तु न्याय निर्णाता ने कहा है कि कम्पनी न जब दूसरी अनेक कम्पनियो के नाम बताय है तो इस पक्ष का नाम बताने और उसे अदा की गयी धनराशि बतान से इन्कार करन का कोइ औचित्य नही है।"

इसके बाद उन्होन स्वय उन कम्पनियो के नाम गिनान शुरू किये जो इस प्रकार की जालसाजियो म सम्मिलित हैं। इन नामो को सुनकर उपाध्यक्ष महोदय बहुत चौके और उन्होंने मजाक मे कहा कि आप तो कम्पनियो के नाम इस प्रकार गिनाते जा रहे हैं जसे कोई भक्त गोपाल के सहस्र नाम उच्चारण करता है।

जसा कि सबको मालूम है कि भारत बीमा कम्पनी को बनट कोलमन एण्ड कम्पनी स एक करोड रुपये की रकम लेनी है। परन्तु सरकार की ओर स जब इसके लिए किश्तें बाध दी गयी तो फिरोज गाधी न आपत्ति करते हुए पूछा—

"मैं सरकार से पूछना हू कि यह रकम एक ही बार म वसूल क्यो नहीं की गयी? यह सूद की इतनी कम दर पर क्यो दी गई? भारत बीमा कम्पनी का इस एक करोड रुपये पर अधिकार है, इस सूद की ऊची दर पर किसी काम म

जिसके परिणामस्वरूप गांधीजी धर्मस मैनुफैक्चरिंग कम्पनी लिमिटेड को ६० लाख रुपये पेशगी अदा कर दिये गये। इस पूरी प्रक्रिया पर तीखा व्यंग करते हुए फिरोज गांधी कहते हैं —

"यह कितनी शानदार प्रक्रिया है।"

इसके बाद लेखा परीक्षक भी मुंह ताकते रहे और जिस कम्पनी को ६ लाख रुपये अदा करने थे वे लम्बी प्रक्रिया द्वारा उसे अदा कर दिये गये।

इसके बाद फिरोज गांधी तीसरी मद का उल्लेख करते हैं। कम्पनी ने भारत बैंक लिमिटेड से ५२ लाख रुपये की राशि ली। इस सम्बन्ध में दोनों लेखा परीक्षकों ने संकेत किया कि २७ दिसम्बर, १९४६ को भारत बैंक लिमिटेड से ५२ लाख रुपये की रकम नकद उधार ली गई। उसी दिन यह रकम डालमिया सीमेंट एण्ड पेपर मार्केटिंग कम्पनी लिमिटेड की किताबों में हस्तान्तरित कर दी गई। ३ जनवरी १९४७ को यानी करीब ३ महीने बाद डालमिया सीमेंट एण्ड पेपर मार्केटिंग कम्पनी लिमिटेड ने इतनी ही रकम हस्तान्तरित की और उधार की रकम का नकद भुगतान हो गया। फर्गूसन और बिल्लीमोरिया ने अपनी लेखा परीक्षाओं में इस पर निम्नलिखित टिप्पणी की —

'शेयर होल्डरों का ध्यान इस प्रश्न की ओर आकृष्ट किया जाता है कि ये पेशगी अदायगियां और विनियोजना जो कम्पनी की ओर से किये गये हैं और जो कम्पनी की ओर से उधार खाते में ली गई रकम है क्या उन्हें कार्यान्वित करने का अधिकार कम्पनी को है ?' इस उल्लेख के बाद फिरोज गांधी ने उन दोनों लेखा परीक्षकों के दुर्भाग्य पर आंसू बहाते हुए कहा —

'कुछ महीने पश्चात् दोनों लेखा परीक्षकों ने त्यागपत्र दे दिया और वे कम्पनी से अलग हो गये।'

उनका स्पष्ट संकेत इस बात की ओर है कि ये हृदयहीन कम्पनियां उन ईमानदार लेखा परीक्षकों को एक क्षण के लिए भी सहन नहीं कर सकतीं जो उनकी जालसाजियों को बर्दाश्त नहीं करते। यही कारण है कि इन दोनों लेखा परीक्षकों को त्यागपत्र देकर कम्पनी से पृथक हो जाने के लिए बाध्य कर दिया गया।

इसके बाद फिरोज गांधी इस कम्पनी के सारे लेनदन के दिलचस्प पहलू की ओर मुड़ते हैं। उनके कथनानुसार लगभग २ या २॥ वर्ष 'बनट कोलमन एण्ड कम्पनी' ने भारत बीमा कम्पनी के साथ कुछ लेनदेन किया। परन्तु डालमिया जैन की कुछ कम्पनियों में रुपया लगाने पर बीमा नियन्त्रक ने भारत बीमा कम्पनी के खिलाफ आपत्ति की। सम्भवतः इसी आपत्ति के कारण कम्पनी को रुपया वापिस देने के लिए कहा गया। इसके प्रतिकार के लिए उन्होंने बहुत

चालाकी का रास्ता अख्तियार किया। उन्होने बम्बई म बोरीबन्दर मे 'टाइम्स आफ इडिया' का भवन बेच दिया। इसी प्रकार, दिल्ली के भवन और एक गोदाम भी बेच दिया। ये सब भवन भारत बीमा कम्पनी को बहुत ऊचे मूल्य पर बेचे गये। इस पर सरकार ने आपत्ति की और वह आदान प्रदान रोक दिया गया। इस सदभ का मूल्याकन करते हुए फिरोज गाधी निष्कप निकालते ह कि —

"आज इसी सौदेबाजी के कारण भारत बीमा कम्पनी को अभी भी बैनट कोलमैन एण्ड कम्पनी से एक करोड रुपये शेष लेने है।"

इस पूरे आर्थिक आदान प्रदान के घपले का मूल्याकन करते हुए फिरोज गाधी यह सकेत करते हैं कि आतरिक काय सचालन मे क्या हो रहा है, हम नही जानते। लेकिन भारत बीमा कम्पनी भी बनट कोलमैन एण्ड कम्पनी के स्वामियो तथा प्रबन्धको के कामो के फलस्वरूप खतर म है। जो लेखा बैनट कोलमैन एण्ड कम्पनी के न्याय निर्णाता के सामन प्रस्तुत किया गया उसके सम्बन्ध म न्याय निर्णाता ने अपन निणय म कहा है कि विवाद की अगली मद एक विशेष पक्ष को कमीशन के रूप म अदायगी है। इस सदभ म असलियत को उजागर करते हुए फिरोज गाधी कहते हैं —

"यह कमीशन भी उस सगठन को दे दिया गया है जिसका नियन्त्रण डालमिया के हाथो म है। और इसकी रकम कइ लाख रुपय थी। और जब उस सगठन के नाम पूछे गय तो कम्पनी के प्रतिनिधि ने उनके नाम बतान से यह कहकर इन्कार कर दिया कि ऐसा करना कम्पनी के हित म नही है। परन्तु न्याय निर्णाता न कहा है कि कम्पनी ने जब दूसरी अनक कम्पनियो के नाम बताय ह तो इस पक्ष का नाम बताने और उसे अदा की गयी धनराशि बतान से इन्कार करने का कोइ औचित्य नही हैं।"

इसके बाद उन्होने स्वय उन कम्पनियो के नाम गिनान शुरू किये जो इस प्रकार की जालसाजियो म सम्मिलित हैं। इन नामो को सुनकर उपाध्यक्ष महोदय बहुत चौंके और उन्होन मजाक म कहा कि आप तो कम्पनियो के नाम इस प्रकार गिनाते जा रहे हैं जसे कोई भक्त गोपाल के सहस्र नाम उच्चारण करता है।

जैसा कि सबको मालूम है कि भारत बीमा कम्पनी को बैनट कोलमन एण्ड कम्पनी से एक करोड रुपये की रकम लेनी है। परन्तु सरकार की ओर से जब इसके लिए किश्तें बाध दी गयी तो फिरोज गाधी ने आपत्ति करते हुए पूछा—

'मैं सरकार से पूछता हू कि यह रकम एक ही बार म वसूल क्या नही की गयी? यह सूद की इतनी कम दर पर क्यो दी गई? भारत बीमा कम्पनी का इस एक करोड रुपये पर अधिकार है, इस सूद की ऊची दर पर किसी काम म

लगाया जा सकता है।"

इसके बाद उन्होंने बैनट कोलमैन एण्ड कम्पनी के मामला की छानबीन करने का सुझाव दिया। उनके कथनानुसार प्रेस आयोग के अधिकार में अनेक महत्वपूर्ण दस्तावेज हैं जिन्हें वित्त मन्त्री मंगवा सकते हैं। उन्होंने कुछ सुझाव भी दिये कि श्री रामकृष्ण डालमिया और श्री जयचन्द जैन ने जो गवाहियां दी हैं उन्हें भी देखा जाना चाहिए।

इसके बाद फिरोज गांधी ने विस्तारपूर्वक यह बताया कि डालमिया-जैन की सैकड़ों नामों से बनाई गई नित नई कम्पनियों का मूल उद्देश्य क्या है? बहुत से समवाय किसी विशेष लक्ष्य को सामने रखकर बनाये जाते हैं। उनका उद्देश्य किसी व्यवसाय या उद्योग को आगे बढ़ाना नहीं है। वह विशेष प्रयोजन पूरा होते ही ये समवाय प्रायः समाप्त कर दिये जाते हैं। यदि एक समवाय समाप्त हो जाता है तो वह दूसरे में मिला दिया जाता है। इस प्रयोजन के लिए भी डालमिया ने बहुत से समवाय बनाये थे। १९४६ में डालमिया-जैन ने एक विमान सेवा समवाय स्थापित किया था। उसका नाम डालमिया-जैन एयरवेज रखा गया था। फिर डालमिया जैन एविएशन स्थापित किया गया। परन्तु डालमिया के पास विमान सेवाएं चालू करने के लिए एक भी विमान नहीं था। विमानों के बिना डालमिया विमान सेवा चालू करने की योजना बनाते हैं। भारत बीमा कम्पनी इन सभी समवायों की मुख्य अंशधारी थी। ये समवाय प्रारम्भ तो किये गये थे विमान सेवाओं के प्रयोजन से, परन्तु जल्दी ही उनका उत्सर्जन कर दिया गया। यह काम उन्होंने अपने दूसरे समवाय ऐलन बरीज के साथ मिल कर किया और अपनी पुस्तका में इसे संयुक्त उपक्रम का नाम दिया। ऐलन बरीज में भारत बीमा कम्पनी के ३०,००० पूर्वाधिकार अंश थे जबकि डालमिया जैन एयरवेज की प्रदत्त पूंजी ३॥ करोड़ रुपये थी। यह संयुक्त उपक्रम डालमिया के लिए बहुत लाभप्रद सिद्ध हुआ। ऐलन बरीज कम्पनी लिमिटेड के अध्यक्ष रामकृष्ण डालमिया ने अपने भाषण में कहा था (१३ ३ १९४७, 'स्टेटसमेन') कि जो व्यवसाय हमने प्रारम्भ किया है उसमें गाड़ियों के ५० प्रतिशत स्टाक के विक्रय होने तक आपका कुल विनियोजित धन वापिस आ जाएगा। आपके समवाय को जो लाभ होगा उसमें से आपके साथी डालमिया-जैन एयरवेज लिमिटेड अपना भाग लेंगे और मैं आशा करता हूं कि वे अपने अंशधारियों को लाभांश दे सकेंगे जबकि अन्य एयरवेज कम्पनी अपने अंशधारियों को लाभांश देने की बात सोच भी नहीं सकती। परन्तु एक दिन डालमिया-जैन एयरवेज ने, जो ३॥ करोड़ रुपये की प्रदत्त पूंजी से प्रारम्भ हुआ था अचानक ऐलन बरीज को ३ करोड़ १० लाख ४७ हजार ३४५ रुपये दे दिये

और स्वय दिवालिया हो कर उत्सर्जित (समाप्त) हो गयी। इस दु खद घटना पर रोष प्रकट करते हुए फिरोज गाधी कहते है —

"अशधारियो का नाश हो गया। उन्हे यह रुपया कभी वापिस नही मिला।"

इसके बाद उन्होने सरकार से पूछा कि "डालमिया-जैन एयरवेज तथा ऐलन बरीज के निदेशक कौन थे? खुद ही उत्तर दिया कि वे समय समय पर बदलते रहते थे। यह सारी प्रक्रिया भारतीय समवाय अधिनियम की धारा ८६ (क) का पूर्ण उल्लघन करती थी। नियमानुसार तो वे ऐसा कर ही नही सकते थे। भारत बीमा कम्पनी ऐलन बरीज की साथी थी। मेरा ख्याल है कि मैं वित्त मत्री से पूछ सकता हू कि ऐलन बरीज के समस्त लाभो का क्या हुआ? मैंने डालमिया जैन के कार्यो के सम्बन्ध मे बडी खोज की है और इस निष्कर्ष पर पहुचा हू कि पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण मे जो भी धन व्यय हुआ वह इस उत्सर्जन कार्य से प्राप्त हुआ था।"

इस प्रकार फिरोज गाधी यह स्पष्ट कर देते हैं कि ये पूजीपति अपना दिवाला पीटकर अपमानित होने मे भी अपमान अनुभव नही करते। उससे उन्हे धन प्राप्त होता था। इसके अलावा दिवाला पीटने के ख्याल से ही कम्पनी स्थापित करना और जब रुपया एकत्रित हो जाये तो उसे गबन करने के लिए अपने को दिवालिया घोषित कर देना ऐसी परम्परा है जिसे हिन्दुस्तान मे उन्होने बडे पैमाने पर अपनाया था। फिरोज गाधी के दृष्टिकोण के अनुसार केवल सरकारी प्रतिबन्धो से इस पूजीवादी जालसाजी को नही रोका जा सकता।

फिरोज गाधी अनेक उदाहरण देकर उन आर्थिक घोटालो का भडाफोड करते है डालमिया जैन जिनके अभ्यस्त हो गये है। उन्होने ऐलन बरीज के खाता मे एक प्रविष्टि का ब्यौरा देते हुए कहा है कि इस कम्पनी ने २० हजार टन पुर्जे तोल से बेचे है। एक हजार टन पुर्जो का मूल्य ६४ लाख रुपया मिला। वे सरकार से पूछते है कि —

'अब सरकार गणना कर सकती है कि २० हजार टन पुर्जो का कितना मूल्य इस कम्पनी को मिला होगा?"

इस तरह फिरोज गाधी कुशलतापूर्वक यह बताने मे कामयाब हो जाते हैं कि जिन कम्पनियो का उत्सर्जन हो जाता है उनकी धनराशि को डालमिया जैन किसी न किसी हरबे से अपने कब्जे मे कर लेते हैं और वह धन दूसरी कम्पनियो के नाम पर लगा दिया जाता है। परन्तु सरकार असहाय अशधारियो की रक्षा करने मे असमर्थ रहती है।

एक और आर्थिक षड्यन्त्र है जिसका सहारा लेकर डालमिया जैन और उनके सहयोगियो ने करोडो रुपये का घोटाला किया है। वे आमतौर पर भारत

वक और अय आर्थिक सस्थाना के बारे म भ्रामक प्रचार करत हैं। लागा म यह धारणा फैलान का प्रयत्न करते हैं कि ये सस्थाए भग हाने जा रही हैं और उनम अशधारियो की जमा पूजी खतरे म है। इसी का यह नतीजा होता है कि अशधारियो म घबराहट फैल जाती है और व औने पौने भावा पर अपन अश बेचन को तैयार हो जाते ह। डालमिया-जन इस स्थिति का पूरा लाभ ठात रहे है। यही कारण ह कि एस०पी० जैन न अशधारिया के ढाई रुपये मूल्य के अश चार आन और छह आन म खरीदे और इही अशा के आधार पर वे भारत निधि के नियत्रक अधिकारी बन बठे। इसी प्रकार, डालमिया-जैन एयरवेज के दस रुपय मूल्य के अश दो रुपये म और ढाई रुपय म खरीदे गये है। यह स्थिति जनता म निराशा उत्पन करन की है और अशधारिया म यह भावना पदा करती है कि उह अपना गाढी कमाई का पसा किन्ही ऐसी सस्थाओ मे नही लगाना चाहिए जिन पर उनका प्रत्यक्ष नियत्रण न हो।

इसम सदेह नही ह कि जनमत का आदर करत हुए भारत सरकार न अनेक अवसरा पर इन घोटाला की जाच के लिए आयोग बैठाये। परन्तु डालमिया जन समुदाय पूर भारत म फैला हुआ ह। फिर एक जाच यहा हुई है, दूसरी दूसरे स्थान पर हुई है और इस तरह छुट-पुट अनक जाचें हुई हैं। इन सबकी समीक्षा करते हुए फिरोज गाधी एक जोरदार सद्धातिक माग करत हैं कि —

'मैं नही समझता कि विधि (कानून) की साधारण प्रक्रिया का अनुसरण करके हम किसी नतीजे पर पहुच सकते हैं। अत विधि की साधारण प्रक्रिया से कोई परिणाम सही निकलेगा। सभी तथ्य हमारे सामन हैं। और मैंने जो कुछ भी सदन के समक्ष रखा है उससे अधिक तथ्य सरकार के पास है। वास्तव म मैंने भी सरकारी प्रकाशना स तथ्य प्राप्त किये है।

इन तथ्या के प्रकाश म फिरोज गाधी जो सुझाव देत हैं वह और भी महत्व पूण है। व कहते है कि डालमिया जन कम्पनिया द्वारा अशधारिया का लगभग ८ करोड रुपया गबन किया गया है। यह सारी धनराशि अशधारियो को वापिस दिलाई जाय, यदि इसके लिए सविधान म परिवतन करना आवश्यक हो तो उसम भी सशोधन किया जाय।"

इसके बाद फिरोज गाधी अपनी विशेष बेचनी का परिचय देते हुए सरकार से अपील करते हैं —

"आप इस सम्ब ध म जो कुछ भी करें, शीघ्र करें। जिन लोगा के पास साक्ष्य हैं वे मरते जा रहे है। यदि सविधान म सशोधन करना आवश्यक है तो महा याय वादी के पास जान क बजाय हमारे पास आइए। हम सरकार का और वित्तमत्री को विश्वास दिलाते है कि सारी सभा उनके साथ है, चाहे वह कुछ भी करे।

किन्तु वह अवश्य कुछ करें।"

यह अन्तिम वाक्यांश ऐसे मर्माहत व्यक्ति की पुकार है जो अन्याय को सहन नहीं कर सकता। जो असमय अशधारियो की माग पूरी करने के लिए आवश्यक हो तो सविधान म भी परिवतन करना उचित ठहराता है। यह ऐसे व्यक्ति का क्रान्तिकारी चिन्तन है जो एटार्नी जनरल की सम्मति के बजाय जनता के निर्वाचित प्रतिनिधियो का अधिक महत्व देता है। जो उच्च न्यायलय और सर्वोच्च न्यायालय के हाथो मे निहित सर्वोच्चता के अधिकारो को ससद के हाथो मे अर्पित करने के लिए राष्ट्र का आह्वान करता ह।

इस सदभ मे यह बता देना आवश्यक प्रतीत होता है कि सविधान म सशोधन और आपातकालीन अधिकारो का सदुपयोग करके बडे पूजीपतियो और समाज विरोधी वर्गों की दूषित प्रवृत्तियो पर रोक लगाने की माग नयी नही है। इसम स देह नही है कि २६ जून १९७५ मे जब इसकी घोषणा की गयी थी तब अराजकता अपनी चरम पराकाष्ठा पर थी और पानी खतरे के निशान के ऊपर बहने लगा था। परन्तु फिरोज गाधी ने अशधारियो की रक्षा करने एव बडे पूजीपतियो की राजद्रोही प्रवृत्तियो का दमन करने के लिए जिन आपातकालीन अधिकारों की माग की है, वह आज की बात नही है। उस समय एक व्यक्ति ऐसा भी था जो शासक पार्टी का अनमोल योद्धा था, किसी विरोधी वामपक्षी पार्टी का नेता नही था और जो स्पष्ट रूप से यह भाप सका था कि भारत के पूजीवादी घराने किस ओर चलना चाहते है तथा सवसाधारण जनता, अपने ही वग के अशधारियो एव देश के प्रति उनका कैसा दृष्टिकोण है।

इस महान् विचारक और सासदिक के प्रति उन सभी लोगो के मनो मे आदर के गहरे भावो का उत्पन्न होना स्वाभाविक है जो आपातस्थिति को अनिवाय मानते हैं और विरोधियो द्वारा उस पर किये गये प्रहारो को झेलते रहते है। ससद के वाद विवाद म फिरोज गाधी के इस अभिमत से यह धारणा अपने आप पक्की हो जाती है कि यदि १९५५ ५६ म ही इजारेदार घरानो की समाज विरोधी कुचेष्टाओ को आपातकालीन अधिकारो का निशाना बना दिया गया होता तो शायद १९७५ मे उसकी घोषणा की कतई आवश्यकता ही न रह जाती।

जिन प्रश्नो पर आज लम्बा वाद विवाद चल रहा ह, उनका उत्तर बहुत पहले ही फिरोज गाधी दे चुके थे। क्या पूजीवादी घराने साधारण कानूनो के द्वारा ठिकाने लगाये जा सकते हैं ?

क्या काले धन का सचय, जमाखोरी, मिलावट, तस्करी चोरबाजारी और अशधारियो तथा जनता की लूट साधारण कानूनो के द्वारा ब द की जा सकती है ?

क्या सम्पत्ति के विशेषाधिकारो और सचय को साधारण कानूनो का सहारा

लेकर अदालतों की सहायता से प्रतिबंधित किया जा सकता है या बड़ी सम्पत्तियां को किसी व्यक्ति के हाथों से लेकर सामाजिक सम्पत्ति बनाया जा सकता है और अदालतें उन्हें मान्यता दे सकती हैं ?

क्या सामाजिक प्रगति और न्यायसंगत बटवारे के लिए उच्च न्यायालय एवं सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशों को अन्तिम ठहराया जा सकता है ?

ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि ये प्रश्न नये उठाये जा रहे हैं और आज से दस पांच वर्ष पहले इनका कोई औचित्य ही नहीं था।

परन्तु ये वाद विवाद और प्रश्नों के सन्दर्भ में फिरोज गांधी का बार बार 'नहीं' में उत्तर देना तथा संविधान में संशोधन और विशेषाधिकारों के प्रयोग की पैरवी करना इस बात की ओर संकेत करता है कि शोषक वर्गों की कुचेष्टायें केवल साधारण कानूनी प्रतिबन्धों द्वारा नहीं रोकी जा सकतीं। प्रत्येक विवेक-शील पाठक उनके विचारों के इस तीखेपन पर चकित हुए बिना नहीं रह सकता। यह बात तब और भी महत्वपूर्ण हो जाती है जब बीस साल पहले ही, जब भारतीय पूंजीवादी घराने विकसित भी नहीं हो पाये थे और धनके जहरीले दांत निकल भी नहीं पाये थे, तभी उन्होंने इसकी ओर संकेत कर दिया था।

टाटा लोकोमोटिव वर्क्स के राष्ट्रीयकरण की माग

५ सितम्बर, १९५७ को लोक सभा के वाद विवाद म फिरोज गाधी ने एक दूसरे रहस्यभरे घोटाले की ओर जनता और सरकार का ध्यान आकष्ट किया। अबकी बार उन्होंने हिन्दुस्तान के सबसे बडे उद्योगपति, सबसे बडे बैंकपति और सबसे बडे व्यवसायी और सचालक, टाटाओ की समाज विरोधी चेष्टाओ को अपने तर्कसगत प्रहारो का निशाना बनाया।

सबसे पहले उन्होंने सदन के उपाध्यक्ष के प्रति अपना आभार प्रकट किया जिन्होंने सरकार और एक निजी व्यवसायी संस्थान के बीच किये गये इस महत्वपूर्ण करार के बारे म वाद विवाद करने का अवसर प्रदान किया।

उन्हे इस बात का बडा दुख था कि २० अगस्त, १९४७ को अर्थात् स्वाधीनता मिलने के ठीक ५ दिन बाद ही रलवे बोर्ड म बठे हुए किसी उच्च अधिकारी ने इस रहस्यपूर्ण करार के ऊपर हस्ताक्षर किये और भारत सरकार को उस करार के साथ बाध दिया जो स्वाधीनता मिलने के २ वर्ष पहले से ही विचाराधीन चल रहा था। इस प्रकार इस करार मे इस सरकार को अपने जन्म से भी २ साल पहले ही शर्तों के साथ बाध दिया गया।

इस करार के सम्बन्ध मे फिरोज गाधी ने जिन शब्दो का प्रयोग किया है, उन्ही से यह प्रकट हो जाता है कि इसके प्रति उनके मन मे कितना बडा आक्रोश था। उन्होंने कहा—"यह दिलचस्प है, तिकडम भरा है और बहुत भ्रामक है। देश के बुद्धिजीवियो को घबडा देने वाला है।"

इन विशेषणो का दोहरा देने के बाद फिरोज गाधी ने अपनी बात का समर्थन करते हुए भूतपूर्व महानियन्त्रण लेखापरीक्षक श्री नरहरि राव के उस वक्तव्य का हवाला दिया जो उन्होंने ३ नवम्बर, १९५२ को उस करार के सम्बन्ध म दिया था। श्री नरहरि राव ने अपनी राय देते हुए कहा था कि "उन्होंने

इससे अधिक चपला करने वाला दूसरा कोई भी करार कभी नही देखा। उन्हाने कहा कि उन्हे पूरे करार के बारे म बडा सन्देह था।"

स्मरण रहे कि महानियन्त्रण लेखापरीक्षक देश म लेखा सम्बन्धी उच्चतम अधिकारी होता है।

इसके बाद वतमान महानियन्त्रण लेखा परीक्षक पहले रेलवेज के विनीय आयुक्त थे। उनकी राय का उल्लेख करते हुए फिरोज गाधी ने कहा —

"उन्होने भी लोक लेखा समिति के सामने कहा कि वे करार के कई भागो को समझने म असमथ हैं।" रेलवे बोड की ओर से इस करार पर २० अगस्त, १९४७ को हस्ताक्षर किये गये और वह १९४८ से लागू हो गया।

इस प्रकार इसम दोहरी जालसाजी की गयी थी और इस जालसाजी का भण्डाफोड करते हुए फिरोज गाधी करार की अभिसधियो पर विचार करते हैं। वे कहते है कि यह पूरा करार पूरी तरह इकतरफा है और मुझे आश्चय होता है कि सरकार ने यह करार क्या किया है? वे कहते हैं—

"करार म वायलरा के निर्माण के लिए विभिन्न अवधिया निर्धारित की गयी हैं। एक अवधि (क) वह विकास काल था जो उसे जून १९४८ स जून, १९४६ तक पूरा करना था। दूसरी अवधि (ख) जून, १९४६ से १९४७ तक पूरी होनी थी। और तीसरी अवधि (ग) म वायलरा के मूल्य निर्धारित किये जाने वाले थे। लेकिन 'क' अवधि म केवल एक वायलर का ही सम्भरण हुआ और इस पर भी दो वष वाद ही रेलवे बोड ने २० अगस्त १९४७ को उस करार पर हस्ताक्षर कर दिये थे—पता नही क्या सोच कर।

प्रश्न यह है कि जिस कम्पनी ने दो वर्षों तक कुछ भी काम नही किया और केवल एक वायलर की पूर्ति की उसे आजादी के ५ दिन बाद क्या मान्यता दे दी गयी? उसे बगर कुछ सोचे विचारे अर्थात सरकार के आर्थिक हितो पर ध्यान दिये बगर इतनी बडी सुविधा का देना किसी साधारण भूल के कारण सम्भव नही हो सकता।

इस करार के अनुसार टाटा लोकोमोटिव वक्स को वायलर और इजन दोनो का निर्माण करके पूरा करना था। परन्तु यह समवाय अपने करार के मुताबिक अपनी जिम्मेदारिया पूरी करने म पूणतया विफल रहा। फिरोज गाधी कहते हैं—

करार के अनुसार जून १९४६ तक ५० वायलरो का उत्पादन हो जाना चाहिए था। परन्तु इस लक्ष्य की पूर्ति १९५८ म जाकर हुई। यानी पूरे ८ वष बाद और इस पूरी अवधि को विकास की अवधि मान लिया गया।

इसके बाद फिरोज गाधी एक और सनसनीखेज आर्थिक घोटाले की ओर

सरकार का ध्यान आकृष्ट करते हुए। १९५० के आते-आते सरकार ने ५८ वर्ष पुराने अजमेर लोकोमोटिव वर्क्स को बन्द कर दिया। उस समय तक टाटा लोकोमोटिव इंजीनियरिंग कम्पनी (टेलको) ने अपने यहा इंजनों का उत्पादन ठीक से शुरू भी नहीं किया था। भारत में सबसे पहला इंजन १८६६ में बना था। १९५४ तक अजमेर लोकोमोटिव वर्क्स ४५० इंजन तैयार कर चुका था। १९३० में हमारे यहा आयातित इंजन का मूल्य ११७० प्रति टन था। परन्तु अजमेर में तैयार होने वाले इन्जनों की लागत १००० रुपये प्रति टन थी। ऐसी स्थिति में जबकि अजमेर लोकोमोटिव वर्क्स सफलतापूर्वक इंजनों का निर्माण कर रहा था और 'टेलको' कम्पनी ने पूरी तरह अपना निर्माण कार्य प्रारम्भ नहीं किया था तब अजमेर लोकोमोटिव वर्क्स को खत्म कर देने की योजना के पीछे कोई औचित्य नहीं था।

इसके बाद फिरोज गाधी ने टैरिफ कमीशन की कार्यवाही की ओर संकेत करते हुए कहा—

'इसकी पृष्ठभूमि विदेशी आयात से देशी उद्योगों की रक्षा करना है। परन्तु 'टेलको' (टाटा लोकोमोटिव इंजीनियरिंग कम्पनी) के मामले में उसने बड़ा ही अजीब व्यवहार किया है। यहा उसने टाटा लोकोमोटिव वर्क्स की रक्षा चितरंजन के सार्वजनिक उद्योग से की है।"

इस सदर्भ में सार्वजनिक क्षेत्र के इस प्रशंसनीय उद्योग की जो भारतीय रेलों के लिए इंजनों का निर्माण करता है, प्रशंसा करते हुए फिरोज गाधी ने उसकी कार्यकुशलता, कम लागत, टूट फूट में कमी और अन्य उपलब्धियों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। उन्होंने राष्ट्र के आर्थिक विकास में 'टेलको' के योगदान की उपेक्षा नहीं की। परन्तु यह स्पष्ट घोषणा की—

"कि यह योगदान देश को बड़ा महगा पड़ा है। हमारा देश बड़ा गरीब है। हम ऐसा महगा औद्योगिक विकास नहीं झेल सकते।"

उन्होंने टाटा लोकोमोटिव के द्वारा उत्पादित इंजनों और विदेशों से आयातित इंजनों के मूल्य की भी विस्तारपूर्वक समीक्षा की। इस कम्पनी को २ करोड २६ लाख रुपये अनुदान के रूप में दे दिये गये। इसने ७ लाख रुपये मुनाफे में दिखाये जबकि वस्तुतः उसे मुनाफा नहीं हुआ था। २ लाख ५१ हजार रुपये उस पर आर्थिक दण्ड नियत किया गया था। इसलिए कि उसने उस माल का सम्भरण नहीं किया था जिसका उसने वादा किया था। रेलवे बोर्ड ने यह आर्थिक दण्ड भी माफ कर दिया। इसके बाद टाटा लोकोमोटिव कम्पनी के २ करोड रुपये का विनियोग कर दिया गया। १९४९ में इस कम्पनी ने निश्चय किया कि आर्थिक साधनों की कमी के कारण वह अपना निर्धारित कार्यक्रम पूरा करने में असमर्थ

है। इस पूरी स्थिति पर अपना अभिमत रखते हुए फिरोज गांधी ने ३० सितम्बर, १९४९ को इसकी स्थायी वित्त समिति की मीटिंग में, जिनमें वे सदस्य थे, यह प्रस्ताव रखा

यदि कम्पनी बाजार से अपने घोषित कार्यक्रम की पूर्ति करने के लिए साधन जुटाने में असमर्थ रहती है तो सरकार को इस पर विचार करना चाहिए, और इसे अपने हाथों में ले लेना चाहिए।"

परन्तु सरकार ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया। संसद की स्थायी समिति ने अपना कर्तव्य पूरा किया और सरकार विफल रही। उन्होंने कहा कि जब कम्पनी साधन नहीं जुटा पायी तो बिहार सरकार इस कम्पनी को अपने हाथों में लेने के बजाय उसकी सहायता पर आई। बिहार सरकार ने ७३ लाख रुपये गृह निर्माण योजना में उसे कर्ज में दिये। इसके अलावा ४ लाख ४७ हजार रुपये उस धनराशि की सूद के रूप में दिये जो उन्हें विदेशों से प्राविधिक संस्थाओं द्वारा सामग्री आयात करने के लिए खर्च किये गये। उन्होंने कहा —
इस प्रकार कुल मिलाकर टेल्को को सरकार ने ८ करोड रुपये दे दिये।
इतने अधिक विनियोजन के बाद भी देश को सस्ती लागत पर इंजन नहीं मिल सके।"

इस प्रकार टाटा लोकोमोटिव कम्पनी की आलोचना करने के बाद फिरोज गांधी चितरंजन लोकोमोटिव वर्क्स की सार्वजनिक क्षेत्र की योजना के सम्बन्ध में बताते हुए कहते हैं कि दूसरी ओर चितरंजन में लगभग ८ करोड रुपये का विनियोजन किया गया है जबकि छोटी सी टाटा लोकोमोटिव कम्पनी को ५ करोड रुपये से ज्यादा भेंट चढा दिये गये है।

इस तरह यह एक विडम्बना है जिसकी ओर फिरोज गांधी ने ध्यान दिलाया कि टाटा लोकोमोटिव कम्पनी एक निजी संस्था है जिस पर सार्वजनिक क्षेत्र के यानी सर्वसाधारण जनता के ५ करोड रुपये खर्च कर दिये गये है और फिर भी वह निजी संस्था ही कहलाती है तथा दूसरी ओर ८ करोड रुपये की सार्वजनिक लागत से खडा किया गया चित्तरंजन का लोकोमोटिव कारखाना बडे पैमाने पर देश के आर्थिक विकास में योगदान कर रहा है और सार्वजनिक क्षेत्र में होने के कारण वह सर्व साधारण जनता की सम्पत्ति है।

फिरोज गांधी सार्वजनिक क्षेत्र के कितने प्रबल पक्षधर है इसके लिए वे भाषण में बार-बार सार्वजनिक क्षेत्र के चित्तरंजन लोकोमोटिव और निजी क्षेत्र के टाटा लोकोमोटिव की तुलना करते हुए नहीं थकते।

फिरोज गांधी कहते है

"एस० वी० रामास्वामी को ७ मई, १९५६ को एक प्रश्न का उत्तर देते हुए

रल मन्त्री ने बताया कि टाटा लोकोमोटिव के इजन का मल्य १९५४ ५५ मे (यह पहली मूल्य अवधि है) मैनेजिग एजेट के कमीशन और मुनाफे के साथ ६ लाख ५४ हजार ५४४ रुपये है। परन्तु उसी का दूसरा सशोधित मूल्य ७ लाख २० हजार रुपये है। फिरोज गाधी कहते है कि यह एक बहुत बडी फर्म है और इस देश के सबसे बडे उद्योगपति, यानी टाटा इसका सचालन करते है। मै टाटा का बडा आदर करता हू। परन्तु इतने बडे उद्योगपति रेलवे बोर्ड को जो मूल्य सूची देते है वह ६ लाख ५४ हजार ५४४ रुपये की होती है और वे ही जब टैरिफ कमीशन को दूसरी मूल्य सूची के रूप मे उसे देते है तो बढाकर ७ लाख २० हजार रुपये कर देते है।"

फिरोज गाधी इसी फर्म की तीसरी मूल्य सूची का उल्लेख करते हुए कहते है कि इसमे इजन की कीमत ६ लाख ८५ हजार रुपये लिखी गयी। इस प्रकार एक ही इजन की तीन मूल्य सूचिया टैरिफ कमीशन और रेलवे बोर्ड के सामने विद्यमान है। मैं नही कह सकता कि इसमे कौनसा मूल्य सही है।

परन्तु एक बडी विडम्बना की ओर सकेत करते हुए फिरोज गाधी कहते है—

'टैरिफ कमीशन टाटाओ पर बडा उदार था और सचमुच बहुत अधिक उदार था। इससे तो अच्छा था कि रेलवे बोर्ड भी ६ लाख ५४ हजार या ६ लाख ४५ हजार मूल्य स्वीकार कर लेता, परन्तु उन्होने इस मूल्य को बहुत अधिक ऊचा समझा। लेकिन टेरिफ कमीशन ने इजन का मूल्य ६ लाख ६० हजार रुपये निर्धारित कर दिया और दूसरी मूल्य सूचि मे उसे ६ लाख ९७ हजार रुपये कर दिया।"

फिरोज गाधी ने इस वाद विवाद मे एक और नये तथ्य को खोजकर सामने रखा। उन्होने टाटा लोकोमोटिव कम्पनी के निदेशक या प्रबन्धक निदेशक मुलगावकरके उस वक्तव्य की ओर ध्यान दिलाया है जिसमे उन्होने कहा है कि टाटा लोकोमोटिव के इजनो की तीसरी मूल्य सूची की तुलना इग्लैड से आयात होने वाले इजनो से की जानी चाहिए। यह एक विचित्र बात है। क्योकि टैलको तो जर्मनी के टैक्नीकल सहयोगियो से सहायता लेता है न कि ब्रिटेन के टैक्नीकल सहयोगियो से। जर्मनी से जो इजन भारत सरकार ने मगवाये थे जो उसी श्रेणी के थे जिनका टाटा लोकोमोटिव उत्पादन करता है, उनका मूल्य देश मे ३ लाख ४० हजार रुपये पडता है। इस पर एक माननीय मन्त्री श्री मेहरचन्द खन्ना चकित होकर बोल पडे, क्या केवल तीन लाख ?

फिरोज गाधी यह ऐसा घपला है जिस पर माननीय मन्त्रियो को भी आश्चर्य होता है ?

इस इजन का मूल्य जर्मनी से मगवाने पर ३ लाख ४० हजार रुपये और

जापान से मगवाने पर केवल ३ लाख १८ हजार रुपये देना पड़ता है परन्तु पता नही क्या इस बीच म सरकार की ओर स ग्रेट ब्रिटेन के आकडे भी दे दिये गये हैं, जहा ऐसे इजन का मूल्य ४ लाख १५ हजार रुपये होता है।

इसके बाद फिरोज गाधी ने टाटा लोकोमोटिव इजन की दूसरी मूल्य सूची (१ ४-५५ से ३१ ३ ५६ तक) पर विचार किया। टेरिफ कमीशन ने टाटाओ को ६ लाख ३७ हजार रुपये प्रति इजन मूल्य देना तय किया। इसी इजन की आस्ट्रिया और चेकोस्लोवाकिया म ३ लाख रुपये कीमत है और यदि ग्रेट ब्रिटेन का इजन भी लिया जाये तो ४ लाख १५ हजार रुपये होगा।

तत्पश्चात फिरोज गाधी ने तीसरी मूल्य सूची पर विचार किया। टैरिफ कमीशन ने उसका मूल्य ५ लाख ६० हजार रुपये निर्धारित किया जब कि जापान म उसकी कीमत केवल तीन लाख रुपये है। यह मूल्य आयात करने के बाद का मूल्य है।

इन सब तर्कों का दोहरान के बाद फिरोज गाधी रेलवे मत्रालय से माग करते हैं कि "अधिक मूल्य के रूप म टाटा लोकोमोटिव को जो रकम अदा की जा चुकी है वह वापिस ली जानी चाहिये।"

अपनी पहली बात को जोरदार ढग स दोहराते हुए फिरोज गाधी कहते है —

'यह सब कैसे किया जा सका। यदि पहले ही करार न कर दिया गया होता, तो किसी के लिय भी यह करना सम्भव नही था। और यह बात तो और भी बडे आश्चर्य की है कि रेलवे बोर्ड के किसी अधिकारी ने केवल पत्र व्यवहार द्वारा इतने बडे आर्थिक घोटाले की नींव डाल दी।

एक माननीय सदस्य श्री रगा ने मुख्य प्रश्न की ओर से ध्यान हटाते हुए और इस सद्धातिक प्रश्न को केवल व्यक्तिगत प्रश्न बनाते हुए पूछा —

"अब वह अधिकारी कहा है ?

परन्तु फिरोज गाधी ने इस प्रश्न को उचित महत्व नही दिया और न उसका उत्तर दिया। उन्होने अपनी बात को आगे बढाते हुए कहा —

अत यह रुपया वापिस आना चाहिये। उन्होने इस करार का जिक्र करते हुए कहा कि यह १९६० ६१ म समाप्त हो जायेगा। यदि सरकार यह रुपया वापिस नही लेती है तो टाटा सरकार को 'टा-टा' कर सकते हैं। तब क्या स्थिति होगी। कानूनी तौर पर १९६१ के बाद उन्हे सरकार को 'टा-टा" करने का पूरा अधिकार होगा तो क्या सरकार जनता के धन का इस प्रकार एक व्यक्ति की तिजोरी म बन्द किया जाना पसन्द करेगी ?

इसके बाद सार्वजनिक क्षेत्र का यह महान् योद्धा चितरजन के समर्थन के लिए अपने प्रभावशाली तर्कों को दोहराने से पहले एक जबरदस्त व्यग्य प्रहार करते है —

"चितरजन लोकोमाटिव कारखाने ने बहुत बडा पाप कर रखा है —यह सावजनिक क्षेत्र का कारखाना है। यह राष्ट्रीय उद्योग है और इसलिये प्रत्येक घाटे और मुनाफे की तुलना चितरजन के साथ करने की लोगो की आदत हो गई है।"

इसके बाद फिरोज गाधी चुनौती देते हुए कहते है—बहुत अच्छा आइए, चितरजन के साथ ही तुलना कीजिए।

"टाटा लोकोमोटिव इजीनियरिंग कारखाने को अपने उत्पादन काय का प्रारम्भ करने म ४६ हजार मानव घटो का समय लगा था, परन्तु चितरजन लोकोमोटिव कारखाने को उतना काय करने म केवल ३३ हजार मानव घटा का समय लगा है। इन १३ हजार मानव घटो का मूल्य किसने अदा किया ? इस राष्ट्र ने। बहस का समापन करते हुए फिरोज गाधी ने सरकार का आह्वान किया "इस कीमत के इजन आपको नही मिलेंगे। यह महगे इन्जन टाटा लोकोमोटिव कम्पनी ही तैयार करती है। इसलिए मैं सरकार से अनुरोध करता हू कि वह टाटा लोकोमोटिव इन्जीनियरिंग कम्पनी को सावजनिक क्षेत्र मे अधिग्रहण कर ले। यदि आज आप ऐसा नही करते है ता मुझे पक्का विश्वास है कि कल आपको यही करना पडेगा।"

इसके अलावा, टाटा लोकोमोटिव कम्पनी के राष्ट्रीयकरण की माग को दोहराने के बाद उन्होने सरकार को सुझाव दिया कि 'उस कभी भी और भूल कर भी किसी प्राईवेट कम्पनी के साथ घाटा नही और मुनाफा नही की नीति के आधार पर करार नही करना चाहिए।

नियोजन और रेलवे

प्रत्येक आर्थिक शाखा की ओर गम्भीरता से देखना और राष्ट्रीय अथतत्र विकास के लिए उसके अधिकाधिक इस्तेमाल की योजना बनाना फीरोज गाधी स्वभाव मे शामिल है। किसी भी बात को वह चाहे जितनी भी छोटी क्या न हो गम्भीरता पूवक देखना और उसे राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य म लाभदायक ढग से इस्तेमाल करना उनकी दृष्टि म आवश्यक है। अतएव १२ सितम्बर १९५६ को दूसरी पचवर्षीय योजना के स दभ म जो भाषण उन्हाने दिया था, उसम प्रतिपादित मा यताओ की ओर पाठको का ध्यान आकृष्ट करना आवश्यक है।

उ हाने नियोजन म त्री के भाषण पर अपनी प्रारम्भिक प्रतिक्रिया प्रकट करते हुए कहा –

कि नियोजन म त्री दुर्भाग्य स इस समय अनुपस्थित है। व हमेशा ही उत्साह से भरे रहते है उ ह विश्वास है कि द्वितीय पचवर्षीय योजना के सभी लक्ष्य पूरे हो जायगे। मैं उनका उत्साह तोडना ठीक नही समझता।"

जिस समय मैं उनका भाषण सुन रहा था तब मरा मन घबराया हुआ था, मैं सोचता था कि यदि उत्पादन के सभी लक्ष्य पूर हो जाते हैं तो ये माल एक स्थान से दूसरे स्थान पर, जरूरत म द जनता तक पहुचाने की क्या योजना है।

फीरोज गाधी की यह आशका सवथा उचित थी। इसलिए कि नियोजन करन वालो ने परिवहन व्यवस्था का सानुपातिक नियाजन करने की व्यवस्था नही की। उ ह यह डर था कि औद्योगिक के द्रो से दूसरे स्थानो तक औद्योगिक माल पूरी मात्रा म नही ले जाया जा सकेगा और न दूसरे क्षेत्रो से औद्योगिक क्षेत्रो तक कच्चा माल पूरी मात्रा म ढोकर ले जाने की व्यवस्था की गई।

उ होने यह बात कहने के बाद मुख्य परिवहन साधन के रूप म भारतीय रेलो का उल्लेख किया।

नियोजन और रेलवे

हमारे दश म परिवहन साधनो का वडा अभाव है। परिवहन का सवसे वडा भार रेलवे पर पडता है। रेलवे का अधिकाश काय कृषि उत्पादन को उपभोक्ताओ तक पहुचाने का है। यह अनुमान लगाया गया है कि द्वितीय पचवर्षीय योजना की समाप्ति तक रेलवे की भार वहन क्षमता ६०८ लाख टन हो जाएगी।

इसके वाद उन्होने सरकार की ओर मुखातिव होकर पूछा—"अगर रेलो की सचालन व्यवस्था म पटुता नही लाई जाएगी तो क्या वे इतना भार वहन कर सकेंगी ?

अपने वक्तव्य को स्पष्ट करते हुए फिरोज गाधी ने कहा —

"हमारे देश म प्रति वप १२० लाख टन भार का यातायात वढता जा रहा है। परन्तु पहली योजना मे रेलें अपनी क्षमता का औसतन २२ लाख टन प्रति वप के हिसाव से वढा पाई है अभी हमारे पास १६५६ के भार वहन के सम्बन्ध म कोई आकडे नहीं हैं। न तो योजना मन्त्री ही और रेलवे मन्त्री अभी तक यह अनुमान लगा पाये है कि योजना के पहले वप के पहले ६ महीनो मे रेलो को कितना भार ढोना पडता है। वास्तव म योजना आयोग ने केवल उत्पादन वृद्धि का ही ध्यान रखा है। उसने परिवहन की कठिनाइयो की ओर पूरा ध्यान नही दिया।'

पाठक इस वाक्य से यह जानकारी प्राप्त कर सकते है कि नियोजन के प्रति फिरोज गाधी का दृष्टिकोण कितना सुसगत एव वैज्ञानिक था।। वैज्ञानिक नियोजन की समझदारी वैज्ञानिक समाजवाद की समझदारी मे से उत्पन्न होती है। फीरोज गाधी का दृष्टिकोण वैज्ञानिक होने के कारण वे यह भूल नही कर सकते थे कि एकागी तौर पर केवल उत्पादन वृद्धि की रूपरेखा तैयार करली जाय और उसके सदुपयोग तथा वितरण सम्बन्ध मे कोई विचार न किया जाय। नियोजन सर्वांगीण होता है, वह एकागी कभी नही होता।

इसके वाद उन्होने परिवहन के सम्बन्ध म नियोजन की आवश्यकता को वताते हुए कहा कि योजना के प्रथम वप म १ करोड २० लाख, दूसरे वप मे २ करोड ४० लाख, तीसरे साल मे ३ करोड ६ लाख, चौथे मे ४ करोड ८० लाख और पाचवें वप मे ६ करोड टन भार के इधर से उधर ले जाने के लिए परिवहन के साधनो की आवश्यकता होगी। क्या हमारी रेलें कुशलता पूवक इस लक्ष्य को पूरा कर सकती है ?

इस सद्धान्तिक वक्तव्य के उपरान्त फिरोज गाधी विनम्रता पूवक एक प्रश्न पूछते हैं —"दूसरी पचवर्षीय योजना शुरू हुए ६ महीने गुजर चुके है। क्या सरकार ने इस सम्बन्ध म अभी तक भी कुछ सोचने का प्रयत्न किया है ? परन्तु दुख के साथ कहना पडता है कि अब तक न तो नियोजन मन्त्री जी ने, स विभाग के

उपमन्त्री जी ने और न रल मन्त्री जी न ही इस ओर कुछ ध्यान देने का प्रयत्न किया है। और उन्होने आशका प्रकट की कि बढे हुए उत्पादन को भारतीय रल यथास्थान पर पहुचा सकेंगी इसम मुझे सन्देह है।

योजना मत्री जी ने अधिक से अधिक नये उत्पादित माल के यातायात की समस्या पर ही विचार किया है, परन्तु जो उत्पादन पहले से ही हो रहा है उसके परिवहन के लिये भी साधनो की आवश्यकता है। यह उन्होंने नही सोचा।"

इस सम्बन्ध म फीरोज गाधी न एक महत्वपूर्ण समस्या की ओर सरकार का ध्यान आकृष्ट किया। योजना आयोग दूसरी पचवर्षीय योजना की रूपरेखा तयार करते समय ६ करोड ८ लाख वजन के अतिरिक्त उत्पादन के यातायात की योजना बनाता है परन्तु यह क्या नही सोचता कि कुछ सामान दुबारा इधर से उधर ले जाना पड सकता है और कुछ सामान तीन बार तथा चार बार तक इधर से उधर ढोना पड सकता है। यह आवश्यक प्रक्रिया नियोजन से बाहर छोड दी गयी।

इसके बाद उन्होने रेलो के साथ बलगाडियो को भी प्रोत्साहन देने की योजना पर बल दिया। उन्होंने कहा कि अणु युग म भी इन बैलगाडियो की बडी उपयोगिता है। भारत मे एक करोड से भी अधिक बैलगाडिया हैं। वे रेलो से भी ज्यादा भारवहन करती है। ढाई मील प्रति घटे की रफ्तार से चलने वाली एक बलगाडी १५ घटो म ३७॥ मील का फासला तय कर सकती है। इस योजना की अवधि म रलो को १८ करोड टन भार का वहन करना है। और ये बात बिल्कुल स्पष्ट है कि रेले इतना भार वहन नही कर सकती तो इस कार्य के लिए बैलगाडियो के परिवहन पर विशेष बल अवश्य दिया जाना चाहिए।

फीरोज गाधी द्वारा बलगाडियो की परवा करने पर कटाक्ष करते हुए आचार्य कृपलानी ने कहा—

"हा, आपके बल बहुत प्रमुख है।"

फीरोज गाधी उनकी आवश्यकता आपको भी है।'

एक दूसरे सोशलिस्ट नेता एम० एस० गुरुपद स्वामी न फीरोज गाधी के इस सुझाव का मजाक बनाते हुए कहा—

"और गधों का जिक्र आपने नही किया।"

"फीरोज गाधी न इस नाक भाव को उपेक्षा की दृष्टि से देखते हुए अपनी बात चालू रखी। उन्होंने कहा—

रलो की कार्यक्षमताओ पर विचार करने के बाद भी मुझे बलगाडियो का महत्व अनुभव हुआ।'

आचार्य कृपलानी—और अपनी पार्टी के चुनाव चिन्ह्न को देखकर नहीं।"

फीरोज गांधी—"मैं आचार्य से प्रार्थना करता हूं कि वे मुझे अकेला छोड दें, जैसा हमने उन्हें अकेला छोड दिया है। इस नोक झोंक में बहुत समय खराब होता है।"

इसके बाद रेलो की ओर लौटते हुए उन्होंने कहा—

"रेलवे के पास अनेक ससाधन और उपकरण हैं किन्तु सचालन की अव्यवस्था हमारे मार्ग में सबसे बडी बाधा है। हम सभी डिब्बों तथा गाडियो का सही-सही उपयोग नही कर पा रहे हैं। पिछली योजना की अवधि में हमने इसका एक अच्छा खासा नजारा देखा है।"

इसके बाद उन्होंने नियोजन प्रणाली की ओर लौटते हुए कहा रेलवे को देश के अनुमानित उत्पादन का पहले से ही पूरा पूरा ज्ञान होना चाहिए, फिर उसे अपनी भार-वहन क्षमता का पता रहना चाहिए। हमारे पास १९५४-५५ के पश्चात के कोई आकडे नही है। १९५४ में हमारे पास बडी लाइन पर १ लाख ५३ हजार ५८५ डिब्बे थे। इन डिब्बो द्वारा रेलवे बडी लाईन पर ११ करोड ८० लाख टन भार ढो सकते थे। छोटी लाईन पर हमारे पास ६३ हजार ५९४ डिब्बे थे। इनके द्वारा भी लगभग ४ करोड ७० लाख ५० हजार टन भार ढोया जा सकता था। इस प्रकार हमारी छोटी और बडी रेलवे लाईनो की कुल भार-वहन क्षमता १६ करोड ५० लाख टन के लगभग थी। परन्तु असलियत क्या है, वह निराशा जनक है। इनमे से अधिकतर डिब्बे मरम्मत के लिए बेकार पडे रहते थे। १९५८ मे ऐसे डिब्बो की सख्या १४ हजार ८५६ थी। यानी प्रतिदिन १४ हजार ८५६ डिब्बे बेकार पडे रहते थे।

प्रत्येक प्रश्न पर न्याय सगत

राजनीति मे ऐसे बहुत कम लोग होते हैं जो किसी विवादास्पद प्रश्न पर किसी का मुह देखकर अपनी राय प्रकट नही करते बल्कि केवल न्याय का पक्ष लेते है। फिरोज गाधी ऐसे ही तकसगत व्यक्ति थे। राज्य के पुनगठन के आयोग की रिपोट पर ससद मे २४ अप्रैल, १९५६ को जो बहस हुई थी उसम भाग लेत हुए उ होने अपनी ऐसी ही न्यायप्रियता का परिचय दिया था।

सब लोगो को यह भलीभाति ज्ञात होगा कि महानगर बम्बई किधर रखा जाता है, इस प्रश्न पर जबदस्त खीचतान थी। कुछ लोग इसे महाराष्ट्र मे रखना चाहते थे, कुछ का विचार उसे गुजरात के साथ जोडने का था और कुछ लोग ऐसे भी थे जो उसे स्वतन्त्र राज्य के रूप म बनाकर रखना चाहते थे। मामूली सघप नही था। बडे बडे नेताओ और प्रभावशाली व्यक्तियो ने रस्साकसी म भाग ल रखा था।

फिरोज गाधी के पिता पितामह गुजराती थे। अत कुछ लोगो न यह सोचा था कि फिरोज गाधी बम्बई को गुजरात के साथ मिलाने की बात करेंगे। परन्तु न्यायसगत दावे करन वाले फिरोज गाधी ने बम्बई को महाराष्ट्र का ही हिस्सा बनाये रखने के पक्ष म प्रभावशाली तक देकर विवाद के निबटारे म निर्णायक भूमिका निभाई।

इतना ही नही, उन्होंने यह भी कहा कि वे उत्तर प्रदेश का भी बटवारा करना न्यायसगत मानते है। उन्होने घोषणा की कि केवल यही सोचकर उन्होंने इस पर अधिक बल नही दिया है कि माननीय गृहमन्त्रीजी, (जिनका वे अत्यधिक आदर करत थ) उत्तर प्रदेश के बटवारे की चचा सुनकर बहुत व्यथित हो जाते हैं और राम तथा कृष्ण की भूमि को एव गगा और यमुना को अलग-अलग भागो म नही बाटना चाहते।

उन्होंने महाराष्ट्र का पक्ष लेते हुए पूछा था कि "बम्बई को महाराष्ट्र से या महाराष्ट्र को बम्बई से पृथक करने का क्या औचित्य हो सकता है?" उन्होंने कहा कि बार बार सोचने के बाद भी और दिमाग पर जोर देने के बाद भी इन दोनों को एक दूसरे से पृथक करने की बात उनकी समझ मे नही आती है। जहा तक बम्बई को पृथक राज्य बनाने का अथवा केन्द्र प्रशासित राज्य बनाने का प्रश्न है, इसका कारण समझ पाने मे भी उन्होंने अपनी असमर्थता प्रकट की।

क्योंकि फिरोज गाधी सच्चे अर्थों म वस्तु निष्ठ सत्यवादी थे और कट्टर समाजवादी होने के नाते वे भावुकता मे किसी पक्ष का समर्थन या विरोध नही करते थे, उन्होंने अपनी बात का समर्थन बडे वैज्ञानिक ढ ग से किया था। उन्होंने कहा था कि ' वे केवल इस आधार पर बम्बई को महाराष्ट्र मे रखने का समर्थन नही करते है कि बम्बई म बहुसख्यक जनसख्या महाराष्ट्रियो की है अथवा बम्बई का वर्तमान रूप और महत्व बनाने मे किन लोगो का अधिक योगदान है।" बम्बई के आधुनिक रूप और महत्व का वर्णन करने म उन्होंने अधिक दिलचस्पी नही दिखाई। ये छोटी छोटी बाते बहुत पीछे रह गयी हैं। यदि बम्बई वास्तव मे जातीयता और क्षेत्रीयता से ऊपर उठ कर अन्तराष्ट्रीय नगर बन गया है तो सभी भारतीयो का चाहे वे कही भी रहते है, इसके विकास मे स्वाभाविक योगदान है। उन्होंने दावा किया कि बम्बई पर सभी भारतवासी गर्व कर सकते हैं, चाहे व महाराष्ट्रीयन हो या गुजराती और चाहे पारसी और दूसरे लोग हो। उन्होंने अपने तर्क को अधिक वैज्ञानिक कसौटी पर कसते हुए कहा कि वे नये आधार पर यह निर्णय करना चाहते है कि बम्बई को किधर रहना चाहिए। वह आधार भौगोलिक और राजनीतिक है। वे दोनो आधार एक दूसरे को समान रूप से प्रभावित करते हैं।

किसी भी नगर के विकास म चाहे वह बम्बई हो या अन्य कोई, आसपास के जन-जीवन का प्रभाव पडता है और विशेष रूप से जनता की आर्थिक गतिविधिया राजनीतिक क्रिया कलाप, सामाजिक जीवन और सस्कृति उस अत्यन्त गहराइयो स प्रभावित करती हैं।'

ऐसी स्थिति म बम्बई को महाराष्ट्र स और महाराष्ट्र को बम्बई से पृथक् नही किया जा सकता। वे दोनो ही अभिन्न रूप से जुडे हुए हैं। पूरे सामाजिक जीवन के ऐतिहासिक विकास की प्रक्रिया म वर्तमान बम्बई का उदय हुआ है। पिछले दो सौ वर्षों की आर्थिक गतिविधियो न वर्तमान बम्बई का रूप निखारा है। रेलो सडको, रोजगार और व्यापारिक दौड धूप आदि सभी न मिलकर बम्बई को इन्द्र राजधानी बनाया है। भारतीय ससद केवल एक कानून बनाकर बम्बई को महाराष्ट्र स पृथक नही कर सकता और उसकी औद्योगिक, सास्कृतिक

तथा व्यावसायिक हृदचना को अक्षुण्ण नही रख सकती। महाराष्ट्र से बम्बई को पृथक करना वैसा ही है जैसे शरीर से सिर काट देना। तब न बम्बई रहेगा और न महाराष्ट्र।

उन्होंने विनम्रता पूर्वक सरकार से अपील की थी कि वह बम्बई और महाराष्ट्र को एक दूसरे से पृथक् न करे। महाराष्ट्र के लोग अपने इस नये राज्य का प्रबन्ध बहुत अच्छी तरह कर लेंगे।

इसके बाद फिरोज गाधी ने एक मार्मिक बात कही थी। किसी के पास भी इसका उत्तर नहीं था। उन्होंने कहा कि बम्बई के सारे धन्धे तो महाराष्ट्र के लोग ही चलाते हैं। वे ही मजदूर हैं। वे ही दफ्तरो में कर्मचारी हैं। महाराष्ट्र के सभी छोटे-कार्यों को वे ही चलाते हैं। हा, उनमें कोई बडा पूजीपति नहीं है। परन्तु इसी आधार पर महाराष्ट्र से बम्बई को नहीं लिया जा सकता कि कोई बडा पूजीपति महाराष्ट्र का नहीं है।

इसके बाद उन्होंने बम्बई में रहने वाले अल्पसंख्यकों की आशकाओं के सम्बन्ध में जोरदार समाधान प्रस्तुत करते हुए दावा किया कि केवल उनकी कुछ आशकाओं और डर भय के कारण बम्बई का भौगोलिक एव राजनीतिक रूप नही बदला जा सकता। अल्पसंख्यकों की पूरी रक्षा की जाय, उनकी आशकायें दूर की जाय और उन्हें हर तरह से निर्भय किया जाय। परन्तु बम्बई को महाराष्ट्र से पृथक करना उनके साथ घोर अन्याय है।

यह सब कहने के बाद वे बम्बई के बहुत बडे सेठ किलाचन्द की ओर देखते हैं और चुटकी लेते हैं कि वे उनके सुझाव पर प्रसन्नता व्यक्त नही कर रहे हैं।

एक माननीय सदस्य—वे पहले ही प्रसन्नता व्यक्त कर चुके हैं।

दूसरे धन्ना सेठ (एस०एस० मोरे)—वे गलती से प्रसन्नता व्यक्त कर चुके हैं।

इसलिए कि फिरोज गाधी ने एक क्षेत्रीय परिषद की स्थापना करने का सुझाव दिया था इसका अर्थ उन्होंने यह लगाया था कि वे बम्बई को स्वतन्त्र राज्य के रूप में रखने का सुझाव दे रहे है। परन्तु फिरोज गाधी ने अपनी बात स्पष्ट करते हुए कहा कि "वे बम्बई को महाराष्ट्र में ही रखना चाहते हैं और केवल अल्पसंख्यकों के अभयदान के लिए ऐसी परिषद् की स्थापना का सुझाव देते हैं।

इसके बाद उन्होंने विस्तारपूर्वक उस सुझाव का विरोध किया जिसमें बम्बई को केन्द्र प्रशासित राज्य का स्थान देने का सुझाव दिया गया था उन्होंने उन आशकाओं की ओर सकेत किया जिनमें प्रशासनिक कठिनाइयों के अलावा लाखों परिवारों को इधर से उधर स्थानान्तरित होने के लिए बाध्य होना पडेगा, नये राज्य, महाराष्ट्र एव केन्द्र प्रशासित राज्य, बम्बई में नई जटिलताएं तथा तनाव खडे हो जाएगे और इनसे सारा सामाजिक जीवन अस्त-व्यस्त हो जाएगा।

इसके बाद उन्होने भावावेश म आकर कहा कि—"मैं बम्बई मे पैदा हुआ था और मेरा बचपन बम्बई म ही बीता था। जब इस बर्बादी की कल्पना करता हू तो मेरा मन पीडा से भर उठता है।"

एक माननीय सदस्य आप तो उत्तर प्रदेश के हैं।

फिरोज गाधी—हा, अब मैं उत्तर प्रदेश का हू। परन्तु मेरा जन्म बम्बइ का है और बचपन वहीं बीता है।

उन्होने कहा कि "बम्बई और महाराष्ट्र एक ह। यह सम्बन्ध रहना चाहिए। महाराष्ट्र के लोग महान हैं। व बहुत उदार लोग हैं। व बम्बई और महाराष्ट्र की श्रमजीवी जनता हैं। वे इसमे भी बडी बम्बई का निर्माण करेंगे—ऐसी बम्बइ का जिस पर सारा देश हमेशा गव करेगा।

इसके बाद उन्होने व्यग म कहा —

"यदि गाडगिल और पाटिल यह समस्या सुलझाने म विफल रहे है तो कोई बात नही। महाराष्ट्र विफल नही हुआ है। प० जवाहरलाल नेहरु, प० गोविन्द वल्लभ पन्त और मौलाना आजाद विफल नही होंगे। व इस समस्या का समाधान जरूर करेंगे।'

गरीबो के लिए मार्मिक व्यथा

समय आता है और गुजर जाता है। परन्तु समय पर जो दद भरी बात कही जाती है उसकी याद हमेशा बनी रहती है। यदि फिरोज गाधी के सामने कभी पीडित पक्ष ने अपनी व्यथा भरी कहानी सुनाई तो उन्होने कभी भी अनमने मन से उसे नही सुना और यह अनुभव होने के बाद कि उस व्यक्ति या समुदाय के साथ सचमुच अन्याय हो रहा है तो उसके पक्ष का समर्थन करने से पहले उन्होंने कभी यह नहीं सोचा कि जिसका विरोध वे कर रहे है वह कितना प्रभावशाली व्यक्ति है और या कि इससे उसी पार्टी का विरोध तो नही करना होगा जिसके वे जीवन भर सदस्य रहे हैं।

ऐसी एक घटना २२ अगस्त १९५६ को ससद म सामने आई।

दिल्ली के जमना बाजार मे करीब १०,००० गरीब लोग भुग्गी झोपडिया डाल कर रहते थे। अचानक सरकारी कर्मचारियो ने उन्हें इलाका खाली करने को कहा। उनको आदेश दिया गया कि व १० १८ मील के फासले पर दूर जा कर रह सकते है। वे सभी लोग फिरोज गाधी के पास आये और अपनी करुण गाथा उन्हें सुनाई।

फिरोज गाधी ने सरकार का ध्यान आकृष्ट करते हुए ससद म यह पूछा कि गरीबों की ये बस्तिया क्यो उजाडी जा रही हैं ? उन्होंने भूमि मालदार लोगो के हाथो बेचने पर भी आपत्ति की। उन्होने कहा य मालदार लोग जमीन खरीद कर वहा अपने आलीशान भवन बनाएगे और उन्हें ऊचे दामो पर किराये पर उठाएँगे। सरकार इस घटना की ओर ध्यान क्यो नही देती और इसे क्यो नहीं रोकती ?

सरकार की ओर से उत्तर दिया गया कि इम्प्रूवमेट ट्रस्ट की ओर स जमीन नही बेची गयी है।

परन्तु फिरोज गाधी इतने मात्र स चुप नही हुए। उन्होने कहा कि किसी ने तो बेची है। किसने बेची है इससे क्या फर्क पडता है? भूमि अगर बेची गयी है और किसी ने भी खरीदी है तो वह गरीबो की झोपडिया को जरूर उजाडेगा तथा खरीदने वाला मनमाने ढग से भवनो का निर्माण करेगा। जो लोग आज वहा रह रहे है, काम करते है, क्या उन्हे हटाना न्यायसगत है? और १० या १५ मील की दूरी पर उन्हे भेजना सही है? यह एक गम्भीर बात है। उन्होने सरकार से माग की कि इस समस्या का तुरन्त सुलझाया जाय और गरीबा की झोपडिया उजडने से रोकी जाय।

राजकुमारी अमतकौर—माननीय सदस्य के प्रश्न के उत्तर मे मुझे यही कहना है कि इम्प्रूवमट ट्रस्ट की ओर से भूमि नही बेची गयी।

फिरोज गाधी—मैंने कहा कि जमीन किसने बेची है इससे कोई फर्क नही पडता। मैं उस व्यक्ति का नाम बता सकता हू जिसे यह जमीन बेची गयी है। उसका नाम बाबा बिचित्र सिह है जो दिल्ली का बडा मिल मालिक है।

राजकुमारी अमत कौर—मुझे पता नही है कि जमीन बेची गयी है। जिस जमीन का उल्लेख किया जा रहा है वह इम्प्रूवमेट ट्रस्ट की है और इस बीच मे उसने बाबा बिचित्र सिह का यह जमीन नही बेची है। उन्होने यह घोषणा भी की कि किसी आदमी को १० या १५ मील दूर जाने के लिए नही कहा जा रहा।

इस पर ससद के माननीय अध्यक्ष ने बहस मे हस्तक्षेप करते हुए राजकुमारी जी से कहा—

"माननीय सदस्य का ध्यान उस जमीन की ओर दिलाया गया है जहा ६० ७० रुपय प्रति गज के हिसाब से ६ ७ प्लाटो की जमीन बेची गयी है और वहा गीता भवन तथा दूसरे नामो पर भवनो का निर्माण किया गया है।"

राजकुमारी अमत कौर—"यह बात आज की नही, बहुत पुरानी है।'

फिरोज गाधी ने रोषपूर्ण उत्तर दिया—"यह कितनी मुश्किल बात है, पहले तो जमीन के बेचे जाने की ही बात से इन्कार किया जाता है परन्तु जब हम उसे प्रमाणित करते है तो कहा जाता है कि यह पुरानी बात है। सवाल यह है कि जो लोग वहा रह रहे है उनकी सख्या १०,००० है उनका क्या होगा? वे वही रहते है और कमाते है। १० १५ मील दूर जाकर वे कैसे रह सकते है और क्या खाएगे? इसका सबसे अच्छा उपाय यही है कि सरकार इस जमीन का मूल्य बाबा बिचित्र सिह को वापिस कर दे और यह जमीन गरीबो के रहने के लिए छोड दी जाये।'

प० ठाकुर दास भार्गव ने फिरोज गाधी का समर्थन करते हुए कहा कि अजमेरी गेट पर रहने वालो को रमेश नगर और अन्य मुगल मोहल्लो मे रहने के लिए भेज दिया गया। वहा उनकी जीविका का कोई साधन नही।

इस पर राजकुमारी अमत कौर घिर गयी और उन्होंने आश्वासन देते हुए कहा कि—

"किसी को भी १० मील दूर नही हटाया जायेगा। ऐसे स्थाना पर नही भेजा जायेगा जहा उन्हे जीविका का साधन न मिले। इन लोगा ने वहा अनधिकृत कब्जे कर रखे हैं और गैर-कानूनी मकान बना रखे हैं। इस कालोनी के सम्बन्ध म मुझे पूरे तथ्यो की जानकारी प्राप्त करनी है। उन्होने अध्यक्ष की ओर मुखातिब होते हुए कहा कि इस क्षेत्र के सम्बन्ध म आपने विशेष दिलचस्पी का परिचय दिया है। मैं इस प्रश्न पर गम्भीरतापूवक विचार करूगी। माननीय सदस्य और ससद मुझे सलाह दे कि इस सम्बन्ध मे क्या करना उचित है? उन्हाने वायदा किया कि भूमि बेची नही जायेगी?

इस कथन पर फिरोज गाधी ने कटाक्ष किया—

'ससद के बाहर हमे कौन पूछता है।"

ऐतिहासिक सस्मरण

फिरोज गाधी का जीवन विविधतापूण था। समाज के विभिन्न भागा पर उनके कार्यों की बडी गहरी छाप थी। उनकी सबसे बडी विशेषता उनका कमठ होना था। उनके विविधतापूण व्यक्तित्व एव कायकलाप ने देशवासियो का ध्यान निरन्तर अपनी ओर आकृष्ट किया था। उन्ह याद करने वालो की सख्या आज भी देश मे बहुत बडी है।

इस सम्बन्ध मे मैने अनेक व्यक्तियो से सम्पक किया है और बहुतो ने अपने सस्मरण अनेक अवसरो पर लिखे है। कुछ ऐसे व्यक्तियो तक ने महत्वपूण सस्मरण लिखकर भेजे है जिन्होने फिरोज गाधी को काफी दूरी से और केवल उनके कार्यों द्वारा ही उन्हे देखा था। उनके परिवार के वृद्ध व्यक्तियो सदस्यो और सहयोगियो से लेकर साधारण देशभक्त नागरिको तथा राजनीतिक कायकर्ताओ और नेताओ के सस्मरण कितने उत्साहवद्धक है यह नीचे की पक्तियो से स्वय ही अनुभव किया जा सकता है।

डा० एस० राधाकृष्णन

हिन्दुस्तान के प्रसिद्ध प्रमुख दाशनिक और भूतपूव राष्ट्रपति स्व० डा० एस० राधाकृष्णन ने लिखा था

"फिरोज गाधी ने जब भी किसी काम को अपने हाथो मे लिया उस पर कडी मेहनत की और प्रभावोत्पादक योगदान किया।"

श्रीमती रामेश्वरी नेहरू

माता रामेश्वरी नेहरू ने फिरोज गाधी के बारे म एक स्थान पर लिखा है

"फिरोज गाधी हमेशा याद किये जाएगे। व गरीबो और पददलितो के निर्भीक हिमायती थे। अन्याय पीडितो के लिए वे साहसपूवक सघप करते थे। इस सघप को व अपनी ड्यूटी समझ कर करते थ।"

इस प्रकार बहुत थोडे से शब्दो म माता रामेश्वरी नेहरू ने फिरोज गाधी के प्रति कवल अपनी ममत्व की भावनाए ही प्रकट नही की ह बल्कि मार्मिक शब्दो

म यह बताया है कि फिरोज गाधी का जीवन किन्ही लक्ष्यो से प्रेरित था
अन्याय के विरुद्ध पददलितो के लिए सघप करना अपना कत्तव्य समझते

श्री उमाशकर दीक्षित

भारत के भूतपूव गृहमन्त्री, अब कर्नाटक के राज्यपाल, श्री उमाशकर ने फिरोज गाधी के सम्बन्ध मे अपनी मधुर स्मृतिया को उजागर करते हुए स्थान पर लिखा है

"जेल म व तूफानी काग्रेस नवयुवक थे। जन्मजात कुशल वार्त्ताकार थे और भी उनकी बात सुनी वही प्रभावित हुए बिना नही रहा। फिरोज गाधी स्वर्गी अहमद किदवई के अभिन्नतम मित्रो की पक्ति म थे। यद्यपि उन दिनो कम को उचित मात्रा मे वेतन देना सम्भव नही था, परन्तु जिन दिनो वे लख 'नेशनल हेराल्ड' म प्रबन्ध निदेशक का काय कर रहे थे, उन्होने यह पहला उ पेश किया था कि कमचारी का प्रबन्ध मे साझेदारी के उत्तरदायित्व किस निभा सकता है। ससद म आन के तुरत बाद उन्होने प्रभावशाली ढग से अपनी भूमिका निभायी। शासक पक्ष और विरोधी पक्ष दोनो ही ध्यान उनकी बात सुनने के लिए मजबूत हो जाते थे। फिरोज गाधी म पहलकदमी भावनाए बहुत प्रबल थी।"

श्री केशवदेव मालवीय

पुस्तक म बार-बार यह कहा जा चुका है कि अपने किशोर जीवन फिरोज गाधी के० डी० मालवीय के सम्पक म आ चुके थे। के० डी० मा एक स्थान पर लिखते ह

"फिरोज गाधी पूणतया समाजवादी थे। अपने जीवन के आखिरी दि उन्होन भारत म समाजवाद के व्यावहारिक कार्यों के लिए प्रभावशाली ढग से करना शुरू कर दिया। व इतने दूरदर्शी थे कि इस लक्ष्य के लिए सभी गर-स वादियो स समझौता करन को तयार थे बशर्ते कि व समाजवाद विरोधि सघष करन क लिए तयार हो। फिरोज गाधी केवल काल्पनिक समाजवादी थ, वे व्यावहारिक समाजवाद म अटूट निष्ठा रखते थ।"

श्री ललित नारायण मिश्र

अमर शहीद ललित नारायण मिश्र ने, जो दो साल पहले फासिज्म के विरुद्ध सघर्ष करते-करते अपना बलिदान दे चुके है, एक स्थान पर फिरोज गाधी के सम्बन्ध म लिखा है

"वे सच्चे और लगनशील कार्यकर्त्ता थे वे समस्याओ का गहराई म जा कर सोचते थे। जब तक किसी बात के बारे म उन्हे पूरी जानकारी नही हो जाती थी और निश्चय नही कर लेते थे तब तक वे नही बोलते थे और जब बोलते थे तो बहुत अच्छा बोलते थे। उनका बोला हुआ कभी बेकार नही गया।

"आर्थिक और सामाजिक प्रश्नो पर उनके विचार केवल प्रगतिशील ही नही थे, बल्कि हर तरह से क्रान्तिकारी थे। अर्थशास्त्र की सही सही परिभाषा के अनुसार वे सच्चे समाजवादी थे। अर्थशास्त्र नियोजन, श्रम वित्त और ऐसे ही अन्य विशिष्ट विषयो पर उनकी विशेष रुचि रहती थी। आर्थिक प्रश्नो पर उन्हे कोई भी डावाडोल नही कर सकता था, वे हमेशा आदर्शो पर अडिग रहते थे।

'वे व्यवहार कुशल व्यक्ति थे। बडी बडी समस्याओ को वार्त्ता द्वारा सुलझाने की क्षमता रखते थे। वे कुशल वार्ताकार थे। फिरोज गाधी मित्रो के मित्र थे। वे आदमी को खूब पहचानते थे। किसी व्यक्ति के सम्बन्ध म उन्होने बहुत कम भूलें की होगी।

'वे निर्भीक व्यक्ति थे और गरीबो के हमदर्द थे। ऐसे अनेक अवसर आये है जब उन्होने शक्तिशाली लोगो के विरुद्ध अपनी आवाज उठाई। ऐसा करते हुए उन्होने इसके परिणाम की भी कोई चिन्ता नही की। वे सब साधारण के सर्वप्रिय व्यक्ति थे।"

एम० चेलापति राव

प्रसिद्ध पत्रकार एम० चेलापति राव फिरोज गाधी के पुराने मित्र और सहयोगियो मे है। वे एक स्थान पर लिखते है

"फिरोज गाधी निष्ठावान् आदर्शवादी थे। ये आदर्श उन्हे बहुत कम आयु म राष्ट्रीय स्वाधीनता सग्राम मे प्राप्त हुए थे। १९४१-४२ म फिरोज गाधी ने नेशनल हेराल्ड के कार्यालय म सोवियत पुस्तकों की प्रदर्शनी का आयोजन किया था। सोवियत सघ के मित्रो और शुभचिन्तको को इस प्रदर्शनी म आमन्त्रित किया गया था। यह उनके विवाह से पहले की बात है। १९४२ म स्वाधीनता आन्दोलन म फिरोज गाधी भूमिगत रहकर काम कर रहे थे। उन्होने बडे रोमान्टिक तरीके से उस क्रान्ति का वर्णन किया था जो पूरे हिन्दुस्तान पर छा जायगी

और विदेशी प्रभुत्व का अन्त कर देगी।

"मैं यह समझता हू कि फिरोज का रेखाचित्र कभी समाप्त नही हो सकता। कुछ वर्षो के बाद, ५ या १० जितने वर्ष भी हो, फिरोज गाधी देश की राजनीतिक सत्ता मे बार बार चर्चा का विषय रहे है। उनकी भावनाए, अध्ययन, उस सामाजिक क्रान्ति मे अवश्य झलकेंगे जिनके प्रति उनकी अटूट आस्था थी। उनमे अनथक जोश, उदारता, क्षमाशीलता और आदर्शों के प्रति विश्वास हमेशा भरा पूरा रहता था।"

स्व० श्री योगेश चन्द्र चटर्जी

प्रसिद्ध क्रान्तिकारी नेता स्व० योगेश चन्द्र चटर्जी ने फिरोज गाधी के सम्बन्ध मे लिखते हुए एक जगह कहा है

"ससद सदस्य के नाते फिरोज गाधी ने बहुत सी समस्याओ के बारे मे अपना कौशल दिखाया। हिन्दुस्तान के दो सबसे बडे पूजीपतियो को जेल की हवा खानी पडी ठीक उसी तरह जैसे सामाजिक अपराधी जेल जाते है। उन्हे जेल की हवा खिलाने मे फिरोज गाधी का हाथ था। इतने बडे पूजीपतियो पर हाथ डालना आसान काम नही था। केवल फिरोज गाधी ही ऐसा कर सके।"

स्व० श्री डी० सजीवैया

कुछ लोग यह आक्षेप करते थे कि शासक पार्टी के प्रमुख प्रवक्ता होने के नाते फिरोज गाधी द्वारा सरकारी कार्यो मे त्रुटियो की आलोचना करना उचित नही था। परन्तु काग्रेस के भूतपूर्व अध्यक्ष स्व० डी० सजीवैया ने इस सम्बन्ध मे टिप्पणी करते हुए कहा था

'ससद के अन्दर और बाहर फिरोज गाधी ने जनहित के अनेक प्रश्नो पर आवाज उठाई और प्रशासन मे आई कमियो का उन्होने उचित परिप्रेक्ष्य मे आलोचित किया। प्रशासन मे बैठे लोग आमतौर पर इकतरफा रूप मे सोचने लगते है। परन्तु जनतन्त्र की सफलता वस्तुगत आलोचना पर निर्भर करती है। उन लोगो की आलोचना महत्वपूर्ण होती है जो शासन की कुर्सियो से बाहर हैं। फिरोज गाधी सार्वजनिक जीवन मे उन निर्भीक तथा स्पष्टवादी आलोचको की श्रेणी मे याद किये जाते रहेगे।

श्री नवल एच० टाटा

सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री नवल एच० टाटा ने फिरोज गाधी के बारे म विगत स्मतिया इस प्रकार दोहराई है

"श्री फिरोज गाधी से मेरे निजी सम्पक की एक घटना आज भी मेरे मानस-पटल पर स्पष्ट रूप मे अकित है। उन दिना म टाटा आयल मिल कम्पनी का मनेजिग डाइरेक्टर था। एक विदेशी बहुराष्ट्रीय कम्पनी को हमारे देश म साबुन और वनस्पति उद्योग म प्राय एकाधिकार प्राप्त था। इसके बावजूद जब भी तेल की कीमत बढती यह कम्पनी साबुन और वनस्पति की कीमत कम कर दती थी। इस विदेशी कम्पनी द्वारा यह अनूठा तरीका अपनाने का परिणाम यह हुआ कि देश म साबुन और वनस्पति उत्पादन करने वाले छोटे-छोटे ६७ उद्योग बन्द हो गये। भारतीय औद्योगिक क्षेत्र म सकटपूण स्थिति पदा हो गई। यह आशका होन लगी कि इस विदेशी कम्पनी द्वारा राष्ट्रविरोधी तरीका अपनाने से साबुन और वनस्पति उत्पादन करने वाले भारतीय उद्योग सवथा लुप्त हो जायेग।

"इस दु खद स्थिति से चिंतित होकर भारतीय उद्योग के कुछ प्रतिनिधि मुझसे मिले। विद्यमान स्थिति से अवगत कराते हुए उन्होंने मुझसे आग्रह किया कि भारतीय साबुन और प्रसाधन सामग्री निर्माता सस्था को पुनर्जीवित कर मै उसका अध्यक्ष पद सम्भालू। यह सस्था अभी मतप्राय थी। औद्योगिक क्षेत्र म सकट स्पष्ट दिखाइ दे रहा था। उनका मत था कि इस विदेशी कम्पनी द्वारा अपनाय गये तरीक का विरोध कर भारतीय साबुन और वनस्पति उद्योग को सरक्षण प्रदान करना अत्यन्त आवश्यक है। मैंने इस सस्था का अध्यक्ष पद सभाल लिया। श्री सोली गोदरेज इस उद्योग से सम्बद्ध थे। उनका श्री फिरोज गाधी से अच्छा परिचय था। एक दिन वह श्री फिरोज गाधी को साथ लेकर मरे कार्यालय म आये। जब पहली बार उनसे मरी भेंट हुई वह दिन आज भी मुझे याद है। उनके प्रति मेरा सम्मान निरन्तर बढता गया। उन्होंने अत्यधिक सहानुभूति दिखाई। कुछ ही क्षणो म उन्होंने सारी समस्या समझ ली। उन्होंने वायदा किया कि वह प्रधानमत्री श्री जवाहरलाल नहरू से बातचीत कर भारतीय साबुन और वनस्पति उद्योग की सहायता के लिए भरसक प्रयत्न करेंगे। उनकी कोशिश से जवाहरलाल जी से बातचीत तय हुई। उन्होंने इस काम म काफी सहायता दी और तुरन्त ही इस आशय के आदश जारी किय कि जब तक भारतीय कम्पनिया देश म उपलब्ध क्षमता का पूरा उपयोग नही करती हैं तब तक विदेशी कम्पनी का उत्पादन क्षमता मे वद्धि करन की अनुमति नही दी जा सकती है। यह मरे जीवन का अत्यन्त गवपूण दिन था। टाटा आयल मिल्स कम्पनी के चेयरमन क विवरण म उक्त निणय का समावेश कर लिया गया था। भारतीय साबुन निमाता एसोसिएशन

के सदस्यों की प्रसन्नता का पारावार नहीं था। श्री फिरोज गांधी ने इस उद्योग का समर्थन करने के लिए जो सुखद और प्रभावशील कदम उठाये इसके लिए वह सब उनके आभारी थे। यदि श्री फिरोज गांधी इस विषय में रुचि नहीं लेते तो सम्भवतः साबुन और वनस्पति उद्योग के भारतीय निर्माता पूरी तरह चौपट हो जाते और बचे-खुचे भारतीय साबुन और वनस्पति उद्योगों पर भी इसी विदेशी कम्पनी का नियन्त्रण हो जाता। इसका पूरा श्रेय श्री फिरोज गांधी को है। इस प्रकार की अनेक संकटपूर्ण स्थितियों में उन्होंने सहायता प्रदान की। कई चिन्तापूर्ण मामलों में उन्होंने समर्थन प्रदान किया। उनमें मिशनरी भावना थी। उन्होंने संसद के भीतर और बाहर अद्भुत साहसपूर्वक संघर्ष किया।"

स्व० सरदार प्रतापसिंह कैरों

सरदार प्रतापसिंह कैरों नेहरू परिवार के साथ न केवल घनिष्ठ सम्पर्क रखते थे, बल्कि नेहरू परिवार के प्रत्येक व्यक्ति की योग्यता एवं क्षमताओं से पूर्णतया परिचित थे। उन्होंने फिरोज गांधी की विशिष्ट योग्यताओं का वर्णन करते हुए एक स्थान पर लिखा है

"मूल रूप से फिरोज गांधी प्रगतिशील विचारों की परम्परा वाले लोगों में थे। वे कांग्रेस के प्रमुख समाजवादी थे। उनके वक्तव्य विद्वतापूर्ण होते थे। पत्रकारिता में उनका ठोस योगदान था। सार्वजनिक जीवन पर उनकी गहरी छाप थी। फिरोज गांधी भावी भारत की आशा थे।"

श्रीमती काजिनी दोर्जी

काजिनी दोर्जी (एलिया मेरिया चार्वुंग) सिक्किम के मुख्यमन्त्री की पत्नी फिरोज गांधी की प्रशंसक हैं। अपने संस्मरणों में वे लिखती हैं

वह (श्री फिरोज गांधी) महान व्यक्ति थे। उनका आकर्षक व्यक्तित्व और उदात्त भावना सहज ही उनके प्रति सम्मान जगा देती थी। करुणामय मुखाकृति, किसी भी विषय के प्रति स्पष्ट विश्लेषण और निर्भीक विचार अभिव्यक्ति, जन साधारण के प्रति हृदय में व्याप्त अनन्त प्रेम सरिता और कल्याण की भावना—ऐसे थे फिरोज गांधी। अपनी भूल सुधारने के लिए वह सदैव तत्पर रहते थे। किसी भी गोलमाल का पर्दाफाश करने के लिए वह व्यवस्थाबद्ध रूप में बारीकी से सामग्री जुटाते थे। सामान्य जन के प्रति उनके हृदय में अगाध स्नेह था। वह आत्मनिष्ठावान, पूर्ण ईमानदार, लाग-लपेट से दूर

परिश्रमी व्यक्ति थे। उनका विनम्र स्वभाव प्रत्येक व्यक्ति की नि स्वाथ सेवा भावना, मौन रहकर, आत्मश्लाघा की भावना से दूर प्रत्येक व्यक्ति उनसे प्रभावित था। उनके निर्वाक मौन व्यक्तित्व और विनम्र स्वभाव का ही यह परिणाम था कि विविध क्षेत्रो म उनके योगदान को प्राय लोग समझ नही पाते थे। स्वत त्रता सग्राम और भारत की प्रगति म उनका मूल्यवान अशदान आज भी इसीलिये शायद प्रकट नही हो पाया है।

'श्री फिरोज गाधी माधुय से परिपूण परिपक्व स्वभाव वाले व्यक्ति थे। जनसाधारण से मिलने के लिये वह सदा तैयार रहते थे। उनसे मिलन अथवा बातचीत करने म कभी किसी को कठिनाई पदा नही हुई। व्यस्त जीवन म भी वह सहजप्राप्य थ।

'जवाहर लाल नेहरू सरीखे अनुपम, दवीय व्यक्तित्व से सम्प न नेता का सामीप्य सहज बात नही है। इस महान देश के इतिहास मे फिरोज गांधी के व्यक्तित्व की अमिट छाप है। उनका भी दैवीय व्यक्तित्व था वह अनूठे अदभुत व्यक्ति थ— मातभूमि के कल्याण और विश्व म उसकी गरिमा बद्धि के लिये सदैव प्रयत्नशील।

फिरोज गाधी को उनके मित्र कभी नही भूल सकते ह। उनका अनथक, कठिन परिश्रम, आदर्शों के प्रति मा यता शा त वय का मूर्तिमान रूप, चेहरे पर मधुर मुस्कराहट—आज भी जसे आशीभाव प्रकट कर रहा है।

भारत म मेरे सतीस वप के जीवनकाल मे फिरोज गाधी मेरे लिये आदश थे। वह युवा भारत के अग्रदूत थ। वह प्रभावशील निष्ठावान एव अनुशासनवद्ध व्यक्ति थे। शा त और मौन रहकर—प्रशसा अथवा प्रचार भावना से परागमुख

उनम वह सब गुण थे जो आज हम युवा पीढी म विकसित करना चाहते हैं। हमारे स्वतन्त्रता सग्राम के इतिहास म श्री फिरोज गाधी की क त्तव्य भावना और सघषपूण जीवन दीपस्तम्भ की भाति आलोकित कर रहा है। एक विनीत प्रशसक के रूप म मैं उनका अभिवादन करती हू।'

श्री भीष्म आर्य

श्री भीष्म आय १९३२ म फजाबाद डिस्ट्रिक्ट जेल म फिरोज गाधी के साथ ब दी थ। अपन जेल साथी क बारे म लिखत हुए श्री भीष्म आय एक स्थान पर कहत हैं

'फिरोज गाधी बहुत उमग भरे हुए व्यक्ति थ। हम सब लोग उ ह देखते ही उनकी ओर आकृष्ट हो गय। उनके विचार बहुत स्पष्ट थ। व समाजवाद क

लिए ही आजादी की कामना करते थे। उनमें स्वयं जन्मजात सैद्धान्तिक विचार धाराएं काम करती थीं। जेल में हर प्रकार के अन्याय के विरुद्ध संघर्ष का आह्वान करने से पहले फिरोज गांधी किसी नेता के आने का इन्तजार नहीं करते थे। जो नेता अन्याय सहन करने की या धैर्य धारण करने की शिक्षा देते थे व ऐसे नेताओं से कहा करते थे कि यदि यहां व अपने ही ऊपर होने वाले अन्यायों के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए तैयार नहीं हैं तो बाहर अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए वे जनता का आह्वान कैसे करेंगे?"

ज्ञानी गुरुमुखसिंह मुसाफिर

स्व० ज्ञानी गुरुमुख सिंह मुसाफिर उच्च कोटि के लेखक थे और संसद में फिरोज गांधी के सहयोगी थे। एक स्थान पर वे लिखते हैं

"फिरोज गांधी अन्याय और भ्रष्टाचार को सहन नहीं कर सकते थे। वे हमेशा ऐसे अवसरों की तलाश में रहते थे, जब इन पर प्रहार किया जा सके। पूरे देश में अन्याय और भ्रष्टाचार के विरुद्ध आवाज उठाने के लिए वे विख्यात थे। मूंदड़ा घोटाले ने उन्हें बहुत प्रसिद्ध कर दिया था। वे जिस किसी भी विषय को पकड़ते थे असाधारण तैयारी के साथ पकड़ते थे। उनकी पकड़ गैर मामूली थी। उन्हें इस बात का कोई अभिमान नहीं था कि वे पंडित जवाहर लाल नेहरू के दामाद थे। वे बहुत विनम्र थे। भारतीय लोकसभा का वह कोना अभी लम्बी अवधि तक सूना बना रहेगा जिसे फिरोज का कोना कह कर पुकारा जाता था।"

श्री रामकृष्ण सिंहा

हमारे मित्र आर० के० सिन्हा, संसद सदस्य लिखते हैं

"फिरोज गांधी सिद्धान्तों के लिए अजेय योद्धा थे। मूंदड़ा काण्ड का उनके द्वारा किया गया भण्डाफोड़ बहुत उत्तेजनात्मक था और उनका नाम एक ही रात में उसने पूरे संसार में फैला दिया। भारतीय संसद के इतिहास में ईमानदार संसदीय प्रणाली का यह शानदार योगदान था। बहुत से लोग आज भी पार्टी ह्विप के सामने सिर झुका लेते हैं। और बहुत थोड़े हैं जो पूंजीवादियों के प्रभाव के सम्मुख खड़े रह पाते हैं। समाजवाद की बातें तो बहुत की जाती हैं पर न्तु उसके लिए फिरोज की तरह संघर्ष करने वाले बहुत कम लोग हैं। वे जब भी कभी संसद में बोलने खड़े हो जाते थे तो बहुत से मन्त्रियों और सचिवों के लिए आतंक का काम करते थे।"

श्री सी० आर० दासगुप्ता

श्री सी० आर० दासगुप्ता जो इडियन आयल कार्पोरेशन के अध्यक्ष है एक स्थान पर लिखते है कि यद्यपि फिरोज गाधी उच्च आदर्शों और सिद्धा ता के मानने वाले थे और उन्होने ससद म सावजनिक क्षेत्र की सफलताओ के लिए अत्यधिक प्रयत्न किया था फिर भी वे कठमुल्ला नही थे और लचकदार नीति पर विश्वास करते थे। समस्याओ के प्रति उनका दृष्टिकोण अत्यधिक रचनात्मक रहता था और वे लाल फीताशाही से बहुत नफरत करते थे। वे उच्च मानवता ादी थे। वे उच्चासन पर बैठ कर चीजो को नही देखते थे। उनका निवास ान सवसाधारण लोगो और कमचारियो से घिरा रहता था।

श्री हपदेव मालवीय

प्रसिद्ध लेखक एव ससद सदस्य हपदेव मालवीय ने फिरोज गाधी के सम्बन्ध म बहुत कुछ लिखा है। उन्होने कहा है कि

'राष्ट्रीयकरण और समाजवाद तथा सावजनिक क्षेत्र के सम्बन्ध म जब भी कभी फिरोज गाधी ससद के अदर और बाहर अपने प्रभावशाली विचार अभिव्यक्त करते थे तो केवल क्षणिक आवेश के आधार पर ऐसा नही करते थे। इन सिद्धान्तो के सम्बन्ध म उनका हमेशा सुविचारित अभिमत रहता था।"

श्री ए० के० गोपालन

प्रसिद्ध मार्क्सवादी नेता और ससद सदस्य ए० के० गोपालन फिरोज गाधी को याद करते हुए एक स्थान पर लिखते है कि 'फिरोज गाधी उन लोगो म थे जो प्रत्येक व्यक्ति और घटना को विशाल प्रगतिशील दृष्टिकोण से देखते थे और सकुचित पक्षपात से अपनी राय नही बनाते थे। वे अन्याय के विरुद्ध कठोर सघर्ष करते थे। उनका पूरा जीवन महान समाजवादी लक्ष्य के लिए अर्पित था।"

श्री राधारमण

श्री राधारमण, जो उनके साथ पार्लियामेन्ट म सदस्य साथी के रूप म काय करते रहे है एक स्थान पर लिखते है

'वह मित्रो के अभिन्न मित्र थे और बहुतो के लिए शिक्षक थे। अनगिनत

लोगो को उन्होने जीवन म अनेक प्रकार से सहायता की होगी। जो उन्हे जानता है, वह उन्हे कभी नही भूल सकता।"

श्री के० के० शाह

श्री के० के० शाह ने अपने ससमरणो म फिरोज गाधी को याद करते हुए उन्हे राजनीतिक ईमानदारी, शालीनता और सावजनिक जीवन म निष्ठापूवक रहने के लिए एक शानदार आदश के रूप म चित्रित किया है।

श्री एच० सी० हेडा

फिरोज गाधी के पुराने प्रशसक श्री एच० सी० हेडा ने अपने ससमरणो म एक महत्त्वपूण घटना की ओर सकेत दिया है। उन्होने कहा है कि "मुदडा काण्ड पर ससद म प्रभावशाली भाषण देने तक ही फिरोज गाधी ने अपने कत्तव्यों की इतिश्री नही समझी। जब सरकार ने छागला आयोग की स्थापना की तो उसके सामने भी एक गवाह के रूप म उपस्थित होकर उन्होने यह साबित कर दिया था कि फिरोज गाधी केवल भाषण देकर ही सन्तुष्ट नही हो जाते।"

दीवान चमन लाल

दीवान चमन लाल पुरानी पीढी के शानदार लोगो मे माने जाते हैं। उनकी दृष्टि मे फिरोज गाधी अत्यधिक गतिशील और स्पष्ट विचारधारा के व्यक्ति थे। भारतीय ससद म उनका स्थान अद्वितीय था। उन्होने अपने लिए कभी कोई चीज नही चाही। उनका सम्पूण जीवन समाजवाद और जनता के लिए ही अर्पित था।

श्री सी० आर० पट्टाभिरमन

श्री सी० आर० पट्टाभिरमन फिरोज गाधी को याद करते हुए कहते हैं कि 'वे ससद मे इस प्रकार से भाग लेते थे और उसकी कायवाहियो म इस तरह योग दान करते थे जसे कि वे कोई विशेषज्ञ है। निस्सन्देह व कट्टर समाजवादी थे परन्तु उनका समाजवाद भारत के जन-जीवन म से उभरा था।"

आचार्य दीपकर

प्रसिद्ध साम्यवादी नेता और विचारक आचार्य दीपकर कहते है कि

' फिरोज गाधी को बोलते हुए सुनना और किसी सिद्धान्त की परवी करते हुए देखना आनन्द की बात थी। वे अपनी बात कहने के लिए कठोर सघर्ष करते थे। प्रत्येक बात को अन्तिम निष्कर्ष तक पहुचाना उनका स्वभाव था। विरोधियो तक पर उनकी निष्ठा की छाप पडती थी। वे दृढ निश्चयी, कर्तव्यपरायण और निर्भीक व्यक्ति थे। अपना सम्पूर्ण जीवन और शक्ति उन्होने जनता, लोकतन्त्र तथा समाजवाद के लिए अर्पित कर दिया था। उनकी निष्ठा अविस्मरणीय है।

जिन लोगो ने फिरोज गाधी को मजदूरो और गरीबो मे काम करते देखा है, वे यह कभी नही भूल सकते कि मजदूरो के प्रति उनमे कितना गहरा लगाव था।'

श्री गोपाल स्वरूप पाठक

श्री गोपाल स्वरूप पाठक जो भारत के उप राष्ट्रपति रहे है—फिरोज गाधी को याद करते हुए कहते है कि

' वे सच्चे अर्थों मे देशभक्त थे। देशभक्ति के सामने व सभी चीजो को दूसरे स्थान पर रखते थे। वे एक स्वय संस्था के रूप मे उभरे थे। और न केवल राजनीतिज्ञो के लिए बल्कि सार्वजनिक जीवन मे काम करने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए आदर्श थे।

फिरोज गाधी प्राथमिकताओ को कभी नही छोडते थे। वे अनावश्यक और फिजूल की बातो पर कभी समय बरबाद नही करते थे। अपने हृदय की पूरी गहराइयो के साथ वे समाजवाद के लिए डटे रहे। उन्हे एक क्षण के लिए भी इस बात मे सन्देह नही था कि मातृभूमि की समस्याओ का समाधान केवल समाजवाद के द्वारा ही सम्भव हो सकता है।"

श्री एस० वी० कृष्णमूर्त्ति राव

श्री एस० वी० कृष्णमूर्त्ति राव एक स्थान पर लिखते हैं

'फिरोज गाधी हमेशा ही हिन्दुस्तान के सबसे बडे सासदिको मे गिने जाते रहे है। वे जिस विषय पर भी बोले, पूरी तयारी और अध्ययन के साथ बोले। सुनने वालो ने उनकी बात महानतम आदर और ध्यान के साथ सुनी। हमारी ससद के इतिहास मे उन्होने सर्वोत्कृष्ट चर्चाए उठाइ। उन्होने कभी अपने मन मे दुर्भावना

नही रखी। कभी उन्होने किसी पर निम्न स्तर का प्रहार भी नही किया। वे बहुत सज्जन व्यक्ति थे।"

श्री एस० पी० गायकवाड

महाराष्ट्र के प्रसिद्ध नेता और ससद सदस्य श्री एस० पी० गायकवाड ने एक स्थान पर लिखा है

"१६५७ मे निर्वाचन के बाद फिरोज गाधी का पहला साल बिना ध्यान के ही चला गया। परन्तु मूदडा काड ने उन्हे उछाला। उनकी उपस्थिति न केवल ससद मे बल्कि पूरे देश मे अनुभव की जाने लगी। इसके बाद जब भी कभी वे लोकसभा के सदस्यो के बीच आ कर बैठते थे तो मत्रिमण्डल के सदस्यो के बीच कानाफूसी होने लगती थी। प्रश्नकाल मे जब वे प्रश्न पूछने के लिए खडे होते थे तो लोगो के दिल धडकने लगते थे और सिर हिलने लगते थे। फिरोज की अपनी निराली शैली थी। वे कटाक्ष नही करते थे, नम आवाज थी, परन्तु शैली प्रभावोत्पादक थी। फिरोज बहुत अधिक पसन्द किये जाते थे। वे दयालु और खुश मिजाज थे।'

चौधरी ब्रह्म प्रकाश

दिल्ली प्रदेश के भूतपूर्व मुख्यमत्री चौधरी ब्रह्म प्रकाश फिरोज गाधी के विशेष प्रशसको मे रहे हैं। एक स्थान पर उन्होने लिखा है

"उन्हे बोलते हुए सुनना एक आनन्द की बात थी। उनके लहजे मे निष्ठा रहती थी, वे ससद की आत्मा थे। वे अपनी बात कहने के लिए कितनी तैयारी करते थे कितना कठोर सघर्ष करते थे और उस बात को अन्त तक पहुचा देते थे, यह अविस्मरणीय है। उनसे लोग डरते थे, उनका आदर करते थे, वे बहुत विख्यात थे। परन्तु उन्हे यह प्रसिद्धि इस कारण नही मिली कि वे प्रधानमत्री के दामाद थे। अपने भाग्य का निर्माण उन्होने स्वय किया था। वह जो निर्णय लेते थे और जिस दृष्टिकोण को रखते थे, हम चाहे उनसे सहमत न हो, परन्तु इससे इन्कार नही किया जा सकता कि उनका जीवन लक्ष्यो से प्रेरित था। वे बोलते थे, लिखते थे और अपने दृष्टिकोण के अनुसार धर्म युद्ध करते थे।"

★